CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

10-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# सत्यासत्य

श्रीकृष्णराय 'हृदयेश'
नखास, गाजीपुर ( उत्तर प्रदेश )

प्रकाशक
जनसेवा ट्रस्ट
रेणुकूट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक :
जनसेवा ट्रस्ट, रेणुकूट
जिला—मिर्जापुर ( उत्तर प्रदेश )

( रचनाकार का सर्वाधिकार सुरक्षित )

■

प्रथम संस्करण

■

२७ जुलाई, १९८०
( गुरु पूर्णिमा )

मूल्य : चालीस रुपये

■

मुद्रक :
बाबूलाल जैन फागुल्ल
महावीर प्रेस
भेलूपुर, वाराणसी-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## श्री दुर्गाप्रसाद मण्डेलिया

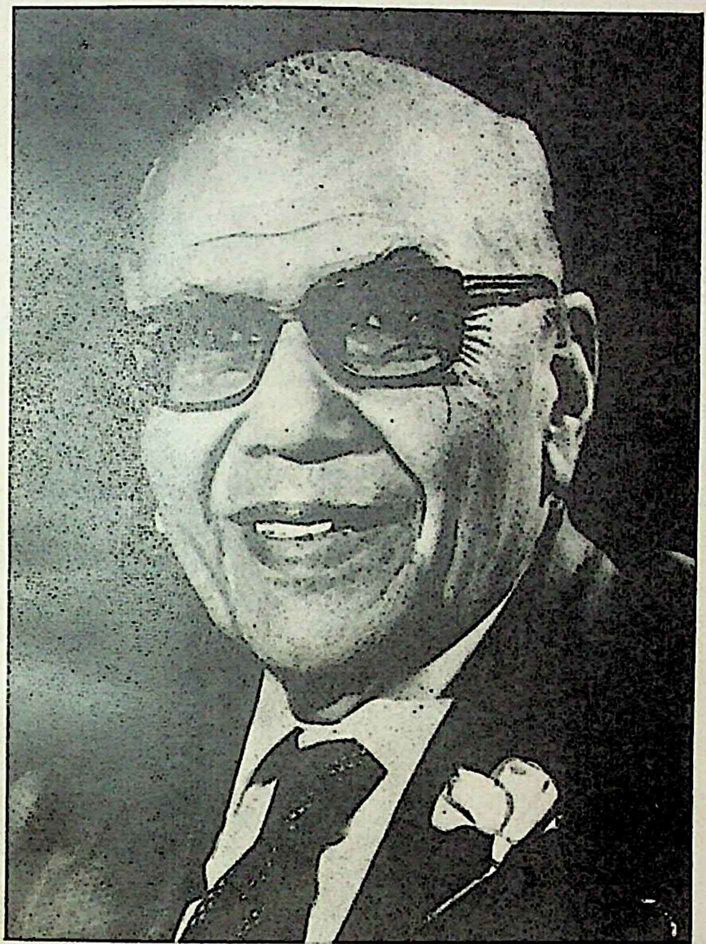

गत ४० वर्षों से मेरे परिवार पर जिसकी कृपा-दृष्टि का सातत्य चला आ रहा है तथा जिसकी उदारता के फलस्वरूप 'सत्यासत्य' ने प्रकाश की किरण की झाँकी देखी है, उस महान् व्यक्तित्व के प्रति शब्दों से कृतज्ञता ज्ञापन मात्र औपचारिकता है।

'ह[illegible]श'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्तित्व दायिनी
ममता
मयी
जननी
तथा
जीवन-पथ
निर्देशक
श्रद्धेय
जनक
की
पूत
स्मृति
में

'हृदयेश'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# अपनी बात

किशोरावस्था की बात है। प्रतिदिन संध्या समय मेरे दरवाजे गाँव के चार-पाँच रामायण-प्रेमी एकत्र होते थे। मैं रामचरित मानस का पाठ करता था और मेरे स्वर्गीय चाचाजी श्रोताओं को अर्थ समझाते थे। एक दिन एक श्रोता ने कहा—रामायण की कथा तो बहुत दिनों से हो रही है। कुछ दिन महाभारत की कथा होनी चाहिए। चाचा जी ने समझाया—गाँव की शान्ति में कंकड़ नहीं फेंकना चाहिए। जानते हैं, जहां महाभारत की कथा होती है, वहां झगड़ा अवश्यम्भावी है। महाभारत की चर्चा फिर कभी नहीं चली। किन्तु मेरे मस्तिष्क के किसी कोने में यह विचार घर कर गया कि कभी महाभारत पढ़ूँगा। सन् १९५२ ई० में सम्पूर्ण महाभारत और भागवत महापुराण पढ़ने का सुअवसर मिला। व्यास की महानता की झाँकी मिली। उस दैवी प्रतिभा का मूल्यांकन मेरे जैसे अज्ञानी के लिए न तब सम्भव था और न अब है। महाभारत के एक एक चरित्र को अपना कर भारवि, माघ और हर्ष ने बेजोड़ महाकाव्यों की रचना की। शकुन्तला को उठा कर महाकवि कालिदासने नाटक के रूप में विश्व-साहित्य को अमोल निधि दी। ऐसी अद्वितीय प्रतिभा का सहारा लेकर क्या मैं भी कुछ कर सकता हूँ, इस प्रकारके चिन्तन की एक क्षीण लहर उठी। सोचने लगा—इस अगाध रत्नाकर से क्या लेकर मैं अपने को सँवार सकता हूँ। संघर्ष ? हां, महाभारत के भव्य प्रासाद में नींव का पत्थर संघर्ष ही है। सतयुग की आदर्श कल्पना की उड़ान बहुत ऊँची हो सकती है। व्यास के अनुसार उस युग में 'धर्मसंस्थापनार्थाय' जितने अवतार हुए, उतने बाद के युगों में नहीं। एक नहीं, अनेक देवासुर संग्रामों की अवतारणा हुई। युग बदला। त्रेता आया। सतयुग ने उसकी सौरी में संघर्ष को प्रस्थापित कर दिया। कालान्तर हुआ; किन्तु कार्य पूर्ववत् ही रहे। राम-रावण का महासमर उसके पेट से निकला। पुनः काल परिवर्तन। द्वापर आया। त्रेता ने सतयुग से मिले विरासती संघर्ष को दुलराने के लिए द्वापर की गोदी में डाल दिया। इसी संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में व्यास जी के महाभारत के दर्शन हुए। काल का बदलाव हुआ; मानव-मनोवृत्तियाँ ज्यों की त्यों रहीं। भूत के पास जो कुछ थाती थी, उसने वर्तमान को दी। वर्तमान उस थाती को भविष्य को सौंपने की तैय्यारी में है। द्वापर के महाभारत के पश्चात् छोटे मोटे अनेक युद्धों के अतिरिक्त दो विश्व युद्ध वर्तमान युग में लड़े गए। संघर्ष की अपनी पूँजी को वर्तमान अपने उत्तराधिकारी के लिए सुरक्षित रक्खे है। मेरे चाचा जी की बात को मानकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मेरे दरवाजे पर महाभारत की कथा तो कभी नहीं हुई; किन्तु गांव-गिरावें, देश और विश्व की शान्ति में हिचकोरें अवश्य पैदा हुई और हो रही हैं। यह महाभारत की नहीं, वरन् उन कोटि कोटि मानवों के मनोवेगों की पृष्ठ भूमि पर आरोपित है, जिनका आधार लेकर व्यास ने अपनी लौह-लेखनी उठायी थी।

व्यास ने स्वयं लिखा है—'जो महाभारत में नहीं, वह अस्तित्वहीन है।' बात सही है। व्यास गलत नहीं हो सकते। इसमें सब कुछ है। फिर मैं संघर्ष को ही क्यों वरण करूँ, जो मेरे स्वभाव से मेल नहीं खाता। कुछ ऐसी वस्तु खोजूँ, जो मेरे अन्तर को भी प्रकाशित करे। मुझे ऐसा लगा—व्यास ने प्रकाश के लिए ही महाभारत की रचना की है। सृष्टि-क्रम में तम और असत्य का बराबर आधिपत्य रहा है। (किन्तु प्रकाश और सत्य ने कभी सृष्टि का पल्ला छोड़ा नहीं। जब कभी ऐसा अवसर आया कि प्रकाश और सत्य राख की ढेर में विलुप्त हो गए; एक ऐसी शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ, जिसने राख झाड़ दी। प्रकाश और सत्य प्रकाशित हो उठे। यही तो महाभारत की आत्मा है। क्यों न इसी आत्मा की आराधना करूँ।)

राजा शान्तनु एक संध्या यमुना के किनारे भ्रमण कर रहे थे। एक अनिन्द्य सुन्दरी पर उनकी दृष्टि पड़ी, जो उनके आकर्षणका केन्द्र विन्दु बन गयी। उसके पिता को सन्देश भेजवाया—अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ कर दो। पिता का निवेदन था—जाति का केवट हूँ। कन्या का विवाह जाति में करूँगा तो सम्मान बना रहेगा। उससे उत्पन्न सन्तानें भी सम्मान का अनुभव करेंगी। महाराज के यहां मेंरी पुत्री को सारे ऐहिक सुख उपलब्ध होंगे; किन्तु उसकी सन्तानें राज्यभोग नहीं करेंगी। ऐसी स्थिति में विवाह की कहाँ सम्भावना है।

यह कथा राजा शान्तनु के इकलौते पुत्र भीष्म के कानों में पड़ी। केवट के पास गए। उससे कहा—अपनी पुत्री का विवाह मेरे पिता जी से कर दें। वचन देता हूँ, उसकी ही सन्तानें राज्य का उपभोग करेंगी। केवट ने निवेदन किया—युवराज का कथन शिरोधार्य है। किन्तु आपकी सन्तानों को इसके लिए कौन रोक सकता है? सही चिन्तन है। दूसरा वचन देता हूँ। कभी विवाह नहीं करूँगा।

शान्तनु-सत्यवती का विवाह सम्पन्न हुआ। उनसे चित्रांगद और विचित्र-वीर्य दो पुत्र हुए। उनका विवाह क्रमशः अम्बिका और अम्बालिका से हुआ। वंश का दुर्भाग्य ही कहिये, दोनों निःसन्तान काल कवलित हो गए। घर में दो विधवायें, विधवा माता और भीष्म रह गये। सिंहासन खाली पड़ गया। वंश चलाने की चिन्ता माता को उद्वेलित करने लगी। उन्होंने भीष्म को सिंहासन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पर बैठने के लिए कहा और विवाह का सुझाव दिया। भीष्म बात के धनी थे। स्वीकारा नहीं। पारस्परिक परामर्श से निर्णय हुआ कि नियोग द्वारा पुत्र-वधुओं से वंश चलाया जाय। उन दिनों यह कृत्य धर्मानुकूल माना जाता था। व्यास के द्वारा अम्बिका से पुत्र पैदा हुआ। वह अन्धा था। वंश का क्रम अन्धकार से प्रारम्भ हुआ। केवल अन्धकार से सृष्टि नहीं चल सकती। प्रकाश भी अपेक्षित है। व्यास से पुनः प्रार्थना की गयी। अम्बालिका से ज्योतित पुत्र का प्रसव हुआ। पहिले का धृतराष्ट्र और दूसरे का पाण्डु नाम पड़ा। धृतराष्ट्र की सारी सन्तानें तम और असत्य के आवरण में आवेष्ठित थीं। पाण्डु के पुत्र प्रकाश और सत्य के प्रतीक रहे। धृतराष्ट्र के पुत्र प्रबल पड़ गये। पाण्डु-पुत्र उनके द्वारा निर्वासित कर दिये गये। तम और असत्य की राख में प्रकाश और सत्य अदृश्य हो गए। एक दैवी शक्ति कृष्ण के रूप में आयीं। उसने पाण्डवों का साथ दिया। कुरुक्षेत्र के मैदान में तम–असत्य और प्रकाश–सत्य का घमासान युद्ध हुआ। सत्य और प्रकाश की पीठ पर दैवी शक्ति का हाथ था। उनकी विजय हुयी। अल्पावधि के लिए सृष्टि को प्रकाश के दर्शन हुए। सबने सत्य की झाँकी पायी। पाण्डवों और उनके वंशज परीक्षित ने मानवता को पनपाया। एक अच्छा सा समाज उभरा। कृष्ण ने अपने को पृथ्वी के पर्दे से हटा लिया। तम और असत्य पुनः प्रकाश और सत्य पर भारी पड़ गये। काल में बदलाव आया; किन्तु सृष्टि का स्वरूप अपरिवर्तित रहा।

मेरी दृष्टि में महाभारत में एक वंश को सूत्र बना कर सृष्टि के स्वरूप का चित्रण किया गया है। क्या मैं भी इस सूत्र को लेकर ऐसी कोई माला गूँथ सकता हूँ, जो समाज को स्वीकार्य हो? यह चिन्तन मुझे कुरेदने लगा। इसे सन् १९५४ में मूर्त रूप मिला। लगभग एक महीने तक कागद और समय खराब किया। एक दिन मेरे एक साहित्यिक मित्र मुझसे मिलने आये। लेखन के सम्बन्ध में उनसे चर्चा हुई। उन्होंने मेरी पाण्डुलिपि को उलटा-पलटा। स्नेहिल शब्दों में कहा—'कुछ ठीक नहीं बन रहा है। आपकी पहिले की रचनाओं से इसका कोई मेल नहीं।' मेरे शुभचिन्तक का यह प्रशंसात्मक उद्गार मेरे हित में था। लिखने का काम बन्द कर दिया। अब तक की जो करनी थी, उसे आलमारी के एक कोने में डाल कर चैन की साँसें ली।

मेरे जीवन में अब तक कोई एक भी ऐसी घटना नहीं घटी, जिसने मुझे निराश होने का अवसर दिया हो। फिर भी समाज की गति-विधियों ने मुझ में निराशा भरी। मेरी आज तक की फुटकर कविताओं में यत्र-तत्र सर्वत्र ही मेरी मानसिक निराशा परिलक्षित है। सन् १९३२-३३ में, जब कि एक बाईस वर्षीय युवक था, स्वतंत्रता-आन्दोलन से प्रभावित होकर जेल गया। जेल से छूटने के पश्चात्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



युवकों को ललकारने के लिए एक छोटी सी पुस्तक लिखी, जो 'युवक से' नाम से प्रकाशित हुई। मेरी यही प्रारम्भिक रचना निराशावादिता से अछूती है। सन् १९४० में एक कविता-संग्रह 'हिमांशु' नाम से छपा। इसमें संग्रहीत गीत मेरी मानसिक स्थिति का स्पष्ट दिशा-निर्देशन करते हैं। पढ़ने का क्रम बराबर अशिथिल रहा; किन्तु लिखने में शिथिलता आयी। दस वर्षों के लम्बे अन्तराल में जो कुछ लिखा था, उसे जोड़-बटोर कर सन् १९५० में 'पथदीप' नाम से दूसरा कविता-संग्रह प्रकाश में लाया गया। इसके अधिकांश गीत निराशा के आवरण में लिपटे हुए हैं। स्वयं 'पथदीप' घोर निराशा में अपनी साँसें गिन रहा है। कवि ने 'पथदीप' के प्रति अपनी समवेदना व्यक्त करते हुए समाज को उलाहना दिया है :—

कहाँ स्नेह इसका चुक पाया,
कहाँ शीश गुन का झुक पाया;
अभी कालिमा छू न सकी थी
इसकी निखरी काञ्चन-काया,
जिस आंचल ने त्राण दिया था,
उसने ही तूफान उठाया।

दीपक की दृष्टि पथ की छाया पर थी। वह तम की गरिमा को आँक रहा था। किन्तु समाज के बवण्डर ने उसे अस्तित्वहीन कर दिया। यही जीवन की वास्तविकता है। मेरा स्वयं का अस्तित्व, यदि कोई है, तो इससे भिन्न नहीं। इस विशाल ब्रह्माण्ड में मेंरा अस्तित्व ही क्या। महासमुद्र में एक बूँद के अस्तित्व का कोई अर्थ हो सकता है; किन्तु स्रष्टा की विशालता में जहाँ लाखों आकाश गंगाएँ हैं और एक एक आकाश गंगा में लाखों सौर मण्डल सिमटे पड़े हैं, जब मेरी पृथ्वी को ही कोई स्थान नहीं तो अपने अस्तित्व की क्या चर्चा करूँ। इसी चिन्तन के अधीन जब तब गुनगुनाया करता हूँ :—

इस असीम जगके कोने में सीमित गेह बनाया,
जीवन की साँसों को देकर इसको सुघर सजाया;
सोच यही, कैसे इस घर का घरवाला कहलाऊँ।

सन् १९५४ के बाद की निराशा ने मेरे जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया। कवि सम्मेलनों में आना-जाना बन्द। कवि बन्धुओं और हितचिन्तकों से मिलना जुलना बन्द। छपने और छपाने से बहुत दूर। एकान्त वासका अभ्यास करने लगा। अतीत का लोकसंग्रही जीवन एकांगी हो गया। स्थिति ऐसी आयी कि मेरे सुहृद् भी मेरी निराशा और उदासीनता से प्रभावित होकर मुझसे निराश हो गए। अनेक ने सम्पर्क हटा लिया। ऐसी स्थिति होते हुए भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मानसिक प्रक्रिया में कोई व्यवधान नहीं था। इस बीच सैंकड़ो मुक्तक, गीत और नयी कवितायें लिखीं; किन्तु इन्हें अपने तक ही सीमित रक्खा। न किसी को सुनाया न उन्हें प्रकाश में लाने की बात कभी सोची। सन् १९७६-७७ के शासन के आपात कालीन दौर में महाभारत के धृतराष्ट्र और संजय के प्रतीक के माध्यम से तैंतीस पद लिखे। पता नहीं क्यों इन्हें दूसरों को सुनाने की लालसा उत्पन्न हुई। अपने संवेदन शील सुहृद् डा० विवेकी राय को बुलवाया। उन्हें कुछ पद सुनाये। उसी बीच आलमारी के कोने में धूल चाट रही 'सत्यासत्य' की पाण्डुलिपि की चर्चा चली। डाक्टर साहब ने उसे देखा। जिसके कारण लिखना बन्द किया था, उस पूर्वोक्त मित्र की २२-२३ वर्ष पूर्व की रायको परखा। उससे सहमत होते हुए भी उन्होंने कहा—सम्भव है यह कृति आधुनिकता बोध वाले साहित्यकारों से प्रशंसित न हो, पर सामान्य पाठकों के लिए तो निश्चय ही अत्यन्त उपयोगी होगी। मेरी निराशा-वादिता को वे हिला-डुला न सके। बाद में ज्ञात हुआ कि उन्होंने इसकी चर्चा मेरे सम्बन्धी डा० मान्धाता राय से की। उन्होंने भी आकर पाण्डुलिपि देखी और लिखने के लिए मुझे उकसाने का प्रयास किया। किन्तु मेरी उदासीनता की गहराई कम न हुई। मैं इस समय भी अपनी पूर्व की चिन्तन-प्रक्रिया से सटा हुआ हूँ :—

माना चलने वालों ने चलकर पथ पार किया है,
पर पथ ने पद-चिह्नों का भी कभी विचार किया है?
जग तो देखे मुझे और मैं जग को देख न पाऊँ!

पथ ने एक भी पद चिह्न को अमिट नहीं छोड़ा। बात केवल काल-भेद की है। फिर क्या लिखना और क्या पढ़ना। डा० विवेकी राय अपनी धुन के पक्के हैं। जो बात मन में बैठ गयी, उसकी पूर्ति होनी ही चाहिए। उन्होंने मेरे ज्येष्ठ पुत्र वंशनारायण और डाक्टर मान्धाता ने छोटे लड़के ब्रह्मानन्द को मुझे इस दिशा में उत्प्रेरित करने की प्रेरणा दी। जब दुर्योधन जैसा अनैतिक पुत्र भी अपने प्रबुद्ध पिता धृतराष्ट्र की कमजोरी बना हुआ था तो मेरे जैसा अप्रबुद्ध पिता अपने सुयोग्य पुत्रों के आग्रह को अनसुनी कर दे, यह अस्वाभाविक था। नवम्बर १९७८ के द्वितीय सप्ताह के अन्त में ब्रह्मानन्द मेरे पास आये। 'सत्यासत्य' की पाण्डुलिपि माँगी। उसे आद्योपान्त पढ़ा और कहा—'अच्छी पुस्तक होगी। इसे पूरा कर दें।' 'ठीक है, लिखूँगा।' ब्रह्मानन्द डा० मान्धाता को सहेज कर चले गए। उस महीने के अन्त में वे एक दिन मेरे पास आये। पूछा—'लिखना कब शुरू कर रहे हैं?' 'लिखूँगा, कल से।'

पाण्डुलिपि निकाली। पढ़ा। क्या लिखा, क्यों लिखा, समझने का प्रयास किया। टूटे क्रम को कैसे जोड़ा जाय, चिन्तन प्रारम्भ हुआ। पचीस वर्षों के बाद, सत्तर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



वर्ष की अवस्था में, कुछ काम की बात लिखना सम्भव हो सकता है ? लिखने को कहा था । लिखने लगा । दो सर्ग पूरे थे । तीसरा अधूरा था । इस जनपद के संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य विद्वान् पं० कमलाकान्त पाठक से परामर्श हुआ । दस सर्गों में पुस्तक समाप्त करने की बात निश्चित हुई । लिखने का अटूट क्रम चलाकर दो महीनों की माथापच्ची के पश्चात् पहिली फरवरी १९७९ ई० में इस अवांछित भार को ढोकर लक्ष्य स्थान तक पहुँचा दिया । कैसा लिखा है, मैं नहीं कह सकता । यदि कुछ काम की बात बनी है तो इसका श्रेय उन सभी लोगों को मिलना चाहिए, जिनका नाम मैंने ऊपर दिया है । यदि किसी काम का नहीं तो इसकी जिम्मेदारी मेरी अयोग्यता की है । जीवन भर का निराशावादी यदि अपने जीवन के अन्तिम दिनों में आशावादी बनकर यह सोचे कि उसकी कृति समाज में आदर पाने योग्य है तो यह उसकी घोर निराशा-वादिता के धूमिल चित्र में एक गम्भीर-मोटी काली रेखा जैसा ही होगा । यदि यह समाज के किसी उपयोग का है और समाज इसे प्रकाश में लाना चाहे तो इसमें मेरी आपत्ति का कोई अर्थ नहीं । यह कृति मेरे सम्बन्धियों, सुहृदों और पुत्रों के आग्रह का प्रतीक मात्र है । इतना ही

श्रीकृष्णराय 'हृदयेश'

गाजीपुर
२५-२-७९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# भूमिका

मनुष्य सृष्टि के आदि से ही जिज्ञासु और उच्चाभिलाषी रहा है। 'कस्त्वम्' 'कोऽहम्' ऐसे आरम्भिक प्रश्नों के बाद उसने परम सत्य का अनुभव किया और उसकी नयी जिज्ञासा 'क्वासि' में व्यक्त हुई। उसी युग में उसने अनुभव किया कि हम अज्ञान के अन्धकार में पड़े हुए हैं और 'सत्य' से दूर हैं। तब उसने 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' और 'असतो मा सद्गमय' की टेर लगायी। वास्तव में यह 'तमस' क्या है ? फ्रांसीसी दार्शनिक हीगल के अनुसार मनुष्य शरीर और आत्मा का समुच्चय है। मनुष्य का शरीर अपनी प्रकृति और आवश्यकताओं में पशुओं के शरीर से भिन्न नहीं है। 'आहारनिद्राभयमैथुनञ्च एतद्न्नराणां पशुभिः समाना।' जो भौतिक आवश्यकतायें हैं, वे शरीररूपी पशु के लिए काम्य और अनिवार्य हैं। ये पाशविक और व्यक्ति परक हैं। इनकी जितनी अधिक पूर्ति की जाय, उतनी ही अधिक उद्दाम होती जाती हैं। चित्त की सामान्य वृत्तियां अधिकतर पशु की आरम्भिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होती हैं। उनकी जितनी अधिक पूर्ति की जाय, मनुष्य में उसकी पाशविकता उतनी ही अधिक बढ़ती है। इसीलिए मनुष्य के लिए चित्त की वृत्तियों के निरोध का उपदेश दिया है। मनुष्य की आत्मा शरीर में वद्ध होते हुए भी पाशविकता से भिन्न है और उससे ऊपर उठ सकती है। ऊपर कही गयी जिज्ञासायें यह प्रमाणित करती हैं कि वह पाशविकता से ऊपर है। 'कस्त्वम्' कोऽहम् के उत्तरों से किसी पाशविक आवश्यकता की पूर्ति नहीं होगी। वालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने मनुष्य से कहलाया है—

अपने को उपकरण समुच्चय कैसे माने मानव प्राणी,
जवकि विचार और चिन्तन की उसने पायी अमर निशानी !

मनुज कर रहा है घोषित यों—
अरे! नहीं हूं भूत संघ में;
मैं हूं सांग, उपकरण संयुत,
पर फिर भी हूं नित अनंग मैं।

शरीर में वद्ध होते हुए भी आत्मा की उसकी पाशविकता से स्वतंत्र सत्ता है। गोस्वामी तुलसीदास ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा है—'ईश्वर अंश जीव अविनाशी; सत् चेतन घन आनँद रासी।' उसकी तृप्ति दैवी गुणों के विकास से होती है। 'दिव्' धातु से देवता और देवी शब्द बने हैं। 'दिव्' का अर्थ प्रकाश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



या ज्योति है—ज्ञान का प्रकाश। उसकी चरम परिणति तब होती है, जब मनुष्य अपने सच्चे स्वरूप को पहिचान लेता है और यह समझने लगता है कि वह 'सोऽहम्' है।

पाशविकता 'तमस्' है। प्रकाश, जिसे आत्मा चाहती है 'सत्' है। शरीर और आत्मा का अपने अपने को तृप्त करने का प्रयास दोनों में द्वन्द्व उत्पन्न कर देता है। यह द्वन्द्व पाशविकता और अध्यात्म का, तमस् और सत् का द्वन्द्व है, जो अनादि काल से व्यक्ति के अन्तर और समाज में चला आ रहा है। सत् जिन गुणों को विकसित करना आवश्यक समझता है (जैसे करुणा) उनके लिए पाशविकता में कोई स्थान नहीं। एक पाशविक आवश्यकता (क्षुधा) की पूर्ति के लिए निरीह मृग पर झपटने वाले बाघ में करुणा के लिए कोई स्थान नहीं। किन्तु मनुष्य में चेतन आत्मा भी है। उसके कारण उसमें करुणा विकसित हो सकती है। ये ही सात्त्विक गुण मनुष्य को पशु से अलग करते हैं। इन्हीं सात्त्विक गुणों को सामूहिक रूप से मानवता की संज्ञा दी जाती है। किन्तु शरीर स्थूल है। उसकी प्रवृत्तियाँ उद्दाम होने के कारण बड़ी प्रबल होती हैं। अतएव सामान्य जन में पाशविकता भी प्रबल दिखाई देती है। सूक्ष्म आत्मा की आकांक्षाएँ और प्रवृत्तियाँ शरीर ऐसा स्थूल आधार न मिलने के कारण अपेक्षाकृत प्रबल नहीं हो पातीं। किन्तु मानव-आत्मा के सत् और चेतन होने के कारण वे अनुकूल परिस्थितियों में कम या अधिक विकसित हो सकती हैं। उस अवस्था में वे इतनी सबल हो जाती हैं कि पाशविकता को बहुत कुछ दबा सकें। पाशविकता और मानवता का यह संघर्ष अनादि काल से चला आ रहा है, क्योंकि प्रबल होने पर भी पाशविकता में मानवता को सदा के लिए नष्ट करने की शक्ति नहीं है। यह संघर्ष तबतक चलता रहेगा, जबतक 'सतयुग' नहीं आता अर्थात् जब तक सामान्य मनुष्य पाशविकता से ऊपर नहीं उठता। मानवता के विकास का यही सार्थक लक्ष्य होना चाहिए कि वह पाशविक प्रवृत्तियों को उच्च आध्यात्मिक नियंत्रण में ले आवे। पाशविकता का मानवता के नियंत्रण में रखना ही (हम पाशविकता को एकदम नष्ट नहीं कर सकते, उसका नियंत्रण ही कर सकते हैं) सच्ची नैतिकता है।

इस पाशविकता और मानवता के, तमस् और ज्योति के, सत् तथा असत् के संघर्ष में कभी कभी यह प्रतीत होता है कि मानवता विजयी होने वाली है कि पाशविकता फिर प्रबल होकर मानवता को पीछे ढकेल देती है। किन्तु बार बार असफल होने पर भी मानवता कभी अपने पथ से विचलित नहीं हुई। वह पाशविकता से बराबर संघर्ष करती जा रही है। उसे विश्वास है कि आत्मा की सत्, चेतन और आनन्द की प्रकृति अन्ततः उसे अपने स्वरूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



को पहिचानने और अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होगी। उसकी आवाज भले ही कभी मन्द पड़ गयी हो, वह कभी बन्द नहीं हुई। संसार के शुभ भविष्य के लिए यही आशा की किरण है।

यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि भारतीय चिन्तकों का ध्येय मनुष्य को केवल मानवतावाद में ही ढालना नहीं था, वे उसे उससे भी ऊपर उठाकर ज्योति पुञ्ज (देवता) बनाना चाहते थे। मैथिलीशरण गुप्त ने उन्हीं मनीषियों की बात दुहराते हुए कहा था—'नारायण हो मेरे नर।' किन्तु अभी तो मनुष्य रूपी पशु मानव भी नहीं बना। 'नारायण' बनने का आदर्श केवल आदर्श ही है। किन्तु आदर्श का जो उपयोग प्रेरणा प्राप्त करने में होता है, वह इसका भी है। साधना, तप, लक्ष्य की स्पष्ट दृष्टि और ज्ञान के द्वारा ही वह नारायणत्व प्राप्त कर सकता है। ऐसे थोड़े से व्यक्ति भी समाज के उत्थान के लिए ख़मीर की तरह उपयोगी हो सकते हैं। इसके लिए अनुकूल परिस्थिति का उत्पन्न करना सबसे बड़ी समस्या है।

प्रस्तुत काव्य इसी संघर्ष की एक रोचक किन्तु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना पर आधारित है। यह इस सतत संघर्ष को उजागर करने और आज की परिस्थिति में उसकी अनिवार्य आवश्यकता को हृदयंगम कराने के लिए लिखा गया है। इसमें महाभारत की कथा को आधार बनाया गया है। कवि को तमस् और सत् के संघर्ष का चित्रण करने के लिए इससे अच्छा आधार नहीं मिल सकता था। खूबी की बात यह है कि कवि ने उस पुरानी कथा को नये दृष्टिकोण से सँवार कर बड़ी रोचक शैली में इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि वह कवि की स्थापना और उद्देश्य को बुद्धि-संगत ढंग से बल देता है। इसमें कथोपकथन और वर्णन-शैली विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं। इनसे कवि की काव्य सामर्थ्य का पता लगता है। कथा कसी हुई है और रोचकता या स्पष्टता में कहीं शिथिलता नहीं आयी है।

इस काव्य के कुछ अंश ऐसे हैं, जो अपने में स्वतंत्र इकाई हैं। वे इतने सुन्दर और महत्त्वपूर्ण हैं कि यदि वे अलग से भी पढ़े जांय तो काव्य और कथ्य की दृष्टि से रोचक और प्रेरक मालूम होंगे। उदाहरण के लिए श्रीकृष्ण और वेद व्यास के स्तवन और अन्तिम अध्याय में देश की वर्तमान स्थिति का वर्णन। स्तवन अपने में पूर्ण स्वतंत्र कविताएँ हैं। इसका उपयोग अन्यत्र कहीं भी किया जा सकता है। अन्तिम अध्याय में कविने देश की वर्तमान दशा का जो वर्णन किया है, वह रामायण के कलि वर्णन की याद दिला देता है; किन्तु उससे अधिक विवरण पूर्ण है तथा उसका क्षितिज भी विस्तृत है; क्योंकि उसमें भारत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



के बाहर की तथा अन्य धर्मों की भी विस्तृत एवं पैनी चर्चा है। समकालीन सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति का सटीक चित्रण होने के अतिरिक्त वह महत्त्वपूर्ण कलात्मक दस्तावेज़ भी है।

तमस् और सत् का संघर्ष जारी है और अभी तो ऐसा लगता है कि उसके शीघ्र समाप्त होने की सम्भावना नहीं है। इस समय तो तमस् का ही बोलबाला है। तब फिर मानवता के समर्थन में इतने बड़े काव्य के लिखने का क्या औचित्य और उपयोग है। मेरी समझ में यह और ऐसे काव्य जनता को उस संघर्ष का रूप और उसमें निहित मानवता के लिए महत्त्वपूर्ण परिणामों को समझने में सहायक होंगे। इनसे उनको प्रेरणा मिलेगी। उनका मनोबल बढ़ेगा। यदि मुट्ठी भर लोगों को भी वे मानवता के संदेश से अनुप्राणित कर उन्हें उसका उत्साही अनुयायी बना सकें तो मानवता की ज्योति बुझने नहीं पाएगी। जो आज चिनगारी है, वह कल अनुकूल परिस्थिति पाकर अग्निपुञ्ज बन सकती है। किन्तु यदि चिनगारी ही न रहे तो भविष्य में अग्नि कहाँ से प्राप्त होगी? यह महाकाव्य मनुष्य में कम से कम उस मानवता की परमावश्यक चिनगारी सँजोये रखने का काम अवश्य करेगा।

हृदयेशजी पुरानी आदर्शवादी पीढ़ी के मौन साधक हैं। वे प्रचार और समकालीन आपाधापी से दूर रह कर अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से उन अभौतिक, किन्तु मनुष्य के लिए कल्याणकारी समस्याओं पर चिन्तन करते रहते हैं, जिनकी ओर आज कम ही ध्यान दिया जाता है। उनमें ऊँची और विलक्षण काव्य प्रतिभा है; यह महाकाव्य इस तथ्य का प्रमाण है। वह पाठक को एक दूसरे संसार में ले जाता है, जहाँ वह निर्मम वास्तविकता का दर्शन करता है और यदि उसमें तनिक भी संवेदनशीलता है तो वह उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। यह इस युग के एक गम्भीर चिन्तक की कृति है। इस शिव महाकाव्य से हिन्दी की श्री वृद्धि हुई है। इसका प्रकाशन एक साहित्यिक घटना है। मैं इसका हार्दिक स्वागत और इसके लिए कवि का अभिनन्दन करता हूँ।

५३, खुर्शेद बाग़, लखनऊ। **श्रीनारायण चतुर्वेदी**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# साधना और सर्जना के धनी हृदयेशजी

किसी साहित्यिक वातावरण में साहित्यकार बन जाना आसान होता है; किन्तु साहित्य-शून्य वातावरण को साहित्य युक्त बनाने तथा पूरे जनपद को साहित्य-साधना से सुरभित करते हुए साहित्यिक साधना करना उतना ही कठिन होता है। हृदयेशजी उन दुर्लभ प्रतिभाओं में से हैं, जिन्होंने एक ऐसे जनपद में जन्म लिया, जिसे आधुनिक साहित्य-साधना की किरणों ने कभी आलोकित नहीं किया था; जहाँ कभी कोई कविसम्मेलन नहीं हुआ था और जहाँ कोई साहित्यिक वातावरण नहीं था, जिसमें अपनी साहित्यिक रुचि को विकसित किया जा सके और असाहित्यिक में साहित्यिक रुचि पैदा की जा सके। ऐसा जनपद गाजीपुर उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में है, जिसका पुराना नाम गाधिपुरी कहा जाता है। राजा गाधि का कोट इस मान्यता का आज भी मौन साक्षी है।

हृदयेश जी का जन्म गाजीपुर जनपद में गाजीपुर-वलिया राजपथ पर एक पुराने ऐतिहासिक स्थान कठउत ( गौसपुर-कठउत ) में पहिली सितम्बर १९१० ई० को हुआ। कठउत की भी अपनी ही कहानी है। इस नामका संस्कृत रूप 'कुष्टपूत' ( जिसने किसी कुष्ट पीड़ित व्यक्ति को पवित्र करके ठीक कर दिया हो ) है। कहा जाता है कि सारनाथ में अपने चार शिष्यों को धर्मोपदेश देने के बाद भगवान् बुद्ध इस रास्ते से मगध गए। यहाँ एक रात ठहरे भी थे, जिसके उपलक्ष्य में किसी ने भगवान् बुद्ध की प्रस्तर प्रतिमा यहाँ स्थापित कराई, जो आज भी गाँव के पश्चिमी छोर के राजमार्ग पर सुरक्षित है। कन्नौज के राजा जयचंद के कोई सम्बन्धी मान्धाता, जो कोढ़ी थे, तीर्थयात्रा के मार्ग में यहाँ पहुँचे और यहाँ के एक जलाशय में स्नान करके कुष्टमुक्त या कुष्टपूत हो गए और तभी से यह स्थान 'कुष्टपूत' नाम से प्रसिद्ध हुआ। असम्भव नहीं कि यह नाम इस जलाशय की इस प्रसिद्धि के आधार पर पहिले से ही चला आ रहा हो। जो भी हो, मान्धाता ने यहाँ गंगापर 'पापनाशी' नाम का घाट भी बनवाया, जो अब नहीं है। किन्तु गाँवके लोग 'नसिया घाट' नाम से आज भी उसकी स्मृति सँजोये हैं। उन्होंने अपनी प्रस्तर मूर्ति भी बनवायी थी, जो इस जलाशय में विद्यमान है। अंततः राजा वहीं बस गया। आगे चलकर मुस्लिम सैनिकों के एक दल ने मान्धाता को मार डाला और उनके नेता गाजी मसऊद ने अपने राज्य की स्थापना की और पुराने गाधिपुर को 'गाजीपुर' रूप में पुनर्वासित किया। भूमि के स्थायी प्रबन्ध के लिए प्रसिद्ध लार्ड कार्नवालिस बिहार से आते समय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



इसी कठउत गाँव में मरे थे। गाजीपुर शहर के बाहर आज भी उनको समाधि है। इस प्रकार कठउत गाँव तरह-तरह की ऐतिहासिक स्मृतियों से जुड़ा है और अप्रसिद्ध होता हुआ भी एक प्रकार से प्रसिद्ध है। इस गाँव में जनमे हृदयेशजी भी बहुत कुछ इस गाँवके ही प्रतीक जैसे हैं। उनको उनकी दुनिया से बाहर के कम ही लोग जानते हैं। किन्तु उनकी यह 'सत्यासत्य' कृति उन्हें साहित्य जगत् में ज्ञात किए बिना नहीं रह सकती। वे भी अज्ञात-ज्ञात हैं या ज्ञात-सुज्ञात हैं।

हृदयेशजी का जन्म एक भूमिहार-ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपके पिता विश्वनाथ राय एक सामान्य कृषक थे। खेतों के बीच झोपड़ी बनाकर रहना, नित्य गंगा-स्नान, प्रातः व्रत और सायं अपने हाथ से भोजन पकाना; किसी भी अभ्यागत क़ो पहिले खिलाना और तब खाना—वे वीतरागता और गार्हस्थ्य के आदर्श समन्वय थे। माता नवाबी देवी उसी जनपद के प्रसिद्ध गाँव शेरपुर की बेटी थीं। यह गाँव अपने अक्खड़पन और निर्भीकता के लिए प्रसिद्ध है। उनमें भी ये गुण कूट कूट कर भरे हुए थे। आखिर शेरपुर की माटी क़ी ही तो थीं। इस तरह हृदयेश जी को अपने गाँव, अपने पिता तथा अपनी माता की प्रकृति से बहुत कुछ मिला—अज्ञात ज्ञातता—गार्हस्थ्यमय वीतरागता—निर्भीकता—।

हृदयेशजी के चाचा रामनाथ शर्मा गाँव के साधू बाबा थे। उनका जीवन समाज के लिए समर्पित था। 'स्व'को उन्होंने जैसे कभी जाना ही नहीं, पहिचाना ही नहीं। इस बात की सुगंध हृदयेश जी में रही है, है। जो इन्हें जानते हैं, इस बात को भी जानते हैं। इनके एक दूर के चाचा तपेश्वर राय भी थे, जो सचमुच ही तपेश्वर थे। वे भी इन्हीं के परिवार में रहते थे। बड़े ही अनुशासनप्रिय थे। हृदयेश जी के पालन-पोषण, इनकी शिक्षा-दीक्षा में उनका बहुत बड़ा हाथ था। अपने चाचा जी की अनुशासनप्रियता और व्यवस्थाप्रियता हृदयेशजी में भी है।

हृदयेशजी चार भाई हैं। सबसे बड़े आप हैं। दूसरे कपिलदेव अपने पिता की तरह ही किसान हैं; स्वपाकी हैं,-खेतों के बीच रहते हैं। तीसरे सूर्यदेव शर्मा की रुचि समाज सेवा में रही है। दो बार मध्य प्रदेश की विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं। अब आध्यात्मिक जीवन बिता रहे हैं। इस समय दतिया में पीताम्बरा पीठ की सेवा में नियोजित हैं। चौथे राजदेव कलकत्ते में ट्राम विभाग में थे। अब अवकाश ग्रहण कर कठउत गाँव में रहते हैं।

हृदयेश जी के दो पुत्र हैं। बड़े वंशनारायण शर्मा रेणुकूट (मिर्जापुर) के बिड़ला आलम्यूनियम कारखाने में श्रम अधिकारी हैं। छोटे ब्रह्मानन्द सेना में इस समय कप्तान हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हृदयेश जी को पढ़ने-पढ़ाने से वचपन से ही लगाव रहा है। हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत और बँगला में आपकी गति है। रामचरित मानस, गीता और भागवत आपके प्रिय ग्रन्थ हैं।

दो अक्तूबर १९२९ को महात्मा गान्धी गाजीपुर आए थे। उनके आगमनने समूचे जनपद में एक अभूतपूर्व जागरूकता ला दी थी। उसी का परिणाम था कि १९३१ में हाईस्कूल करने के वाद हृदयेश जी भी स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े और पढ़ाई जहाँ की तहाँ रह गयी; किन्तु यह विद्यालयी शिक्षा की बात थी। उनका अध्ययन आज भी बड़ा नियमित है स्वतंत्रता आन्दोलन के सिपाही होने के नाते आपको जेल भी जाना पड़ा। १९३२ में स्वराज्य भवन ( इलाहाबाद ) पर धावा बोलने के सिलसिले में आप २६ जुलाई को गिरफ्तार हुए। दण्ड मिला, छ महीने का कठोर कारावास और दस रुपया जुर्माना। जुर्माना न देने पर छ सप्ताह की अतिरिक्त सजा। जेल से लौटने के वाद आपने मुख्यतः पठन-पाठन और लेखन को अपनाया। राजनीतिक संस्था भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में १९६० तक कर्मठ सदस्य के रूप में बने रहे। नेता बनना आपने कभी पसन्द नहीं किया; किन्तु कार्यकर्ता बनने में कभी किसी ने पीछे नहीं पाया।

समाज-सेवा की लगन प्रारम्भ से ही थी। स्काउट बनकर मेलों में काम करना; थके-हारे को सहारा देना और समाज-सेवी संस्थाओं को प्रोत्साहन देने जैसे काम आपकी आदत में शामिल थे। गाजीपुर कुष्टाश्रम के संस्थापक सदस्यों में आप प्रमुख थे। आज यह जनपद में अपनी जैसी अकेली संस्था है।

पत्रकारिता में भी आप की रुचि रही है। सन् १९४९ से लेकर १९७८ तक आपने प्रमुख हिन्दी साप्ताहिक 'लोकसेवक' का संचालन और सम्पादन वड़ी सफलता से किया। आज, संसार, सन्मार्ग, स्वतंत्र भारत, नवजीवन, लीडर अमृत वाजार पत्रिका, नार्दर्न इण्डिया पत्रिका, स्टेट्समैन, टाइम्स आफ इण्डिया पायनियर, नेशनल हेरल्ड आदि अनेक हिन्दी-अंग्रेजी पत्रों के आप संवाददाता रहे हैं और कुछ के तो आज भी हैं।

कविता से लगाव जैसे हृदयेशजी की घुट्टी में रहा है। यों तो उर्दू में भी आप शेर कहते रहे हैं। आपकी एक पंक्ति मुझे भूलती नहीं :—

उँगलियाँ मुझपर ज़माने की उठीं,
और नाहक़ आप क्यों शरमा गये ?

किन्तु हिन्दी में आप ने काफी लिखा है; जिनमें क्रान्तिकारी भावनाओं से भरी जोशीली रचनायें; प्रेमगीत, व्यंग तथा कला काव्य आदि सभी प्रकार की कविताएँ हैं। प्रारम्भिक गीतों का एक संग्रह तो किसी प्रकाशक ने खो दिया;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



किन्तु बाद की रचनाओं के संग्रह 'युवक से', 'हिमांशु', और 'पथदीप' नाम से प्रकाशित हैं। काफी कवितायें अप्रकाशित पड़ी हैं; जिन्हें प्रकाशित करने की ओर हृदयेशजी ने कभी ध्यान नहीं दिया।

जीविका के लिए प्रारम्भ में आप एक मुस्लिम स्कूल में अध्यापक थे, बाद में स्वभाव की मुक्तता ने पत्रकारिता और स्वतंत्र लेखन की ओर मोड़ा। समाज-सेवा पहिले आप एक कांग्रेस कार्यकर्त्ता के रूप में करते रहे, किन्तु १९६० में आप राजनीति से अलग होकर सर्वोदय आन्दोलन में सम्मिलित हो गए। कई वर्षों तक आप जिला–भूदान यज्ञ के संयोजक रहे। अब किसी भी संस्था से सम्बद्ध नहीं हैं, हाँ समाज-सेवा और स्वतंत्र लेखन तो जैसे स्वभाव बन गया है। अतः इन दो कामों से अपने को रोक पाना उनके लिए न तो सम्भव है न काम्य।

गाजीपुर में साहित्यिक रुचि जगाने का पूरा श्रेय हृदयेशजी को है। इसका प्रारम्भ इन्होंने कवि सम्मेलनों तथा स्कूलों में कविता-निवन्ध प्रतियोगिताएँ करा कर किया। एक सुकवि-मंडल की भी स्थापना की, जिसकी बैठकें प्रति मास होती थीं। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को भीं उसका मन्त्री रहने का सौभाग्य मिला था। हृदयेशजी उसके अध्यक्ष थे। उसके माध्यम से नियमित रूप से जनपद, मुख्यतः नगर की साहित्यिक रुचि का संस्कार होता रहा। प्रसन्नता की बात है कि वह संस्था 'कवि-परिवार' के रूप में आज भी अस्तित्व में हैं और हृदयेशजी आज भी उसके अध्यक्ष हैं। गाजीपुर नागरी प्रचारिणी सभा को अस्तित्व में लाने का श्रेय भी हृदयेशजी को ही है।

इस तरह राष्ट्रसेवी, समाजसेवी, अनुशासनप्रिय, निर्भीक और दृढ़प्रतिज्ञ हृदयेशजी वहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। 'सत्यासत्य' इनके व्यक्तित्व के सभी पक्षों तथा इनके वहुमुखी अनुभव की सारी सम्पन्नता का मणिकांचन योग है, जिसे युग के समग्र 'सत्य', समग्र 'शिव' और समग्र 'सुन्दर' का निचोड़ कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी। युग से उद्‌भूत इस कृति में सर्वयुगीन तथा सर्वदेशीय कालजयी सत्य का उद्‌घाटन कवि ने जिस प्रखरता से किया है, वह पढ़ने और सुनने ही योग्य है। इसके प्रकाशन के अवसर पर मैं साहित्यगुरु श्रद्धेय हृदयेशजी के प्रति अपना नमन अर्पित कर अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ।

दिल्ली,
३–४–८०

भोलानाथ तिवारी
एम. ए. डी. फिल्० (साहित्य)
डा० लिट्० (भाषा विज्ञान)
हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# पुस्तक-परिचय

मुझ जैसे अनेक लोगों को साहित्य-सेवा की दिशा में प्रेरित, प्रोत्साहित करने वाले और कवियों के काव्य गुरु श्री श्रीकृष्णराय 'हृदयेश' का महाकाव्य 'सत्यासत्य' उनके जीवनव्यापी संघर्ष और मूल्य-चिन्तन का महत्तम निष्कर्ष है। लगभग सात हजार पंक्तियों के इस विशाल काव्य-ग्रन्थ में 'महाभारत को केन्द्र मान कर सत्-असत् के शाश्वत संघर्ष को विश्लेषित किया गया है। कवि की दृष्टि में यह संघर्ष अपरिहार्य है। सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग में इसकी अटूट परम्परा है। यह संघर्ष क्या ऐसे ही चलता जायगा ? मनुष्य जाति की पीड़ा—भोग की नियति ऐसे ही बनी रहेगी ? महाकाव्य के अन्त में इन प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट है। इसलिए कृति का मूल्य चिंतन वहुत साधार और गम्भीर हो जाता है।

'सत्यासत्य' के महाकवि का शिल्प संगठन पुराने महाकाव्यों को दृष्टिगत रखते हुए सर्वथा नये स्तर का है। लगभग आधे तक कथात्मक प्रवृत्ति प्रधान होती है। इसके उपरान्त कथा को चटपट एक नुकीले विन्दु पर लाकर कवि इसके इर्द-गिर्द सघन चिन्तनात्मक जाल फैला देता है। इस जाल में तत्कालीन जीवन से लेकर समकालीन युगीन जीवन तक छन उठता है। 'याद किसकी सँजोयें, भूत भ्रमात्मक ही हैं', जैसी विचार गर्भित पंक्तियों से महाकाव्य का आरम्भ होना इस बुद्धिवादी युग के अनुरूप होता है; किन्तु आगे चलकर वारम्बार आस्था का तरल धरातल गहराई के साथ उभरता है। दूसरे अध्याय का आरम्भ कृष्णार्चन से होता है। प्रथम में वन्दना की जगह विचार होते हैं वास्तव में 'सत्यासत्य' की वन्दनाएँ भी नये स्वर की हैं। वन्दनाओं से ही कथा की शाखायें फूट पड़ी हैं। तीसरे अध्याय के आरम्भ में ईश्वरवादी दार्शनिक चिन्तन की गहराइयों में डूबा कवि झटके से कथा-सूत्र लेकर आगे बढ़ जाता है। ये दार्शनिक और मूल्यवादी चिन्तन वास्तव में इस महाकाव्य की प्राणधारा जैसे हैं। चौथे अध्याय के आरम्भ में भी कवि बुद्धि की अधिष्ठात्री शक्ति वीणापाणि की स्तुति करते हुए देर तक ऐसी ही विस्तृत दार्शनिक उड़ान लेता दृष्टिगोचर होता है। पाँचवें में व्यास स्तवन, छठवें में अदृश्य-अज्ञात महिमावान की महिमा का उद्घाटन-गान; आठवें में रहस्याकुल चिन्तन के साथ प्रणति; नवें में कृष्ण-कथा, इस काव्य-कथा-यात्रा के विशिष्ट आस्था-वादी पड़ाव हैं। प्रथम अध्याय और अन्तिम दसवाँ, ये दोनों इतने प्रश्नाकुल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हैं तथा इनमें कथा भूमि ऐसी विरल है कि आस्थावादी मानसिकता के लिए अवकाश नहीं होता है।

प्रथम अध्याय महाभारत के शलाका पुरुष भीष्म के अद्वितीय त्याग से प्रारम्भ होता है तथा उसे एक नया सार्वभौम अर्थ प्रदान करने का प्रयास किया गया है। इस गहन विरागपूर्ण निराशावादी चिन्तनधारा में डूबे कवि को अतीत और वर्तमान पर आस्था नहीं है। वह भविष्य के प्रति कुछ आस्थावान होने को होता है; परन्तु वर्तमान की परिस्थितियाँ-गतिविधियाँ उसे द्विधाग्रस्त बना देती हैं। उसे लगता है कि यह समूचा सृष्टि-विकास अन्धकार और प्रकाशका द्वन्द्व है। धृतराष्ट्र और पाण्डु-पुत्रों का युद्ध अन्धकार और प्रकाशका अथवा असत्य और सत्य का युद्ध है। अत्यन्त व्यापक दृष्टि से इस पौराणिक कथा को नया अर्थ देने के लिए तथा विचार-क्रान्ति के एक महत्त्वपूर्ण आयाम का उद्घाटन करने के लिए कवि ने बहुत धैर्यपूर्वक प्रथम और अन्तिम अध्याय का वैचारिक तालमेल बैठाया है। अन्तिम अध्याय उपसंहारात्मक है। विश्व में चल रहे परिवर्तन को बहुत गम्भीर, मार्मिक, संवेदनीय, भावाकुल दार्शनिक और ऐतिहासिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। कलियुग के अन्धकार को काटने के लिए महावीर, गौतम और अशोक से लेकर गांधी–अरविन्द तक जैसे महापुरुषों–औतारों की चर्चा करके कवि कहता है—'मानव-मन के तम को कर सके न विचलित'। कवि देखता है कि लोकतंत्रात्मक विकास के नाम पर चारित्रिक पतन का बाजार गर्म है। विश्व पर संहारक शस्त्रास्त्रों की होड़ से विनाश के घनघोर बादल मँडरा रहे हैं। तब समाधान क्या है? कवि-धारणा है कि एक औतारिक महापुरुष आता है और असत् का अँधेरा हट जाता है। किन्तु उसकी छाया हटते ही यथास्थिति हो जाती है। समस्या का हल एक अवतार के बूते का नहीं। कवि की धारणा है कि "अब हर प्राणी को रामकृष्ण बनना है।" फिर वह कहता है कि "अवतार ब्रह्म का ही होता है जन-जन।" कवि का यह चिन्तन महाकाव्य को निराशावादी होने से बचा लेता है। पन्त के 'लोकायतन' का भी यही संदेश है। महाभारत और युग-युग के महाभारतों की पुनरावृत्ति रोकने का एकमात्र यही मार्ग है।

'सत्यासत्य' के मर्म को पाठकों के मन पर अधिक स्पष्टता के साथ खोलने के लिये कवि ने इसके दस सर्गों को आकर्षक उपशीर्षकों में प्रस्तुत किया है। उदय, उभार, प्रसार, विभेद, प्रोत्साहन, वर्धन, पोषण, संघर्ष, संतुलन और पुनरावृत्ति के रूप में अध्याय-विभाजन पर्याप्त अर्थगर्भित और सांकेतिक है। 'उदय' में भीष्म-प्रतिज्ञा से लेकर नियोग द्वारा धृतराष्ट्र पाण्डु और विदुर के जन्म की कहानी है। 'उभार' में तीनों का बचपन, हस्तिनापुर का वैभव,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



समाज-व्यवस्था तथा तीनों के विवाह का प्रसंग है। 'प्रसार' में कुरु के शौर्य्य तथा पाँचों पाण्डव के जन्म से लेकर कुन्ती की मनोदशा आदि का चित्रण होता है। साथ ही साथ इसमें भावी विपत्ति की आशंका को भी प्रस्तुत कर दिया गया है। 'विभेद' में यह आशंका स्पष्ट हो जाती है। वन-विहार के भोज में भीम को विष देकर मार डालने का असफल प्रयास होता है। गुरु द्रोण और द्रुपद का प्रसंग, लाक्षागृह-दाह, पाण्डवों का अज्ञात वास, द्रौपदी-स्वयंवर तथा विवाह आदि की घटनायें इसी अध्याय में समेटी जाती हैं। 'प्रोत्साहन' की मुख्य घटना पाण्डवों का विवाहोपरांत वापस आकर इन्द्रप्रस्थ में अपनी पृथक् नयी राजधानी बनाना और कृष्ण की मैत्री की पुष्टि है। राजसूय यज्ञ के बाद कृष्ण का अभिनन्दन होता है। इस प्रकार इस अध्याय में कृष्ण को सार्थक उभार मिलता है। 'वर्धन' में इन्द्रप्रस्थ के वैभव से हस्तिनापुर की द्वेष-वृद्धि, द्यूतक्रीड़ा का आयोजन, द्रौपदी का अपमान तथा अवश्यम्भावी संघर्ष की नींव को प्रस्तुति है। आठवें अध्याय 'संघर्ष' में अगले महाभारत युद्ध तक की घटनायें अप्रत्यक्ष रूप से आ जाती हैं। कवि युद्ध का वर्णन न कर उसके निष्कर्ष का सर्वेक्षण प्रस्तुत करता है। युद्धोत्तर स्थितियों में समायोजन के बाद उत्तरा के गर्भ से परीक्षित के जन्म आदि तक की घटनायें इसी अध्याय में आ गयी हैं, क्योंकि कलियुग के आगमन तक कथा को पहुँचाना है। 'संतुलन' में सचमुच संतुलन आ जाता है। पाण्डवों की—प्रकाश की अर्थात् सत् की विजय का एक चक्र पूरा होते ही फिर परीक्षित और कलियुग की मुठभेड़ के बाद असत् घूमकर ऊपर आ जाता है। अन्तिम अध्याय पुनरावृत्ति में आज के जिए जाते विश्व-जीवन की अन्धकाराच्छन्न असत् धर्मिता की कवि द्वारा सटीक व्याख्या हो जाती है। इस प्रकार 'सत्यासत्य' की कथाभूमि को अत्यन्त सुविचारित ढंग से संगठित किया गया है।

आधुनिक युग के महाकाव्यों में रूपवादी विधान को प्रोत्साहित नहीं किया जाता हैं। रस, भाव और अलंकार की जगह विचार और चिन्तन की प्रतिष्ठा इस वैज्ञानिक बुद्धिवादी युग के अनुरूप पड़ती है। 'सत्यासत्य' में यत्र तत्र कई प्रकार के अलंकार सहज रूप में दृष्टिगत हो जाते हैं पर वास्तविकता यह है कि कथात्मकता में कवि को उनका ध्यान उनकी ओर तनिक नहीं होता है। रस और भाव के स्थान पर उसने अपने इस आधुनिक कथा-काव्य को विचारों से सज्जित किया है। 'द्वापर', कुरुक्षेत्र और 'लोकायतन' में भी इसी आधुनिक काव्य-प्रवृत्ति को देखते हैं। वस्तु वर्णन और छन्द योजना में कवि परंपरित महा-काव्यों से जुड़ा है और इसी में उसकी कवित्व-शक्ति का निखार भी है। प्रत्येक अध्याय में छन्द बदल जाते हैं। छन्द भी कवि के अपने ही हैं। कुछ का प्रयोग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बिल्कुल टटका सा लगता है। उर्दू की छोटी बहर के शेर का विस्तृत पैमाने पर हिन्दीकरण 'हरिऔध' के बाद प्रथम बार 'सत्यासत्य' में देखने को मिलता है। पूरा पाँचवाँ अध्याय उर्दू की चलती चुटीली लोचमय और खुनखुनी छन्द भंगिमा और सादगी भरी बयानबाजी में उजागर है—

द्वेष की आग बुरी होती है,
आपसी लाग बुरी होती है।
देखते ही कलह सजग सत्वर,
क्रोध की माँग बुरी होती है॥

वस्तु वर्णन का जो वैभव इस महाकाव्य में बिखरा है, वह कम ताजा नहीं है। द्रौपदी-स्वयंवर को कवित्वमय विस्तृत रूपाकार देते ऐसा लगता है कि कवि तुलसी और केशव के सीता-स्वयंवर को भूलता नहीं है। व्यास और कृष्ण के वर्णन में गहराई है। पाञ्चाल भूमि, हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, द्वारिका और रैवतक मेला का चित्रण प्रभावशाली है। प्रकृति-वर्णन सातवें अध्याय में है। वर्षा, शरद और हिमालय के अतिरिक्त इसमें दो सौ पंक्तियों का विस्तृत द्वैतवन-वर्णन आरम्भ में ही टँका है। इसके माध्यम से प्रकृति-वर्णन की परम्परा का निर्वाह बड़ी कुशलता से किया गया है। कवि मूल्यवादी संवादों में अधिक रमता दृष्टिगोचर होता है। पाँचवें अध्याय में युधिष्ठिर से कृष्ण १६८ पंक्तियों में कुशल-समाचार पूछते हैं; जिसमें समाज व स्वास्थ्य से सम्बन्धित वैसे ही प्रश्न हैं, जैसे वाल्मीकि रामायण में भरत से रामचन्द्रजी द्वारा पूछी गयी समाचारावली में दृष्टिगत हैं। आठवें अध्याय मे ६० पंक्ति की एक नयी गीता भी विद्यमान है। युद्ध और सन्धि पर इस अध्याय की कवित्वमय टिप्पणी पर्याप्त विचारोत्तेजक और मौलिक हैं। आधुनिक प्रजातांत्रिक प्रभाव का भी उत्कर्ष है। विजयोपरान्त सन्तुलन के लिए पाण्डव कृष्ण से परामर्श लेते हैं। कृष्ण जोरदार शब्दों में प्रजातंत्र की वकालत करते हैं। राज यज्ञ की जगह प्रजा यज्ञ और राजकोष की जगह प्रजाकोष आदि में प्रजा पक्ष को प्रभावशाली ढंग से उभारा गया है। "धरती पर स्वामित्व नहीं होना चाहिये किसी का" जैसी समाजवादी दृष्टि से लेकर कृषि विकास, नव निर्माण तथा अनुशासित जीवन को इस महाकाव्य में युग सापेक्ष दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। कलियुग और परीक्षित के संवाद में धर्म-अधर्म और सुख-दुःख आदि को लेकर बहुत मूल्यवान विचार प्रकट किये गये हैं। सातवें अध्याय में क्रोध और क्षमा को लेकर द्रौपदी और युधिष्ठिर का संवाद भी अत्यन्त मार्मिक है। नैतिक जीवन का यह निर्णायक प्रकरण अपने आप में पूर्ण पवित्र उपनिषद जैसा है। इन संवादों को पढ़कर केशव की 'विज्ञान गीता' याद आ जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



उक्त विशिष्ट वर्णन स्थलों को छोड़कर शेष कथा भाग में कवि ने समास शैली का आश्रय लिया है। कथा कहना कवि का उद्देश्य नहीं है। वह मात्र माध्यम है। इसलिए उसके नियंत्रण-संयमन की दिशा में वह काफी सचेष्ट होता है। अधिक से अधिक कसाव कथाभाग को दिया जाता है। साथ ही इस बात की भी सतर्कता बरती गयी है कि वह कोरा वर्णन मात्र होकर न रह जाय। इसके लिए शब्दावली में फड़कती हुई ताजगी और अनुरंजनकारी उतार-चढ़ाव भर-कर कवि उसे आकर्षणयुक्त प्रवाह से जोड़ देता है। महाकाव्य में यह प्रवाह उत्तरोत्तर तीव्र होता गया है। सहज कवित्व के इस वाङ्मय निखार को कवि के सहज व्यक्तित्व से जोड़कर मूल्यांकन करने में सुविधा होगी। 'युवक', 'हिमांशु' और 'पथपर' तीन काव्य-संग्रहों के वीच उसकी साधना का यह चरम शिखर उभरा है। वीच के लम्बे अन्तराल की विचार-परिपक्वता इस महाकाव्य की सुदृढ़ नींव वन गयी है। सीधे-सादे, संतुलित, नपे-तुले विचारनिष्ठ जीवन का सार सँजोकर हृदयेशजी ने जिस महाकाव्य का प्रणयन किया है, वह अपनी उत्तरवर्ती भद्र वैचारिकता से पाठकों को निःसन्देह आकर्षित करेगा। गांधीवादी आदर्शों के लिए समर्पित कवि से युगीन परिप्रेक्ष्य में पाठक जो भी रचनात्मक माँग कर सकता है, वह कृति में सहेज कर प्रस्तुत कर दी गयी है। आदर्श, मूल्य, आस्था, अनुशासन, शान्ति और सत्यनिष्ठा दुर्भाग्यवश आज के चालू वाजार के सौदे नहीं रह गये हैं। यही कारण है कि ये वहुत महँगे हैं और इनके ग्राहकों की संख्या अत्यन्त कम हो गयी है। यह अनुभव किया जा सकता है कि वहुत कठि-नाई से वाजार के हल्ले से दूर, आत्मलीन होकर इन महँगे सौदों के प्रति कवि ने पूर्ण न्याय किया है।

हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
ग़ाजीपुर।

विवेकी राय
पी-एच०डी० ( हिन्दी साहित्य )

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# अभिनन्दन

पं० जवाहरलाल नेहरू अपने युग के प्रबुद्ध चिन्तकों में अग्रगण्य थे। नवीन और प्राचीन मानव समाज की चिन्तनधारा के संघर्षात्मक द्वन्द्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए जनवरी १९६४ में उन्होंने कहा था :—

"The chief concern that fills my mind is how to find synthesis between the old and the new; because I do not find it good enough to discard the old and obviously, I cannot discard the new."

पंडित नेहरू के विचारों में जो प्राचीन है, वह अग्राह्य नहीं और जो आधुनिकतम है, वह उपेक्षणीय नहीं। प्रश्न यह है कि दोनों का तालमेल कैसे बैठाया जाय। जहाँ तक विचारों का प्रश्न है, प्राचीन रूपान्तरित होकर अर्वाचीन में घुल-मिल जाता है और अलक्षित रह कर अत्याधुनिकतम विचारों को भी प्रभावित करता रहता है। इस विचार को 'सत्यासत्य' के रचनाकार ने प्रारम्भ में ही स्पष्ट कर दिया है :—

'अपनी ही अनुकृति कल ने सजायी आज,
कल का मुखौटा बाँध आज रहा है विराज।'

कल और आज के वैचारिक ऊहापोह में समाज को फँसाना केवल भ्रम का सृजन करना है। यह कहना कि कल अच्छा था, आज बुरा है; तथ्यपरक नहीं होगा। साथ ही यह कहना कि कल निहायत वाहियात था, परम्पराओं और अन्धविश्वासों का अन्धकार युग था और आज का वैज्ञानिक युग मानव समाज को विकास की ओर ले जाने वाला तथा विभिन्न उत्प्रेरक विचारों का गुलदस्ता है, बहुत सही नहीं होगा। मानव-संवेगों के अधीन तबके और अबके समाज में कोई विभाजन रेखा नहीं। आज का अणुयुग मनुष्य को विकासोन्मुख करेगा, इसका भी कोई भरोसा नहीं। अणु युग तो दुधारी तलवार की तरह समाज की गर्दन पर लटक रहा है। आशा की जा सकती है कि अणु युग हमें विकासोन्मुख करेगा, किन्तु साथ ही यह भी आशंका है कि कहीं यह समूची सृष्टि को ही न निगल जाय। ऐसी द्विधा की स्थिति में रहने वाले समाज को भविष्य में ही आशा की किरण की कल्पना हो सकती है। समाज की इसी मनोदशा का चित्रण कवि ने प्रारम्भ की चार पंक्तियों में किया है—

"याद किसकी संजोयें, भूत भ्रमात्मक ही है,
'वर्तमान भूत का विशुद्ध बकवक ही है;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



शायद भविष्य नवजीवन प्रदान करे
अणु युगी चिन्तन भी एक सीमा तक ही है।"

साहित्य समाज के विचारों की तिजोरी होता है। आज साहित्य में भी प्राचीन और अर्वाचीन की वहस छिड़ी हुई है। पुरानी शराव को नयी बोतलों में भर कर या उन्हें रंगायित कर अत्याधुनिक होने की होड़ लगी हुई है। प्रश्न विचारों का नहीं, वरन् विचारों के कार्यान्वयन की पद्धति का है। लक्ष्य एक है, वाहनों की गति-विभिन्नता है। इन विभिन्नताओं को मिटा कर समाज को एक ऐसी गति देना, जिसमें लक्ष्य को छूने की क्षमता हो, मार्ग में ही टकरा कर चूर होने का खतरा न हो, पण्डित नेहरू की चिन्तन-धारा थी। साहित्य के क्षेत्र में और मुख्यतः काव्य रचना की दिशा में प्राचीन और नवीन का सुखद सम्मिश्रण करके 'सत्यासत्य' के कवि ने नेहरूजी को चिंतन प्रक्रिया के साथ अपने को जोड़ा है। सम्भवतः इसी को लक्ष्य करके इस ग्रंथ के भूमिका लेखक सुविख्यात विद्वान् पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी ने लिखा है कि 'सत्यासत्य' का प्रकाशन एक साहित्यिक घटना है।

मानव संवेगों का द्वंद्व जिस स्पष्टता से महाभारत की कथा में परिलक्षित है, अन्यत्र कहीं सम्भव नहीं। अतः 'सत्यासत्य' में महाभारत की कथा को आधार बनाकर पूर्व संस्कारित समाज को कवि ने उसकी ही वस्तु दी है और उसके अर्धचेतन संस्कार को चैतन्य करने का प्रयास किया है। अभीष्ट पूर्ति के लिए जितने पात्रों की आवश्यकता रही, उतने ही पात्रों को कवि ने अपने ग्रंथ में स्थान दिया है। हर पात्र 'सत्यासत्य' के संघर्ष में अपनी सटीक भूमिका निभाते दृष्टिगत हैं। मानवीय मूल्यों की स्थापना कवि का लक्ष्य है। इनकी उपयोगिता जितनी पहिले थी, उतनी ही आज भी है। समाज में जब तब वायु की तीव्र गति दीपक को झलमला देती हैं; किन्तु दीपक सदा को बुझने वाला नहीं है। वायु की तीव्रता मद्धिम हो, कवि का सारा प्रयास इसी हेतु जान पड़ता है और युधिष्ठिर, विदुर तथा परीक्षित जैसे पात्र भगीरथ बन कर उसकी विचार-गंगा को मानसिक धरातल पर उतार रहे हैं।

साहित्यमें मेरी अभिरुचि बराबर रही है, किन्तु साहित्यिक समीक्षक मैं कभी भी नहीं रहा। अतः साहित्य में औचित्य और अनौचित्य पर मेरा कुछ कहना औचित्य की सीमा से बाहर होगा। हाँ, साहित्य प्रेमी के नाते अपनी रुचि के व्यक्तीकरण को मैं अपना अधिकार मानता हूँ। मुझे कविता वही अच्छी लगती है जो छन्दबद्ध हो और छन्दबद्ध कविता यदि बोधगम्य हो तो फिर क्या कहना। 'सत्यासत्य' छन्दबद्ध रचना है, जिसमें पाठकों को कहीं भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अँटकाव की दुरूहता नहीं मिलती। सम्प्रेषणशीलता इसका श्लाघ्य गुण है। अतः मेरे जैसा पाठक इसे निश्चय ही पसन्द करेगा।

दो शब्द 'सत्यासत्य' के यशस्वी कवि के लिए। वे मेरे सहोदर अग्रज हैं। जब से मैंने होश सम्हाला और आदमी को परखने की समझ पायी तब से मैं इनको समझने का प्रयास कर रहा हूँ। ये मानवता के कितने अगाध धनी हैं, अब तक थाह नहीं लगा सका। 'सत्यासत्य' में जितने मानवीय मूल्यों का उल्लेख हुआ है, प्रायः सब इनकी निजी पूँजी हैं। सामाजिक दृष्टि से सीमित परिवार में रहते हुए भी हर मानव को अपने परिवार का सदस्य समझते हैं और हर प्राणी के लिए संवेदनशील हैं। अतः 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इनके लिए कोरा नारा मात्र नहीं है, वरन् उसके चिरंतन अभ्यासी हैं। जो इनकी निजी धरोहर है, उसे अपने जीवन के अन्तिम दौर में पूरे विश्व-समाज में बाँटने का उपक्रम इनके स्वभाव और क्रिया के अनुरूप है। उसे अपनाकर मैं, मेरे सीमित परिवार के सदस्य तथा इनके विश्व परिवार के लोग यदि उस भावसम्पदा से मालामाल हो सकें तो इनके अन्तिम दिनों के लिए बहुत बड़ा सम्बल होगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। मेरे परिवार में हर दृष्टि से यह सबसे बड़े हैं और सबके आदर के पात्र हैं। 'सत्यासत्य' की अप्रत्याशित रचना ने मुझे और मेरे परिवार के हर सदस्य को गौरवान्वित किया है। मैं पूरे परिवार की ओर से इनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और अन्त में इनके ही अन्तिम शब्दों को दुहराते हुए एक अपील करता हूँ :—

"युग युग से मानव पूर्वज सत्यान्वेषी,
दो 'सत्यमेव जयते' का जग को नारा।"

दतिया

**सूर्यदेव**
भूतपूर्व विधायक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# प्रकाशकीय

"सत्यासत्य" के प्रकाशन के उत्तरदायित्व का निर्वाह हमारे लिये प्रसन्नता का विषय रहा है। जिन लोगों ने हमें इस कार्य में सहायता दी है, उनके प्रति हम आभारी हैं। पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी, डॉ० भोलानाथ तिवारी, डॉ० विवेकीराय तथा पं० सूर्यदेव शर्मा के प्रति हम अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिन्होंने "सत्यासत्य" तथा इसके यशस्वी रचनाकार के संबंध में अपने विद्वत्तापूर्ण संतुलित विचार देकर पाठकों को ग्रन्थ की आत्मा से परिचित होने में सुविधा प्रदान की है। महावीर प्रेस के संचालक ने इसके मुद्रण का कार्य सम्हाल कर हमें उल्लेखनीय सहयोग दिया है।

हमारी कामना रही है कि अन्तरंग के समान ही "सत्यासत्य" का बहिरंग भी सुन्दर बने। मेरी व्यस्तता के कारण इसमें अभाव सम्भव है। इसके लिये उदार पाठक क्षमा करेंगे।

जुलाई २४, १९८०<br>
रेणुकूट

आस करण अग्रवाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# प्रथम सर्ग

■

# उदय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



याद किसकी सँजोयें, भूत भ्रमात्मक ही है,
वर्तमान भूत का विशुद्ध बकबक ही है;
शायद भविष्य नव जीवन प्रदान करे,
अणु-युगी-चिन्तन भी एक सीमा तक ही है।

भूत ने सुने हैं कुछ कम नहीं चीत्कार,
'त्राहिमाम् त्राहिमाम्' की न कम थी पुकार;
अवतार-कल्पना रही है बात भूत की ही,
देवासुर-महायुद्ध होते रहे बार बार।

कौन रस लेकर के आदि कवि का विवेक,
सजग हुआ था, हुआ करुणा का अतिरेक;
कहीं भोग-प्यास, कहीं योग-युक्ति-प्रणयन,
राग और विराग की समर-भूमि हर एक।

कितनों की सत्ता, सुख-भोग की मिटी थी प्यास ?
कितने थे, जो न बने स्वप्न-जागरण-दास ?
राज-परिवार या प्रशासित प्रजा जन हों;
सब में था तरुण तनाव, घोर संत्रास !

घुटन-प्रताड़ित सृजन की थी हर साँस;
जीवन में कानन-नगर-स्वर का विकास;
कौन सा सुखद-प्रेम-काव्य लिखने के लिए—
इतना महा महान व्यास ने किया प्रयास।

प्रेम की या छल की शकुन्तला कहानी रही,
दृष्टिगत खल नायकों की मनमानी रही;
उत्तम-अनुत्तम चरित्र पल्लवन हेतु—
मुखरित्त प्रौढ़ प्रतिभायें वरदानी रहीं।

रोम, मिस्र, ग्रीक, चीन, भारत के साम्राज्य,
तिरोधान हुए, कर कितने अकाज-काज;
ममियों में, अस्थियों में और खण्डहरों में—
मानवीय सभ्यतायें खोजी जा रही हैं आज।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



होमर के इलियड, ओडसी के गुण-गान,
पाश्चात्य-प्राच्य उपलब्ध काव्य प्राणवान;
जींवित हैं अपकर्ष, घोर संघर्ष लिए,
लौह-लेखनी से बने इतिहास के विधान।

अपनी ही अनुकृति कल ने सजायी आज,
कल का मुखौटा बाँध आज है रहा विराज;
ओढ़ खाल गाय की निहार रहा है हुँड़ार,
अबर-जबर की लुका-छिपी समग्र साज।

कल का पियादा चल रहा फरजी की चाल,
नीड़ चील्ह का है और मांस की है देख भाल;
आज के प्रदूषण में धूसरित दिनमान,
लाशों की सड़न बीच आज गिद्ध है निहाल।

कहीं बोली-बानी, कहीं रंग-धर्म का सवाल,
मेमने के संग में भेड़िये की शतरंजी चाल;
एक महाभारत रचाने कभी आये कृष्ण,
दो दो विश्व-युद्ध अभी लड़े गये विकराल।

तमसोमा ज्योतिर्गमय की मधुर बात,
पर तम तोम से प्रभा की चिन्तनीय मात;
कथ्य-तथ्य कटुता की आन्तरिक करामात—
पूछिये न छोटा दिन होता, होती बड़ी रात।

कल का था निर्माण, पूज्य एक भगवान,
किन्तु आज रोटी-दूध-मक्खन बने महान;
कल का अव्यक्त आज व्यक्त, मौन मुखरित,
अन्तर में कोलाहल, बाहर में मुसकान।

ध्वंस का परीक्षण है, कहलाता निर्माण,
अणु आयुधों में जग आज खोज रहा त्राण;
प्रतिभा समाज की उभरती विवाद बीच,
सड़ी गली लाश, कामना है मिले स्वस्थ प्राण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



शक्ति आज भी न न्याय-अनरीत सोचती है,
सत्ता हो स्वतंत्र न्याय का गला दबोचती है;
राज-शक्ति दो जबान वाली हुआ करती है,
करनी से जनता का अन्तर कचोटती है।

श्रमजीवी, शोषित को स्वर्ग दिखलाते लोग,
योजना की पीठ बिठा, उसे बहलाते लोग;
दिन में दुराव, रात में लगाव-पुचकार,
पूँजी को हैं सर्वं श्रेष्ठ टानिक पिलाते लोग।

वंश गत राज्य की पिपासा कहाँ हुयी दूर,
लोकतंत्र के विकास की है बात भरपूर;
स्वस्थ प्रतिरोध का मलीन, विखरित स्वर—
बन्द होने को है किया जाता किन्तु मजबूर।

आज भेद भाव के हैं जीवन ही स्वस्थ नहीं—
स्वर में उँचास और गति में न रोक कहीं;
घुटन में दम तोड़ रहा आज का प्रबुद्ध,
स्वार्थ जागरित, पुरुषार्थ की न बात रही।

कल का भविष्य है हमारा यह वर्तमान,
साँस-साँस में सजग आज भूत उपाख्यान;
ऐसा वर्तमान है, भविष्य को है अस्पृश्य,
तीनों का है साथ साथ चला करता विधान।

पल पल आज, कल का शरीर साधक है,
कर्म अनुप्रेरक, भविष्य-आराधक है;
अन्वेषण सत्य का, असत पड़ता है हाथ,
आज पर कल की प्रगति में न बाधक है।

सृष्टि सौम्य है, न सौम्य सृष्टि में त्रिभेद-भेद,
बात नीच-ऊँच, निज-पर की महान खेद;
कर्तव्य हीन सह्य होगा, यदि चाहता है—
सिंचित हो वह छीन दूसरे का श्रम-स्वेद ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



रक्त हीन क्रान्ति से समाज को रचाया जाय,
मुरझ रही है बेलि, ताप से बचाया जाय;
कवि-कल्पना को मूर्त रूप दिया जाय अब,
राम-राज्य-पद्धति को विश्व में चलाया जाय।

हिंसक अहिंसक की पीठ बिठलाया गया,
यत्र-तत्र नक्र-अश्रु सहज बहाया गया;
छोटे-बड़े राष्ट्र वाद सिंह को जगाया गया,
'एक विश्व' भावना को काट के खिलाया गया।

विश्ववाद-भावना असम्भव, अव्यवहार्य,
राष्ट्रवाद मानव का हितवाद अनिवार्य;
प्रबल पड़ी है कब 'एक विश्व' की पुकार,
मानस विलासियों का यह कौतुकीय कार्य।

मानव में आदिकाल से ही एक रूपता है,
मानवता शैशव में आज भी, अनूपता है;
स्यात् दे सके भविष्य इसको किशोर रूप,
वर्तमान में तो व्याप्त कूप मण्डूकता है।

अणु-परमाणु-अस्त्र-शस्त्र आज संहारक,
खोजने में जन मन तनिक न रहा थक;
चन्द्र का आरोहण, प्रमाद का उभार और,
मुँह में लगाम नहीं, बोल रहा अक बक।

सुनते हैं, रहा कभी रावण-युगी विकास,
पंच तत्त्व बने रहे मानव के क्रीत दास;
चन्द्र-सूर्य धरती के करद बनाये गए,
प्रतिभायें ऐसी थीं कि होता नहीं विश्वास।

दूसरा था महाकाव्य युग कृष्ण-पार्थ का,
नग्न नृत्य जिसमें हुआ था घोर स्वार्थ का;
मंत्र पूत अस्त्र-शस्त्र उसमें प्रयुक्त हुए,
चन्द्रयान की थी उसमें भी कही गयी कथा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



स्वार्थ था अचिन्त्य, चित सत खोजता ही रहा,
भव के भँवर जाल फँसा, धसा, डूब बहा;
पार्थ एक ही था, देखा जिसने विराट रूप,
कौन है मुमुक्षु, जिसने है कथ्य तथ्य कहा ?

सत्यमेव जयते की बात उसी काल उठी,
वृत्ति दुःशासनी भी वहीं विकराल उठी;
सत्यासत्य युद्ध, रण-चण्डी भी हुयी निहाल,
शस्य श्यामला, सुबन्द्य धरती हो लाल उठी।

गमनागमन क्रम है अटूट, अनिवार्य,
यह तथ्य किसी को भी नहीं समझाना आज;
देखना है, आने का न मार्ग अवरुद्ध होवे,
जाने को तो राज-पथ पर है खड़ा समाज।

आगमन रुकने न पाये. न खोये निजत्व,—
कामना, न कामना ने पाया कभी अमरत्व;
एक वंश ऐसा, डूबता है—काँपती है सृष्टि,
डूबते ही रहते अनेक वंश निःसत्व।

सत्यवती कुरुवंश को महान जानती थीं,
सृष्टिहित में वे इसे अनिवार्य मानती थीं;
अमृत को देना चाहती थीं सत परिधान,
परजीवी वृत्ति के वे बोल पहिचानती थीं।

देखती थीं—वंश में है आके पड़ा व्यवधान,
अपने ही धीरे धीरे होते जाते अनजान;
पूर्व पुरुषों ने युग युग से सँजोया जिसे—
उसकी विलुप्त होने जा रही है पहिचान।

सूर्य होता या उदित मन में उदासी लिए,
सावन सुहावन कहाँ था, घटा प्यासी लिए;
रात-दिन एक में थे चिपके, अभिन्न बने,
अविनाशी प्रकृति थी भावना विनाशी लिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राज-सुख-भोग-शक्ति सहसा हुयी मलीन,
गहरायी कालिमा कला-भवन में नवीन;
दूधिया सुयश को कहाँ की हवा मार गयी,
सिंहासन वैभव सहित, पर दीन-हीन।

इसमें वही है आभा, इसमें वही है रंग,
कहीं से भी हुआ नहीं इसका मलीन अंग;
धरती में चारो पग आज भी अटल-दृढ़,
मान-मर्यादा पहिले सी इसकी अभंग।

आज तक सेवकों की श्रद्धा का सुदृढ़ व्यास,
पहिले सा रात-दिन इसको मिला प्रकाश;
कामना की कौन कली सहसा सकुच गयी,
कामना से क्या न कभी होगा यह मुक्त-पाश।

महिमा महान का सदा इसे रहा सुपास,
आज भी है लिये वैभव की अनमिट प्यास;
कंचन की काया कहीं माया की न आँच जले,
सिमटा है अपनी परिधि में समेटे त्रास।

इसके कानों में सने चाटुकारिता के बोल,
कवियों ने इसको दिया है उक्तियों में घोल;
अपनी समाधि पर चुप चाप सोच रहा,
अपने को भाग्य की तुला में आज रहा तौल।

मेरे लिये होते रहे नरमेध अविराम,
भूतल पै किए गए कितने अकाम-काम;
नीच-ऊँच मानवों में सबने दुलार दिया,
चेतन की सृष्टि का मैं आज भी परमधाम।

रज से बटोर तेज मैंने किए अनाचार,
मैंने पाल रक्खो सदा रीझ-खीझ दुतकार;
मेरे कुविचारी वाक्य भी तो न्याय कहलाये,
देखता सदैव रहा मुझे विश्व-परिवार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ऋद्धि-सिद्धि यहाँ नत रहती थीं दिन-रात—
छिप सका मुझसे असत्यका–न–क्लान्त गात;
कोटि–कोटि मानवों का केन्द्र विन्दु बना हुआ—
मैंने मौन सुनी महापुरुषों की राय–बात।

सुना इन्द्र–आसन सा देव–देवियों का गान,
किन्नरी–परी का मैंने देखा दिव्य परिधान;
विश्व–वैभव था जिसे देख के सिमट जाता—
कंचन–खचित मैंने देखा माधवी विहान।

ऐहिक सुखों का कहीं है असीम अभियान,
होती कहीं दीन–दुखियों को धन–राशि दान;
विनत दरिद्रता, कुबेरता उठाये शीश—
एक दूसरे की किया करते थे पहिचान।

ऋषि–मुनियों से सुना एक से अनेक वाद,
जहाँ प्रतिबिम्बित हुआ न कभी अवसाद;
पुरुष–प्रकृति के मिलन से प्रभाव हीन—
पुरुष–प्रकृति का सुना था वाद–प्रतिवाद।

अविराम गति में प्रकट विश्व का स्वरूप,
सम थे विषम, हतधी में प्रतिभा अनूप;
राज्य की समस्त प्रजा पूजती प्रजापति को—
और यहाँ आश्रित हो रहा करते थे भूप।

मौन–मुखरित रहने की कला ने विनीत—
किसी को कभी न कोई करने दी अनरीत;
सभ्यता–सुसंस्कृति का सम्मुख प्रतीक बना—
रहा दरबार नित्य, एक रूप शत्रु–मित्र।

सातों सुख सृष्टि के रहे न कभी अनदेख,
लिप्त कितनों की कर डाली गयी भाग्य रेख;
ब्राह्मी–नीरजा के यहाँ बरद अनेक पुत्र—
मेरे सामने न कभी चला सके मीन–मेख।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



स्वप्न था, अजेय भीष्म होंगे कभी महाराज,
दृष्टिगत होगा कभी पूर्ण सत्य का समाज;
स्वप्न सत्य होता, यह विषय विवाद ग्रस्त,
सत्य ही मुझे तो हुआ स्वप्नरूप यहाँ आज।

माता को इन्होंने दिया, सुना कभी वाक् दान,
श्रवण किया न कभी राजकीय आह्वान;
मातृ–पितृ–भक्ति–बलिवेदी पर मूक प्रजा—
नित्य निरालम्ब कबतक होगी बलिदान।

सोचते यशस्वी होंगे वैभव का राज्य छोड़,
बात की रहेगी बात, सत्य का लगाव जोड़;
वंशगत कर्म से पतित क्या न होंगे कभी—
आज की प्रजा के हित चिन्तन का तार तोड़?

प्रण से सुबद्ध हैं तो क्षत्रिय की बात रहे,
यश की यश–श्री भी सदैव अवदात रहे;
वंशहीन वंश राजदम्भ क्यों बनाये रहे?
चन्द्रमा बिना न सजी तारकों की रात रहे।

जानता हूँ कटु कहता हूँ, करता हूँ पाप,
एतदर्थ सहना पड़ेगा मुझे परिताप;
किन्तु पाप–पुण्य के झमेले में पिसे समाज,
शीश पर दूसरों का लिए फिरे अभिशाप?

शासन विहीन भूप करे प्रण का प्रचार,
निराधार होके प्रजा रोती फिरे द्वार–द्वार;
शृङ्खला विहीन, तार तार, हीन हो समाज—
मुझसे न देखा जा रहा है यह अनाचार।

और मेरी गति है अचिन्त्य, हूँ सभी के साथ,
मेरी पीठ पर अब होगा किसी का न हाथ;
किससे लूँ आश्वासन, किसको करूँ आश्वस्त,
न्याय, दण्ड, राज्य, प्रजा आज सब हैं अनाथ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



वैभव का विश्व जहाँ किया गया बलिदान,
जिनके पगों में हुआ नत मुनियों का ज्ञान;
माता के भी पग सहसा हैं गतिहीन बने,
सृष्टि को जो दिला सकते हैं महिमा महान।

"माता के भी पग सहसा हैं गतिहीन बने"
इस वाक्य के हैं शब्द-शब्द सत्य, सार सने;
सृष्टि गति के महान चालक हैं पग मेरे,
अपने में पलने न दूँगी भाव अनमने।

सिंहासन! तुझको मिलेगा ओजपूर्ण हाथ,
मुकुट! तुझे भी अब दूँगी मैं सुदृढ़ माथ;
राज्य की प्रजा में पलने न दूँगी अवसाद,
राष्ट्र-हित-चिन्तन न रह सकता अनाथ।

भलीभाँति मातृ-पद को मैं पहिचानती हूँ,
भीष्म की प्रतिज्ञा ब्रह्मलीक, यह जानती हूँ;
माता-पुत्र का स्वतंत्र स्वत्व कहीं होता नहीं—
भीष्म और अपने में भेद नहीं मानती हूँ।

मानस सजग, उठी चिन्तन की खरधार,
हो निमग्न उसमें, लगी यों करने विचार;
मातृ-पितृ-भक्त भीष्म क्या कभी विमुख होंगे?
फलहीन होगा कभी माता का मधुर प्यार?

सक्रिय थी कार्यगति, पाने चली समाधान,
कर सके भीष्म मन में न कुछ अनुमान;
माता का सँदेश—"मिलने में न विलम्ब होवे"
मेरा मन आज चिन्ताकुल हुआ है महान।

महाशक्ति से किया गया है अभी आह्वान,
चिन्ता हारिणी को चिन्ता व्याप्त, विधि का विधान;
भगवन्! तेरी पूजा भी न अभी पूरी हुई,
सिद्धि रूप प्राप्त होने को है मातृ-वरदान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अचल, प्रबुद्ध, दृढ़व्रती, विनयी, अकाम,
आत्म बल लिए, नत शीश किए, मातृ-धाम—
चले-चले अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष साथ-साथ,
पाना ही उन्हें था कौन वरदान अभिराम।

राज्य श्री का तृणवत् जिसने किया हो त्याग,
ऐहिक सुखों से, वैभवों से हो जिसे न राग;
किसी कामना के वश में न जो हुआ हो कभी—
वही जानता है राग, वही जानता विराग।

'भीष्म मातृ-पद पर नत शत-शत बार',
नियमानुसार पद रज ले हुयी जुहार;
माता गद्गद् थीं, सप्रेम कहा—साधुवाद,
सिद्धि-सिद्ध संगम का प्राप्त हुआ सुखागार।

मौन का वहाँ था कुछ क्षण सुखदायी राज,
पूरे वायु मण्डल में शान्ति गयी थी विराज;
कम्पित हो माता के अधर यह बतलाते—
मन में मंथन, वाणी में सँकोच का समाज।

अविलम्ब भीष्म मन में था यह अनुमान,
यहाँ कोई विषम समस्या हुयी प्राणवान्;
चिन्ताकुल माता की हुयी हैं भावनायें आज,
सीधी-सादी बात के लिए है नहीं आह्वान।

'सारी सृष्टि का जो दुख-दारिद निवारिणी है,
माता कहते ही भव भीम भय हारिणी है;
कौन आप सा है, जो अशान्त मन शान्त करे,
चिन्ताकुल वही, जो अचिन्त्य गति कारिणी है?

'आप नर रत्न हैं, महान में महान यहाँ,
कौन कर सका गरिमा का अनुमान यहाँ;
माता कहलाने का मुझे भी अधिकार मिला,
आप से महानता है, आप से ही मान यहाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पितृ–भक्ति आपकी समाज को बनेगी सीख,
प्राणियों को आपकी प्रतिज्ञा की मिलेगी भीख;
शौर्य–वीर्य जिनके पराक्रम से धन्य हुए—
उन महापुरुषों में आप की रहेगी लीक।

जग जानता है, नित्य चाहते यही थे आप,
जनक न पावें पलभर कभी परिताप;
उनके लिए ही त्याज्य राज–सुख–साज हुआ,
उनके लिए ही लिया शक्तियों का अभिशाप।

राजकी परम्परा से आप रहे दूर दूर,
बचने का इससे प्रयास किया भर पूर;
किन्तु दैव का है कुछ और ही विधान यहाँ,
भाग्य—नाग—पाश मानने को सब मजबूर।

तेज पुञ्ज आपके पिताका हुआ अवसान,
राज—चंचला का अनुजों ने अपनाया मान;
पर भाग्य ने न भाग्य—श्रीके लिए छोड़ा उन्हें,
त्याग दिया काया का उन्होंने त्याज्य—परिधान।

देखती हूँ, भारत की राज्य—श्री है डांवा डोल,
शासन—व्यवस्था हो रही है अब अनवोल;
न्याय का प्रतीक सिंह–आसन उदास आज,
झाँकता असत्य आज तमका कपाट खोल,

शत्रुओं के शस्त्र सहसा उठेंगे झनकार,
सह्य हो सकेगी न अनैतिकों की ललकार;
इन्हीं नयनों से विश्व क्या कभी सकेगा देख—
केहरि के उर में शशक—शिशुका प्रहार ?

सम्भव है, शत्रु करें त्रस्त कभी रनिवास,
सम्भव है, राज—वंश बने कभी दीन—दास;
सम्भव है, वंशगत मान, महिमा महान्—
कलुषित, कायर मुखों का बने परिहास।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



शासन–व्यवस्था की रही न यदि कृपा कोर,
पनपेंगे अनाचारी, लम्पट, जुआरी, चोर;
बढ़ेंगे उच्छृङ्खल, समाज बीच अपराधी,
सदाचार संकट ग्रसित होगा घनघोर।

जिसकी रहेगी लाठी, उसकी रहेगी भैंस,
आततायी, डाकुओं से पीड़ित रहेगा देश;
धन, धान्य, वैभव पराभव को होंगे प्राप्त,
अनाचारियों का होगा राज्य मध्य समावेश।

न्याय की क्या परिभाषा, न्याय दे सकेगा कौन,
विलग करेगा कौन न्यायाधीश पानी–लौन;
भीत जनता की बार-बार उठेगी पुकार,
तैल डाल कान में सुनेंगे भला आप मौन ?

नग्न ललनायें होंगी, देख सकेंगे ये नैन ?
नग्न नृत्य पशुता करेगी, निकलेंगे बैन ?
मर्म सम्हलेगा ? सह लेगा कुवचन घाव ?
मृत्यु उपरान्त भी मिलेगा कहीं सुख—चैन ?

खोजते फिरेंगे सत्यका न कहीं होगा नाम,
मानेगा समाज अन्धकूप को ही सुखधाम;
परख असत्य—सत्य की न कहीं होगी शेष,
ब्रह्मवाद सुनके कहेंगे लोग राम—राम;

ब्रह्म यदि है तो तम ही है ब्रह्म का स्वरूप,
तम से जगत को मिला है जगमग रूप;
कहेगा असत्य, कौन कहता असत्य मुझे—
मैं ही सत्य, आदिशक्ति, वेद–शास्त्र अन्ध कूप।

सुनियेगा, सुन सकियेगा यह आयँ—बायँ ?
देख सकियेगा अनाचार बने निरूपाय ?
कोटि कोटि अपशब्द होंगे उपहार रूप,
सोच भी सकेंगे नहीं न्याय—न्याय का घेराव।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



प्रजाकी सुरक्षा का सदैव रखना है ध्यान,
अस्त–व्यस्त रूप में न हो समाज का विधान;
सृष्टि की परम्परा में हो न गतिरोध कहीं
वंशकी विभूति को मिले न कहीं अपमान—

अतएव निर्णय है—आप बनेंगे नरेश,
सम्भव है, कटु हो, बढ़ावे यह आत्म क्लेश;
इसे सत्यवती की समझियेगा बात नहीं—
यह तो है सृष्टि की नियंत्रिका का निर्देश।

जहां तक लौकिक—विधान का है सम्बन्ध,
मानना सभीको पड़ता समाज का प्रबन्ध;
रचना समाज की बताती हमको है यही—
वाध्य एक दूसरे का मानने को प्रतिबन्ध।

आपके पिता ने कभी टाली थी न मेरी बात,
बातों का भी किया नहीं कभी घात—प्रतिघात;
सृष्टि मध्य मेरी कामना ही सर्वोच्च रही,
वह भी किया गया, जो उन्हें भाया था न स्यात्।

राज—महिषी का मैंने पाया सुख, स्वाभिमान,
और राज—माता का भी मिला समुचित मान;
राजमाता राज्य के समाज का हो प्रतिनिधि—
अभिलाषिनी है, तम—रजनी का हो विहान।

प्रजा हो अधीर आपका ही मुँह देख रही,
मुझमें भी रह गया धैर्य्य अब शेष नहीं;
नाशवान भी विनाश अपना न चाहता है,
निर्माण—भूमिका का पात्र क्या स्वदेश नहीं ?

कंटक कीलित, पर मुकुट सम्हालना है,
'पुष्प शैय्या नही; कह राज को न टालना है;
परहित अपना अकाज करना ही होता
एक से समाज बड़ा होता, इसे पालना है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



एकतंत्र राज्य की विशेषता, बड़ाई यही,
शासक हो योग्य तो प्रजाको दुखदाई नहीं;
शासन में आपके बढ़ेगा सुख, शान्ति होगी,
ह्रास वहीं होता, जहाँ श्रम की कमाई नहीं।

पुत्रवत् प्रजापर शासक का होता भाव,
जनजन पर आपके स्वभावका प्रभाव;
शासन में आपके समृद्धशाली होगा लोक,
देश—भक्ति—भावना का चढ़ेगा अनूप चाव।

शासन का तारतम्य टूटने न पाये कहीं
राजनीति विद् शासकों की यही नीति रही;
शासन-व्यवस्था हित आपको भी सोचना है,
आपके अभाव में विकार कहीं होवे नहीं।

एक युवराज हमें इच्छित प्रताप वान,
राजनीति में सुदक्ष, सौम्य, पारखी, सुजान;
अपने विचार में स्वीकृति आपकी विचार-
करना मुझे है आपके विवाह का विधान।"

भावनायें माताकी अगाध, भीष्म थाहते थे,
सुनते थे, जिसे सुनना वे नहीं चाहते थे;
वंश, राज्य, प्रजाकी हितैषिता का भाव देख—
माताकी महानता को मन में सराहते थे।

कहने लगे विनम्र-आप सृष्टिचालिका हैं,
आप ही अशेष प्राणियों की परिपालिका हैं;
साँस-प्रतिसाँस बीच निहित प्रजा का हित,
दुख-दैन्य, भव के पराभव की घालिका हैं।

विश्व में विदित रही जिनकी महानता है,
जिनके प्रताप का सुरेश लोहा मानता है;
उन नृप शान्तनु की पार्श्ववर्तिनी सुदेवि!
आपके विवेक को विवेक भी न जानता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बात राजनीति, धर्मनीति की बताई मुझे,
देकर के स्नेह साथ साथ दी बड़ाई मुझे;
पाकर के जिसको प्रसन्न चित्त होता नित—
आपनेहीं वह यश कौमुदी दिलायी मुझे।

जिनसे हमारा सब कुछ इस विश्व बीच,
जिन्होंने बढ़ाया मनतरुवर सींच सींच;
यदि मुझसे ही सुख-शान्ति उनको न मिले,
कौन होगा धरा पर मुझसे अधम-नीच।

सुखद रहे सदैव आपका, पिता का प्रात,
सब कुछ त्याग के सचेष्ट रहा दिन-रात;
आप की मधुर वृत्ति मुरझे न, इस हेतु—
प्रण-बद्ध हुए मेरे मन, वाणी और गात।

जीवन में लूँगा कभी राज का न उपहार,
जननी-जनक का मिला था मधु सा दुलार;
यह थी प्रतिज्ञा मेरी, जिसे जानती हैं आप,
और प्रण था, न कभी लूँगा रमणी का प्यार।

इस पूत वंश की परम्परा रहे अटूट,
इसकी न मान-मर्यादा कोई सके लूट;
ध्यान इसका तो आपको भी रखना ही होगा,
राज-काज मुरझे न पीकर लहू का घूंट।

मानव का होता बात में ही वंशगत मान,
बात ही नहीं तो वंश का है व्यर्थ अभिमान;
बात रखता या बात छोड़ करता है बात—
इसी बात से है होती मानव की पहिचान।

भाग्यहीनता थी, हुआ अनुजों का अवसान,
संकट में आके पड़ा राज-काज का विधान;
ऐसे काल में ही धीरता की आँच सहने को—
प्रण प्राणियों का करता है व्यंग आह्वान।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राज्य-श्री बनी रही कभी न एकवंश पास,
एक को किया निहाल, एक को किया निराश;
त्याज्य कब कौन होगा, किसी को न ज्ञात हुआ,
प्राप्ति के लिए परन्तु नित्य हैं नए प्रयास।

यह इतिहास का अकाट्य मत, अनमोल,
भारत की राज्य-श्री सदैव रही डाँवाडोल;
एक से महान् एक शासन-व्यवस्था वाले—
देते रहे इसको सदा से ही अमृत-घोल।

और यह सिंहासन, कायरों का नहीं दास,
इसे अत्याचारियों का भाया ही नहीं सुपास;
चार दिन को ही कोई कर पाता मनमानी,
अन्त में है यह त्याग देता उसे अनायास।

सत्यासत्य का है विश्व, इसे विश्व जानता है,
तमको असत, सत ज्योति पहिचानता है;
पावस में घनतम बनता असत रूप,
चंचलता चमक को ही लोक सत मानता है।

असत पहिन लेता कभी सत परिधान,
सत कभी देता है असत का ही अनुमान;
कौन सत, कौन है असत, बतलाये कौन,
सत्यासत्य की कठिनता से होती पहिचान।

तर्क की तुला में जग चाहता झुलाना इन्हें,
चाहता है अनुकूल अपने बनाना इन्हें;
एक तथ्य कभी सत्य, है कभी असत होता,
जानता जगत दोनों रूप में बताना इन्हें।

सृष्टि क्रम में है बस सत्य यही एक बात,
सत्यासत्य दोनों साथ रहते हैं दिन-रात;
दिन-रात के मिलन को तो सन्ध्या कहा जाता,
रात-दिन के मिलन को ही कहा जाता प्रात।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तमका कपाट खोल असत की पहिचान—
करना भी सम्भव है कहलाये अनुमान;
बात देके बात रखना है सत्य या असत्य—
होना चाहिये न किन्तु इसका कठिन ज्ञान।

मानव की भावना का होता बड़ा उग्र रूप,
शत्रु-मित्र होते निज भावना के अनुरूप;
सत्यासत्य के समान ही हैं शत्रु-मित्र होते,
अपना ही रूप कभी जान पड़ता कुरूप।

शत्रु हो करेगा यदि कोई शस्त्र झनकार,
सुन पाऊँगा अनैतिकों की यदि ललकार;
पाहन का पवि से समुत्तर प्रदान होगा,
स्यार सिंह पर कर सकता नहीं प्रहार।

भीष्म यदि होंगे, नहीं होगा त्रस्त रनिवास,
मृत्यु का वरण जानता जो, कब होगा दास;
किसी बड़े वंश की न मान-मर्यादा कभी—
धूमिल हुयी है सुन कायरों का परिहास।

शासन-व्यवस्था कहीं एक सी न रही कभी,
बिगड़ी नहीं है इस देश की अवस्था अभी;
जहाँ है समाज, वहाँ शत्रु भी समाज के हैं,
वे भी अनावश्यक नहीं हैं, जानते हैं सभी।

वीर ही सदैव भोग करता वसुन्धरा है,
वीर का ही राज्य, यह सृष्टि की परम्परा है;
मत्स्य-न्यायसेही चलता है विश्व का विधान,
वसुधा की राजनीति इससे दिगम्बरा है।

जिनकी भुजाओं में भरा हुआ अकूत बल,
जिनकी सुतीक्ष्ण दृष्टि में है विश्व-हलचल;
जिनकी अधूरी कोई बात नहीं रह पायी,
उनके ही पास राज्य-श्री का है निवास-थल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अनाचार सबल है, सदाचार निरुपाय,
इसका विवेचन, बड़ों का हीन व्यवसाय;
अनाचार निबल जनों की गतिविधि बीच,
सबल का हर एक वाक्य कहलाता न्याय।

किस बलहीन को मिला है विश्व बीच न्याय,
न्याय ढूंढ़ते हैं लोग, होते जब निरुपाय;
सभ्य जग निबल को कहता है आततायी,
यहाँ दण्ड भोगती है निबलजनों की 'हाय'।

ललनायें नग्न होतीं, देखते हैं खुले नैन,
दानवीय नृत्य, खुलते हैं किसी के न बैन;
सुनकर करुण पुकार भीत जनता की—
कितने विकल होते त्यागकर सुख—चैन ?

सत्य औ असत्य की भी गति यहाँ है विचित्र,
जिसे हम करते हैं, सत्य वही है, पवित्र;
लाभ–हानि की है बनी सत्यासत्य परिभाषा,
करता असत्य शत्रु, सत्य करता है मित्र।

सुननी सभी को पड़ती है दुनिया की बात,
पग पग पर जग करता है दाव—घात;
जग–उपहास का जिसे है भय व्याप्त नित्य—
उसकी भी यश–श्री रही न कभी अवदात।

राज भी विडम्बना है, मन का विलास ही है,
लोकहित चिन्तन का छलिया प्रयास ही है;
इससे समाज विकसित हुआ है न कभी
इसमें समाज–व्यक्ति दोनों का तो ह्रास ही है।

राज्य की महानता है, अथवा प्रजा महान्,
आजतक इसकी भी हुयी नहीं पहिचान;
राज्य लोक–पालक या लोक पालता है राज्य—
कैसे कहा जाय, कौन किसका है वरदान !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बात बदली न जाती, निश्चय बदलता है,
बात का बदलना भलों को सदा खलता है;
देखना है भीष्म का अटल प्रण आप की ही—
सात्विक व्यवस्था पर टिकता या चलता है।

आप शक्ति शालिनी हैं, पूर्ण अपने में आप,
चाह आपकी न पा सकेगी कहीं परिताप;
आपकी कृपा की कामना का जग पोषक है,
आपकी कृपा की कोर खोना ही है अभिशाप।

चाह आपकी किसी को खल सकती ही नहीं,
सृष्टि भी कृपा विहीन चल सकती ही नहीं;
परम पराक्रमी पिता न जिसे टाल सके—
आपकी अटल बात टल सकती ही नहीं।

धर्म-मर्यादा भलीभाँति आप जानती हैं,
भीष्म की प्रतिज्ञा को भी आप पहिचानती हैं;
राज, वंश, प्रजा, न्याय, सकल समाज रहे,
सत्य का ही विश्व बसे, इसे आप मानती हैं।

चाहें यदि, विश्व की परम्परा न टूट सके,
शासन से वंश का लगाव भी न छूट सके;
आपको ही इसे भी समझ के निबाहना है—
पुत्र-कृत-प्रण का न चीर जग लूट सके।

आप जानती हैं, नभ साक्षी, विधु-अवतंश,
राजपुरुषों का जब हुआ है विलीन अंश;
राज्य की परम्परा अटूट रखने के लिए—
ब्राह्मणों से राज-पुत्रियों ने है चलाया वंश।

शास्त्र-धर्म संगत ही हमने है बात कही,
सम्भव है, इसमें भी कुछ धृष्टता हो रही;
पुनः विचार करें, पुनः नया विधान,
भीष्म की है विनती विनीत जननी से यही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



भीष्म से प्रकाश पा गया वहाँ महा प्रकाश,
स्निग्ध, शान्ति युक्त, प्राणवान् हुयी साँस-साँस;
उल्लसित मन, गद् गद्, कहने वे लगीं—
आपने कृतार्थ किया, पूर्ण हुयी अभिलाष।

गुणवान, यशवान, कुरुवंश के महान!
आप से ही लोक-परलोक को मिलेगा मान;
वेद-शास्त्र-स्मृति के प्रकाश के पथिक आप,
धर्म की शिखा भी आप से ही है प्रकाशवान्।

आपने कहा जो, वही सत्य, वही सत्य रूप,
वही वंश-धर्म की परम्परा के अनुरूप;
सुन कर मेरा सत्य कथन कहें जो आप—
वही मेरी भावी योजना का बनेगा स्वरूप।

धर्म भीरुता का मेरे पितृ देव का था भाव,
रखते थे पूजा के लिए वे एक लघु नाव,
एक दिन सरिता में नाव को चलाने लगी—
मन में उमंग, घूमने का लिए चारु चाव।

आत्म तत्व वेत्ता, ऋषियों के ऋषि पराशर,
भानुसा प्रकाश लिए तेज-पुञ्ज द्विजवर;
मुझको प्रभावित प्रभा से कर सौम्य मना—
हो गए विराजमान तरनी विमल पर।

आज्ञा हुयी—पहुँचा दो मुझे यमुना के पार,
बैठे ऋषिवर हाथ में सम्हाले पतवार;
सहसा सरस हुआ उनका सरल उर,
रस-सिक्त नैन मेरी ओर उठे बार बार।

प्रकृति में पल पल होने लगा बदलाव,
दूर होने लगा प्राणियों के मन का दुराव;
रवि का प्रताप चन्द्रमा की चाँदनी में ढला,
शेष रह गया कहीं भी न रुक्षता का भाव।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



गुञ्जरित हुआ कोश मुक्त मन मधुकर,
स्वाभाविक कोमल बचन हुए मृदुतर;
अस्फुट स्वर में अकथ भाव किया व्यक्त,
नत, पुलकित, विचलित हुए मुनिवर।

कल कल गान विहँगो का भरमाने लगा,
मलय पवन मधु माधवी पिलाने लगा;
कोकिल की कूक कहीं उठी आसपास में ही,
प्रकृति नटी में मद-उन्माद छाने लगा।

यमुना की लहरें भी गा उठीं मिलन-गान,
चेतन की सृष्टि, अर्धचेतन का अभियान;
सारा दिक्मण्डल सुकोमल, सरस हुआ,
भूली भूली अपने को मैंने किया अनुमान।

तेज बल से उन्होंने किया मुझे अभिभूत,
सौरभ-सुघरता से किया हेय तन पूत;
जग नयनों से परिलक्षित न होवें हम,
तम तोम उनके प्रभाव से हुआ प्रसूत।

ऋषिवर अंश से सुपुत्र हुआ गुणवान,
प्रभापुञ्ज, तपतेज, महिमा लिए महान;
त्यक्त द्वीप में था, द्वैपायन की संज्ञा मिली,
ऋषि ने कराया उसे वेद का विशिष्ट ज्ञान।

इस जगती की मोह ममता को परित्याग,
धर्म, तत्वज्ञान में लिए विशेष अनुराग;
पाया वेदव्यास नाम, जानता सकल जग,
किया चारो वेद का सविधि उसने विभाग।

उस तप बल ने विनीत कहा एक बार,
"सकतीं है आप जब चाहें मुझको पुकार;
अविलम्ब आकर मैं आपका प्रसाद लेके—
धन्य हूँगा आपका महान मान अधिकार।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



वह मेरी बात कभी टाल सकता है नहीं,
संकट में मुझे कभी डाल सकता है नहीं;
जानती हूँ—भीष्म और व्यास के अटल बैन—
कभी भी विनष्ट-कर काल सकता है नहीं।

पुत्र बधुओं को प्राप्त होगा उसका सुपास,
आपको अभीष्ट यदि कुरु कुल का विकास;
सम्मति दें उसका प्रसाद है अलभ्य नहीं,
मेरे सुविचार का न होगा कभी उपहास।"

"कौन है जो वेदव्यास जी को नहीं जानता है,
उनके सुयश की न जग में समानता है;
अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष के अवाध अधिकारी,
तत्व ज्ञानियों के मध्य उनकी महानता है।

वञ्चित हों उनकी कृपा से, होगा कुविचार,
भावी कुरुवंश भूलने को नहीं उपकार;
श्रेष्ठ ऋषिवर द्वारा वंश-क्रम चलने से—
होगा दूर राजमद, वंश-कुल का विकार।

आपके तनय हुए मेरे अनुजों के भ्रात,
गुनने में कितनी सुघर लगती है बात;
इसमें स्वीकृति का है प्रश्न उठता ही नहीं,
पारस को खोकर पायेंगे सभी परिताप।

उनको बुलावा यदि भेजा जाय अविलम्ब,
होगा अति उत्तम हमारे मत से हे अम्ब!
आपके विचार से जगत सहमत होगा,
होगा निर्मूल भावी कुलपतियों का दम्भ।

पुत्रवत् उसकी करूँगा नित देख-रेख,
व्यास-वीर्य-सन्तति का होगा राज्य-अभिषेक;
कुल-यश-कौमुदी का होगा शशि अकलंक,
इसमें न होगा जग उपहास लवलेश।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



प्रजाहित आनंदविधायिनी, स्वधा-अमान,
भीष्म-सहमति सशरीर मंगला समान;
अस्पष्ट स्वर मृदुतर, वरदा ने कहा—
'आप से ही सदा कुरुवंश रहेगा महान।'

शान्त मन शान्तनु सुवन आये निजधाम,
मन की उलझनों को मिल गया था विराम;
मोह-ममता की उलझन सुलझा जो सका—
वह उलझन कब रख सकता अकाम।

समाधान-बोध, पा गया था केन्द्र मातृ-मन,
झंकरित उरबीन, हुआ व्यास—सुमिरन;
ध्यान में ही पुत्र-प्रेम पावन उमड़ आया,
मातृ-स्नेह-सिक्त बसुधा का हुआ कन कन।

बन वीच एक मनहर, रम्य, सौम्य थल,
शान्त था, प्रकृति का सुपास्य स्नेह अविकल;
कौन मन है, जो इसे देख के लुभाया नहीं,
व्यास ध्यान-धारणा से दूर जन-मन-मल।

चारों ओर बन-वृक्ष शीश को उठाये हुए,
वेलि परिवेष्टित निकुञ्ज थे बनाये हुए;
श्वेत-पीत भिन्न रँग पुष्प परिगुम्फित थे,
विविध नक्षत्र जैसे रजनी में छाये हुए।

निर्द्वन्द्व वन्य-पशु वहाँ करते विहार,
नहीं बन-राज्य का वहाँ कभी हुआ प्रसार;
हिंसक भी उस क्षेत्र में थे तत्व ज्ञानी बने,
जानता न कोई, क्या है कहलांता प्रतिकार।

विहँगो का वहाँ होता था सुकाल कलगान,
स्वर-माधुरी का कब सम्भव था अनुमान;
मुक्त होके और मुक्त होने के लिये ही स्यात्—
किया करते थे अविरम प्रभु गुनगान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बीच में सुशोभित स्वयंभू एक सरवर,
पशु-पक्षी-मानवों के जीवन का तापहर;
पोषण प्रदान किया करता था प्रतिपल,
सुयश सा शोभा दे रहा था भूमि-खण्ड पर।

ठौर ठौर पर्णकुटियाँ वहाँ विराजती थीं,
मुक्ति साज ऋषि-मुनियों के लिए साजती थीं;
जिनके प्रसाद पाप बना पुण्य तेजधारी,
तपकी अमल प्रभा इनमें ही राजती थी।

शीश को उठाये, समाधिस्थ बट वृत्ताकार,
विविध विहंगों का था बना हुआ सुखागार;
मृत्तिका-सुवेदिका सुरम्य, स्वच्छ राजती थी,
बैठता जहाँ था ऋषि-मुनियों का परिवार।

दूसरा ही विश्व वहाँ बसा पड़ता था जान,
लौकिक प्रपञ्च की वहाँ थी नहीं पहिचान;
ब्रह्म चरचा से कण कण था वहाँ का स्निग्ध,
ब्रह्मवाद का ही उस थल तना था वितान।

वेद व्यास कथा व्यास—आसन से कहते थे,
भक्ति बीचि-बीच श्रोता-ऋषि-मुनि बहते थे;
आत्मतत्व पहिचानने के लिए प्रति पल—
खग-मृग भी प्रशान्त बैठें वहाँ रहते थे।

व्यास की तरंगित कथा थी, श्रोता थे विभोर,
परम आनन्द की लहर ले रही हिलोर;
सहसा पुलकमान हुआ ऋषि-अन्तराल,
सुप्त को किसी ने हिला-डुला दिया झकझोर।

विश्लेषण माया और ब्रह्म कथनीय नहीं,
विषय, विलास, भोग इससे उदीय नहीं;
ब्रह्म माया बन प्राणियों का कर रहा भोग,
पंचभूत तन ब्रह्म को है परकीय नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कर्म—इन्द्रियों से वह करता सकाम काम,
वही कहलाता निर्लिप्त और निष्काम;
काम-निष्काम का विवेचन जिन्होंने किया—
मायामुक्त वे भी नहीं, यही ज्ञान का विधान।

व्यास हुए मौन, हुयी सहसा कथा भी भंग,
श्रोता जगे, पर वे समझ न सके प्रसंग;
मुखाकृति व्यास की उन्होंने बदली सी पायी,
विह्वल हुआ स्नेह-सिंचित शिथिल अंग।

अन्त में उन्होंने दिया ऋषियों को धन्यवाद,
और कहा—जननी की आज आ रही है याद;
जा रहा हूँ, पुनरागमन अविलम्ब होगा,
यहाँ पलने न दीजियेगा कभी अवसाद।

होने को कृतार्थ तप चला महाशक्ति पास,
लिए हुए मातृ-पद-पद्म-रज-अभिलाष;
मन के हुलास में अपार दूरी पार हुयी,
जननी समीप जैसे पल में ही आए व्यास।

उषा के सुअंक में प्रभात-आभा आ गयी थी,
घिरी हुयी घटा विज्जु का प्रकाश पा गयी थी;
महा तेज पुञ्ज ऋषिवर की समूची देह—
पल में ही सत्यवती अंक में समा गयी थी।

फूट उठी माता के पयोधर से पय-धार,
पुत्र धन्य हुआ जननी का पा मधुर प्यार;
कुछ क्षण वहाँ पर ऐसा कुछ जान पड़ा—
जैसे सृष्टि का स्वरूप लुप्त, हुआ निराकार।

पुत्र-वक्ष मातृ-अश्रु से गया भिगोया वहाँ,
भावना की सृष्टि का सुस्वप्न फिर खोया वहाँ;
वाह्य चक्षु के समक्ष नग्न था यथार्थ रूप,
प्रौढ़ वात्सल्य तुष्टि सेज फिर सोया वहाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



"पुत्र पर कृपाकोर युग बीते हुयी आज,
पद-रज-प्राप्ति का सफल आज पुण्यकाज;
शेष क्या प्रसाद प्राप्त करने को जगदम्ब !
क्षुब्ध मुझसे तो नहीं नर-सृष्टि का समाज ?"

"सृष्टि में स्वरूप का महत्व ही महत्तम है,
सम्पादित तुमसे बताते निगमागम हैं;
कर्म-भक्ति-ज्ञान-योग प्राप्त हैं शरीर से ही,
सृष्टि के समाज का रहस्य सृष्टि-संयम है।

धर्म है शरीर का सुयोग कर्म और भक्ति;
काया-कर्म-भक्ति-योजना से ज्ञान अनुरक्ति;
ज्ञान, भक्ति, कर्म कभी खण्डित न कहलायें,
मेरा है अभीष्ट सृष्टि का सृजन, शिवशक्ति।

सृष्टि से विरत रहना, है सृष्टि उपहास,
सृष्टि-क्रम-अवरोध सँग सबका विनाश;
मार्ग निर्देशन हो, अर्थ-धर्म-काम पलें,
प्रतिबद्ध सृष्टि का प्रयास मुक्त का सुपास।

मातृ-ममता की ज्ञान-क्षेत्र पर आज वृष्टि,
होवे अंकुरित कर्म-बीज लिए दिव्य दृष्टि;
मातृ-भक्ति अवलम्ब मान, कुछ काल तुम्हें—
कर्म में निरत, करनी है कुरु-कुल-सृष्टि।

कुरु वंश ऊपर महान आया कष्ट-काल,
यह निशिदिन होता जाता अति विकराल;
तरनी भ्रमित आज विषम भँवर बीच,
होकर खेवैया तुम करो कुल प्रतिपाल।

सूत्र रूप में ही तुम्हें यह बतला हूँ रही,
विज्ञ बूझते हैं अत्यधिक, टुक बात कही;
भीषण प्रतिज्ञा भीष्म की है भलीभाँति ज्ञात,
उनका बचन कभी टल सकता ही नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दोनों कर्म से हो ब्रह्मज्ञ, है लगाव सदा,
दोनों के विचार बीच शुचि भ्रातृ भाव सदा;
दोनों ही यशस्वी, ज्ञानी, गुणवान, तेज रूप,
धर्म भीरु जन्म से ही दोनों का स्वभाव सदा।

होने को है कुरुवंश का दुखद अवसान,
बदल सकोगे तुम दोनों विधि का विधान;
धर्म-कुल-मर्यादा अनुरूप वंश चले—
इसी हेतु किया गया है तुम्हारा आह्वान।

भीष्म हैं प्रतिज्ञावद्ध, देखने को नहीं राज,
कर सकते न पुत्र-उत्पत्ति का भी काज;
चाहूँगी, न प्रण तोड़ कर कभी लज्जित हों,
उनकी प्रतिज्ञा की तुम्हीं को रखनी है लाज।

तुम कुरुकुल-तरनी के बनो पतवार,
भँवर से इसको निकाल के लगा दो पार;
राज-काज, न्याय, अर्थ, धर्म, सत का समाज—
दृढ़ स्कन्ध पायें, अब तक जो हैं निराधार।

शुचिता की मेरी पुत्र-वधुयें सुपासिनी हैं,
धर्म भीरु रमणी हैं, ईश्वर उपासिनी हैं;
कर्म की परम्परा बनाये रखने के लिये—
अब वे समर्थ हैं, सुपुत्र अभिलाषिनी हैं।

तुम हो समर्थ, तुम पुरुष हो वीर्यवान्,
तुम धर्मविद्, तुम तप-तेज में महान्;
तुम न्याय और धर्म के विधान अनुसार—
चाहते ही इन्हें कर सकते हो पुत्र-दान।

मेरी बात भूमिका रहित है, है स्पष्ट यह,
बात बात में जिसे मैं पहिले ही गयी कह;
मेरी पुत्र-वधुओं से हो पुनीत सहवास,
वंश-यश होवे प्रसरित बन गन्धवह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सुनके कथन वेदव्यास हो गए गँभीर
स्वस्थ किया मन, स्वस्थ हुआ उनका शरीर;
कहने लगे यथार्थं नम्र बात जननी से—
आप अब कीजिये न मन भावना अधीर।

टाल सकता हूँ नहीं आपकी सदीच्छा कभी,
निश्चय सफल होंगी शुभकामनायें सभी;
आप यदि चाहें तो समस्त ऋद्धि-सिद्धियाँ भी—
सेवा में विनत, करबद्ध झुक आयें अभी।

कुल का कलेवर न छूट सकता है कभी,
शासन का सूत्र भी न टूट सकता है कभी;
केहरि का खाद्य भाग कायर श्रृगाल तुच्छ—
कहीं स्वप्न में भी नहीं लूट सकता है कभी।

यश अधिकारी, बुद्धिमान और गुणवान,
श्रुति-शास्त्र-परिधि प्रशासक, प्रतापवान;
तेजपुञ्ज पुत्र अवतारणा अभीष्ट हो तो—
मानना पड़ेगा कुछ इसके लिए विधान।

टालू बात मेरी वाणी कह सकती है नहीं,
इसमें असत्य लीक रह सकती है नहीं;
कुलवधुयें पवित्र आपकी, सही-यथार्थ,
किन्तु तप-तेज को वे सह सकती हैं नहीं।

करना पड़ेगा कुछ काल तप का विधान,
कर लेंगी जब पूत-व्रत, सुमिरन-ध्यान;
क्षमता के साधन से होकर के परिपूर्ण—
कर लेंगी मेरे तप-तेज का वे समाधान।

माता थीं अधीर, काल टालना न चाहती थीं,
कुल की समस्या और पालना न चाहती थीं;
कोमलाङ्ग वधुओं को तप-व्रत-आँच बीच—
मान अनावश्यक, वे डालना न चाहती थीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अतः कथन था—विलम्ब की न बात करो,
चिन्ता की चिता को अविलम्ब भस्मसात करो;
सामने विभावरी है दुखदायिनी अनन्त,
अन्त इसका हो, अब स्वर्णिम प्रभात करो।

करना पड़ेगा, यदि आप यही चाहती हैं,
तपन बुझेगी आपकी, जो नित दाहती है;
उग्र कामनायें आपकी हैं, पहिचानता हूँ—
आपके अगाध उर को जो अवगाहती हैं।

पुत्रबधुओं को आपको सचेत करना है,
और उनमें अपार आत्मबल भरना है;
कोमल, सरस, कलापूर्ण उनका स्वरूप,
मेरा रूप-रेख देख उनको न डरना है।

ऐसा ही प्रयास होगा, माता ने कहा सहर्ष,
उनके उछाह का हुआ अपार उत्कर्ष;
इच्छित समय की अवधि कुछ ऐसे बढ़ी—
पल का विराम लगता था शत शत वर्ष।

ज्येष्ठ बधू अम्बिका के कक्ष पहुँची सकाल,
स्पर्श वरदा ने किया भाग्यवती का सुभाल;
अर्थ-धर्म-वंश का विरद समझाके मौन—
स्वीकृति मिली, प्रसन्न, मन में हुयीं निहाल।

रजनी के आँचल में सृष्टि सुधि सो रही थी,
परितप्त मन का कुपास चिन्ता खो रही थी;
हिमिल समान अम्बिका, सहस्र रश्मियों से—
मिलन के अनुकूल साज को सँजो रही थी।

नारी उर में विविध भावनाओं की हिलोर—
उठीं, एक भी परन्तु पा सकीं न ओर छोर;
कभी था उछाह, कभी झिझक, कभी सँकोच,
उपदेश माँ का कभी देता उसे झकझोर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आपदधर्म .के विचार का कभी विचार,
कभी पतिव्रत धर्म उठता था सिसकार;
पुत्र-प्राप्ति कामना प्रबल उठती थी कभी—
मानस में शून्यता का होता था कभी प्रसार।

धारण शयन-कक्ष किये नया परिधान,
रमणी को करता था अत्यधिक द्युतिमान;
सिमट गया था वहाँ सारी सृष्टि का सिंगार,
मिलने को वहाँ थे जगत के महान प्राण।

नारी कल्पना का बना रही जी विशाल स्तूप,
पुरुष का चित्र खींचती थी निज अनुरूप;
भूली थी यथार्थ, इतने में ऋषिराज आये,
हुयी अत्यधिक खिन्न—देख उनका स्वरूप।

सौम्यरूपता प्रछिन्न, रुक्षवृक्ष—अवतार,
शीश पर लिए जटा जूट का विशाल भार;
लम्बकूर्च, अर्धनग्न, तन में रमाये भस्म—
देखा, सिहरी, सदेह भय का हुआ प्रसार।

सहसा पलक-पट गिरे, हुआ अन्धकार,
किन्तु मन में न उत्पन्न हो सका विकार;
जैसे तैसे व्यास ने भी रमणी का तन-दान—
माता के कथन अनुसार किया अंगीकार।

बाहर थे व्यास, जननी का प्रश्न था ससाध,
'भावी कुरुवंश' जानने की लालसा अगाध;
"ज्ञानी, तेजधारी, बुद्धिमान, गुणवान, अन्ध,
पितृगुण वहन करेगा, मातृ-अपराध।

अन्धा! कर सकता प्रजा की कैसे देख रेख!
उसका कभी न हो सकेगा राज्य-अभिषेक;
राज्य की परम्परा प्रगति पा सकेगी नहीं,
अतः मिटाना होगा अभी भाग्य का कुलेख।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दूसरी वधू भी ऋतु-स्नाता, पुत्र कामिनी है,
सावित्री सरीखी, सुषमा में छवि दामिनी है;
वंचिता तुम्हारी कृपा कोर से रहे क्यों भला—
सह सकती प्रताप, भाग्यवती भामिनी है।

जैसा चाहती हैं आप, होगा वही, बोले व्यास,
हो गया प्रारम्भ उसी पल माता का प्रयास;
अम्बालिका समझा के निडर बनायी गयी,
धीरे धीरे पुत्र-प्राप्ति की जगायी गयी प्यास।

रानी के शयन-कक्ष व्यास ने किया प्रवेश,
भय को न रोक सकी देख ऋषि का कुवेष;
पिंगल वर्ण हुआ भय से शिथिल अंग,
मन में न तनिक उछाह रह गया शेष।

पूरी करनी थी उसे जननी प्रदत्त बात,
और देखनी थी कुरु-वंश की भी कुशलात;
धर्म की व्यवस्था की व्यवस्था करने के लिए—
व्यास ने किया स्पर्श रमणी का रुग्ण गात।

'कैसा होगा पौत्र,' यह प्रश्न फिर एक बार,
व्यास ने विनत हो निवेदन किया विचार;
गुणवान, यशवान, विश्व में महान्-किन्तु—
पाण्डु वर्ण होगा वह, मातृ-भय का विकार।

यह भी सदोष रहा, अच्छा समयानुकूल—
जैसे होगा दूर की जायगी यह भारी भूल;
इसके लिए भी एक बार फिर आना होगा,
निकलंक, स्वच्छ चाहती हूँ वंश का दुकूल।

सेवक हूँ, जब चाहना हो, बुलवायें आप,
किन्तु टलने को नहीं कभी काल का कलाप;
भावी होके रहती है, यही कहते सुविज्ञ,
शिरोधार्य करते हैं मान वरदान-शाप।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नीच-ऊँच किया करता है विधि का विधान,
हो न कभी पाया इसका उचित अनुमान;
आपकी सदीच्छा पर पूरी करनी ही होगी,
आश्रम को किया यह कह व्यास ने प्रयाण।

समय सुकाल अभिलषित दिवस आया,
रनिवास में अपार मंगल, प्रमोद छाया;
अम्बिका ने कञ्चन सदृश प्रभावान पुत्र—
कुरु-वंश का विशाल अंक भर, जनमाया।

प्रसव की वह भूल गयी वेदना अपार,
फूट चली ममता अमृत की अजस्रधार;
ललना को मिला लाल, लालिमा विखर गयी,
निराधार तरनी को मिल गया पतवार।

पुत्र-प्राप्ति का संदेश घर-घर, द्वार-द्वार—
बातों बातों में ही राजधानी में हुआ प्रसार;
आनंद-उदधि पुर बीच लहराने लगा,
पाकर बधाई कुसुमित राज-परिवार।

सत्यवती किन्तु पा सकीं न अपना अभीष्ट,
उन्हें राज्य के लिए प्रभात की प्रभा थी इष्ट;
चिन्ता थी यही कि ज्योति हीन प्रजापति कब—
बदल सकेगा तम पूर्ण इतिहास-पृष्ट।

अन्धा वन सत्य भी न कर सकता है न्याय,
तम हरने का भला तम कब है उपाय;
ज्योतिहीन धर्म भी अधर्म का ही प्रतिरूप,
प्रगति कहाँ है वहाँ, जहाँ अन्ध-समुदाय।

अतः प्रतीक्षित उन्हें था अन्य युवराज,
जिसके प्रकाश से प्रकाश पा सके समाज;
लिए ओट धर्म की अधर्म हो न पल्लवित,
चाहती थीं भूले भी न होवे प्रजा का अकाज।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



किन्तु नवजात शिशु सबको था अभिराम,
दर्शनीय, तेज पुञ्ज, प्रतिभा लिए ललाम;
ज्योतिष विदों ने राष्ट्र ग्रह गणनानुसार—
गौरव प्रतीक रूप धृतराष्ट्र दिया नाम।

एक बार फिर जगमगा उठा रनिवास,
हस्तिनापुरी में छाया फिर से नया हुलास;
अम्बालिका उम्ब से प्रसव पुत्र-रत्न हुआ,
राष्ट्र को मिला अभूत आत्म-तत्व का प्रकाश।

प्रजा के लिए हुआ प्रजापति का अवतार;
शासन-व्यवस्था का भी हुआ उन्मुक्त द्वार,
न्याय ने शरण पायी, सत्य का प्रकाश हुआ,
लहराया राज्य बीच आंनद का पारावार।

पाण्डुवर्ण बालक को मिला पाण्डु का ही नाम,
कुरु-वंश-यश को विनाश से मिला विराम;
वंश-पूर्वजों को पिण्डदान-दृढ़ाधार मिला,
शिशु-क्रीड़ा देखने का मिला रानियों को काम।

मूर्त या अमूर्त, मुख्य-गौण सभी राज तत्व,
पा गए थे नवजात शिशुओं में निज-स्वत्व;
राज माता सत्यवती चिन्ताकुल आज भी थीं,
धर्म का न पा सकी थीं अभी वह अपनत्व।

बीते कुछ काल, अम्बिका को ऋतुमती जान—
वेद व्यास का उन्होंने किया फिर आह्वान;
और कहा-अभिलाषा अन्तिम है मेरी यह,
कुरु-कुल को प्रदान करो महिमा महान।

फिर एक बार अम्बिका को बहलाया गया,
फिर एक बार वंश मान दिखलाया गया;
फिर एक बार राजमाता बनने का लोभ—
सत्यवती द्वारा उस देवी को दिलाया गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



किन्तु वह भूल सकी थी न व्यास का कुवेष,
उसमें समाया भय-भाव सहसा अशेष;
ऋषि की समग्रता की बात सोच भी न सकी,
मन में तनिक भी न साहस था अवशेष।

भली भाँति जानती थी वह सत्यवती टेक,
अतः बुलायी गयी रूपवती दासी एक;
सुखद सिंगार से सुसज्जित कराया उसे,
आश्वासन, भूषण, वसन भी दिये अनेक।

उचित समय उसे भेजा ऋषिवर पास,
उसने रिझाया उन्हें उर में लिए हुलास;
हाव, भाव-भंगिमा, विनोद, व्यङ्ग, चातुरी से—
आनंद के अतिरेक में विभोर हुए व्यास।

होकर परम तुष्ट दासी से बतायी बात,
'तेरी यश-कौमुदी रहेगी सदा अवदात;
दासीपन से भी आज से ही तुम मुक्त हुई,
तेरे शेष जीवन का आज से हुआ प्रभात।

रूपवान, वीर्यवान्, कीर्तिमान, गुणवान—
जिसकी महानता का हो न सकेगा बखान,
ऐसा पुत्र, जैसा जग ने न कभी जनमाया,
कुरु-वंश ही क्या, यह विश्व बनेगा महान।

कक्ष से निकलते ही माता का सधा सवाल—
'कहो, इस बार कैसा होगा अम्बिका का लाल,?
'अम्बिका को नहीं, होगा दासी को सुपुत्र एक;'
यह कह व्यास ने बताया उन्हें सब हाल।

और कहा—ऐसा पुत्र-रत्न वसुधा में कहीं—
खोजने से कभी, किसी काल मिलने का नहीं;
होगा युग पुरुष, समानता का सूत्रधार,
उसकी पवित्र वाणी से पवित्र होगी मही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कुरुवंश देखेगा सुधर्म का ही अवतार,
इससे अधर्म का हटेगा क्रूर-व्यवहार;
सह अस्तित्व, सह भावना बढ़ेगी नित—
अन आस्था का उठा फेंक देगा भीम भार।

धर्म का ही अवतार? मातृ-प्रश्न अविकार,
और कहा—यह कैसे सम्भव है हे उदार!
धारणा करेगा धर्म मानव शरीर भला?
शंकाकुल मन, चाहता है तर्क तुलाधार।

शंका कीजिये न धर्म होवेगा प्रकट यहाँ,
वहाँ क्या असम्भव है, आपका प्रसाद जहाँ;
महाशक्ति के ही पास आतीं सब शक्तियाँ हैं,
आप बिना सृष्टि की विभूतियाँ रहेंगी कहाँ।

ज्ञानवती! यदि आप जानना ही चाहती हैं,
जानते हुए भी यदि मेरा ज्ञान थाहती हैं;
धारणा सजग कर तथ्य को हूँ बतलाता,
मेरी स्मृति भूत की कथा को अवगाहती है।

मानडव्य नामक महातपी थे मुनि एक,
जन हीन कानन में एक रम्यथल देख—
तन-मन-शुद्धि-आत्म तत्व ज्ञान प्राप्ति हेतु—
सतत उन्होंने घोर साधनायें कीं अनेक।

उग्रतम उर्ध बाहु तप मुनि करते थे,
चेतन-अचेतन में ब्रह्म तत्व भरते थे;
तप-बल-तेज से बनस्थली के वासियों का—
अनजाने में ही नित त्रय ताप हरते थे।

एक दिन नगर से चोर धन को चुराए,
भयभीत मुनिवर-आश्रम की ओर आए;
शासन के चौकीदार उनके पड़े थे पीछे,
चोरों ने चुराए धन आश्रम में जा छिपाए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



और अपने को उसी आश्रम में छिपा लिया,
रक्षकों ने कुछ काल में वहाँ प्रवेश किया;
मुनि से विनीत प्रश्न—'तस्करों का समावेश',
उत्तर परन्तु मौन मुनिवर ने न दिया।

इतने में आश्रम में तस्करों को गए देख,
भ्रमवश मुनि पर कुपित हुए विशेष;
उद्‌गार—चोरों को छिपाकर बना है मुनि,
यह भी है कोई चोर मुनि का बनाये भेष।

चोरों के ही साथ साथ बन्दी हुए मुनिवर,
शासक समक्ष पहुँचाए गए बाँध कर;
अपराधी मान के उन्हें भी राज-दण्ड मिला,
तपी तन में अनी चुभोई गयी खरतर।

मुनि ने शरीर को न होने दिया नाशवान,
एक दिन किया कई मुनियों का आह्वान;
देख मानडव्य की दशा को हुए क्षुब्ध सभी,
दुखद् परिस्थिति का प्राप्त किया परिज्ञान।

शासक को यह अनरीति बतलायी गयी,
मुनि की व्यथित दशा उसे दिखलायी गयी;
राजा हुआ भयभीत, ग्लानि से गलित अति—
मुनि-तप-कथा जब उसको सुनायी गयी।

शासक ने शीश झुका करवद्ध, सविषाद—
कहा—मुनिवर! चाहता मैं आपका प्रसाद;
आप हों प्रसन्न, यही विनती विनीत मेरी,
अनजाने में ही मुझसे हुआ है अपराध।

कोमल उदार चित्त मुनि हुए, दयावान,
शासक को वहीं दिया उन्होंने अभयदान;
अनी को निकालने का आग्रह था गुरुतर,
पीड़ा पा रहे थे मुनिवर उससे महान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हुए अनगिनित प्रयास, निकला न शूल,
काटा गया, पर निकला नहीं अनी का मूल;
धारण किए ही उसे, तप में विलीन हुए,
सोच—किस हेतु दैव इतना है, प्रतिकूल ?

एक दिन क्षुब्ध मुनिवर गए धर्म पास,
और उनसे यों पूछी बात, देख अवकाश;
'कौन सा हुआ था पाप मुझसे, जो आज तक—
तन में अनी का लिए फिर रहा नाग-फाँस ?'

आप थे अबोध शिशु, उस काल की है बात,
पीड़ित किया था तृण चुभा लघुकीट-गात;
उसी पाप-प्रतिफल दण्ड आपको है मिला,
तप-यश अन्यथा रहेगा सदा अवदात।

यह सुन मुनि-मन क्षुब्ध हो उठा महान्,
गुरुतम लगा उन्हें यह दण्ड का विधान;
ज्ञानहीन शिशु का है अपराध शून्य, क्षम्य,
दोष कैसा, शैशव तो होता ही है अनजान।

अतः उन्होंने कही बात धर्म से सक्रोध,
'दण्डनीय आपसे है जब शिशु भी अबोध—
ऐसा दण्ड का विधान अब रहने का नहीं,
लेना होगा इस घोर यातना का प्रतिशोध।

शैशव में अब से हुआ जो कोई हीन काम,
दण्ड-संहिता के बन्धसे रहेगा उपराम;
और दण्ड-रूप आप मानव शरीर धर—
भूतल में भटकेंगे, छोड़ यह सुखधाम।'

शाप वश धर्म आ गए हैं दासी-गर्भ-बीच,
दासी भी न अब रह गयी दासी और नीच;
इसे कुरुवंशी महिलाओं का मिलेगा मान,
जिसे मिटा सकती नहीं है अपकीर्ति-मीच।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यह कह दृष्टि से विलीन हुए वेद व्यास,
राज माता-मन दासी ओर खिंचा अनायास;
राज महिषी सी सेवा उसकी आरम्भ हुयी,
धीरे धीरे होने लगा मातृ-तन का विकास।

दासी-गर्भ सँग सँग देश में बढ़ी सुशान्ति,
होने लगीं विजित प्रजा के लिए भय-भ्रान्ति;
खोने लगी खिन्नता समाज की सहज में ही,
अपहृत मानस में विकसित कल क्रान्ति।

सत्य का अवतरण देखने को सत्यवती,
समय की पहिचान, पर उद्विग्न सी थीं;
राज-सुख-भोग परित्याग नित-दासी-गृह—
पक्षी के समान सेतीं बन पूर्ण धर्म-व्रती।

अन्त में समय आया, हुआ नभ में प्रकाश,
भूतल की सिमटी निराशा, बढ़ा विश्वास;
हृदय-विकार विगलित हुआ एकाएक,
टूक टूक हुए कामनाओं के अटूक पाश।

रजनी का अन्धकार दिन में बदल गया,
अत्याचारी पवि उर सृष्टि का दहल गया;
जग-शीश ऊपर विपत्ति घन छाया हुआ—
पवन का पाते ही झकोर झट टल गया।

राजरानियाँ न जहाँ हो सकीं कभी समर्थ,
सत्यवती के महान हो गए प्रयास व्यर्थ;
जिनकी उँसास से जगत जल सकता था—
जिनके पगों में पड़े मोक्ष-धर्म-काम-अर्थ।

वहीं दासी गर्भ से हुआ था धर्म-अवतार,
शमित हुआ था वहीं ऊँच-नीच का विचार;
राजपरिवार, राज्य-प्रजा, सब थे प्रसन्न,
विदुर के जन्म में बधाई फिरी द्वार-द्वार।

■

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## द्वितीय सर्ग

■

# उभार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसकी वंशी की मधुर तान, भर देती जन मन में उछाह,
जिसकी मुसकान भरी चितवन, भक्तों का हरती सदा-दाह;
जिसका यश गा गाकर मानव, बनता आया है यश वाला,
जिसकी लहरों से लहराता, मानव जीवन का है प्रवाह।

उस वंशीधर की कृपा जहाँ, सुख-शान्ति वहीं करती निवास,
जग के वैभव बन बेचारे, छाये रहते हैं अनायास;
अभिलाषायें पीछे चलतीं, आगे रहती है सफल पूर्ति,
सिद्धियाँ और निधियाँ सिमटी, खोजती वहीं पर हैं सुपास।

वह जहाँ रहा साकार, वहाँ हैं अर्थ-धर्म साकार सभी,
भावना-न्याय मिश्रित जगके चलते रहते व्यापार सभी;
खोकर उसकी शुभ कृपा-कोर कब मानव रह पाया मानव,
उससे मानवता का पोषण, दानवता का संहार कभी।

मानव-दानव मिश्रित जग में उसका अस्तित्व सदा उज्ज्वल,
दानवता सदा प्रचण्ड रही, प्रायः मानवता रही निबल;
यदि मानवता के मस्तक से हट जाये उसका वरदहस्त—
भूतल पर पायी जायेगी केवल दानवता की हलचल।

मानवता की सुनकर पुकार, विपदाओं का संहार किया,
संकटापन्न सद्भावों का, सद्भावों से उद्धार किया;
पतितों, निबलों, असहायों को उसने दे डाला अभयदान,
देवेश गर्व को गिरा, रजस्-वैभव का दूर विकार किया।

संतुलन सृष्टि का कुरुकुल से करना उसने था ठहराया,
साथ ही प्रकृति से क्रीड़ा का कुछ भाव अनूठा सा आया;
उसकी इच्छा, त्रयधारा में कुरु कुल का नव उत्थान हुआ,
उसने असत्य, फिर सत्य-धर्म को वीज रूप में उपजाया।

एक ही वंश को वसुधा के लघु-गुरु भावों का दिया रंग,
सत और असत दोनों का उत्पादक भी था एक ही अंग;
दोनों विकसें, यह सत्यवती सी महाशक्ति ने लिया भार,
दोनों का पोषक-रक्षक था भीषम सा प्रणधारी अभंग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



है जहाँ शक्ति, हैं जहाँ भीष्म, है जहाँ महा प्रभु की माया,
सारे जग का वैभव सिमटा उस भूमिखण्ड में खिंच आया;
वैभव के सँग मन की तरंग जैसे क्रम से ऊँचे उठती,
वैसे ही आकांक्षाओं का सागर समाज में लहराया।

अन्तश्चेतन का सम्वर्धन तीनों शिशुओं में था समान,
तन के सँग बढ़ता जाता था पहिले का संचित किया ज्ञान;
खेलों में होने लगे व्यक्त तीनों के मानस के विभाव,
तीनों में असम स्वरों वाली परिलक्षित होने लगीं तान।

धरती मेरी, नभ मेरा है, सब पर मेरा एकाधिकार,
जग की विभूतियों को मेरे सम्मुख झुकना है बार बार;
मैं नहीं जानता खेल कि जिसमें कभी हार भी होती है,
यों ज्योति शून्य तम गह्वर में पलता रहता था अन्धकार।

यह क्रीड़ा का है क्षेत्र, यहाँ सबको होगा अवसर समान,
क्या हार और क्या जीत यहाँ, क्या होता लघु, क्या है महान;
निर्बल के विकसाने में यदि कोई बाधा पहुँचायेगा—
करने को उसे क्षमा कब है इस भूतल पर विधि का विधान।

जग में उलझाने वाले से टक्कर लेना ही होता है,
कोई भी अपने स्वत्वों को निश्चिन्त भला कब खोता है;
मझले के मन में ऐसे ही भावों का होता था उभार,
ऐसा होता ही आया है, काटता वही जो बोता है।

यह उचित और वह अनुचित है, होता जब तक इसका न ज्ञान,
तब तक वसुधा को उलझन का होने को है कब समाधान;
आचार और क्या अनाचार, इसको न परख जिसने पाया,
वह कभी नहीं पा सकता है मानव-समाज से क्षमा-दान।

मैं हूँ महान—यह अहम् भाव पनपने किसी को कब देता,
वह कैसा मार्ग प्रदर्शक है, जो बना स्वयं ही जन नेता;
है जहाँ ज्योति का गुरु अभाव, जिसको प्रकाश का नहीं भान,
बस वहीं और उसमें ही तो अपना निवास तम कर लेता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तम और ज्योति के बीच पड़ी रेखा का जिसको ज्ञान नहीं,
क्या सत्य और क्या है असत्य इसकी जिसको पहिचान नहीं
जिसने अपनी इच्छा को ही जग में सर्वोपरि मान लिया,
वह भाग-दौड़ में विजयी हो, इसका है कहीं प्रमाण नहीं।

छोटे के ये थे बड़े भाव, पर था न कहीं इनका उभार,
तीनों अपने तर्कों में ही सीमित रखते अपने विचार;
दोनों से आदर पाते थे धृतराष्ट्र और वे दोनों को—
छाती से लिपटा कर प्रायः दर्शित करते थे अमित प्यार।

तीनों संगम पर एक रूप, तीनों अभिन्न से निर्विकार,
तीनों ही पाये गये निजी व्यवहारों में निशि-दिन उदार;
तीनों तम-रज-सत की त्रिमूर्ति, तीनों में स्रष्टा की विभूति,
थे एकाकार हुए मानों स्रजनात्मक त्रयगुण दुर्निवार।

तीनों कुमार से कुरुकुल की उत्तम तम सृष्टि नवीन हुयी,
जो राज्य अहित चिन्तक थे, उनकी जयश्री दीन मलीन हुयी;
भूतल के अन्यायी भूपति थे किंकर्तव्य, विमूढ़, त्रस्त,
पृथ्वी पर विखरी प्रतिभायें आ जुटीं शासनाधीन हुयीं।

भीतर-वाहर की दुनिया की दो महाशक्तियाँ रक्षक बन,
करके सनेह से सराबोर करती कुमार त्रय प्रतिपालन,
गृह भीतर साँस सदृश उनकी रक्षा करती थीं सत्यवती,
वाहर उनके हितचिन्तन में दे दिया भीष्म ने था जीवन।

पाकर उनका अस्तित्व भीष्म को नया शौर्य-उत्कर्ष मिला
जो सभी परिस्थितियों में सम उसको भी था नव हर्ष मिला,
युग युग की संचित निधि अमूल्य जैसे खोकर थी हुई प्राप्त,
साढ़े साती शनि पीड़ित को जैसे था शुभ नव वर्ष मिला।

पाकर बल राजकुमारों से करते थे शासन-संचालन,
थी तुष्ट प्रजा, सारे समाज में हुआ न्याय का संस्थापन,
था दुराचार, दुर्नीति, दुराग्रह का न राज्य में कहीं नाम,
प्रतिभा से पूरित थे मानस, भय से विमुक्त जन जन का मन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नव वधू सरिस हस्तिनापुरी ने पायी थी शोभा अपार,
उसके समक्ष अलका नगरी देवों को लगती थी असार;
नन्दन वन से उद्यान अमित आँचल में लेते थे हिलोर,
जिनमें आमोदी नर-नारी प्रातः-सन्ध्या करते विहार।

प्रासाद उच्च मस्तक वाले घन-खण्डों से थे प्रभावान,
हाटों की मोहकता का कवि, असमर्थ, न कर सकता बखान;
गंगा की उज्ज्वल धारा सा, था राज-मार्ग उज्ज्वल प्रशस्त,
जन जन हित निर्मित कला भवन, जन जन रखता का कला ज्ञान।

विकसित विभिन्न कुसुमों से थे भवनों के वन्दनवार सजे,
अगनित शोभा-सम्भारों से नागरिकों के थे द्वार सजे;
साधना पूर्वजों की फूली साकार सिद्धि बन छायी थी,
सातो सुख की सामग्री ले नगरी के सब घरवार सजे।

प्रतिभा के धनी विप्र, उनमें था समुचित वेदों का प्रचार,
अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या का क्षत्रिय समाज में था प्रसार;
धन-धान्य पूर्ण थे गाँव नगर, थे भरे अन्न-भण्डार सभी,
सेवा स्वरूप ही सेवक थे, सारी जनता के सुखागार।

अपने कर्मों में सभी निरत, अपने कर्मों में सभी श्रेष्ठ,
सबके दुख में सम्मिलित सभी, सबके हित में सब थे सचेष्ट;
सब पुष्ट देह के सबल अंग, एकता सभी का था स्वभाव,
नगरी में विद्या, बल, वैभव ने पाया था प्रश्रय यथेष्ट।

कुरु वन्य राज्य, कौरव कुटुम्ब का अविच्छिन्न सम्बन्ध हुआ,
भीष्म का सुशासन. तप, प्रताप सारे समाज को स्कन्ध हुआ;
मोती से आभावान अन्न रसवती समय से उपजातीं;
अतिवर्षण और अवर्षण के मेघों पर भी प्रतिबन्ध हुआ।

वाहन प्रहृष्ट, प्रमुदित खगमृग, उपवन में विकसित पुण्य-पुञ्ज,
फल-फूलों से वैभव शाली थे विनत वृक्ष शोभा-निकुञ्ज;
ऋतुओं का क्रम समयानुसार, था सुखद प्रकृति का परिवर्तन;
मधु-गन्ध मत्त भ्रमरावलि के गुञ्जन से पूरित कुञ्ज-कुञ्ज।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ऋषियों के आश्रम में प्रतिदिन निर्विघ्न यज्ञ का सम्पादन,
होता था गुरुकुल में नियमित विद्योपार्जन, पूजा-वन्दन;
थे सभी राज्य के जीव सुखी, सबको था अपना प्राप्त स्वत्व,
अनुशासित था सबका स्वभाव, था कहीं न शोषण उत्पीड़न।

हो गया राष्ट्र में एकबार फिर व्याप्त सत्य युग का प्रभाव,
मानव-मानव में रहा नहीं आपसी प्रेम का कटु अभाव;
हो गया तमोगुण तिरोभाव, थे क्रोध, लोभ, अभिमान नहीं,
धर्मानुसार मन, वचन, कर्म हो गया सभी का था स्वभाव।

कुरुवंश सूर्य थे भीष्म् उन्हें कर वदर सदृश थे सभी तत्व,
कण कण में होता प्रतिविम्वित प्रतिपल उनका पावन निजत्व;
प्रार्थना झुकी प्रभु चरणों में, याचना वैरियों के गढ़ में,
प्रभुता में थी दासता निहित, था प्रणत दासता में प्रभुत्व।

शासनादर्श था आकर्षक, शासक-शासित सब थे उदार,
अन्यान्य राज्य के भी वासी तज करके अपना सुखागार—
आकर वस गए अनेक यहाँ ऋषियों ने भी तज अन्य राज्य—
कुरु-राज्य काननों में स्वेच्छापूर्वक पाया समुचित प्रसाद।

परिजन का और पुरजनों का प्रायः उर लेता था हिलोर,
यह देख देख उत्तम कर्मों में लगे हुए तीनों किशोर,
विद्योपार्जन में सभी निरत, शारीरिक श्रम में सभी अथक,
तीनों कुमार निज संयोजित कर्मों में थे नित प्रति विभोर।

शस्त्रों-शास्त्रों की विद्या में तीनों प्रवीण थे पाराङ्गत,
तीनों ने ही ले रक्खा था असहायों की सेवा का व्रत;
उनके कार्यों से प्रोत्साहित सारे प्रदेश का प्रजा वर्ग,
धर्मानुकूल आचरणों में वे देखे गए सदैव निरत।

धृतराष्ट्र राष्ट्र में पराक्रमी, थे तपते सूरज के समान,
नरश्रेष्ठ पाण्डु को मिला धनुर्विद्या का अकथ अमोघ ज्ञान,
केवल भारत की बात नहीं, भूतल में यश-विस्तार हुआ,
अबतक न विदुर सा इस जग में आया था कोई धर्मवान्।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



धीरे धीरे तीनों किशोर ने देखा यौवन का विकास,
बढ़ गया ओज, बढ़ गयी प्रभा, साँसों में थी वासित सुवास;
यह वही अवस्था थी, जिसका रहस्य जगने न कभी जाना,
बुझना न कभी जिसने सीखा, इसमें लगती वह अमिट प्यास।

यौवन पाकर अपने वश में रहना है सबका काम नहीं,
यह वह तुरंग जिसने सवार की मानी कभी लगाम नहीं,
यह प्रवल वेग, जिसके सम्मुख तृणवत् सागर-भूधर का बल,
इसके शासन में दौड़-धूप, गति में थिरता का नाम नहीं।

केवल भीष्म का स्वत्वशासन यौवन ने जग में माना था,
उस महव्रती ने ही केवल इसकी गति को पहिचाना था;
उसने समझा-इससे लोहा लेना शैशव का खेल नहीं,
इसके प्रभाव से तीनों कुरु युवकों का मान बचाना था।

अतएव विदुर का महाव्रती ने यथासमय आह्वान किया
वात्सल्य प्रेम से ओत प्रोत हो उनको स्नेह प्रदान किया,
फिर कहने लगे—सुवन तुम सा पाकर मेरा जीवन कृतार्थं,
तुमने सुवंश की मर्यादा की महिमा का उत्थान किया।

तुम धर्म-तत्व के विज्ञाता, धीमान और हो नीतिमान;
क्या त्याज्य और क्या ग्राह्य, तुम्हीं रखते हो इसका शुद्ध ज्ञान,
अतएव तुम्हारा परामर्श मेरे पथ का होगा प्रकाश,
तुम जो विचार दोगे, मुझको वह तथ्य पूर्ण होगा महान।

तुम तीनों कुरु कुल के प्रदीप तुम में परिपूरित प्रभा-स्नेह,
तीनों की कुसुमित काया में यौवन उमड़ा पड़ता सदेह,
यौवन की उष्मा शीतल बन मृदुतर जग का निर्माण करे,
उसके प्रकाश के लिये चाहिये हरित वर्णके सुघर गेह।

है धर्म-नीति की अगर वात तुम धर्म-नीति में हो प्रवीण,
सत्य परामर्श तुमसे अभीष्ट, तुम होकर के संकोच हीन-
स्वीकृत दो, सबका कर विवाह वैदिक विधि से नियमानुसार-
मैं समाधान में हो समर्थ, परित्याग करूँ चिन्ता नवीन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आदेश आपका सर्वोपरि, है न्यायोचित, धर्मानुसार,
भावना आपकी पूत, वचन-मनको कब छू सकता विकार,
साधना सिद्धि खोजती जहाँ, उस वाणी से जो बने शब्द,
सार्थक हैं अमर और दृढ़ हैं, उन पर न तनिक करना विचार।

स्वीकृति का है क्या प्रश्न, आप हैं मेरे पिता और माता,
उद्‌गार स्नेह का परिचायक, लक्षित है पुत्र-पिता-नाता,
गौरव प्रदत्त, है शिरोधार्य, अतएव निवेदन नम्र यही-
वैवाहिक बन्धन के समर्थ हैं मेरे दोनों ही भ्राता।

पा गए भीष्मवाणी में बल पाकर विचार का अनुगामी,
फिर कहा-वत्स ! कुरु कुल तेरा भूमण्डल पर सबसे नामी,
अत्याधिक पृथ्वी पालों पर इसने अपना अधिकार किया,
क्या है भविष्य, जानता इसे तो है केवल अन्तर्यामी।

मेरा-तेरा कर्तव्य यही, इसके न मान का हो अभाव,
देखते रहें, कुविचारों का इस पर न कभी लग सके दाव,
उत्तम कुल की कन्याओं का ही वरण वंशको है यथेष्ट,
धर्मज्ञ, यशस्वी, पराक्रमी से ही उत्तम होता लगाव।

अपने ही विप्रों के मुख से यह मुझ को सुनने में आया,
गान्धारराज ने सुलक्षणा, सबला कन्या है जनमाया,
उसने शंकरको कर प्रसन्न, उत्तमतम वर हैं प्राप्त किए,
चाहता ज्येष्ठ की वही वने यशवन्ती मृदु शीतल छाया।

'उत्तमतम' कह धर्मज्ञ विदुरने किया भीष्म का अभिवादन,
अपने विचार की पुनः पुष्टि, कुरुश्रेष्ठ हो गए प्रमुदित मन,
सत्वर सुबुद्धि सन्देश वहन करने वाला, प्रस्ताव लिए-
गान्धार राज्यको चला, मिलाने दो वंशों का अपनापन।

सम से होता है वैर-प्रीति, सम से विचार का परिवर्तन,
सम से होता सम्बन्ध सुघर, सम में मर्यादा का जीवन;
सम में होगा सम्मान निहित. समभावों का होता आदर,
स्वर-ताल जहाँ सम नहीं, वहाँ पर मन हो जाता है उन्मन।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मैं उच्चवंश वाला नरेश, मैं उच्चवंश का अभिमानी,
कुल की परम्परा के प्रताप का घट न सका जिसके पानी;
न्यायोचित कार्य-कलापों में, जिसके न कभी सन्देह हुआ,
जिसका गौरव, जिसकी गरिमा रह सकी न जग में अनजानी।

जग के ऊँचे आसन वालों में मेरे कुल का स्थान अटल,
मेरी समता में आएँ जो, ऐसे भूपति इस काल विरल;
हैं एक भीष्म ही भूतल पर, जो निर्विवाद हैं अद्वितीय,
होते आए इस कुल वाले वैभवशाली, धीमान्, सबल।

गान्धार-नृपति ने सोच-समझकर कर डाला मन में विचार,
मेरे सौभाग्य-प्रतिष्ठा का, मेरे यश का उन्मुक्त द्वार;
अतएव भीष्म की इच्छा की मुझको बननी है सफल पूर्ति,
कन्या देकर उनको सगर्व मुझको होना है मुक्तभार।

प्रतिभाशाली थे पुत्र शकुनि, कर डाला उनसे परामर्श,
मिल गया इसी में इनके भी जीवन का उत्कर्षापकर्ष;
विदुषी रानी के आगे भी अपने विचार की की व्याख्या,
राजा ने बातों बातों में उनसे स्वीकृति पा ली सहर्ष।

कन्या गान्धारी रूपवती, गुणवती सती सीता समान,
आचार-विचारों में उन्नत, गृह कार्य-कलापों में सुजान;
सावन सी सरस, किन्तु संग ही संग ग्रीष्म सदृश थी तेज-पुञ्ज,
परिवर्तन करने में समर्थ वह थी, जग का दूषित विधान।

माता ने उससे बातों में बतलाया, क्या सोचते तात,
भावी पति के अन्धेपन की उससे बतलायी गयी बात;
कुरुकुल के मान-प्रतिष्ठा का, वैभव का किया विशद वर्णन,
सन्ध्या के धूमिल वर्णन में दिखलाया सोने का प्रभात।

माता की बातों में विचित्र भावी जीवन साकार हुआ,
पितु, मातु, भ्रातृ की ही इच्छा उस साध्वी को स्वीकार हुआ;
जीवन का कटु रहस्य समझा, जिसने, उस महाप्राण को कब—
ऐहिक सुख का कटु स्वप्न भला लघु जीवन का आधार हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पति अन्धकार से परिवेष्टित, ज्योतित किरणों से हैं निराश,
तम ही उनका जीवन सहचर, मैं देखूँगी कैसे प्रकाश;
उनको मैं देखूँ और मुझे वे जीवन में पायें न देख,
अपने प्रति प्रिय के भावों से मैं भी होऊँगी बद्ध पाश।

यह सोच, आवरण से नेत्रों को कर डाला तम का गह्वर,
जग की गति विधि के संचालक, गतिहीन हुए खञ्जन सत्वर,
जिसने न कभी जग को देखा, उसके मन केवल कौतूहल,
देखकर न जग को जो देखे, केवल उसका तप-त्याग अमर।

अपने नयनों का उन्मादी जग, लगा सका उसका न मोल,
साध्वी के अन्तर की आँखें वह देख सका आँखें न खोल;
क्या-क्या, किसने कैसा समझा, ये समझ समझ की हैं बातें,
सिहरा कवि कभी कल्पना में छूकर अपने गीले कपोल।

माता के उर में टीस और नैनों में आँसू भर आया,
पगली तूने क्या कर डाला, कह पितृदेव ने दुलराया;
दीदी हैं बड़ी समझ वाली, थे भाई के उद्गार मधुर,
पुरजन–परिजन ने वही कहा, जो कुछ जिसके मन को भाया।

परिधान–अलंकारों से गान्धारी का सौम्य सिंगार हुआ,
अन्तःपुर का भींगी पलकों से परिवर्तित संसार हुआ;
बाटिका मुखर जिससे थी, वह सारिका न देखी जाएगी,
प्रासाद मध्य कम्पित करुणा का महाउदधि साकार हुआ।

जिनके संग बचपन गया बीत, जिनने देखा वैभव-उभार,
जिनका जग अपना जग अबतक, जिनसे पाया नित अमित प्यार;
उनको न देख पायी, न कभी देखेंगी, कितना विषम भार,
छोड़ा, चल पड़ी, मूक—रोते-देखते खड़े सब रहे द्वार।

यह वह समाज था, कन्या का जिसमें स्वतंत्र अस्तित्व नहीं,
था पुरुष-प्रकृति में परिलक्षित होता वरीयता तत्व कहीं;
माँ और पिता की इच्छा का अपनी इच्छा को अनुगामी—
माना, प्रकाश में विचरण का उसके समीप था स्वत्व नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अन्धे समाज को स्यात देसके उसका अन्धापन जीवन,
कलुषित समाज को स्यात कर सके उसका अमर त्याग पावन,
था शून्य एक, दूसरा पूर्ण करने का क्रम चल पड़ा मौन,
अच्छा था, परिलक्षित न हुआ, जग को नैनों का गीलापन।

रथ में बैठा कर साथ चले, भ्राता शकुनी थे भाग्यवान,
संग में कर रक्खा था अमाँग उपहारों का विधिवत विधान
समयानुकूल हस्तिनापुरी पहुँचे प्रहृष्ट, प्रमुदित विशेष,
देखी कुरुकुल की मर्यादा, वैभव, प्रताप, महिमा महान।

हो गए भीष्म उत्फुल्ल, देख अभिलाषा की साकार पूर्ति,
उनके गृह थी अवतरित हुयी इन्दिरा बनी सौन्दर्य मूर्ति;
जगमगा उठा रनिवास छा गया कोने-कोने में उछाह,
नगरी के घर-घर में प्रसार पल में पा गयी नवीन स्फूर्ति।

'साध्वी यह राजकुमारी है, बन आयी है पति के समान,'
इस भाँति नगर के नर-नारी करते थे आपस में बखान;
शुभ दिन, सुलग्न में पाणि-ग्रहण-संस्कार कराके सम्पादित—
उठती सी एक समस्या का कर लिया भीष्म ने समाधान।

शकुनी को भी इस बीच सभी से राजोचित सम्मान मिला,
कौरव कुल के सम्बन्धी हैं, इससे सन्तोष महान मिला;
ले विदा सभी से, शुभ दिन में गान्धार समुद प्रस्थान किया,
भीष्म का दिया उनको यथेष्ट रत्नालंकृत परिधान मिला।

धृतराष्ट्र और गान्धारी को था प्राप्त हो गया सुख-निवास,
निश्चिन्त भीष्म थे पूर्ण स्वस्थ, चिन्ता विमुक्त अब था प्रकाश;
रह गए पाण्डु, उनकी न रही चिन्ता, वे थे सर्वाङ्ग पुष्ट,
रुकने को था न कहीं से अब कौरव-कुल का सम्यक विकास।

भूमण्डल पर यदुकुल विशिष्ट, रखता था अपना शुभ्र नाम,
थे शूर नाम के शूर वीर भूपति उदार चेत्ता अकाम;
कन्या थी रत्न प्रभा उनकी, था पृथा नाम गुण-ज्ञान-राशि,
थी अद्वितीय उसकी शोभा, सुषमा-सुन्दरता थी ललाम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



थे कुन्तिराज इनके अभिन्न मित्रों में, पर सन्तान हीन,
दे दिया पृथा को पालनार्थ, सन्तति हित उनको देख दीन;
उस नये पिता के घर कन्या का वर्धित था क्रमशः विकास,
वय के सँग चढ़ती जाती थी उसमें अनूप आभा नवीन।

वह ब्राह्मण और अतिथि सेवी, उसके समग्र ऊँचे विचार,
वह प्रतिदिन के व्यवहारों में पायी जाती थी नित उदार;
संयोग, एक दिन महातपी, तत्वज्ञ, जितेन्द्रिय, धर्म व्रती—
ब्रह्मर्षि श्रेष्ठ ऋषि दुर्वासा आ पहुँचे उसके सिंहद्वार।

कन्या ने समुचित सेवा से, उनका ऋषिवत सत्कार किया,
पद-प्रक्षालन उनका करके, धर्मानुकूल व्यवहार किया;
मीठी वाणी, मिष्ठान्न अशन, आचार और सुविचार मधुर,
ऋषि की प्रसन्नता पर उसने अविलम्ब अमित अधिकार किया।

बोले प्रसन्न हो—पुत्रि! हृदय मेरा देता वरदान तुझे,
सीता-सावित्री, गार्गी सा दुनिया देगी सम्मान तुझे,
तू जिसको चाहे वही देव तेरी सेवा में नत मस्तक;—
होकर कृतार्थ गौरव-गरिमा वाली देगा सन्तान तुझे।

आशीष वचन दे कन्या को ऋषि का तन अन्तर्ध्यान हुआ,
बालिका अभी थी बोध-हीन कौतूहल उसे महान हुआ;
लूँ परख, कहाँ तक सत्य वचन ऋषि का है, ऐसा कर विचार—
कुन्ती द्वारा सर्वाङ्ग तेजधारी रवि का आह्वान हुआ।

रवि की खर किरणों में जग ने पाया कोमलता का प्रसार,
भारी परिवर्तन था, चकोर के मन का भी पलटा विकार;
कोमल पंखुड़ियों के ऊपर छा गए स्वेद के नन्हें कण,
कानन में सुप्त पपीहे की जागृत थी पी-पी की पुकार।

कुन्ती ने देखा—दिव्य कवच-कुण्डल-धारी है भव्य मूर्ति,
तप, तेज, महामहिमा वाली अवतरित हुई साकार स्फूर्ति;
कोमल थे स्वर, बोले—भद्रे! मेरी क्या है सेवा अभीष्ट,
संकोच हीन हो कहो, अभी इच्छा की होगी सफल पूर्ति।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मुग्धा सहमी, सिहरी अधीर, उसमें भय का संचार हुआ,
उसके सारे कौतूहल का बस पल भर में संहार हुआ;
बोली—नितान्त मैं अनजानी हे तैजस ! यह उसका ही फल,
आह्वान आपका करने में मुझसे भारी अविचार हुआ।

'है प्राप्त तुझे ऋषिवर का वर, मैं आने को हो गया विवश,
कामना करो पूरी, इसमें न कहीं से भी होगा कल्मष;
इसमें भय लज्जा के प्रसंग का तनिक नहीं है स्थान कहीं,
कौमार्य नहीं डिग पायेगा, इसमें न कभी होगा अपयश।'

कन्या के उर भय लज्जा की परिचालित थी सवेग हलचल,
तेजस्वी रवि से बार बार याचना क्षमा की हुई विकल;
होगा न व्यर्थ मेरा आना सौभाग्यवती ! चिन्ता न करो,
यह कह रवि ने कर दिया स्पर्श उस सुकुमारी का तन उज्ज्वल।

समयानुकूल कुन्ती ने तेजस्वी सुत को उत्पन्न किया,
अपनी धृति-क्षमता से नभपति का पावन हृदय प्रसन्न किया;
तन पर तन-त्राण, प्रभा पूरित, शुभ लक्षण से चिन्हित शिशु ने–
पृथ्वी पर आते ही सप्त ग्रह लोकों को आसन्न किया।

आह्लादित, फिर चिन्तित कुन्ती का निर्णय-इसे छिपाना है,
अपना, बाबा का, परिजन का, पुरजन का मान बचाना है;
शिशु का गृह में रखना न सहज होगा रहस्य का उद्घाटन,
जैसे हो जग नैनों से बच, अपनों से दूर हटाना है।

यह निर्णय था अन्तिम निर्णय, माँ का उर पीड़ित हुआ प्रबल,
शिशु की ममता, जग की निन्दा, दोनों की द्वन्द्वात्मक हलचल;
जग निन्दा से डरने वाला, करता आया है आत्म-घात,
मानव सुसभ्य, मानवता से गिरता ही जाता है प्रतिपल।

मानव पशु में अन्तर इतना, मानव करता है निन्द्य काम,
अपने कुत्सित कर्मों का गोपन करता है कह राम-राम;
पशु सें बढ़कर पाशविक वृत्ति, आवरण किन्तु उस पर कठोर,
पशु के हैं कार्य खुले होते, मानव समाज का है गुलाम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अपने उर के टुकड़े को विलगाना सोचें वह है मानव,
झूठे समाज के बन्धन में आना सोचें वह है मानव;
जो जीत हार में आँक रहा, देखता धवलता में कलंक
भावना-कल्पना जग में भय खाना सोचे, वह है मानव।

इस मानव व्याख्या का कैसे कन्या कुन्ती अपवाद बने,
कैसे समाज से लोहा ले, कैसे परिजन-अपवाद बने;
क्वारी कन्या का पुत्र-प्रसव संस्कृत समाज का है कलंक,
इसको प्रकाश देकर कैसे जन जन का सबल विवाद बने।

अतएव अवांछित निर्णय ही अबला का था केवल आश्रय,
माता-उर में वेदना लिए, नैनों में लेकर अश्रु, सदय-
शिशु को देखा, मुख लिया चूम, कर दिया पिटारे में स्थापित,
यमुना की लहरों पर रख कर अपना कम्पित उर किया अभय।

उसके दिन कैसे बीत रहे, इसको न कभी जग ने जाना;
उसके आँचल का गीलापन कब धर्म-नीति ने पहिचाना;
जग के व्याख्यानुसार जग का पैदा कलंक जग लख न सका,
सीखा समाज ने जननी के आहत उर से उर बहलाना।

× × ×

राधा-पति, सूत-सुवन यमुना-तट बैठे भावों में विभोर,
सन्तति की चिन्ता में निमग्न थे देख रहे जीवन-हिलोर;
देखा सुन्दर पेटिका एक लहरों पर है बहती आती,
उनके चिन्ता कुल मानस में उद्वेलित कौतूहल अथोर।

कैसी पेटिका, कहाँ की है, क्या है इसमें रक्खे सम्भार,
जानना इसे चाहिए, अचानक यों मन में करके विचार-
मल्लाहों को आदेश हुआ, पेटिका पकड़कर मँगवायी,
उसमें देखा-शिशु प्रभा पुञ्ज, जीवित पाया एकाधिकार।

नन्दन बन का सुकुमार कुसुम, राधा के उर का हार बना;
युग युग का शुष्क, तप्त मरु थल हरियाली का संसार बना;
कब दिन आया कब रात गयी, राधा दम्पति को था न ज्ञान
उनका नीरस जीवन कोमल होकर सुख का आगार बना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कुन्ती ने राधा अंक भरा, भर गया नागपुर का अभाव,
कौरव-कुल और सूतकुल में पहिले से था दृढ़तम लगाव;
बढ़कर राधा-सुत शनैः शनैः हो गया राज-कुल-सम्बन्धित,
रानियाँ, भीष्म, सारे परिजन रखते बालक से प्रेम-भाव।

सम्वृद्धि प्राप्त कर कर्ण नाम से वह जग में विख्यात हुआ,
वैसा दानी, वैसा योद्धा उस काल न जग में ज्ञात हुआ;
रवि के आराधन में उसने अपना स्वर्णिम तन तपा दिया,
मन स्वच्छ, स्वच्छ मानस, विशाल रविसा तेजस्वी गात हुआ।

पूजोपरान्त जो गया, याचना की, उसको 'नाहीं' न मिला,
जो बात कही, वह बात रही, प्रण से वह तिल भर भी न हिला;
इतना उदार, दानी जग में न हुआ, यह बात प्रसिद्ध हुयो,
कौरव-कुल-मानस में सरोज बन सूत-सुवन बसुयाम खिला।

राधा-भर्ता के भावों का वह बना हुआ था केन्द्र-विन्दु;
राधा माता चकोर बन कर देखा करतीं थीं पूर्ण इन्दु;
पाकर पूर्णिमा उछलता है शशि स्पर्श हेतु सागर का उर,
देखकर कर्ण को दोनों का उछला करता था हृदय-सिन्धु।

उसकी प्रसिद्धि सुन सुरपति ने उसके आगे कर फैलाया,
याचना कवच की की, देने में तनिक नहीं वह घबराया;
तन त्याज्य, इसे जिसने जाना, उसको तनकी चिन्ता है कब,
दे दिया कवच, छोड़ी न टेक, उसको नश्वर तन कब भाया।

× × ×

कुन्ती की वय वह वय थी, जिसमें पिता नहीं थिर रह पाता,
जाग्रत की तो है बात अलग, सपने में भी वह घबराता;
माता ने जिसको दिया रक्त, दे दिया पिताने प्रिय जीवन,
वे ही प्रयास करते कन्या का जुड़े अन्य घर से नाता।

भूपतियों को सन्देश गया, आयोजन हुआ स्वयंवर का,
शोभा थी बढ़ी कुन्ति पुर की, यौवन कुसुमित था घर घर का;
आश्चर्य चकित सबने देखा उसका परिवर्तित भव्य वेष,
नगरी का निखरा हुआ रूप आवास बना देवेश्वर का।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सज्जित था राज-भवन, जैसे साकार कला हो बोल रही,
उसमें स्थापित हर सामग्री सौन्दर्य-भेद थी खोल रही;
कल्पना भी न उसकी शोभा की छाया को छू पाती थी,
चौदहों भुवन की छटा लिए लक्ष्मी सदेह थी डोल रही।

आ गया समय, राजाओं, राजकुमारों ने ले लिया स्थान,
उत्फुल्ल सभा, राजस समृद्धि कण कण में प्रसरित थी महान;
घोषणा हुयी, थी सभा मौन, सौन्दर्य-पुञ्ज का था प्रवेश,
पल भर गति विथकित हुयी, हुआ नीरवता का शासन-विधान।

धीरे धीरे दो नैन उठे, लज्जा से नत, कुछ भारी से,
देखा अशेष नत पलकों को, पल में ही बारी बारी से;
ले प्रभा-पुञ्ज थे पाण्डु जहाँ, नत हुए वहीं, बढ़ गए उधर,
बढ़कर उर कम्पन, बढ़ा मिलन को, अपने उर अधिकारी से।

पाया प्रकाश ने ज्योत्स्ना की वरमाला का मृदु आलिंगन,
क्षीरधि की तरल तरंगों में मिल गया जाह्नवी का जीवन;
चरणों में नत हो गये नैन, थी स्पष्ट स्वयंवर-परिभाषा,
परिचित हो एकाकार हुए दो उर से उठ झीने कम्पन।

मंत्रों से मुखरित हुआ पवन, मंगलमय सब सम्भार हुए,
दो राज्य मिले, दो वंश मिले, दोनों के गोत्रोच्चार हुए;
लौटे हस्तिनापुरी दोनों, जैसे भूतल के शची-इन्द्र,
कुरु-कुल के जीवन में जग के सारे वैभव साकार हुए।

सारे समाज में, राज्य, राजकुल में न तनिक विलगाव रहा,
चिन्ता विमुक्त पर भीष्म न थे, मानस में एक अभाव रहा;
हैं पाण्डु और कुन्ती प्रकाश, सात्विकता का शुभ समावेश—
करना है, यह उद्‌देश्य हुआ, पहिले से जिसका चाव रहा।

थे नृपति मद्र, जिनका शासन चर-अचर सभी को सुखकारी,
वाह्लीक वंश, गुण सम्पन्ना माद्री अनुजा उनकी प्यारी;
सात्विकता से थी ओत प्रोत, था योग्य पाण्डु से पाणिग्रहण,
उससे ही कुसुमित होनी थी हस्तिनापुरी की फुलवारी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



प्रस्ताव भीष्म का मद्रराज ने हर्षित हो स्वीकार किया,
अपना भविष्य उज्ज्वल, उज्ज्वल दोनों कुल का संसार किया;
माद्री का अपनापन पाकर हो गयी पाण्डु-सत्ता सात्विक,
रज-तम की नगरी में सदेह मानो सत ने संचार किया।

× × ×

देवकनृप भूतल पर प्रसिद्ध, उनका सुवंश उत्तम-कुलीन,
उनकी सुलक्षणा-कन्या, थी आचार-विचारों में प्रवीण;
परिजन के आग्रह पर उससे धर्मज्ञ विदुर का शुभ-विवाह—
सम्पन्न हुआ, तीनों कुमार ने अपनाया जीवन नवीन।

तीनों वयस्क, तीनों महान, तीनों से चालित हुयी सृष्टि,
तीनों से मोहक हुआ विश्व तीनों से भ्रम की हुयी वृष्टि;
तीनों विभूतियों को समेट बन गए शक्ति के संचालक,
तीनों ने बरबस वसुधा की आकर्षित कर ली सूक्ष्म दृष्टि।

गंगा की पावन धारा सा गंगा-नन्दन निर्मल मानस—
जग का कौतुक देखने लगे, तौलने लगे जग यश-अपयश;
मानस के दोनों तट सज्जित, हो लौह-स्वर्ण आभा मण्डित—
निर्माण कार्य थे संचालित, रस पूर्ण, कभी जो था नीरस।

तमकी नगरी थी एक ओर, सम्भार सभी थे ज्योति रहित,
सबको अपना अपना अभीष्ट, सबके अनहित में अपना हित;
औरों का आश्रित, किन्तु स्वत्व की रहे मान्यता सर्वोपरि—
ये भाव, यद्यपि औरों से क्या अपने से भी न रहे परिचित।

करुणा का था प्रसंग, यद्यपि यह भी प्रसंग था आवश्यक,
तम के अभाव में हो न सका नैनों को ज्योति-ज्ञान सम्यक्;
तम-ज्योति रूप दो स्रष्टा के, इनकी वरीयता मन-विकार,
कज्जल से ही उज्ज्वलता को करना था अपनापन सार्थक।

दूसरी ओर थी स्वर्णपुरी, छाया का भी स्वर्णिक शरीर,
ऊपर आभा थी मूर्तिमती, अन्तर प्रसन्नतम था अधीर;
वह मानवता का बना निकष, रह गया रूप-गुण परिवर्तित,
जिसके बल पर जग ने समझा सम्यक् विलगाना नीर छीर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



एक ही प्राण के दो शरीर, पर दोनों के गुण-धर्म विलग,
एक ही वृक्ष के थे दो फल, पर दोनों के रस अलग अलग;
एक ही मास, दो पक्ष बने, दिन-रात एक दिन के स्वरूप
था एक रूप तम आच्छादित, दूसरा रूप जगमग-जगमग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तृतीय सर्ग

■

# प्रसार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाँ तू है, वहाँ पर क्या नहीं है,
नहीं तू हो, न ऐसा थल कहीं है;
यही परिचित-अपरिचित सब बताते—
जगत के झूठ में बस तू सही है।

अगर भ्रम है, भ्रमित दुनिया रहेगी,
अहम् है तो पतित दुनिया रहेगी;
अहम् को ज्योति मिल जाये स्वयं से—
सदा को फिर नमित दुनियाँ रहेगी।

इसी से ज्योति अपने में छिपायी,
तमिस्रा की लगन जग में लगायी;
तमाशा सृष्टि में जी भर करें हम,
हमारी दृष्टि कज्जल मय बनायी।

मिली जब ज्योति, कब संसार देखा,
हुयी पहिचान, कब परिवार देखा;
करें सोचा, जिन्हें कुछ सोचना हो,
तुम्हें पाकर न जग से प्यार देखा।

सभी यदि ज्योति का आगार पायें,
सभी तम की अगर छाया बचायें;
भला संसार में क्या खेल होगा,
सभी ब्रह्मास्मि का यदि गीत गायें।

तुम्हारे ध्येय की होती पराजय,
कहाँ फिर रज्जु देता सर्प का भय;
कहाँ इस सृष्टि का अस्तित्व होता,
न मैं होता न तू, इसमें न संशय।

इसी से घोर तम तूने बनाया,
अँधेरी रात में चलना सिखाया;
कहीं पल भर न थिरता प्राप्त कर ले,
धरा को सुदृढ़ धूरी पर नचाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



प्रगति इसकी रुकी रुकने ना पाये।
कहीं तम में न अपने को छिपाये;
प्रभा के दीप नभ की कालिमा में—
इसी से रात में तूने. जलाये।

नयन की ज्योति में वर्गीकरण था,
प्रभा का चित्र तम का आवरण था;
किसी ने तम किसी ने ज्योति आँकी,
यही तो भ्रान्ति का पहिला चरण था।

किसी ने ज्योति को बस ज्योति जाना,
तमिस्रा को तमिस्रा रूप माना;
जिसे पहिचान कर पहिचान वाले—
बताते नीति का नाता निभाना।

किसी ने अन्ध तम में ही बितायी,
अँधेरे में प्रभा की लीक पायी;
प्रभा-तम बीच सिमटे रह गए वे—
जगत की बुद्धि की देकर दुहाई।

किसी को ज्योति तम की यामिनी थी,
अमा की कालिमा प्रिय भामिनी थी;
जिसे जो इष्ट, वैसा रूप दर्शन,
सभी अपनी परख की स्वामिनी थीं।

जहाँ थी ज्योति सत का स्वत्व छाया,
वहीं पर बीज ने तम बट छिपाया;
सभी आश्वस्त भावी-अंक में थे,
न थी मीमांसित तम-ज्योति-काया।

कहीं पर लीक टूटी तो न भाया,
बिना टूटे कहीं क्रम चल न पाया;
जहाँ जैसा वहाँ वैसा निभाना,
परिस्थिति-काल ने सबको सिखाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



न होता स्थूल नयनों में प्रभा-तम,
हृदय की ज्योति में ज्योत्स्ना महत्तम;
यही सिद्धान्त की जर्जरित आस्था,
नियोजित स्थूल नयनोंका महातम।

भला धृतराष्ट्र क्यों शासन चलायें,
प्रशासक-धर्म को कैसे निभायें;
नहीं हैं ज्ञान-चक्षु यहाँ अपेक्षित,
नयन को राजमद जाते पिलाये।

अतः थे पाण्डु ही राज्याधिकारी,
वहाँ तत्त्वज्ञ थे कोरे अनारी;
यही है राजसत्ता की महत्ता,
उचित-अनुचित नहीं जाती विचारी।

जिसे है शक्ति देती नित्य जीवन,
जिसे पितृव्य का अविकल समर्थन;
जिसे अग्रज अमिट विश्वास देता—
वही है धन्य, उसका धन्य यौवन।

कड़ी से जो नृपति विलगा गये थे,
सबल हो स्वत्व अपना पा गये थे,
उन्हें कुरुराज की दृढ़ श्रृंखला में—
मिलायें, भाव ऐसे आ गए थे।

गयी चतुरंगिनी सेना सजायी,
गयी प्रतिशोध की ज्वाला जगायी;
निबल को शक्ति देने के बहाने—
सबल की शक्ति की होती बड़ाई।

बढ़ी सेना, बढ़ी मरुभूमि सँग सँग,
बढ़ा दारिद्र-करुणा का समागम;
जहाँ देखा किसी ने सिर उठाया,
वहीं की भूमि शोणित से गयी रँग।

५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जिन्हें कुरुराज ने निज शत्रु माना,
न छिपने का रहा उनको ठिकाना;
प्रजा को भाग्य के छोड़ा भरोसे,
असम्भव था स्वयं ही त्राण पाना।

किसी से राज्य-धन का कोश पाया,
किसी को करद नत करके बनाया;
किसी का मान, यश, गौरव समेटा,
स्वयं का मान, यश, गौरव वढ़ाया।

भरत की कीर्ति खोयी, लौट आयी,
फिरी कुरुवंश की घर घर दुहायी;
हुए शान्तनु पुनः जीवित जगत में
प्रतिष्ठा भीष्म ने अनमोल पायी।

दिशायें थीं विजित, आकाश नत था,
उदधि थे शान्त, उनका तेज हृत था;
विरस थी रसवती, कृशगात नद थे,
प्रकृति-अष्टाङ्ग चरणों में विनत था।

जगत का शौर्य कुरुकुल में समाया,
धरा ने मान कुरुकुल का बढ़ाया;
ससेना पाण्डु लौटे हस्तिनापुर,
नगर में भव्य नव उत्कर्ष आया।

थकन थी युद्ध की उनको मिटानी,
विजय-उन्माद की गुरुता घटानी;
जगत का रूप परिवर्तित न होवे,
बनानी शेष थी भावी कहानी।

अतः था पाण्डु को अभिलषित कानन,
बिताना चाहते थे शान्त जीवन,
किया जिसने अशान्त अनेक मन को,
नहीं सम्भव कभी वह हो न उन्मन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



गए बन पाण्डु, सँग में रानियाँ थीं,
वहाँ पशु-पक्षियों की बानियाँ थीं,
नगर के चाटुकारों से सुरक्षित—
प्रकृति की प्राणवान कहानियाँ थीं।

कहाँ, किसने कभी भावी मिटायी,
पकड़ में कल्पना की वह न आयी;
मिला अभिशाप मुनि से पाण्डु को भी,
मिली उन्माद की उनको कमायी।

कभी यदि वासना में मन भरेगा,
समागम रानियों से यदि करेगा;
तुम्हारा कृत्य यह दुष्कृत्य होगा,
स्वयं निर्मित चिता में तू जरेगा।

हुआ विक्षुब्ध विथकित पाण्डु का मन,
बदल पल में गया उन्मत्त यौवन;
जहाँ आशक्ति थी जग वृत्तियों में,
अभागा हो गया सौभाग्य-जीवन।

तपस्वी, बानप्रस्थी पाण्डु का तन,
जगत की कामना में लिप्त पर मन;
चलेगा वंश कैसे, चिन्त्य यह भी,
द्विधा के मध्य था दुश्चिन्त्य जीवन।

हुआ आदेश कुन्ती को-प्रिये ! तू-
न हो चिन्तित, बड़ों से सीख ले तू;
मुझे जिस रूप में जीवन मिला है-
उसी में पुत्र-उत्पादन करे तू।

सती ले पूज्य पति आदेश सिर पर-
हुयी सन्तति उपार्जन हेतु तत्पर;
मिला ऋषि श्रेष्ठ से वर काम आया,
इसी दिन के लिए था स्यात वह वर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अपेक्षित धर्म था, धर्मानुरागी–
सुवन की भूप के मन प्यास जागी,
हुआ आह्वान, धर्म सदेह आए,
सती ने धर्म से सन्तान माँगी।

युधिष्ठिर धर्म का अवतार होकर,
धरा की धूलि में अविकार होकर,
प्रकृति का अंक उकसाने लगे थे–
जननि द्वय अंक का मृदु प्यार होकर।

नृपति को शक्ति है वांछित सदा ही,
रजस भी हो सदा सत सँग लगा ही;
यही था ध्येय कुन्ती से निवेदन–
अपेक्षित शौर्य की अवतारण भी।

किया तब वायु का आह्वान सत्वर,
हुआ बल-पुञ्ज का अवतार भू पर;
जगत ने त्राण का सन्देश पाया,
युधिष्ठिर को मिला बल भीम बनकर।

जहाँ है धर्म का, बल का सहारा,
सुलभ जग की तरी को है किनारा;
पराक्रम का अभाव न हो इन्हें यदि–
वनेगा स्वर्ग ही संसार सारा।

अगर मन-भावना कुन्ती परख ले,
हृदय की चाह की यदि लाज रख ले;
सफल यह हेय जीवन हो सकेगा,
व्यथा की वृत्ति की तड़पन निरख ले।

निवेदन पाण्डु ने मन की व्यथा की,
सती ने पति-हृदय की पीर आँकी;
रहे पति देव की इच्छा अधूरी?
मरण था श्रेष्ठ, यदि उसने न 'हाँ' की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पराक्रम में प्रमुख देवेश ही हैं,
उन्हीं की शक्ति से चालित मही है,
उन्हीं का ध्यान श्रेयस्कर रहेगा,
समुन्नत सृष्टि में उनसा नहीं है।

प्रतापी इन्द्र की आराधना की,
हुयी अभियाचना उनकी कृपा की;
मिला कुरुवंश को अर्जुन यशस्वी,
पयस्विनि शुष्क थी छाती धरा की।

हुयीं समवेत इच्छायें न पूरी,
मिटी मन-कामनाओं की न दूरी;
दिशायें गुञ्जरित, कुछ चाहती हैं,
रहे क्यों तान वंशी की अधूरी।

सुखी परिवार सीमावद्ध होकर—
रहेगा शान्ति जीवन में सँजोकर;
अपरिचित थे न, पर यह कामना थी–
सुलभ हो पाँच पुत्रों की धरोहर।

रहे माद्री वनी दीना, न उत्तम,
इसी के भाग्य में क्यों उल्लिखित तम;
बनायी जा सके आर्द्राञ्चला यह,
महादेवो करें अनुकूल उपक्रम।

समागम बुद्धि का, सौन्दर्य का हो,
मिलन सर्वोच्च तत्वों का नया हो;
विविध रस, रूप, गन्धों से सुशोभित—
भरत वंशी नवेली वाटिका हो।

महादेवी द्रवित थीं सौत पर भी,
कृपाकांक्षी रहे उनके अमर भी;
पुकारा, अश्विनी नन्दन पधारे,
चले रतिनाथ के मृदु पंच शर भी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हुयी माद्री विमोहित सी, विमूर्छित,
कुमारों से हुयी तत्काल आर्द्रित;
जगत ने और उसने भी न जाना—
सुधाकण था सुधाकर को समर्पित।

नकुल सौन्दर्य का अवतार होकर,
विकृति में संस्कृति साकार होकर;
कलाधर-कौमुदी में कल कुमुद सा,
खिले मुसकान का आधार होकर।

जगत पर बुद्धि का नैतिक नियंत्रण,
बना सम्पन्न इससे सृष्टि-अणु-कण;
हुयी सहदेव में साकार प्रतिभा,
हुआधी-धृति-सहज गाम्भीर्य विचरण।

प्रकृति के प्यार का वह पुण्य थल था,
धरा के ज्ञान का निर्झर अमल था;
जहाँ था पाण्डु का परिवार विकसित,
वहाँ का वन्य-जीवन भी सफल था।

बढ़े पाँचो सुवन यश की कला सा,
निरीहों में बढ़ी जीवन पिपासा;
प्रभाकर की प्रभा बन बीच केन्द्रित,
विमूर्छित विश्व की दुर्वह दुराशा।

वहाँ ऋषि पत्नियों से स्नेह पाया,
निकुञ्जों से मनोहर गेह पाया;
मिला मुनि मानसों से मार्ग दर्शन,
प्रकृति से स्वर्ग-सौख्य सदेह पाया।

वहाँ वन के नियम का अध्ययन था,
वहाँ ऐहिक सुखों का संयमन था;
कहीं था बाहु-बल का बोलबाला,
कहीं फल-प्राप्ति में सञ्चित नमन था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नगरवासी जिसे दुर्गम बताते,
हठी शिशु भय दिखा जाते डराते;
वही बन पाण्डवों का पौष्य-थल था,
वहीं भयमुक्ति की थे सीख पाते।

हुआ बन-भूति का अभ्यास उनको,
प्रकृति का पूजनीय सुपास उनको;
नगर के सौख्य का क्या रूप होता—
तनिक भी था नहीं आभास उनको।

उधर थी हस्तिनापुर भी प्रफुल्लित,
धरा पर स्वर्ग का सौन्दर्य विकसित;
समूचे राष्ट्र की आशा सँजोये—
महारानी फलीं-फूलीं हिताहित।

उधर कानन बना जब भीमशाली,
बनी तब राजधानी भी निराली;
हुए धृतराष्ट्र के सुतवर सुयोधन,
सखप्पर नृत्य में तत्क्षण कपाली।

रुदन शिशु ने किया गर्दभ सरीखा,
शृगालों ने परुष लय-तान सीखा;
सक्रिय थे गिद्ध-काक, उलूक निर्भय,
शकुन में अपशकुन का साज दीखा।

दिशाओं में जलन, नभ में उदासी,
धरा की सौम्य हरियाली पिपासी;
सिमट कर वायु-मण्डल स्तब्ध सा था,
दिवाकर ज्योति क्षणभर थी दिया सी।

चला झंझा भयंकर, भूमि कम्पन,
स्खलित भूधर, हुआ उद्विग्न कानन;
नदी-नद उच्छरित, नीरधि तरंगित,
प्रकृति की उग्रता का रूप दर्शन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



समूचा राष्ट्र भय आतुर विकल था,
महा बलवान भी तत्क्षण निबल था;
न सुनने में कभी जो बात आयी–
उसे देखा, जहाँ थल आज जल था।

हुए धृतराष्ट्र अतिशय क्लान्त विथकित,
महत्वाकांक्षा थी आज कुण्ठित;
प्रलय तक राज्य की मधु कल्पना थी,
हुयी पल में विमूर्छित हो पराजित।

विदुर को शान्ति हित सहसा बुलाया,
हृदय मन्थन मुखाकृति में दिखाया;
शकुन में अपशकुन ऐसे भयंकर ?
स्वयं से प्रश्न का उत्तर न पाया।

समय की है जिसे गतिविधि अपेक्षित,
समय का है उसी को ज्ञान समुचित;
समय को पक्ष में करना जिसे है—
समय को वह न कर सकता उपेक्षित।

विदुर गति काल की पहिचानते थे,
प्रकृति के क्रोध को भी जानते थे;
विकल होकर सभी हैं शीश धुनते,
थकन में ह्रास को वे मानते थे।

अतः धृतराष्ट्र से था यह निवेदन,
प्रकृति विक्षुब्ध है, विक्लान्त, उन्मन;
शमन इसका अपेक्षित मान्यवर से—
धरा का अन्यथा दयनीय जीवन।

विकृति के मूल में दैवी कुगति है,
किसी नर श्रेष्ठ की अथवा कुमति है;
असम्भव है नहीं, नवजात शिशु से—
यहाँ आयात सम्भावित विपति है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



समूचे वंश का है नाश इसमें,
प्रकृति है खो चुकी विश्वास इसमें,
विकल है शान्ति, सिहरा सौख्य जग का,
नहीं जो कट सके, वह पाश इसमें।

अगर कुल–नाश का है एक कारण,
उसे छोड़ें, करें परिवार रक्षण;
यही है नीति, हे कुरुवंश–पालक !
सदा को त्याज्य है यह सुत कुलक्षण।

चकित से हो गए धृतराष्ट्र यह सुन,
लगे गुनने सम्हल कर शकुन-अशकुन;
'प्रकृति का था क्षणिक उन्माद व्यतिक्रम,
अलक्षित प्रेम में शिशु सुगुण-अवगुण।

समूचे राष्ट्र में आनन्द छाया,
गया आदेश शासन का सुनाया;
प्रजा का दान ग्रह की शान्ति हित था,
गया जन-कोश ग्रह-हित में लुटाया।

हुए धृतराष्ट्र के शत सुवन मानी,
तमिस्रा की उभर आयी जवानी;
असत के बीज में बट अंकुरित था,
लगी कुविचार की बनने कहानी।

× × ×

टली भावी किसी के भी न टाले,
पतन का वेग कब सम्हला सम्हाले,
मनुज ने सृष्टि को जीवन दिया कब,
नहीं सामर्थ अपने को बचा ले।

भ्रमर गुञ्जन परागों में समाया,
तितलियों ने सुपंखों को सजाया;
कुतरता कीर दाड़िम की कली को,
पवन वंशी–स्वरों में गुन गुनाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



समय मनहर, प्रफुल्लित थीं लतायें,
सजग थीं मञ्जरी में पिक व्यथायें;
भरे अनुराग में टेसू-कुसुम थे,
नये परिधान थीं रँगतीं दिशायें।

मृगी ने चकित मृग-चख-कोर देखा,
करी ने साल बन की ओर देखा;
मयूरी मोर को ललचा रही थी,
प्रकृति ने पुरुष मन में चोर देखा।

छटा बतला रही, मधुमास आया,
मुरझतों में नया उल्लास आया;
शिरायें उष्ण होकर तीव्र गति में,
थकित मन में नया विश्वास आया।

विपर्यय रूप कानन का सुहाना,
तपी का ध्यान था केवल बहाना;
पिघल कर प्रेम में हिंसा अलक्षित,
क्षुधित शिशु का रुदन माँ ने न जाना।

कुसुम सा गात कुसुमों से सजाया,
कनक आभा सुहागा से बढ़ाया;
सजाया रूप माद्री ने परी सा,
उतर भू पर शरद का चाँद आया।

निकुञ्जों में बनी विह्वल-विभोरी,
चहकने लग गयी सहसा चकोरी;
सरोवर में कमल सकुचा रहा था,
जगी सोयी हुई कुमुदिन-किशोरी।

तपस्वी पाण्डु का तप सो रहा था,
सजग मुनि-शाप गतिमय हो रहा था;
लगे वे माद्री का रूप पीने,
सुधी भी आज सुधि को खो रहा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हुए बेसुध, हुआ मन-पत्र चलदल,
प्रसाँसों में जलन, उद्वेग हलचल;
प्रलय से कब प्रणय भयभीत होता,
नयन अनुरक्त थे, प्रण-प्राण विह्वल।

सजग माद्री हुयी, सिहरी भयातुर,
सजग अभिशाप था, कम्पित हुआ उर;
भगी निज को निकुञ्जों में छिपाने,
नृपति के पग बढ़े उस ओर आतुर।

सुहृद के अंक में वह आ गयी थी,
सिमट कर पाण्डु पर वह छा गयी थी;
प्रणय रस-स्रोत का मरु में विलय था,
नृपति-गति गगन-गोद समा गयी थी।

रुदन, चीत्कार, ममता का प्रदर्शन,
मरण उपरान्त परिजन के सजीवन—
चिता में पाण्डु का नश्वर जला तन,
जली माद्री, रही प्रिय-प्रीति-भाजन।

नयन में मौन सिमटे अश्रु के कन,
हृदय बोझिल, थकित तन, मन्दजीवन;
करे क्या, सोच पाती थी न कुन्ती;
भयंकर काटता था आज कानन।

उसे मुनि-वृन्द ने धीरज बँधाया,
नियति-गति, भ्रांति, माया को बताया;
हृदय के घाव को संवेदना ने—
भरा कब, वेदना को कब सुलाया?

उचट उसका वहाँ से था गया मन,
दुखित था स्वयं दुःखालिप्त मुनिगन;
लिये कुन्ती सहित पाँचो कुँअर को—
चले वे हस्तिनापुर ओर उन्मन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



विजन का शोक पुर में आ गया था,
उदधि सन्ताप का लहरा गया था,
सुगति के श्राद्ध के सँग धर्म-जीवन—
धरा के अंक में मुरझा गया था।

लगा पुर प्रगति का विश्वास खोने,
हृदय में भाव थे प्रकटित घिनौने;
प्रजा में क्षोभ, भय, शंका समायी,
पतन के सब लगे सम्भार होने।

भीष्म थे शान्त, थे धृतराष्ट्र बेकल,
विदुर की भावना में मौन हलचल;
किसे अम्बालिका के भाव लक्षित,
व्यथा ही मातृ-उर का मात्र सम्बल।

सुतों को पाँच प्राणों से सँजोये,
जलन को अश्रु के कण से भिगोये;
बुरे दिन काटती विक्लान्त कुन्ती
भयावह चेतना का भार ढोये।

शयन, भोजन, वसन की सुधि बिसारे,
बितातीं काल विस्मृति के सहारे;
दशा माँ की समझ ली व्यास जी ने,
चरण अम्भोज में सत्वर पधारे।

हुआ मंगल पदों में नत निवेदन,
जननि ! भूपर तुम्हारा धन्य जीवन;
तुम्हारा यह तनुज हिरण्यात्मा है,
मिला अमृतत्व तुझसे, स्नेह-वन्धन।

समय-जीवन सदा गतिशील होते,
सभी हैं सृष्टि का अभिशाप ढ़ोते;
समय-प्रतिवन्ध जीवन मानता है,
समय में कर्म जीवन के पिरोते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



समय की माँग, सुख का अन्त होगा,
असत सम्मान, दुःख अनन्त होगा;
असत-सत, दुःख-सुख, तम-ज्योति में लय—
धरा का क्रम प्रलय पर्यन्त होगा।

असत की सृष्टि वैभव शालिनी है,
स्वकुल सँग राष्ट्रहित की घालिनी है;
हुयी है क्षीण, सत की ज्योति निर्मल,
विभव, सुख, शान्ति की जो पालिनी है।

नहीं प्रासाद में होगा सबेरा,
इसे अवसाद ने है आज घेरा;
कहे कैसे गिरा, भवितव्य क्या है,
उलूकों का यहाँ होगा बसेरा।

थकित, विथकित धरा की है जवानी,
समय का पी रही है आग-पानी
जिसे फिर काल भी दुहरा न पाये,
बनाने जा रही ऐसी कहानी।

निकट ही काल ऐसा आ रहा है,
कपट, छल, छन्द जाल बना रहा है;
रहेगा मोह-मद का बोल बाला,
विकट सा चक्र-व्यूह रचा रहा है।

असत-तम का अमोघ प्रहार होगा,
प्रवल, परिपक्व भ्रष्टाचार होगा;
नहीं सतके चरण दृढ़ रह सकेंगे,
असत का आसुरी व्यवहार होगा।

गुणों से सृष्टि स्वयं विरक्त होगी,
स्वयं के रक्त से अनुरक्त होगी;
निगलते साँप पोये आप अपने,
धरा इस रूप में अब व्यक्त होगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मिटेगा वंश, कौरव-आचरण से,
छिपेगी ज्योति तम के आवरण से;
तनय धृतराष्ट्र के उद्दण्ड होंगे,
सजेंगे वृत्ति ध्वंसक उपकरण से।

पराक्रम-शौर्य का संहार होगा,
निबल पर घोर अत्याचार होगा;
लुटेगा चीर अपनी रमणियों का,
महा चीत्कार का संसार होगा।

रहेगी इस तरह हिंसा प्रबलतम,
चलेगा द्वेष, कुण्ठा, दानवी क्रम,
पिता से पुत्र, पति से धर्म-पत्नी—
चलायेगी घृणा सा हीन उद्यम।

तुम्हारा मातृ-उर होगा प्रताड़ित,
तुम्हारे स्वप्न का संसार पीड़ित;
प्रलय का उग्र ताण्डव देख होंगे—
तुम्हारे अश्रु-पूरित नैन विथकित।

जलज हिमपात से मुरझा न जाये,
अनल बन का न लतिका को जलाये;
कहीं उन्मत्त सी उमड़ी घटा से—
न यश की कौमुदी पर आँच आये।

अतः तुमसे यही है नत निवेदन—
भलों का इष्ट होता शान्त जीवन,
नहीं सम्भव, मिले वह पुर-नगर में,
तुम्हें है श्रेय अब केवल तपोवन।

सही है, अन्त में है सत्य की जय,
नहीं अन्याय सुनता किन्तु अनुनय;
प्रपञ्चों की पहुँच से दूर हट कर—
तुम्हारे योग्य केवल योग-आश्रय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तुम्हारा पुत्र भी आश्रम-निवासी,
जहाँ रहते तपी, ऋषि-मुनि-उदासी;
तुम्हारी शान्ति में सब योग देंगे,
रहोगी पूजनीया शशि-कला सी।

मुझे दो मातृ-पद-सेवा-सुअवसर,
सुपुत्रों में जगत ले नाम सादर;
तुम्हें जगदम्ब सा जग पूज्य माने,
रहे पद पद्म में नत विश्व किंकर।

"नगर-मानव अगर असमर्थ होगा,
यहाँ का वास मेरा व्यर्थ होगा;
धरा के नग्न विध्वंसी करण से—
रहे परिचय, महान अनर्थ होगा।

जहाँ तुम हो, वहीं अब वास मेरा,
वहाँ का सान्ध्य भी मुझको सबेरा;
यहां तो प्रात के सँग कालिमा है,
यहां दिनमान में तम का बसेरा।"

वुला कर भीष्म को निर्णय सुनाया,
उन्हें कुरुवंश का आगम बताया;
ग्रहों की शान्ति, अर्चन और पूजन—
कहा, उस काल जो जो याद आया।

तपोवन को चलीं तपके सहारे,
रजस प्रासाद की ममता बिसारे;
प्रभा की—पुण्य की अन्तिम किरण को—
नगर से व्यास ले कानन सिधारे।

नगर की शक्ति वन में आ गयी थी,
प्रकृति की भक्ति तप पर छा गयी थी;
कुमारी कल्पना कुरु कुल उदय की—
अलक्षित अस्त अंक समा गयी थी।

■

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतुर्थ सर्ग

■

# विभेद



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जितने हैं उपकरण सृष्टि के, उतने भिन्न स्वरूप भेद हैं,
यदि प्रकाश है, जल-पय विलगाने के प्राप्त अचूक भेद हैं;
तम से आच्छादित चेतन भी जड़ की भ्रान्ति दिया करता है,
अन्तः के तम-प्रभा-पृष्ठ पर चित्रित रूप-अनूप भेद हैं।

वीणा से छूटा स्वर सत्वर पवन-पीठ पर लहराता है,
पथ पर पड़ने वाले अनजाने प्रतिश्रुति को छू जाता है;
कर देता है कहीं किसी तन्मय मृग का वेसुध उर विह्वल,
और कहीं पत्थर से टकरा कर मन ही मन पछताता है।

पद पद्मों के मधु पराग से वसुधा का कन कन वासित है,
जन-हित-चिन्तन के श्रम-सींकर से जग का जीवन वासित है;
पग-परित्याग, पकड़ जड़, कितने जड़ हो भ्रमित रहे आजीवन,
जिसने पहिचाना, उसका अपना वैभव, तन-मन वासित है।

तुम भी स्वेच्छा से अनेक रूपों में परिलक्षित होती हो,
मानव-दानव के भावों के चित्रों में चित्रित होती हो;
तेरा ही प्रिय राज हंस, तेरा ही प्रिय उलूक, हास्यास्पद,
किन्तु उन्हें ही, जिनके जीवन में न कभी आर्द्रित होती हो।

मुण्ड-मुण्ड मति भिन्न, तुम्हारी माया का सिद्धान्त अमर है,
प्रति जन-मन की भिन्न भावना, एक कण्ठ में अनगिन स्वर हैं;
अनाचार-आचार भिन्न मस्तिष्कों से चित्रित विभिन्न हैं,
कार्य एक ही पाप किसी को और किसी को श्रेयस्कर है।

मति में सम्भव साम्य हो सके, आदि काल से ही प्रयास है,
किन्तु व्यक्तिगत प्रतिभा को इसमें अद्यावधि अविश्वास है;
व्यक्ति श्रेष्ठ होता समाज से, वह समाज का संचालक है,
जन निर्मित विभिन्न वादों में परिलक्षित इसका विकास है।

अपना ही मति सर्वश्रेष्ठ, यह भाव अनूठा उपजाया है,
अपनी इच्छा हो सर्वोपरि, किसने किसको सिखलाया है;
मानव की सत्ता भुजंग की मणि के तुल्य हुआ करती है,
मानव की श्वानवत प्रकृति निर्मित करती तेरी माया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आदृत यह हो सके, अतः तुमसे सीमित जीवन का क्रम है,
मानव की कामना, दीर्घ जीवन में यश कितना विभ्रम है;
सच तो यह है, वह कुकार्य के लिए खोजता फिरता अवसर,
जग के लीला करण और दर्शन में जग-जीवन का भ्रम है।

सीमित जीवन में चाहता बाँध रखना जग की ममता है,
क्या क्या करता, किन्तु क्षोभ है, प्राप्त उसे सीमित क्षमता है;
प्रलय अन्त तक जग को दास बनाने की प्रवृत्ति जाग्रत है,
चंचल गतिमय समय-पीठ पर किन्तु न पल भर भी थमता है।

जीवन है स्वप्नवत, न इसका ज्ञान उसे होने देती हो,
नहीं शुभाशुभ कर्मों की पहिचान उसे होने देती हो;
उत्थित जलधि तरंगों में मन के विकार की परिभाषा है,
अभिलाषाओं से न कभी अनजान उसे होने देती हो।

इतना अहम् कि सारा जग केवल उसकी अभिलाषा देखे,
इतना अहम् कि देवलोक भी उसकी अमृत-पिपासा देखे;
इतना अहम् कि सृष्टि समूची झुक जाये उसके चरणों में,
किन्तु किसे अवकाश कहाँ, जो उसका अन्त, निराशा देखे।

जग-वैभव में ज्योति खोजता, अन्धकार में डूबा मन है,
शिशुपन की स्मृति शेष, ढूंढ़ता बीता उन्मादी यौवन है;
यश-स्तम्भ की नींव खोखली पाता, कितना विषम भार है,
मन उद्वेग, अतृप्त वासना, मानव का अन्तिम जीवन है।

पाण्डु और धृतराष्ट्र एक ही शाखा के दो सुमन रँगीले,
उनकी सन्तानों के रंग विभिन्न सित-असित, नीले-पीले;
पूर्ण विकास पूर्व हिंसा-प्रति हिंसा की भावना भयंकर,
मधु-मिश्री सम्बन्ध अपेक्षित, पर उन्मुख थे भाव कँटीले।

बाल सुलभ क्रीडा में अहम् अंकुरित, हम–तुम का परिचायक,
क्षात्र-वृत्ति थी सजग, सजग था युद्ध-नाद, वेदना-विधायक;
भीम धार्तराष्ट्रों को छेड़ा करते थे जाने अनजाने,
असहनीय था उसे, चाहता था जो बने राष्ट्र का नायक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



महा पराक्रम पूर्ण, महा बलवान, महान शौर्यशाली हैं,
धार्तंराष्ट्र कितने में हैं, यह सब उसकी देखी भाली हैं;
यह अंकुरित बीज निश्चय ही महा विटप का रूप छिपाये—
उकस रहा, इससे मेरे कुल की समाप्ति होने वाली है।

यही नीति, दुखदायक का दुख देने से पहिले विनाश हो,
हो न सके पल्लवित अभी से, हम सबका ऐसा प्रयास हो;
कहाँ बजेगी वंशी, यदि हो गया बाँस का ही उच्छेदन,
पड़ा हुआ था दुर्योधन उधेड़-बुन में मन में निराश हो।

ध्यान भंग तब हुआ, आ गये कर्ण-शकुनि से उसके साथी,
तृण का मिला सहारा, उसने उनसे मन की व्यक्त व्यथा की;
हुआ विचार-विमर्श, भीम-वध की कुयोजना गयी बनायी,
कुल-विनाश की प्रथम ईंट उसने अपने हाथों से थापी।

वन-विहार की चित्ताकर्षक, सुखद योजना गयी बनायी,
गंगा तट पर सौम्य भूमि नन्दन कानन सी गयी सजायी;
वस्त्रों का विशाल गृह सुख-सामग्री से भरपूर हो गया,
विविध भोज्य-सम्भार-गंधने संयमियों की भूख जगायी।

पाण्डुसुतों को दुर्योधन का द्वेष-प्रेम मय आमंत्रण था,
चाह रहा था तुरत दबाना, उभर रहा जो उर का व्रण था;
बेचारे पाण्डव क्या समझें क्या उसके मन में था पकता,
बन-विहार को गए, प्रकृति का जहाँ सौख्य-सिंचित कण कण था।

थोड़े काल दृश्य-दर्शन, मृगया, अश्वों का आरोहण था,
आच्छादित पुष्पों से कुँजों के विहार का अनुपम क्षण था;
जिधर दृष्टि जाती थी, चित्त उधर ही था बरबस बँध जाता,
अनुभूतियों–विचारों का मिश्रित चलता-फिरता विवरण था।

तन-थकान की सुधि न रही, मन था प्रसन्न सब फूले-फूले,
उस थल से बाहर जो था, सब था अचिन्त्य, सब दो क्षण भूले;
तृषा-क्षुधा की याद दिलायी, सुप्त चेतना पुनः जग गयी,
प्रतियोगिता लौटने में भी, कौन शिविर को, पहिले छू ले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



थे अनगिन प्रकार के व्यंजन, सभी रसों का समावेश था,
चर्व्य, चौष्य, अवलेह, पेय में स्वादों का मिश्रण विशेष था;
जिन्हें देखने से ही तत्क्षण शान्त क्षुधा द्विगुणित हो जाती,
क्षणिक प्रतीक्षा कर लें, इतना धैर्य किसी में नहीं शेष था।

सुधा सरिस स्नेहिल वचनों से मुर्दों को भी जिला रहा है,
एकएक को पूछ पूछकर बड़े चाव से खिला रहा है;
भोजन भट्ट भीम के मुख में अपने हाथों ग्रास डालता,
सुधा वचन, पर सुधा अशन के सँग-सँग विष भी पिला रहा है।

दुर्योधन के कुटिल प्रेम में पाँचों पाण्डव–भ्रान्त, खो गये,
तन विथकित, भोजन गंभीर, कोमल शैय्या पा शीघ्र सो गये;
विष के गुरु प्रभाव ने तन पर धीरे-धीरे जाल बुन दिया,
जकड़, अँकड़ करवट बदले, फिर बली भीम बेहोश हो गये।

उठा भीम की भारी काया गंगाजी में गयी डुबायी,
अचिर तुष्ट दुर्योधन मन ने आजीवन चिन्ता अपनायी;
अहम् प्रबल है, प्रायः इसके ऐसे खेल हुआ करते हैं,
अल्पकाल के लिए भीम ने परदादी की गोदी पायी।

उनका तन प्रवाह गति में जलवासी विषधर से टकराया,
क्रुद्ध सर्प के क्रूर दंश ने पुनः गरल-संचार कराया;
विष ही विष की औषधि है, यह दंश महा वरदान हो गया,
विष बन अमृत भीम की काया को नव-जीवन देने आया।

रहा पितामह को अलभ्य, थे ऐसे पावन अंक आ गये,
लहर-लहर कर लहर-पालने में तट-सिकता-पीठ पा गये;
मानव की इच्छायें प्रायः सपने सी असार ही होतीं,
प्रथम चाल में ही दुर्योधन असम्भावित मात खा गये।

विद्युत-गति सा यह कुकृत्य जन-जन-मानस में हुआ प्रसारित,
निन्दा के संकल्प न्याय-पथ-पथिकों से दिक्-दिक् थे पारित;
पाँचों सुवन सहित भविष्य की माँ कुन्ती को चिन्ता व्यापी,
सह अस्तित्व–नींव पर जीवन शान्त बिताना था सुविचारित।

× × × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कपिल–कणादि आदि ऋषियों का महामान, भारी प्रभाव है,
सभी शास्त्र, इतिहास, पुराणों का इनके प्रति गुरु झुकाव है;
गौतम ऋषि के शिष्यों की जो यशस्विनी प्रचलित परिपाटी—
उसका ऋषि–महर्षियों की परिपाटी में लक्षित अभाव है।

गर्ग और शाण्डिल्य गोत्र से भी ऊपर गौतम का थल है,
वेद-शास्त्र के साथ धनुर्विद्या का इनको स्थायी बल है;
गौतम ऋषि के शरद्वान आत्मज धनु-विद्या के पण्डित थे,
उनके सुवन कृपा का सुदृढ़ स्थान पुराणों में अविचल है।

धनुर्वेद के कृपाचार्य चारों भेदों के व्याख्याता थे,
शस्त्र-अस्त्र-प्रत्यस्त्र और परमास्त्र सभी के ये ज्ञाता थे;
धार्तराष्ट्र, पाण्डव, यादव सबने इनसे शिक्षा पायी थी,
सच तो यह है, अपने युग के धनुर्वेद के निर्माता थे।

उसी काल ऋषि भरद्वाज गंगा तटवासी महातपी थे,
उनके तप-प्रताप की महिमा गृही-तपी मानते सभी थे;
ज्ञान-शौर्य के उच्च शिखर पर सुवन द्रोण का उच्चासन था,
द्रुपद, पंचनद देश-नृपति इनके बचपन के सुहृद सुधी थे।

गौतम–भरद्वाज गोत्रों का इस प्रसंग में सुखद विलय था,
कृपी, कृपा की अनुजा से ही गृही द्रोण का हुआ प्रणय था;
कृपी–द्रोण ने महाबली अश्वत्थामा को था उपजाया,
जन्म–काल से जिसके स्वर में बल-विक्रम का हुआ उदय था।

सन्तोषी थे द्रोण, धनुर्विद्या का उनको बड़ा चाव था,
थे बहुज्ञ, फिर भी उनके मन के कोने में कुछ अभाव था;
शिष्य–मण्डली सहित अन्ततः वे महेन्द्र गिरि पर जा पहुँचे,
परशुराम भगवान वहाँ थे, जिनका जगव्यापी प्रभाव था।

नमन, चरण–पूजन, फिर अपनी इच्छाओं का प्रतिवेदन था,
यह वह थल था, जहाँ विविध विद्याओं ने पाया जीवन था;
था जिज्ञासु, वहाँ जाते ही ज्ञानी ब्राह्मण धन्य हो गया,
परशुराम की कृपा कोर का उसे प्राप्त सम्यक् दर्शन था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अस्त्रों-शस्त्रों के प्रयोग, उनके रहस्य, उनकी गति मारक,
महाशक्तियों के मंत्रों की, तन्त्र-शास्त्र के थे उद्धारक;
अपना सारा ज्ञान विप्र अधिकारी पा करके दे डाला,
परशुराम ने ऐसे सारे अस्त्र दिये, जो थे संहारक।

इतनी बड़ी विभूति, हर्ष-उल्लास सहज थे, स्वाभाविक थे,
पंखायित पग थे, उनके स्वागत में प्रमुदित चारों दिक् थे;
न्याय, सत्य, करुणा, मानव-अधिकारों के जर्जर वेड़े को—
समर महासागर से पार लगाने वाले वे नाविक थे।

सुहृद-मित्र से बढ़कर कोई नहीं सृष्टि ने उपजाया है,
यही सोचकर वह विज्ञानी द्रुपद-पास मिलने आया है;
कहा मित्रवर! परशुराम गुरुवर की महती अनुकम्पा से—
अनगिन संहारक अस्त्रों-शस्त्रों को उनसे ही पाया है।

सर्वप्रथम मैं एक मात्र साथो से ही मिलने आया हूँ,
बचपन का मैं प्यार तुम्हें अर्पित करने को ही लाया हूँ;
सम्मानित-अभिवादित होने की न कामना मुझमें कोई,
हैं अभिन्न, है सत्य यही, हे मित्र! तुम्हारी ही काया हूँ।

यह सुनते ही नृपति द्रुपद के भौहों पर कुछ वल आया है,
कहा प्रियवर! अपरिपक्व यह ज्ञान कहाँ तुमने पाया है?
बड़े नरेशों से दुनियाँ में भिखमंगों की मैत्री कैसी?
समधन-वल में ही समाज ने मैत्री समता पनपाया है।

सिंह-स्यार शावक का भी बचपन में साथ हुआ करता है,
यदा-कदा नर-शिशु-पालन में बृक का हाथ हुआ करता है;
बड़े हुए तो असमजनों में शिशु-मैत्री सिकता का कण है,
शशक-सींग है, अज्ञानी को सच ही ज्ञात हुआ करता है।

भरेपुरे थे द्रोण, द्रुपद की बातें सुनकर शून्य हो गए,
सारे अर्जित ज्ञान, साख्य के भाव विमूर्छित हुए, सो गए;
बचपन का था स्वप्न सत्य, या सत्य आज का सूनापन है।
ब्रह्म-तत्व-वेत्ता के ऊँचे भाव बात की बात खो गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ऐसा भी समाज में होता है, उसका यह प्रथम ज्ञान था,
मित्र मित्रता से मुकरेगा, ऐसा उनको नहीं भान था;
राज और सत्ता-मद सभी मदों से गुरु-तीखा होता है,
नये रूप में इसका विश्लेषण मानस में क्रियावान था।

सम से ही सम का नाता है, इसमें अब न मुझे भ्रम होगा,
सही बात है, सम ही सम से वैर-प्रीति में सक्षम होगा;
मैं हूँ विषम, किन्तु सम का उत्पादन है मेरे हाथों में,
काँटे से ही इस काँटे को निकालने का उपक्रम होगा।

विथकित पग उस क्रुद्ध विप्र के, एक बार फिर पंख पा गए,
अथक कल्पना सजग, विपर्यय-भंग, द्वेष-प्रतिशोध छा गए;
जहाँ भीष्म हैं, वहीं पराक्रम-बल हैं, वहीं न्याय-निर्णय है,
करते सोच-विचार हस्तिनापुर में सीधे द्रोण आ गए।

उनका कथन भीष्म से—अपमानित हूँ उससे जो अपना है,
जो कुछ हुआ, समझ में आता नहीं, सत्य है या सपना है;
उगल गए सब मन की बातें, भाव-भंगिमा द्रुपदराज की,
अहम् तुष्टि के समाधान तक एक इसी जप को जपना है।

द्रुपद नहीं थे भीष्म, द्रोण की गुरुता से उनका परिचय था;
जिनके वाणों के नोकों की अभिलाषा पर सजग प्रलय था,
परशुराम का वरद हस्त जिनकी इच्छाओं का प्रतिपालक,
उनकी कृपा-कोर से ही पीड़ित समाज भय से निर्भय था।

श्रद्धा-विनत भीष्म बोले—द्विजवर ! यह सब कुछ अपना ही है,
आप देव हैं, आपके लिए विधि ने इसकी रचना की है;
जिस प्रकार चाहें, इसका उपभोग करें, हस्तिनापुरी में—
मीन-मेष द्विजवर-इच्छा में करे यहाँ वह शक्ति नहीं है।

यही प्रार्थना है, इस नगरी में द्विजवर का चिर निवास हो,
प्राप्य आपका राजकुमारों को पावन-हितकर सुपास हो;
इन्हें अस्त्र-शस्त्रों की विद्या कौन आपसे बढ़कर देगा,
यही आपका काम करेंगे, अब न आप पलभर उदास हों।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



गुरु-गँभीर वाणी सुन उद्वेलित द्विजवर आश्वस्त हो गए,
भूल भूत को राजकुमारों की शिक्षा में व्यस्त हो गए;
राजकुमारों की श्रद्धा, कौरव-शासन से सम्मानित हो,
सांसारिक वैभव-अभाव के सारे भाव निरस्त हो गए।

कृपाचार्य, आचार्य द्रोण, दोनों प्रबुद्ध थे, विज्ञानी थे,
दोनों ही आसक्ति रहित थे, ब्रह्म-धर्म के सम्मानी थे;
सत्यासत्य-परख जग को हो, यह अभीष्ट था, यही लक्ष्य था,
विरत अन्य कर्मों से होकर, अतः धनुर्विद्या-दानी थे।

दोनों ने कौरव-कुमार-दल को समुचित शिक्षा-दीक्षा दी,
अस्त्र-शस्त्र संचालन में क्षमता से बढ़कर पटुता ला दी;
कठिन पराक्रम के करने में सब समर्थ होते जाते थे,
आश्रय-दाता की इच्छाओं की दोनों ने पूर्ति करा दी।

आचार्यों को अपने शिष्यों की प्रतिभा का पूर्ण ज्ञान था,
गदा खड्ग में कोई, कोई, परशु, पाश, सर में सुजान था;
सभी विधायें अपने अपने में समग्र क्षमता वाली थीं,
धनुष-वाण की कला महत्तम थी, जिसका सर्वोच्च मान था।

द्रोणाचार्य सभी शिष्यों को एक रूप शिक्षा देते थे,
धनुष-वाण की प्रतिभाओं को कुछ विशेष दीक्षा देते थे;
पूर्ण समाहित थे उस युग के महा धनुर्धारी के लक्षण,
इसीलिये अर्जुन को अपनी अयाचित इच्छा देते थे।

समय समय पर भिन्न भिन्न स्थानों में कक्षायें होती थीं,
भिन्न भिन्न रूपों में सबकी सूक्ष्म परीक्षायें होती थीं;
"सब प्रवीण हैं, किन्तु धनुर्धारी अर्जुन की बात अलग है,"
इस प्रकार गुरुजन लोगों में सुखद समीक्षायें होती थीं।

दादा की इच्छा, अन्तिम दीक्षा की समुचित तैय्यारी थी,
भावी कुरु वीरों की रुचि की जहाँ परख बारी बारी थी;
रहे एक से एक, एक से एक शौर्य सबने दिखलाये,
लक्ष्य भेद में पर अर्जुन अनेक में एक धनुर्धारी थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बीज अंकुरित पहिले ही था, समारोह की खाद पा गया,
फल तो आकर्षक था ही, परिपक्व हुआ मृदु-स्वाद पा गया;
पाण्डव-धार्तराष्ट्र का स्पष्ट विभेद प्रदर्शन में लक्षित था,
जन जन की जिह्वा का जो टेढ़ा-सीधा सम्वाद पा गया।

भीष्म पितामह समदर्शी थे, उनकी रुचि सब में समान थी,
सन्तति वालों को अपनी सन्तति की भावी आन वान थी;
इन दोनों प्रकार की रुचियों से गुरुवर की दृष्टि भिन्न थी,
खोज रहे थे वह विभूति, जो उनके हित में प्राणवान थी।

गुरु-पूजा का काल, दक्षिणायें क्या गुरु को दी जायेंगी,
वही वस्तुयें करें समर्पित, जो गुरुवर के मन भायेंगी;
यह अभिलाषा लिए खड़े थे सभी युवक दोनों कर जोड़े,
गुरु आदेशित सारी की सारी विभूति सत्वर आयेंगी।

हैं पाञ्चाल-नरेश द्रुपद उनको बन्धन में लाना होगा,
उनसे अपमानित हूँ, उनका महा मोह-मद ढाना होगा;
यही एक कामना करो पूरी, यदि कर सकते हो तुम सब,
इससे भिन्न दक्षिणा का क्या करना और कराना होगा।

हम बाँधेंगे, हम बाँधेंगे, हम हम हमकी होड़ लग गयी,
तन-मन से अभ्यसित, पाशविक युद्ध-वृत्ति की प्यास जग गयी;
जन्मजात क्षत्रिय, दलवादी, और उऋण गुरु से होना था,
बात-बात में सारी नगरी युद्धोन्मादी रंग रँग गयी।

लहरों सी लहरातीं, बल खातीं सेनायें कूच कर गयीं,
धरा-गगन के बीच, मार्ग में झंझावाती धूल भर गयीं;
किसकी मूँछ खड़ी, किसकी पट होगी, इसके समाधान में,
उजड़ गये फल-फूल-खेत, पथ की प्रसन्नता-शान्ति मर गयी।

दुर्योधन, दुःशासन, कर्णादिक रथियों का गुरु दबाव था,
सीमा में प्रवेश, इनकी गति तीव्र, लक्ष्य से भी लगाव था;
उधर द्रुपद ने गुप्तचरों से अकस्मात् यह समाचार पा—
किया त्वरित प्रतिरोध, शक्ति का अकथनीय उनकी प्रभाव था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



वे थे पूरे सजग, मान-रक्षा ने उनमें जान डाल दी,
हर प्रकार की सेना को समरांगण में अविरम निकाल दी;
रथारूढ़ नृप स्वयं युद्ध में जीवन-मरण प्रश्न ले उतरे,
मात खा गए आक्रामक, चालों पर ऐसी सधी चाल दी।

थे अवाक् से कर्ण, महारथियों में जो माने जाते थे,
दुर्योधन मुड़ गए, गदा-गुरु-संचालक जाने जाते थे;
शकुनी–दुःशासन की बातें यहाँ चलाना व्यर्थ जानिये;
लज्जा, क्षोभ, ग्लानि से ऐसे हुए न पहिचाने जाते थे।

समाचार आचार्य को मिला, उनका चित्त अनुद्वेलित था,
सहन शक्ति उनमें महान थी, उनका धैर्य महान्, अमित था;
द्रुपद नृपति के बल, विक्रम, प्रताप का उनको पूर्ण ज्ञान था,
कौन पराजित उन्हें करेगा, उनके मानस पर अंकित था।

विजय वाहिनी अर्जुन की अबतक सीमा पर पड़ी हुयी थी,
गुरुवर से आदेशित होने की मुद्रा में खड़ी हुयी थी;
आरक्षित थी, आवश्यकता पर ही काम लिया जाना था,
था उछाह इतना, अपनी सीमा से भी वह बड़ी हुयी थी।

गुरु का था आदेश, पाण्डवी सेना कर हुँकार बढ़ चली,
धरा–गगन में मारो-काटो-बाँधो की ललकार बढ़ चली;
पांचाली-सेना पर पाँचों पाण्डव ऐसे टूट पड़ गए—
गजराजों पर सिंहराज, फिर डगर-डगर चीत्कार बढ़ चली।

तेज समन्वित उन पाँचों का पंचानन से भी कराल था,
द्रुपद राज-सेना-विनाश में महारुद्र, यम, महाकाल था;
विथकित हुयी शक्ति पाञ्चाली, सैन्य पलायन अन्तिम प्रतिफल,
राजा के सम्मुख अब अपनी जीवन-रक्षा का सवाल था।

राज-कोश, गौरव-गरिमा अब अर्जुन के हाथों बन्दी थी,
वाणी भी थी मौन कहें क्या, कुछ कहना भी मतिमन्दी थी;
सत्तामद सम के द्वारा था स्थापित हुआ असम के आगे,
द्रुपद झुकाये शीश खड़े थे, गुरुवर की न प्रकृति गन्दी थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बड़े प्रेम से निश्छलता से बालबन्धु को गले लगाया,
अश्रुपूर्ण थे नैन, शब्द अनमोल, कण्ठ भी था भर आया;
द्रुपद नृपति थे विजित, द्रोण विजयी थे, यह कब था आभासित,
करुणा-क्षमा-प्रेम की सत्ता श्रेयस्कर, सबने यह पाया।

कहा मित्र से—मित्र ! मित्रता में मैं तेरा क्रीत दास था,
अतः मित्र से अपमानित हो शुष्क, शिथिल, जीवन उदास था;
खोया मित्र पुनः पा जाऊँ, तभी क्षोभ मन का जायेगा,
जो कुछ अबतक किया-कराया, सब कुछ उसके हित प्रयास था।

सम से सम की अटल मित्रता और शत्रुता भी शोभित है,
सबल पक्षधर हैं सबलों के, सबल-निबल सँग स्वार्थ सहित है;
निवलों की निर्बलता से बलवान शक्ति सञ्चित करते हैं,
स्वार्थ सिद्ध होने पर करता कौन सवल निबलों का हित है।

द्रुपद-द्रोण की असम मित्रता, सम होकर भी एकांगी थी,
राजा की प्रतिशोध भावना अन्तर्मुखी और नंगी थी;
था प्रत्यक्ष, गले से गले मिले दोनों, दोनों ही रोये,
आकृति खिन्न, पराजय सूचक, अन्तर्ग्लानि और तंगी थी।

गुरुवर की थी अहम् तुष्टि, साथ ही शिष्य-गण की शिक्षा थी,
एक कसौटी कसे जायें सब, यह उनकी हार्दिक इच्छा थी;
कौन रहा कितने पानी में, इस रहस्य का था उद्घाटन,
थे संतुष्ट, सफल-सार्थक थी, जो अर्जुन को दी दीक्षा थी।

द्रुपद नृपति का अहम् द्रोण के 'मैं' के सम्मुख पूर्ण विजित था,
भिक्षु कभी है पूजनीय इस रण में उनको हुआ विदित था;
जिसके हाथों घोर पराजय का मुख उनको पड़ा देखना,
उस अर्जुन की आकृति में, उनको परिलक्षित अपना हित था।

हार-जीत कर सभी पूर्ववत् अपना अपना स्थान पा गए,
कुछ का था उत्कर्ष और कुछ लेकर भारी ग्लानि आ गए;
हैं थोड़े से जो औरों की उन्नति में हर्षित होते हैं;
"कैसे कहाँ मात दें उसको, जिससे हैं हम मात खा गये"—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यही सोच था दुर्योधन को, कर्ण-शकुनि जिसमें होता थे,
अन्धे पिता अकेले, जिसके हृदय-स्पन्दन के श्रोता थे;
जग की आंखों में क्या है, कैसे उनको भासित हो पाता,
अन्धकार ले कुरुकुल में आने वाले वह इकलौता थे।

× × × ×

हैं वयस्क पाण्डव, पैतृक अधिकारों से रोकना न सम्भव,
देकर इनको स्वत्व, और विधि से होगा सोचना पराभव;
अतः युधिष्ठिर वैदिक-विधि से उनके द्वारा अभिसिंचित थे,
थे युवराज, प्रजा-पालन का स्वाभाविक था उनका अनुभव।

परिजन, पुरजन, सभी प्रजाजन में पूरा उत्साह छा गया,
कुरुकुल के प्रति अन्य राज्यअध्यक्षों में विश्वास आ गया;
अपना ही है राज, प्रजा के जन जन में यह भाव मुखर था,
सौख्य-शान्ति, अन-धन-जीवन, सम्मान समूचा राष्ट्र पा गया।

सुयश-शौर्य, बल-वीर्य, पराक्रम का सौरभ प्रसरित दिक्दिक् था,
प्रजा पूर्ण सन्तुष्ट, राज्य में कहीं नहीं चिकचिक-झिकझिक था;
असहनीय उत्कर्ष पाण्डवी था; धृतराष्ट्र सहे जाते थे,
अपनी सन्तानों के हित में चिन्तित होना स्वाभाविक था।

कणिक मंत्री ने कुमंत्रणा की, हित-अनहित को समझाया;
कर्तव्याकर्तव्य-नीति में राजा को अन्तर बतलाया;
जिससे हो उत्कर्ष शत्रु का उसे अधर्म कहा जाता है,
धर्म वही है, जिसके द्वारा वैरी का हो पूर्ण सफाया।

दुर्योधन ने कहा-पाण्डवों को जैसे तैसे समझा दें,
जैसे भी सम्भव हो, उनको नगर वारणावत पहुँचा दें;
इसके आगे क्या करना है, उसको देख लिया जायेगा,
अपनी बुद्धि, श्रेष्ठता के बल केवल इतना काम करा दें।

ममता-मोह लिप्त भूपति ने, सौम्य युधिष्ठिर को बुलवाया,
दुर्योधन के भेदभाव को पूर्व प्रसंगों से समझाया;
पास पास रहकर प्रायः टक्कर की आशंका रहती है,
अतः वारणावत में जाकर रहो, अटल आदेश सुनाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दुर्योधन का भृत्य पुरोचन हर प्रकार उसके अधीन था,
गोपनीय कार्यों के करने और कराने में प्रवीन था;
अतः वारणावत में जाकर जितना शीघ्र हो सके, उसको—
जलन शील सम्भारों से निर्मित करने को गृह नवीन था।

पृथ्वी पर ऐसा भी कोई गृह है, यही विवाद बन गया,
सुन्दरतम भवनों में सचमुच लाक्षागृह अपवाद बन गया;
कलाकार की सजग कल्पना मूर्तरूप पाकर विकसित थी,
मानव के हाथों अमरों के रहने का प्रासाद बन गया।

विदुर पाण्डवों के शुभेच्छु थे, लाक्षागृह का उन्हें ज्ञान था,
दुर्योधन की हीन वृत्ति का, पूर्वकाल से उन्हें भान था;
अतः वारणावत की यात्रा से पहिले ही उनके द्वारा—
इस महान संकट का पाण्डु सुतों ने पाया समाधान था।

पुरजन थे उदास, भगवन ! क्या जाने, क्या होने वाला है,
उनकी आशाओं पर असमय में ही पड़ा दुखद पाला है;
जिनसे था कल्याण, उन्हीं को नगरी से करके निष्कासित—
अन्धे ने हम सभी प्रजा जन को भी अन्धा कर डाला है।

× × × ×

सती-साध्वी माँ कुन्ती का प्राप्त इसे सुखकर सुपास था,
भाग्यवान था बना वारणावत लक्ष्मी का हुआ वास था;
ऋद्धि-सिद्धि हस्तिनापुरी को त्याग आ गयीं इस नगरी में,
जहाँ धर्म-ध्वज-धारी पाण्डव, वहीं राज्य-श्री का निवास था।

पतित पुरोचन की गतिविधियाँ, उनकी आँखों में थीं सारी,
उन्हें ज्ञात थी लाक्षागृह में, आग लगाने की तैयारी;
सावधान पाण्डव थे, उनको छलना टेढ़ी खीर बना था,
रात-दिवस जग कर करते थे वे बारी बारी रखवारी।

आ पहुँचा अनुभवी खनक, जो पूज्य विदुर द्वारा प्रेषित था,
विश्वसनीय, सुरंग-कला में था सुविज्ञ, उसमें दीक्षित था;
वाह्य विश्व से गुप्त, लाक्षगृह में वह लगा सुरंग बनाने,
सभी पाण्डवों को जो अपनी जीवन-रक्षा में इच्छित था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



चल-फिर करके समझ लिया, निर्मित सुरंग जीवन-दायी था,
दुर्योधन की कुटिल चाल का समाधान इसमें स्थायी था;
लक्षित हुए बिना वे लाक्षागृह से बाहर हो जायेंगे,
आज हर्ष में सराबोर माता के सँग भाई भाई था।

ब्रह्म भोज का आयोजन, विधिवत् ब्राह्मण थे गये बुलाये,
खोज खोज भूखे-भिखमंगे बड़े चाव से गये खिलाये;
दान-दक्षिणा से सम्मानित करके सबको तुष्ट कर दिया,
'चिरजीवी हों पाण्डुपूत' यह आशीर्वाद सभी से पाये।

आधी रात, सो गयी नगरी, केवल पाँचों बन्धु सजग थे,
भवन-त्याग के कार्यान्वित करने के निर्णय के लगभग थे;
पण्डित थे सहदेव, शुभ घड़ी का उनसे संकेत मिल गया,
संजीवन सुरंग के पथ पर फिर तो छवो जनों के पग थे।

भीम, भीम कर्मा पीछे थे, भीषण काण्ड उन्हें करना था,
लाक्षागृह से अग्निदेव का, रिक्त उदर उनको भरना था;
जिनके लिये नहीं था, इसके मुँह में आज समा जायेंगे,
जिनके लिये बना था, उनको अव न तनिक इससे डरना था।

धू धू, धप धप, धाँय धाँय—विकराल अग्नि प्रज्ज्वलित हो उठी,
नील, पीत, लोहित, सतरंगी ज्वालायें सित-असित हो उठीं;
इन्द्र धनुष ने धूम्र जलद को उठा लिया अपनी मूँछों पर,
मित से हो प्रारम्भ, अग्नि की काया भीषण-अमित हो उठी।

धुवाँ, राख, दुर्गन्ध, ताप से सारा सोया नगर जग गया,
अग्नि-शमन करने में सारा शामक-दल तत्काल लग गया;
जलन शील सम्भारों से, जलने के लिये सृजन था जिसका,
उसे बचाना क़ब सम्भव था, हाँ, निर्माणोद्देश्य ठग गया।

त्राहि त्राहि मच गयी, पाण्डवों का इसमें संहार हो गया,
किसने यह कुकृत्य कर डाला, भारी अत्याचार हो गया;
किसी किसी ने कहा—'अरे दुर्योधन की इसमें कुचाल है,
अब सम्पूर्ण राज्य पर उसका एक छत्र अधिकार हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तृप्त अग्नि अब स्वयं शान्त थी, अन्वेषण प्रारम्भ हो गया,
पतित पुरोचन भस्मसात, यह नगर आज निर्दम्भ हो गया;
'माँ कुन्ती, ये पाँचों भाई' कितना हृदय विदारक क्षण है,
आज सत्य विचलित, असत्य-पथ निष्कण्टक निर्द्वंद्व हो गया।

पाण्डव भस्मीभूत, प्रचारित यत्र तत्र सर्वत्र हो गया,
सारा नगर, ध्वस्त लाक्षागृह पर आकर एकत्र हो गया;
मुख अनेक, पर बात एक, यह नीच कर्म दुर्योधन का है,
अच्छा हुआ, पुरोचन भी बीता दुखदायी सत्र हो गया।

विधि-विधान भी है विचित्र, इसका रहस्य उद्घाटन दुस्तर,
है संयोग मात्र, या किसी शक्ति के संचालन पर निर्भर;
एक भीलनी, पाँच पुत्र उसके, मदिरा पीकर मूर्छित हो—
ब्रह्म भोज उपरान्त पड़ रहे लाक्षागृह में भोजन पाकर।

जली भीलनी, उसके पाँचों लाल जले, यह किसने जाना,
माँ कुन्ती, पाँचों भ्राताओं के विदग्ध शव सबने माना;
यह सम्वाद हस्तिनापुर में कौंध गया विद्युत् की गति से,
ज्योतित नयनों में जल, अंधों ने रोने का किया बहाना।

यह रहस्य था ज्ञात विदुर को, वही पाण्डवों के त्राता थे,
यह रहस्य था ज्ञात खनक को, जो सुरंग के निर्माता थे,
है अलक्ष्य भी लक्षित जिनसे, यह रहस्य उनसे न छिपा था,
वासुदेव, द्वारिकाधीश वे, जो रहस्य के व्याख्याता थे।

था असत्य का राज्य, सत्य लुक छिप कर जीवन चला बिताने,
धर्म धराशायी, अधर्म ऊपर से उसको लगा दबाने;
जहाँ असत्य, अधर्म प्रबल हों, वहाँ न्याय की व्यर्थ कामना,
धीरे धीरे लोग भूलने लगे भूत जाने-अनजाने।

बाहर हो सुरंग से, पाण्डव पश्चिम को प्रस्थान कर गये,
विपति काल में धर्म-धैर्य-धारण का विकट विधान कर गये;
प्रासादों के वैभव में पलने वाली पूज्या जननी को,—
वन-पथ में कन्धों पर ढो चरितार्थ श्रवण-आख्यान कर गये।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बढ़ते गये उत्तरोत्तर, मग में कुछ करतब भी होते थे,
मग-ठग, चोर-बटमरे भिड़ने पर अपना जीवन खोते थे;
मारा गया हिडम्ब, अस्थियों का अम्बार लगाने वाला,
आतताइयों के श्रोणित से मग-श्रम-थकन भीम धोते थे।

निर्देशित पथ के पथिकों का अब निर्देशित नगर आ गया,
जन्म-कर्म दोनों से क्षत्रिय, अब ब्राह्मण का वेष पा गया;
चक्रा नगर-निवासी ब्राह्मण, इस दल का था आश्रय-दाता,
नये अतिथियों को पाकर उसके घर हर्षोल्लास छा गया।

भिक्षाटन उनके जीवन में, बना नित्य का कार्य-क्रम था,
हो अस्तित्व कभी, पर अब तो बना विपर्यित वर्णाश्रम था,
क्षत्रिय होकर भीख माँगना, उनके अन्तर की पीड़ा थी,
दैव, भाग्य, पुरुषार्थ, परिस्थितियों के वश, कितना गुरु श्रम था।

वर्षों बीते, विश्व के लिए पाण्डव-कुल-अस्तित्व खो गया,
यह कुल अब चक्रा नगरी के ब्राह्मण का परिवार हो गया;
मिल जुलकर मांगना और मिल जुल भोजन करना, यह क्रम था,
कुण्ठित, अनअवसरित पराक्रम अनभ्यास के संग सो गया।

माँ ने कहा—भीम ! ब्राह्मण-कुल पर महान संकट आया है,
इनके ऋण से उऋण हो सकें हमने वह अवसर पाया है;
चक्रा के नागरिक बकासुर को प्रायः भोजन देते हैं,
उसको आज समर्पित होने को ब्राह्मण-सुत की काया है।

उसकी जगह रात में तुझको राक्षस के घर जाना होगा,
मेरे दुग्ध-पान का ऋण तुझको आज ही चुकाना होगा;
उसके सुत की जान बचेगी, यह ब्राह्मण को वचन दिया है,
मेरा बचन सत्य होता, यह सच करके दिखलाना होगा।

शिरोधार्य माँ की आज्ञा, साथ ही पराक्रम का अवसर था,
माँ यदि हो सन्तुष्ट, पुत्र के लिये मरण भी श्रेयस्कर था;
रजनी आयी-गयी, प्रात की घटना अति विस्मयकारी थी,
दैत्यराज का शव लोगों ने देखा, पड़ा नगर बाहर था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



चक्र कौन सा चला कि सहसा राक्षस का अवसान हो गया,
अन्धन्तम में डूबी इस नगरी का आज विहान हो गया;
ब्राह्मण-रक्षक त्रेता के श्रीराम कहाँ अवतरित हो गये,
सत्य है कि है स्वप्न विपत्ति का क्या सचमुच निर्वान हो गया।

मानव के वश के बाहर, निश्चय ही यह दैवी माया है,
ऐसा लगता, पुण्यात्मा कोई इस नगरी में आया है;
बड़े बड़े बलवान नाम सुनते ही जिसका थर्राते थे—
कौवे, गीध, सियारों को परसी उस राक्षस की काया है।

मुक्ति-दिवस का महा महोत्सव उस दिन घर घर आयोजित था,
आस पास, जन-जन, मन-मन में, जीवन में उल्लास अमित था;
कैसे यह सम्भव था, इसको अभी न पुरवासी जानेंगे,
हाँ, श्रद्धा से माँ कुन्ती के चरणों में वह विप्र नमित था।

हे भगवान! सत्य है तू ही, तू ही गो-द्विज हितकारी है,
रज-कण से भी तुच्छ, तुम्हारे सम्मुख जग-सत्ता-धारी हैं;
तेरे सिवा कौन है इस द्विज-सुत के प्राण बचाने वाला,
इन शब्दों के साथ विप्र के घर पर हुयी भीड़ भारी है।

× × × ×

क्षत्रिय का प्रतिशोध गरल, ना इससे भी बढ़कर होता है,
निगल गया तो क्षत्रियत्व के आन बान को वह खोता है;
जलन नहीं चाहता, अतः वह प्रायः उगला ही करता है,
हित-अनहित के बीज, इसी से भूमण्डल पर वह बोता है।

द्रोण-द्रुपद संदर्भ द्रोण थे शान्त, द्रुपद को बेचैनी थी,
अन्तर की प्रतिशोध-भावना दुखदायिनी और पैनी थी;
काँटे से काँटा निकालना, यही द्रोण ने अपनाया था,
निश्चय किया—गयी बाजी ब्राह्मण-बल से लौटा लेनी है।

नाँव-गाँव वाले सर्वोपरि याज्ञिक का आह्वान हो गया,
राजा का संकल्प, यज्ञ का विधिवत् वृहद विधान हो गया;
यथा योग्य पूजित देवों ने अपना अपना भाग पा लिया,
पूर्णाहुति पश्चात् अग्नि को अब अन्तिम फल दान हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राजा के सामने द्रोण का द्वेष सजग था, मूर्तिमान था,
उनके ब्रह्मास्त्रों की संहारात्मकता का उन्हें भान था;
इस पृथ्वी पर किस क्षत्रिय ने जन्म लिया, जो उन्हें डिगा दे,
शत्रु-शक्ति-प्रतिहत करने की महाशक्ति का उन्हें ज्ञान था।

विद्वेषी नृप की अभिलाषा-ऐसा आविर्भूत सुवन हो,
अग्नि तेज हो, रुद्र शक्ति हो, सारे ही दैवी लच्छन हों;
ब्राह्म शक्ति को अपने दैवी बल से जो कर सके पराजित,
जिसके हाथों दुर्जय द्रोणाचार्य आर्य का पतन-निधन हो।

याज्ञिक-इच्छा शक्ति, यज्ञ पूर्णता फलित होंगे दोनों ही,
पायेंगे साकार द्रुपद अपनी सञ्चित इच्छाओं को ही;
एक मात्र पल्लवित कामनायें उसकी ही रहें धरा पर,
यही चाहता राजनीति-भूधर का आरोही-अवरोही।

यथा समय रानी की गोदी में आयीं दो दों सन्तानें,
एक साथ ही निकलीं वंशी से सीधी-टेढ़ी दो तानें;
दोनों ही दैवी विभूतियाँ, गुनियों की आँखों ने परखा,
दोनों ही बन गयीं वीर, वात्सल्य, करुण रस की मुसकानें,

पुत्री और पुत्र दोनों ही आकांक्षा रानी-राजा की,
सर्वोपरि कामना पूर्ण थी, अब न चाह कोई थी वाकी;
राजा ने प्रतिरोध-अग्नि की तृप्ति पुत्र-आकृति में पायी,
भूल गयी अपने को रानी दैवी आकृति देख सुता की।

धृष्टद्युम्न की संज्ञा से सुत को राजा ने किया विभूषित,
प्रति दिन पांचालों में उत्सव, सारा जन-मानस था हर्षित,
लक्षण, गुण, स्वरूप, काया सब में कुमार देवत्व लिए था,
थे आश्वस्त द्रुपद, निश्चय ही होगा विप्र द्रोण-मद मर्दित।

कृष्ण वर्ण थी सुता, ब्राह्मणों द्वारा कृष्णा सम्बोधन था,
प्रभा पुञ्ज थी, गुणाधार पर आग्नेयी सा नामकरण था;
दोनों सन्तानों को पाकर नृप ने धन्य स्वयं को माना,
प्राप्त जिसे इच्छित वर उससे बढ़कर सफल कौन जीवन था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



परम सत्य की लौ थी, उससे अन्धकार मिटने वाला था,
देवों की समवेत भावना, दानव-दल छँटने वाला था;
जिसकी झीनी सी पुकार में भूमण्डल डगमग डगमग था,
जिसकी एक हाँक पर घोर महाभारत घटने वाला था।

द्रुपद-सुता द्रौपदी सोम की गति से विकसित वर्धमान थी,
एक वर्ष वय उस बाला की एक चंद्र-दिन के समान थी;
चन्द्र-चन्द्रिका से द्विगुणित जग-व्यापी शोभा-यश प्रसार था,
षोडश वर्ष पूर्णिमा अक्षय-अमिट रात-दिन प्रभावान थी।

यह वह वय थी, जब विदेह भी पुत्री के हित उद्वेलित थे,
यह वह वय, जिस पर अनेक देवर्षि मूढ़, मोहित, उकसित थे;
यह वह वय थी, एक नया आकर्षण लेकर के है आती,
यह वह वय थी, जिसमें अनगिन मीठे सपने आवेष्ठित थे।

वयः प्राप्ति कन्या की जग-नैनों को आकर्षित करती है,
भिन्न भिन्न भावों को अनगिन मानस में प्रेरित करती है;
जिससे आविर्भूत सौख्य, सुषमा, सौन्दर्य प्रकृति की प्रतिभा,
माता-पिता, बन्धु-बान्धव को वही शक्ति चिन्तित करती है।

राज-काज में व्यस्त, तभी तक कन्या की चिन्ता भूली थी,
कण्टकमय पाटल सी, जो अन्तःपुर में रहती फूली थी;
शयन-काल में नृप को उसकी सीमा में जाना होता था,
उनकी निद्रा को अनजाने प्रायः दी जाती शूली थी।

राज-काज का अन्त कभी जीवन-पर्यन्त नहीं होने का,
पल भर का भी समय नहीं अब है हम लोगों को खोने का;
रानी के उद्‌गार नित्य ही राजा के सम्मुख होते थे,
अश्व बेचने पर ही उसका स्वामी सुख पाता सोने का।

चारों पुरुषार्थों के हित जो अपनी सत्ता खो सकता है,
काँटों की शैय्या पर भी जो अनुद्विग्न मन सो सकता है;
वृहद् विश्व में जो सर्वोपरि यश वाला है, गतिवाला है,
वही हमारी यज्ञ-प्रदत्ता पुत्री का पति हो सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ऐसा कौन पुरुष पृथ्वी पर, नरपति लगे ध्यान में लाने,
एक एक कर परिचित राजाओं पर लगे दृष्टि दौड़ाने;
सब में लघु-गुरु त्रुटियाँ उनके मानस पर आ छा जाती थीं,
जाने खोज चुके, क्या होंगे वे, जो अब तक हैं अनजाने।

सोचा-त्रेता की वैदेही विश्व विदित, सुनाम धन्या थीं,
वे भी तो मानवी नहीं थीं, दैव-प्रदत्ता, भू-जन्या थीं;
मन्थन के उपरान्त जनक ने जो विवाह-विधि अपनायी थी—
श्रेयस्कर थी, जनक-नन्दिनी जग-वन्दिता पञ्चकन्या थीं।

निश्चय हुआ, वही होगा, फिर लक्ष्यभेद का निर्धारण था,
भूपति, शूर-वीर, जन जन के आमंत्रण का जो कारण था;
नव नव स्फूर्ति सँजोये, होने लगा स्वयंवर का प्रतिपादन,
अहम् वादियों की जो अब तक की सुकीर्ति-यश का मारण था।

द्रुपद-सुता के यज्ञ-जन्म से, जग का जन-समूह परिचित था,
रूप-माधुरी, तरुणाई, लावण्य विश्व में बहुचर्चित था;
राजा का निर्णय विद्युत सा कौंध गया कोने कोने में,
समारोह-दर्शन-अभिलाषा, हर्षोल्लास नहीं सीमित था।

ऐसा लगता, तीर्थराज में जैसे कुम्भ-स्नान लगा है,
पग-पथ राज-मार्ग के सँग सँग सतरंगों से रँगा-पगा है;
तरह तरह की हैं सवारियाँ, तरह तरह के ही सवार हैं,
युग युग के पश्चात् मार्ग के गाँवों का भी भाग्य जगा है।

खेल किसी को, और अनगिनित आँखों को सुख कर भारी है,
द्रुपद-सुता-आख्यान अनेकों को विचित्र-विस्मयकारी है;
चलो घूम आयें, मन बहलेगा, कुछ का उद्देश्य यही था,
जन जन अपनी मूर्त भावना का अमूर्त पच्चीकारी था।

चक्रा के ब्राह्मण कुछ तो भिक्षाटन से छुट्टी पायेंगे,
मार्ग-साथियों के सँग खाते-पीते वहाँ पहुँच जायेंगे;
जहाँ 'अन्नपूर्णा ब्राह्मण की सेवा में तत्पर रहती हैं,
घूमेंगे भी, नित्य नये पक्वान्न प्रेम पूर्वक खायेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



माँ कुन्ती से कहा विप्रने-द्रुपदपुरी हमको जाना है,
जिह्वा और नयन-सुख, दोनों वहाँ कुछ दिनों तक पाना है;
अगर आप चाहें तो अपने पुत्रों के संग चल सकती हैं,
एक क्षेत्र में सीमित, ऊबे मन को चल कर बहलाना है।

हुयी मंत्रणा पुत्रों से, फिर तो चलने का आयोजन था,
माता का मत प्राप्त उस विषय में, जिसमें पाँचों का मन था;
चक्रा के ब्राह्मण-दल ने शुभ लग्न शोध प्रस्थान कर दिया,
ऐसा लगा कि होने को जा रहा सफल उनका जीवन था।

द्रुपद-पुरी के पास एक नूतन पुर का निर्माण हो गया,
जो सुन्दरता में वसुधा के सब नगरों का प्राण हो गया;
ऐसा सुखकर जन-निवास पृथ्वी पर देखा-सुना नहीं था,
अलकापुर की सुखद कल्पना का सचमुच यह त्राण हो गया।

पक्तिवद्ध दूधिया भवन थे, थी सवकी छबि न्यारी न्यारी,
राजमार्ग थे स्निग्ध, सुवासित, आवागमन-दिशा-निर्धारी;
बीच बीच के चौराहों पर आकर्षक उद्यान सजे थे,
प्रफुलित पुष्प, पाहुनों के स्वागत की करते थे तैय्यारी।

निर्मित थे पाताल-कूप से आन बान वाले फौव्वारे,
नाच रहे लघु मीन पवन में निर्झरिणी के बूँद-सहारे;
स्थान-स्थान सोपान सहित बावलियों का बाँकापन बाँका,
विकसित कमल विखेर रहे थे वंशीरव-मधुकर-गुंजारें।

सभी गवाक्षों पर पुष्पित गमलों की शोभा थी मदमाती,
रंग विरंगी फुदक रही ललमुनियों की थी सञ्चित थाती;
राजमार्ग पर, द्वार और भवनों पर वन्दनवार सजे थे,
जिनकी कला प्राकृतिक उपकरणों को अंगूठा दिखलाती।

कहीं अश्व-शालायें थीं, तो कहीं हाथियों का सुवास था,
कहीं रथालय और कहीं सेवक-भृत्यों का सुख-निवास था;
सामूहिक-वैयक्तिक भोजन-गृह थे और पाकशालायें,
जगह जगह पर कूप-बावली और स्नान-गृह का सुपास था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मानव-पशु की आवश्यकताओं का समुचित समाधान था,
थोड़े ही दिन हेतु, किन्तु पक्का, सुपुष्ट सारा विधान था,
आमंत्रित, अभ्यागत इसमें आ आकर बसते जाते थे,
बात बात में सारा का सारा पुर गतिमय प्राणवान् था।

बाजारों में दूकानों की सजधज, चमक-दमक न्यारी थी,
बिना मूल्य वह वस्तु सुलभ थी, जो जिसको लगती प्यारी थी;
संग्रह की कामना हीन, सब आवश्यक सँभार लेते थे,
नहीं किसी को उपनगरी में किसी बात की लाचारी थी।

भरी-पुरी इस नव नगरी का हर कोना आबाद हो गया,
सुख, सुविधा, सौन्दर्य, कला में नगरों में अपवाद हो गया;
कौतूहलवश आस पास के दर्शक मँडराते रहते थे,
एक एक घर राजा-रजवाड़ों का था प्रासाद हो गया।

वृत्ताकार मंच निर्मित था नगर मध्य, रचना अनुपम थी,
शिल्पी की कल्पना-शक्ति, आश्चर्य महा, महान्, गुरुतम थी;
भिन्न भिन्न श्रेणी के जन के, भिन्न भिन्न निर्मित विभाग थे,
सुखद व्यवस्था, सभी अतिथियों को सुख देने में सक्षम थी।

रंग मंच के बीच स्तम्भ ऊँचा था गर्वित शीश उठाये,
अपने मस्तक पर वह विश्व विजय का था गौरव बैठाये;
जिसे प्राप्त करने को वीरों का मेला लगने वाला है,
आँकेगा वह, कौन धन्य है लक्ष्य-भेद का जो यश पाये।

वह दिन आ ही गया, कि जिसके लिये आज तक तैय्यारी थी,
रंग मंच क्या भरा, भरी भारी सी कोई फुलवारी थी;
यथा योग्य था स्थान सभी को, सभी व्यवस्था से प्रसन्न थे,
लक्ष्य-भेद क्या है, अब सबको इसकी उत्सुकता भारी थी।

सभी व्यवस्था पूर्ण, स्तम्भ के पग पर तैल-कटाह पड़ा था,
और पार्श्व में धनुष वाण के सँग भारी भरकम अँकड़ा था;
स्तम्भ-कण्ठ की लौह-शृङ्खला से आवद्ध मीन छोटा सा—
भय व्याकुल छटपटा रहा, नीचे सिर किये हुए जकड़ा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जितने छोटे-बड़े वीर, योधा, धनुविज्ञ विराजमान हैं,
द्रुपद नृपति द्वारा उन सबका आदर पूर्वक आह्वान है;
अब तक की अर्जित धनुविद्या की उपलब्धि सुप्राप्य यहाँ है,
श्यामा के सँग यश महान है, और परीक्षा भी महान है।

स्तम्भ-कण्ठ से लटक रहा है मीन, वाम चख उन्मीलित है,
नीचे तैल-कटाह-मध्य वह मीन - वाम - चख प्रतिबिम्बित है;
धनुष - वाण हैं पड़े पार्श्व में, केवल इन्हीं अस्त्र के द्वारा—
विम्ब देखकर मीन - चक्षु - भेदन का महालक्ष्य निश्चित है।

द्रुपद राज की प्रिय लक्ष्मी प्रक्षालन उसके चरण करेगी,
कीर्ति–कौमुदी उस महान धनुधारी का अनुसरण करेगी;
लक्ष्य-भेद करने वाला सर्वोत्कृष्ट माना जायेगा,
उस वरिष्ठ का इसी सभा में मेरी कन्या वरण करेगी।

हुयी घोषणा, लक्ष्य - भेद की गुरु गुरुता को सबने आँका,
रहे मौन दर्शक, अभीष्ट था जिन्हें, शान में लगे न टाँका;
ओछे, उथले, अविवेकी उठ - बैठ लगे करने उगताने,
बढ़े धनुष तक लाज छोड़कर कुछ साहसी छबीले - बाँका।

लक्ष्य - भेद की बात दूर, धनु का उठना ही रहा असम्भव,
कभी सभा थी मुखर, कभी क्षणभर को हो जाती थी नीरव;
साहस का उत्थान - पतन अनगिन वीरों में परिलक्षित था,
जय की उठती लहर और पल्ले पड़ती थी पतित पराजय।

धनुष उठाने में असफल होकर कोई भारी निराश था,
उठा लिया यदि धनुष किसी ने, बाण चढ़ाना दुष्प्रयास था,
चढ़ा लिया यदि बाण किसी ने, लक्ष्य-भेद कल्पना मात्र था,
शौर्य-शक्ति सम्पन्न वीर श्रीहीन, लौटने पर उदास था।

सारे अहम्वादियों के ऊँचे मस्तक झुक नमित हो गये,
जयद्रथ, दुःशासन, दुर्योधन, भूरिश्रवा जब भ्रमित हो गए;
जरासन्ध-शिशुपाल आदि भारी वीरों ने स्थान न छोड़ा,
रथियों की दुर्दशा देख सारे के सारे चकित हो गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



असफल को सन्तोष एक, वह भी, वह भी, वह भी असफल है,
एक दूसरे की असफलता एक दूसरे का अब बल है;
वातावरण क्षुब्ध भारी है, क्या होगा, न लक्ष्य विंध पाया,
बाहर-भीतर चारों ओर उदासी, अब न शेष हलचल है।

अर्जुन और युधिष्ठिर में आँखों आँखों में हुयी बात थी,
अर्जुन उठे, उठी मन में सोयी-सिमटी इच्छा उदात्त थी;
चरण-स्पर्श किये, दोनों अग्रज का आशीर्वाद शीश ले—
विप्र-वंश को नमन किया, जिसके प्रति श्रद्धा जन्मजात थी।

मृगछाला रख, हाथ जोड़कर विप्र-वृन्द से सौम्य कथन था,
सदा आपका ही अनुचर हूँ, विप्र-कृपा पर यह जीवन था;
आज्ञा हो तो लक्ष्य-भेद का गुरु प्रयास सम्पन्न करूँ मैं,
सफल कामना हो, विप्रों का उत्साहित आशीष वचन था।

अर्जुन चले विप्र दल से, जैसे निर्भय हो सिंह चला हो,
अहम्वादियों के मद-मर्दन-हेतु स्यात सुरपति मचला हो;
उन्हें देखकर अभिमानी नरपतियों का था तेज तिरोहित,
स्वयं शौर्य, लगता था मानो शीशे में साकार ढला हो।

रहे पराजित यही चाहते, इसके प्रति भी दैव क्रूर हो,
विप्र-मण्डली मना रही थी, बाधायें सब चूर चूर हों;
पुरजन, परिजन, द्रुपदजनों की एक मात्र यह अभिलाषा थी—
ब्राह्मण है तो क्या, हे भगवन्! लक्ष्य-भेद इससे न दूर हो।

धनुष पास आ खड़ा हुआ, फिर हिला डुलाकर देखा-भाला,
ऊपर स्तम्भ-कण्ठ से लटके मीन-चक्षु पर निज चख डाला;
फिर नीचे के तैल-पात्र में इच्छा-शक्ति-चक्षु-क्षेपन था,
उसके नैनों में आ सिमटा मीन-चक्षु का रक्तिम प्याला।

मन ही मन गुरुवर का सुमिरन, मन में दादा की सुधि जागी,
मुसकानें श्रीकृष्ण सखा की, माँ की ममता-स्मृति अनुरागी;
पितृ-देव, जितने शुभेच्छु थे, सबकी उर में शक्ति सँजोये—
छोटे-बड़े, अपरिचित-परिचित, सबसे मन में आज्ञा माँगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



उठा लिया धनु खेल खेल में, जैसे बालक की धनुहीं थी,
मस्तक को चूमती प्रत्यंचा, वाण-अनी ऊपर को की थी;
मीन-चक्षु का बिम्ब, वाण दोनों थे एक सरल रेखा में,
छूटा तीर और जा उसने टिकन मीन के चख में ली थी।

लक्ष्य-भेद हो गया, ब्राह्मणों का दल कूद पड़ा आँगन में,
लोटा-सोटा मृगछाला उछालकर फूल रहे सब मन में;
नहीं वीरता पड़ी किसी भी वर्ण-जाति के हिस्से में है,
इतना गुरुतम कार्य और सध गया अभी आनन-फानन में।

कृपाचार्य, गुरु द्रोण कौन हैं, जिनसे क्षत्रिय बल वाले हैं,
कुरुवंशी सिरमौर बने हैं, अरे व्यास के तो पाले हैं;
कर्दम ऋषि थे कौन कि जिनको मनुने अपनी कन्या दी थी,
बड़े बड़े क्षत्रिय इन कँगले विप्रों के देखे-भाले हैं।

ताव आ गया क्षत्रिय वीरों को, वस बस, बकवास बन्द हो,
क्षत्रिय के टुकड़े पर पलने वाले विप्रों! महामन्द हो;
द्रुपद-सुता का भाग्य न भिखमंगों से जोड़ा जा सकता है,
भागो लेकर जान, नहीं यदि अस्त्र उठाने का प्रबन्ध हो।

अर्जुन ने सारे विप्रों को शान्त किया, ऊपर बैठाया,
गुरु-गम्भीर, उग्रवाणी में राजाओं को वचन सुनाया;
लक्ष्य-भेद करने वाला बन्दर-घुड़की से कब भागेगा,
आये वह, जो इन विप्रों को काल हाँक कर है ले आया।

क्षत्रिय वीरों की बातों से था संहारक काल चिढ़ गया,
एक एक कर सब वीरों से महावीर निर्द्वन्द्व भिड़ गया;
एक बार में ही सारे वीरों का बस वारा-न्यारा था,
खेत छोड़कर लगे भागने, था निर्णायक युद्ध छिड़ गया।

धन्य धन्य हो धन्य वीर, तू ब्राह्मण-कुल-सरदार हो गया,
महाभयंकर कोलाहलका, पल में उपसंहार हो गया;
विप्र-मण्डली उत्साहित, उद्गार व्यक्त था इन शब्दों में—
मद-मर्दन के हेतु दूसरा परशुराम अवतार हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



रंगमंच से, पिटे पिटाये सारे रजवाड़े बाहर थे,
वहाँ शेष अर्जुन हित-चिन्तक ब्राह्मण और राज-अनुचर थे;
वातावरण शान्त था; मुखरित थी स्वर-लहरी वाद्य-वृन्द की,
अब वह क्षण था, एक दूसरे के सम्मुख जब कन्या-वर थे।

तेजोमय सौन्दर्य, वरानन में अदम्य, अनुपम ज्वाला थी,
दपदप दीपित स्वर्ण-वर्ण में यज्ञ-वेदिका की बाला थी;
सबने कहा—कि ब्रह्मा की ये दोनों ही विचित्र रचना हैं,
सबने देखा—वर के गले सुकन्या की वर जयमाला थी।

हुआ स्वस्ति-वाचन, वेदों के मंगल-मंत्र स्वयं उचरित थे,
यथा योग्य सम्भार ब्राह्मणों और याचकों को वितरित थे;
पूरी जब हो चुकीं स्त्रयंवर की सारी उपचारिकतायें—
पाँचों बन्धु द्रौपदी के सँग तब निवास-स्थल को प्रस्थित थे।

खोलो द्वार, आज भिक्षा हमको अनमोल मिली है माता!
वहुत दिनों के वाद आज हमको है दक्षिण हुआ विधाता;
कार्य-व्यस्त माता ने भीतर से ही कहा—अभी आती हूँ,
बड़ी खुशी है, भिक्षा का उपभोग करो मिल पाँचों भ्राता।

द्वार खुला, माँ ने देखा—वसुधा की छवि थी उसके द्वारे,
उमा, रमा, इन्द्राणी, रति की शोभा को जो थी ललकारे;
यह सौन्दर्य कहाँ से पाया ? यही द्रुपद की कन्या है क्या ?
अर्जुन ने या नकुल, भीम ने, किसने है इसको जीता रे ?

सातों घर भीतर, अब वर्णित धर्मराज से उपाख्यान था,
अलग अलग सारे राजाओं के बल-वैभव का बखान था,
लक्ष्य-भेद क्या था, कितना दुरुह था, फिर इसका विवरण था,
अर्जुन के करतब का वर्णन रोमांचक था, प्राणवान था।

गद्‌गद् थीं माँ, पुत्र वधू की ली सनेह से स्निग्ध बलैया,
ओ मेरे घर की लक्ष्मी ! तेरी सेवा में पाँचों भैय्या—
तत्पर सदा रहेंगे, ये मेरे बच्चे हैं आज्ञाकारी,
और आज से तू मेरी बच्ची है, मैं हूँ तेरी मैय्या।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



द्रुपद-राज के गुप्तचरों को कठिन नहीं था पता लगाना,
पाँचों बन्धु कौन, माता है कौन तथ्य दूतों ने जाना;
माँ कुन्ती के सँग पाँचों पाण्डव जीवित हैं हुआ प्रचारित,
स्वयं द्रुपद ने चाल-ढाल आकृति से अर्जुन को पहिचाना।

द्विगुणित था उत्साह नगर में, सफल द्रुपद नृप का प्रयास था,
सम्मानित पाण्डव वीरों का माँ सँग राज-भवन निवास था;
कैसे बचे वारणावत से जगह जगह इसकी चर्चा थी,
राज्योत्सव, आनन्दोत्सव था, जनजन में हार्दिक हुलास था।

कर्मकाण्डियों द्वारा शुभ विवाह के वार-लग्न का शोधन,
कुल परम्परा के प्रकरण में था पुरोहितों का अनुमोदन;
इसी बीच ऋषिराज व्यास का हुआ आगमन उस नगरी में,
पाण्डव और द्रुपद दोनों को हुआ प्राप्त उनका उद्‌बोधन।

पाँचों का विवाह श्यामा से होगा, यह कुन्ती का मत था,
पत्नी एक पाँच पति, ऐसा नाता नहीं शास्त्र-सम्मत था;
दुश्चिन्ता थी व्याप्त द्रुपद को, परिजन में काना-फूँसी थी,
उचित और अनुचित दोनों में बँटा हुआ पुर का जनमत था।

चिन्तित, उद्वेलित राजा की चिन्ता ने पाया प्रकाश था,
मन्त्रि-वर्ग से परामर्श था, प्राप्त व्यास ऋषि का सुपास था;
सुविख्यात सारे विधिवेत्ता, नामी पण्डित गये बुलाये,
शास्त्रज्ञों, विचारकों से हो समाधान, इसका प्रयास था।

द्रुपद-पुरोहित परम पूज्य, उनका सर्वाधिक सौम्य कथन है,
सभा मध्य जिसका, सारे शास्त्रज्ञों द्वारा अनुमोदन है;
पृथ्वी तल पर आज व्यास से बढ़कर कौन शास्त्र-वेत्ता है,
जो कुछ कहा इन्होंने, वह सारे समाज को शास्त्र-वचन है।

अतः कहें जो कुछ, उसका पालन करना ही श्रेयस्कर है,
दोनों कुल के हितचिन्तक हैं, वयः-ज्ञान में सर्वोपरि है;
परामर्श है, सभा मध्य अब राजा इनसे करें निवेदन,
जो महर्षि कह दें, वैसा ही करें, वही हितकर है, वर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कर जोड़े, श्रद्धानत राजा ने ऋषिवर से किया निवेदन,
जो कह दें धीमान् ! वही आज्ञा है, उसका होगा पालन;
देवी कुन्ती का हठ है, पाँचों की पत्नी श्यामा होगी,
चलन हमारे कुल की, होता एक पुरुष का पग-प्रक्षालन।

कहा व्यास ने–धर्माचार्यो ! धर्मविदों की प्रतिछाया हूँ,
इस प्रसंग में पूर्वज्ञान है, इसीलिये दौड़ा आया हूँ;
पुर, परिजन, नृप, विप्र बन्धुओं को न समस्या कहीं बने यह—
पूर्व-नियोजित, शास्त्र-विहित, विधि-सम्मत समाधान लाया हूँ।

तर्क-वितर्कों द्वारा इसका व्यक्तीकरण अनावश्यक है,
जो पहिले से निर्धारित, उसका सम्पादन आवश्यक है;
कुन्ती का विचार सर्वोत्तम मुझसे उसका अनुमोदन है,
यही धर्म, करणीय यही, ऐसा मेरा विचार सम्यक है।

ऋषिवर का उद्घोष, प्रजा-राजा-पुरोहितों का निर्णय था,
सामाजिक अपयश से सबका मानस मुक्त और निर्भय था;
निश्चित तिथि, मुहूर्त पर था वैवाहिक कर्मों का सम्पादन,
पाण्डव और द्रौपदी का वसुधा में अनुकरणीय प्रणय था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## पंचम सर्ग

■

# प्रोत्साहन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यास की बात मानकर जग ने,
व्यास को श्रेष्ठ जानकर जग ने,
व्यास-पद-प्राप्ति करलिया सम्भव—
व्यास का कीर्तिगान कर जगने।

व्यास होते न, कुछ नहीं होता,
कौरवों का पता कहीं होता?
भीष्म के बाद वंश का चक्का--
जाम हो, जम गया वहीं होता।

कौन लिखता कथा महाभारत,
कौन करता जहान–सेवारत;
माधवी मत-प्रचार क्या होता,
भंग होता कहीं न केशव-व्रत।

जानता कौन, जग-व्यथा क्या है,
बन्ध में मुक्ति-बाध्यता क्या है;
रस सराबोर क्या रसिक होता,
जानता कृष्ण की कथा क्या है?

भागवत की महान रचना की,
विश्व ने देखली प्रणय-झाँकी;
गोपियों को गँभीर गुरुता दी,
श्याम को गौरता छपाकर की।

रंक को अति अमोल निधि दे दी,
मूक को प्राप्त बोल तम-भेदी;
पाँचवाँ वेद धरोहर सबकी,
भक्ति को काव्य–विधि दे दी।

व्यास का विश्व है नमन करता,
विश्व-कवि व्यास अनुगमन करता;
व्यास में भक्ति-भाव, सर्वोत्तम,
व्यास के काव्य मन रमण करता।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant



व्यास के नाम का लगा चन्दन,
व्यास-कृति का करूँ सदा वन्दन;
नाम की भूख, व्यास के आगे?
नाम की कामना, जगत-बन्धन।

क्या अनूठा बयान उनका है,
जीव, जग, विधि-विधान उनका है;
बात तह से निकाल ऊपर की,
ब्रह्म की बात, ज्ञान उनका है।

आज मानस महान उलझन में,
चैन उसको न प्राप्त जीवन में;
व्यास की बात क्या समझ पाये,
भोग का भाव आज जनजन में।

इसलिये लिख रहा सरल बोली,
जानता हूँ हँसेंगे हमजोली;
मूर्खता आप ही विवशता है,
व्यास के दान से भरी झोली।

मूर्खता से सँवारता उसको,
जो सुघर था विगारता उसको;
मूर्ख की बात विज्ञ भी सुनते,
विज्ञ की बुद्धि वारता उसको।

थे द्रुपदराज कम न उलझन में,
द्रौपदी के लिये व्यथित मन में;
सहचरी एक, पाँच हों सहचर!
व्यास ने दूर भ्रम किया छन में।

व्यास का आज आसरा लेकर,
बुद्धि-चित व्यास को समर्पित कर;
नाव को हूँ बढ़ा रहा आगे,
व्यास ही पार करेंगे खेकर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


आग छिपती नहीं छिपाने से,
बात दबती नहीं दबाने से;
पाण्डु-नन्दन मरे न जीवित हैं,
कौन सकता छिपा जमाने से।

हस्तिनापुर सँदेश जा पहुँचा,
कौरवों तक कलेश जा पहुँचा;
रूप-रेखा भविष्य की क्या हो—
चित्त-मन्थन विशेष जा पहुँचा।

अन्धतम में पड़े नृपति बोले,
द्वेष–ईर्ष्या–कपाट को खोले;
भाव उर के जहान जाहिर थे,
वाह्य मुद्रा प्रसन्न, किल्लोलें।

कोटिशः धन्यवाद ईश्वर को,
है बसाया उजाड़ कर घर को;
चाहता वह जिसे करे थापित—
कौन सकता उथाप उस नर को।

मंत्रियों का अभी बुलावा हो,
प्रिय विदुर को सनेह कहलावो;
पूज्यवर भीष्म जी जहाँ भी हों,
सौख्य-सन्देश शीघ्र पहुँचावो।

गन्धवह ने सँदेश पहुँचाया,
हर गली, गृह, गवाक्ष गदराया;
बाल-बाला शरीक चरचा में,
शुभ समाचार सब जगह छाया।

मन्त्रि-परिषद तुरन्त आयोजित,
हो गयी बातचीत समयोचित;
हर्ष-उद्गार व्यक्त पहिले था,
बाद में योजना हुयी निश्चित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant



पाण्डवों को तुरत बुलाना है,
प्रेम-पूरित गले लगाना है;
भीष्म की द्रोण की यही आज्ञा,
गुरुजनों का कथन निभाना है।

दूत बन कौन वहाँ जायेगा,
कौन मरहम उन्हें लगायेगा;
कौन है, जो उन्हें प्रभावित कर—
स्नेह से सींच साथ लायेगा।

थे विदुर एक मात्र ऐसे जन,
पाण्डवों से बनाव, अपनापन—
दृढ़ रहा, बन्धु से मिली आज्ञा,
चल पड़े लाँघते नदी-नद-बन।

भूमि पंचाल की परम पावन,
फूल, फल, दल, लदे लदे उपवन;
सस्य-श्यामल, सुहावनी धरती,
प्राप्त पग पग जहाँ अमृत-जीवन।

हर पुरुष रंग-रूप वाला था,
आन में शान में निराला था;
पुष्ट तन, मन विशाल, पुरुषार्थी,
स्वस्थ, परिवार का उजाला था।

स्त्रियों में वहाँ बड़ा दम था,
पूर्ण उल्लास था, न मातम था;
गर्व-गर्दन मरोड़ने वाली,
शौर्य-सौन्दर्य कुछ नहीं कम था।

राजधानी छटा निराली थी,
रोज ही हो रही दिवाली थी;
दूधिया रंग में रँगा घर घर,
मानसर-मरमरी मराली थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



वस्तियाँ थीं कहीं नहीं गन्दी,
दीर्घ उद्योग, लोग बहुधन्धी;
भावबाजार सम, सदा स्थायी,
थी न महँगी न थी कहीं मन्दी।

हाट-बाजार चमचमाते थे,
साज-सम्भार जी लुभाते थे;
वृद्ध-बालक, सज्ञान-अज्ञानी—
बेठगाये खरीद लाते थे।

वेष-भूषा सुघर, सुआनन्दी,
सात रंगी रँगीन शिर-वन्दी;
बाँधते नर, बड़ी बड़ी मूँछें,
जानते थे न लोग छल-छन्दी।

तितलियों सी रँगीन बालायें,
मोतियों की सफेद मालायें;—
ले रही थीं हिलोर छाती पर,
काव्य-उपमा उधार क्या लायें।

सेठ का घर कुवेर का घर था,
कोश उन्मुक्त था, न लाकर था;
भ्रष्ट, तस्कर, न आततायी थे,
सत्य-पथ ही वहाँ उजागर था।

धर्म-ध्वज-धर वहाँ युधिष्ठिर थे,
धर्म के घन न क्यों वहाँ घिरते;
धर्म अवतार ले विदुर आये,
क्यों न स्वर्गीय सुख वहाँ तिरते।

देख शोभा डगर, नगर, घर की,
मार्ग-श्रम रह गया न कण भर भी,
स्वस्थ मन तो रहा, हुआ तन भी,
सृष्टि पुर की सजीव श्रम-हर थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant



राज-प्रासाद आ रुका रथ था,
प्राप्त जिसको प्रसाद था पथ का;
अन्त पथ का, परन्तु यात्री को—
था शुभारम्भ कार्य के अथ का।

आ गए हैं नृपाल के समधी,
बात घर घर, डगर डगर कौंधी;
जान करके प्रसन्न पुरवासी,
सेवकों में उछाह की सोंधी।

आ गयी बात फिर विदाई की,
चोट है झेलनी जुदाई की;
द्रौपदी की उदास थीं आँखें,
थी दशा कुछ विचित्र भाई की।

लोन - राई - उतार फिर फिर है,
मातृ - ममता जहान जाहिर है;
देखती बार बार बेटी को,
चित्त उसका न एक क्षण थिर है।

बाप में ऊपरी कड़ापन था,
किन्तु था स्पष्ट, खो गया मन था;
चोर की भाँति पैर रखते थे,
गैर का लग रहा घरांगन था।

जिन्दगी भर जला करे छाती,
रोक सकते न गैर की थाती;
एक विपदा, परन्तु सबके सिर,
आत्मजा टीस है लिये आती।

अन्ततः लग्न, वह घड़ी आयी,
शेष होगी पुनीत पहुनायी;
शोक पूरित नगर, डगर, घर घर,
रो रही है उदास शहनाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बल्लरी, वेलि, वृक्ष-लतिकायें,
आज सहसा समूल मुरझाईं;
मौन, सारे उदास पशु-पक्षी,
वायु की साँस आज सिहरायी।

आज वातावरण बना बेबस,
व्याप्त है पोर पोर करुणा - रस;
पूर्ण उससे दुलार का मानस,
लेखनी रुक रही यहाँ बरबस।

सेविकायें सहेजतीं अन - धन,
सेवकों का अघा गया था मन;
ब्राह्मणी को न खोलना मुहँ था,
ब्राह्मणों को अपार धन पावन।

नृप द्रुपद और विदुर ने खुलकर—
अन्न - धन वार दिये कन्या पर;
धन्य हैं, धन्य धन्य दोनों कुल,
धन्यता का बखान था घर घर।

थी विदाई, नगर निकल आया,
पार पुर के विषाद आ छाया;
आँख - ओझल सवारियाँ अब तो,
रिक्तता का समुद्र लहराया।

पूर्ण पुरजन उदास थे दिन भर,
था महीनों उदास परिजन - स्वर;
बाप तो राज - काज में भूला,
माँ न भूली परन्तु जीवन भर।

लक्ष्य की पूर्ति, पंथ भरपाई,
पूर्व की याद, वेदना लायी;
जब विदुर पाण्डवों सहित पहुँचे—
हस्तिनापुर नवीन हरियाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant



हैं पतोहें अनेक इस पुर में,
एक से एक सुघर घर घर में;
किन्तु है भाग्य बड़ा कुन्ती का,
द्रौपदी सी न एक जग भर में।

शील, व्यवहार - बात क्या कहना,
बुद्धि - बल जन्मजात क्या कहना;
बन्धु पाँचों महान, पत्नी भी—
रूप - छबि - पारिजात क्या कहना।

कौरवों को महान दुखदायी,
अन्ध तम में कहीं न छिप पायी;
राज्य आधा उन्हें समर्पित था,
किन्तु यह बात गयी समझायी—

द्वेष की आग बुरी होती है,
आपसी लाग बुरी होती है;
देखते ही कलह सजग सत्वर,
क्रोध की माँग बुरी होती है।

गुरुजनों में सभी बताते हैं,
प्रेम के शुद्ध - बुद्ध नाते हैं;
हो सके तो सहेज कर रखिये;
जो न चैतन्य, चूक जाते हैं।

पाण्डवों को सलाह सबने दी,
राजधानी अलग बनाने की;
पूज्य धृतराष्ट्र की रही इच्छा—
इन्द्रपुर सा नगर बसाने की।

स्पष्ट आज्ञा, न भावना 'ना' की,
राह अब दूसरी नहीं बाकी;
पाण्डवों ने न और कुछ सोचा,
शीघ्र प्रस्थान की व्यवस्था की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



चल पड़ा सब समाज खाण्डव बन,
वन्यपशु के हुए दुखी जीवन;
मानवों का महान कोलाहल,
आज कानन न रह गया कानन।

देश के शिल्पकार आये थे,
दूर देशान्त से बुलाये थे;
और उनमें अनेक ऐसे थे—
इन्द्रपुर से नगर बनाये थे।

प्राप्त सहयोग हस्तिनापुर का,
इसलिये जो अधीर-आतुर था;
पास पाण्डव न वास को आएँ,
द्वेष का शेष पुष्ट अंकुर था।

बहुमुखी यह प्रयास का फल था,
इन्द्र-उपवन बना मरुस्थल था;
था नगर चित्र मढ़ा शीशे में,
अंग-प्रत्यंग शुभ्र-निर्मल था।

धर्म का ध्रुव निवास जिस थल है,
शौर्य का शुचि सुपास जिस थल है;
न्याय की बात जहाँ सर्वोपरि,
पुरजनों में न त्रास जिस थल है—

क्यों न चाहें वहाँ सभी रहना,
चाहता कौन आपदा सहना;
लक्ष्मी तो वहाँ रहेगी ही—
है वही श्रेष्ठ सृष्टि का गहना।

हस्तिनापुर निवास जिनका था,
हर तरह से विकास जिनका था;
छोड़ धन-धाम वे चले आये—
नाम भी आसपास जिनका था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant



बात क्या और और गाँवों की,
जो स्वयं हैं कथा अभावों की;
बन गया इन्द्रप्रस्थ आकर्षण,
थी न चरचा जहाँ छलावों की।

इस तरह पाण्डवी सुशासन था,
राज्य में नाम को न अनबन था;
पूर्ति हरएक माँग की निश्चित,
पूर्ण सहयोगपूर्ण जीवन था।

नाम के साथ एक युग बीता,
कार्य सम्पन्न सभी मनचीता;
कीर्ति का कोश बन गया अक्षय,
पुण्य ने पाप का नगर जीता।

इस अवधि में अनेक काम हुए,
काम के फल कभी न बाम हुए;
पुत्र की भाँति था प्रजा-पालन,
पूर्ण कर्तव्य सब अकाम हुए।

मित्र श्रीकृष्ण पाण्डवों के थे,
और भी थे समीप के नाते;
द्वारिका पुर निवास उनका था,
श्रेष्ठ यदुवंश में गिने जाते।

आप अर्जुन लँगोटिया यारी—
थे निभाते, प्रगाढ़ता भारी;
था बुलावा अभिन्न अर्जुन को,
बात की बात कूच-तैयारी।

द्वारिकापुर हुआ बड़ा स्वागत,
आ गया था अमोल अभ्यागत;
सेवकों की वहाँ बतावें क्या—
राज-परिवार जहाँ सेवा-रत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



रेवतक नाम का रहा पर्वत,
पूज्य जिसका ललाट था उन्नत;
शक्तिदा का वहाँ बना मन्दिर,
विघ्न का राज्य वहाँ क्षत-विक्षत।

था जमावा कुमारिकाओं का,
था चढ़ावा अनेक भावों का;
माँग सौभाग्य की सभी करतीं,
और क्या प्रश्न था अभावों का।

कृष्ण-कौन्तेय साथ साथ चले,
दर्शनों योग्य् दर्शनार्थ चले;
शौर्य–सौन्दर्य की चली जोड़ी,
पुण्य के हेतु पुण्य-पाथ चले।

चित चुरावन वहाँ लगा मेला,
पर्वती भूमि पर रहा फैला;
आ जुटी थीं सदेह छवि जग की,
प्रेम-परिपाक की सुखद बेला।

देख अर्जुन प्रसन्न थे भारी,
दृष्टिगत एक बालिका क्वारी;
थी प्रभा विज्जुकी-कलाधर की,
अंकुरित भाव हुए सञ्चारी।

कृष्ण, अर्जुन-रुझान भाँप गए,
चित्त की चाह, लगन नाप गए;
मित्र तो प्रेम-डगर में भूला,
मित्र की भूल, भूल आप गए।

मित्र-कन्धा सप्रेम झकझोरा,
ध्यान में टूट, हुआ हचकोरा;
वह सुभद्रा, रही बहिन मेरी,
स्वच्छ उर, गात ही नहीं गोरा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant



रूप-सौन्दर्य है विधाता का,
श्रेय कुछ भी न पिता-माता का;
संस्कृत हाँ, किया सिखा उनने,
हाथ उसमें अथोर भ्राता का।

हो रहा है अगर मनन उसका,
है अगर अभिलषित वरन उसका;
फिर करें हम प्रयास वैसा ही,
हो सके सात्विकी मिलन उसका।

कुछ झिझक, कुछ कपोल अरुणाई,
झुक, झुका, झेंप आँख शरमाई;
किन्तु आकृति हुँकार देती थी,
बेतुके मोड़, बात पलटाई।

शीघ्र ही इन्द्रप्रस्थ जाना है,
राज-आदेश को निभाना है;
माँ व्यथाशील, धीर खो देगी,
द्वारिका में न दिन गँवाना है।

किन्तु मन तो यहाँ बँधा सा था,
प्रेम के पाथ का पिपासा था;
पार्थ को भी विचित्र बेचैनी,
प्रेम-घर बीच मन उदासा था।

व्यस्त श्रीकृष्ण थे व्यवस्था में,
उलझनों में, विकट अवस्था में;
हाँ करानी कुटुम्बियों से थी,
मित्र-भगिनी विवाह की 'हाँ' में।

विघ्न आये न धैर्य को छोड़ा,
वायु प्रतिकूल, उसे भी मोड़ा;
अन्ततः बन गया सुभद्रा का—
और पुरुषार्थ पार्थ का जोड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



द्वारिका से अकूत धन पाया,
देख जिसको धनेश ललचाया;
पाण्डुपुर में समोद अर्जुन को--
कृष्ण ने साथ साथ पहुँचाया।

कृष्ण-कौन्तेय का नगर आना,
जान सबने महान सुख माना;
हर्ष में माँ नयी पतोहू पा,
द्रौपदी ने कसा कड़ा ताना।

एक दिन धर्मराज ढिग आकर,
कृष्ण ने स्नेह, मान, सुख पाकर;
देश देशान्त की चला चरचा—
और अपनत्व-भाव दर्शा कर—

प्रश्न पूछा—कि क्या व्यवस्था है?
राज्य में शान्ति की अवस्था है?
है प्रजा तो कहीं न उत्पीड़ित?
न्याय सर्वार्थ, शीघ्र, सस्ता है?

है न कर-भार तो कहीं भारी?
अन्त्यजन को न कहीं लाचारी?
आपके प्रति सुस्नेह श्रद्धा का—
लोक का भाव सदा सत्कारी?

दुर्व्यसन से अलिप्त धन वाले?
क्रोध-श्रीमद दमन-शमन वाले;
हैं न ट्रस्टी समाज के सच्चे?
हैं न नीतिज्ञ स्वस्थ मन वाले?

राज्य को पुष्टकर सुलभ भोजन?
सेवकों को उचित समय वेतन?
राज्य के कर्मकर अक्रोधी हैं?
तोड़ते तो कहीं न अनुशासन?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



भ्रष्ट आचार से अलग तो हैं ?
और व्यभिचार से अलग तो हैं ?
मद्य से राग तो नहीं रखते ?
दण्ड-आधार से अलग तो हैं ?

राज के काज लग्न अधिकारी—
योग्य तो हैं न, शुद्ध आचारी ?
शासनादेश कर रहे पूरे ?
श्रेष्ठता की न हीन बीमारी ?

जो यथा योग्य, काम वैसा ही ?
बोलबाला न मूर्खता का ही ?
दृष्टि इस पर सदा प्रशासन की ?
वृत्ति सबकी समाज–मनचाही ?

औरतों का कहीं न कम आदर ?
धर्मयुत काम हो रहे घर घर ?
है अशिक्षित समाज में कोई ?
कार्यरत हैं सभी न नारी-नर ?

आस्था है न मन्त्रिपरिषद में ?
काम सब हो रहे न हैं हद में ?
है न व्यय आय की परिधि में ही ?
है न पर्याप्त कोश हर मद में ?

राज्य में आस्था अटल जन की ?
जानते बात आप हर मन की ?
मूक, बहरे, अपंग लोगों के—
है न चिन्ता निराश जीवन की ?

हैं न निर्भीक वन्य पशु-पक्षी ?
हिंस्र पशु तो कहीं न नर-भक्षी ?
द्रव्य दे मुक्त तो न अपराधी ?
हैं न कर्तव्य शील आरक्षी ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पूर्ण सहयोग से नगर-पुर हैं ?
प्रेम लहरा रहा न घर घर है ?
ग्रामवासी अभाव से वञ्चित ?
क्षीण तो हीन का नहीं स्वर है ?

क्या चिकित्सा सुलभ सभी को है ?
है दवा में न मिलावट—धोके ?
वैद्य लेते न दाम रोगी से ?
बात करते न कहीं कटु होके ?

प्राप्त सबको सभी सुरक्षा है ?
रात में गश्त की व्यवस्था है ?
कार्यरत तो न घोर अपराधी ?
चैन से रात्रि-शयन सबका है ?

क्या अभी भाग्य भरोसे खेती ?
लहलहायी न अभी तक रेती ?
कूप-बापी अनेक निर्मित हैं ?
क्या व्यवस्था विकास कर लेती ?

ऋण कृषक-वर्ग को सुलभ तो है ?
क्या सभी खेत हैं कृषक बोते ?
अंकुरण बीज हैं न शतप्रतिशत ?
अन्न-भण्डार कृमि रहित होते ?

ग्राम-पंचायतें व्यवस्थित हैं ?
वर्ण-विद्वेष तो न विकसित है ?
काम रचनात्मक हुआ करते ?
सब जगह ग्राम-कोश सञ्चित हैं ?

माँग की पूर्ति है सुलभ हर छन ?
ऊब में तो न किसी का जीवन ?
हैं जमाखोर तो नहीं सक्रिय ?
क्या अभी शेष देश-तस्कर-गन ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कार्यधर्मानुसार सब करते ?
प्राणियों का दुलार सब करते ?
पुष्ट तन हैं न ग्राम पशु-पक्षी ?
स्वार्थ-निर्लिप्त प्यार सब करते ?

क्या कलाकार पा रहे आदर ?
मान हैं पा रहे न विद्याधर ?
हैं समादृत प्रगाढ़ प्रतिभायें ?
हैं समझते सभी प्रकृति का स्वर ?

क्या विरोधी विचार वाले भी—
राज्य-निन्दक निरे निराले भी—
सह्य हैं, भाव तो न प्रतिशोधी ?
ज्ञात हैं शत्रु-मित्र चालें भी ?

गुप्तचर जागरूक या सोते ?
व्यक्तिगत द्वेष तो नहीं ढोते ?
तथ्य से दूर तो न प्रतिवेदन ?
भ्रष्ट आचार तो नहीं होते ?

संकलित राज्य-वंचकी-सूची ?
हो रही हित-विरुद्ध जासूसी ?
लोक में सत-असत्य के भ्रम से—
है न उत्पन्न कहीं मायूसी ?

कसमसा तो न रहे बन्दीघर ?
राज्य-भय-भाव व्यक्त है सबपर ?
हैं खुली साँकलें, खुले ताले ?
पहरुओं को न नींद तो दूभर ?

मतमतान्तर बढ़ाव पर हैं क्या ?
ब्रह्म-विश्वास दाँव पर है क्या ?
यक्ष, गन्धर्व, राक्षसी पूजा—
अनपढ़ों में चढ़ाव पर है क्या ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पूर्वजों की अमोल स्मृति-थाती—
संचिता है न? है न खो जाती?
वृद्ध सर्वत्र आज आदृत हैं?
है न कोई कुलीन-कुल-घाती?

वृत्ति से हीन-दीन कोई जन—
भीख पर क्या बिता रहा जीवन?
रूप का हाट तो नहीं लगता?
बिक रहा तो न मान-तन-यौवन?

हैं हठीले परम्परावादी?
हैं सुधारक कहीं न उन्मादी?
नाम लेकर नवीनपन युगके—
संस्कृति-नाश की न आजादी?

पल्लवित है न शैशवी जीवन?
है न परिवार बीच एकापन?
लोक उन्मुक्त है तनावों से?
राष्ट्र का तो न जर्जरित यौवन?

मान, मद, शोक, मोह से उन्मन—
क्रोध से मुक्त स्वस्थ जन-जीवन?
आलसी तो नहीं पनपते हैं?
है न बन्धन विमुक्त जन-गन-मन?

है प्रकृति तो कहीं न उन्मादी?
वृद्धि तो राष्ट्र की न अवसादी?
चित्त का है स्वभाव ज्यों का त्यों?
सृष्टि गति तो कहीं न प्रतिवादी?

वायु का चक्र तो नहीं उठता?
दैव तो वक्र हो नहीं उठता?
मेघ इच्छानुकूल जल देते?
क्रुद्ध तो शक्र हो नहीं उठता?



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



बात तो है नहीं अभावों की ?
घात तो है नहीं छलावों की ?
है न आदर्श, तन्त्र शासन का ?
मात तो है न, भव्य भावों की ?

अन्न से है भरा धरा-आँचल ?
कूप, वापी, तड़ाग, नद में जल ?
कोश अक्षुण्ण रत्नगर्भा का ?
लोक को राज्य का न केवल वल ?

तुष्ट यदि राज्य में सभी प्राणी,
सन्तुलित्त है स्वराष्ट्र की वाणी;
मान गुण के वहाँ द्विगुण होते,
है वहीं पर कृपालु कल्याणी।

स्निग्ध माँ के दुलार से जीवन,
वन्धुओं का सुप्राप्य वल राजन् !
प्राप्त प्रियवादिनी प्रिया जिसको,
है न परिवार में कहीं अनवन—

कामना-हीन काम जो करता,
भावना को ललाम जो करता;
शत्रु को जीतता सुभावों से,
मित्र को नेक नाम जो करता—

निर्बलों का सदा सहायक है,
सत्य की साँस, धर्म-पायक है;
है नहीं अन्य, अन्य भी जिसको,
वुद्धि-चित-अहंकार नायक है—

है उसी की वसुन्धरा दासी,
चाह उसकी कभी न है प्यासी;
लोकमत मान है उसे देता,
पूज्य है, श्रेष्ठ आतम-परिभाषी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



प्रश्न उपदेश की परिधि पाकर,
उत्तरित स्वयं नीति बतलाकर;
कृष्ण श्रोता हुए, युधिष्ठिर ने—
सब समाधान किए समझा कर।

कार्य क्या शेष अभी करने हैं,
कौन ध्वज धारणीय धरने हैं;
आप कृपया बताइये भगवन् !
पितृ–ऋण किस प्रकार भरने हैं।

प्रश्न के अन्तराल में झाँका,
प्रश्न की पृष्ठभूमि को आँका;
फिर कहा कृष्ण ने युधिष्ठिर से,
वंश-यश और हो उठे बाँका—

यज्ञ अब राजसूय करना है,
राज्य का रिक्त पेट भरना है;
द्रोहियों का दमन-शमन करके—
पितृ–ऋण का समुद्र तरना है।

चित्त में चल पड़ा नया मन्थन,
यज्ञ का ही हुआ सजग चिन्तन;
था समाहूत मन्त्रिगण सत्वर,
वंश मीमांसित, प्रथा-प्रचलन।

यज्ञ उपयुक्त, व्यक्तिगत मत था,
और समवेत यही अभिमत था;
शेष चिन्तन हुआ, युधिष्ठिर ने—
यज्ञ का ले लिया महाव्रत था।

कामना हीन कौन रह सकता,
प्यास की आँच कौन सह सकता;
विश्व-सम्राट् की युधिष्ठिर को—
लग गयी भूख, कौन कह सकता ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



पड़ गयी नींव महाभारत की,
द्वेष, प्रतिशोध और स्वारथ की;
त्याग-तप की कहानियाँ केवल,
हो गयी शेष बात अणु-व्रत की।

कौन है, जो बने बड़ा हमसे,
दो मिटा, जो रहे अड़ा हमसे;
था इसी हेतु यज्ञ का निश्चय,
रौंद दो, जो पड़े कड़ा हमसे।

जो झुका दे सभी नृपतियों को,
पंगु कर दे समग्र गतियों को;
काँप जाये वसुन्धरा जिससे,
दे चटा धूल भूमिपतियों को—

है वही यज्ञ का अधिष्ठाता,
है वही सर्वश्रेष्ठ पद पाता;
विश्व नत शीश • सामने जिसके,
विश्व-सम्राट् वही कहलाता।

जीतना है सभी दिशाओं को,
दूर करना सभी अभावों को;
है सुअवसर सजग कराने का—
युद्ध की सुप्त सी विधाओं को।

है जरासन्ध बड़ा बल वाला,
कम न कुछ वक्रदन्त मतवाला;
शक्ति शिशुपाल की अकूती है,
सिंह से स्यात पड़ेगा पाला।

हो सकेगा भला कभी सम्भव ?
स्वप्न है स्वप्न काल्पनिक उद्भव;
जीतना चाहते अजेयों को,
यज्ञ-उपलब्धि-सिद्धियाँ लाघव ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



श्रेष्ठ बल-वीर्य है, पराक्रम है,
जीत की भावना, महत्तम है;
पूर्ण निष्ठा जहाँ क्रिया में है,
लक्ष्य की प्राप्ति में अथक श्रम है—

हैं जहाँ कृष्ण, है विजय दासी,
बन्धु चारों महान् विश्वासी;
क्यों वहाँ भाव उठें विचलन के,
नीर में मीन क्यों रहे प्यासी।

दीनता दोष है महा बल का,
मोह-भ्रम लिप्त वीर है हलका;
मोह, भ्रम, दीनता विनाशी हैं,
कम्प–सिहरन प्रमाद चलदल का।

त्याग करके प्रमाद उठना है,
त्याग मन का विवाद उठना है;
गेरुआ वस्त्र है अभीष्ट नहीं,
त्याग कर अब विषाद उठना है।

× × ×

कार्य की सिद्धि है छलावों में,
दाँव छल सिद्ध और दाँवों में;
एक छल, वल अनेक निबलों का,
शक्ति छल मात्र है अभावों में।

विश्व विजयी, पराक्रमी भारी,
किन्तु है घोर हीन-आचारी;
यदि जरासन्ध को हराना है—
छद्म-छल की अभीष्ट तैय्यारी।

चल पड़े कृष्ण, गुरु चमत्कारी,
साथ अर्जुन विकट धनुर्धारी;
भीम से कार्य—सिद्धि सम्भावी,
वर्ण क्षत्रिय, सुवेष आचारी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



विश्व विख्यात मगध का वैभव,
रोब इतना कि वायु भी नीरव;
था जरासन्ध जहाँ का शासक—
शत्रु उसमें घुसे न था सम्भव।

वेष ब्राह्मण, न छेंक थी उनको,
अन्य चिन्ता न नेक थी उनको;
थी जरासन्ध तक पहुँच इच्छित,
कामना मात्र शेष थी उनको।

पूर्ण वह भी, पहुँच गए उस तक,
बात संक्षिप्त, किन्तु उत्प्रेरक;
एक से एक मल्ल-युद्ध करे—
धर्म का नीति का बना बानक।

थी जरासन्ध-भीम की टक्कर,
एक नीचे कभी, कभी ऊपर;
यह गया, वह गया, अथक दोनों,
भिड़ गये थे विशाल दो कुञ्जर।

एक से एक दाँव चलते थे,
हाथ से हाथ कभी मिलते थे;
चाल पर चाल, काट भी झटपट,
शीश से शीश भिड़ा करते थे।

कुक्षि-वन्धान, बाहु-पाश लगा,
फिर उरोहस्त, पाद-पाश लगा;
भूमि पटकान, पृष्ट-भंग गरू,
हुंकरन युक्त पूर्ण पाश लगा।

क्रोध, आवेश, तिरस्कार वहाँ,
दाँव पर दाँव मजेदार वहाँ;
द्रोण, तृणपीड़. अंग की ऐंठन,
मुष्टिका-घात निरंकार वहाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आँकता एक एक दुर्बलता,
पैंतरे साधकर चला करता;
थी कभी खींच तो कभी झपटन,
चाल-गति में न थी तनिक थिरता।

कुछ जरासन्ध में थकन आयी,
देह कुछ पीत हो वरन आयी;
भीम ने भांप ली, भुजाओं पर—
शत्रु-काया अभार वन आयी।

भूमि पर फिर उसे पटक डाला,
झूम झकझोर कर झटक डाला;
जीत का वल प्रवल प्रवाहित था,
शत्रु की रीढ़ को चटक डाला।

कृष्ण का शत्रु अव नहीं जग में,
कृष्ण की धाक अव रही जग में;
भीम के नाम-काम के कारण—
धन्यता धन्य सव कहीं जग में।

एक का अन्त, अन्य का उद्भव,
लौट आया अनेक का वैभव;
अव न कोई प्रचारने वाला,
साध्य अव स्यात् हो गया सम्भव।

कीट लघु-गुरु, पतंग, पशु-पक्षी,
एक के एक शत्रु-आरक्षी;
जल, गगन, भूमि जीव हैं जितने—
भक्ष्य नर के, अनेक नर-भक्षी—

वृत्ति सव में समान न्यूनाधिक,
एक का हित अनेक से वाधित;
इष्ट अस्तित्व, युद्ध सम्भावी,
और परिवार-हित कभी चालित—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



काम की भूख, अन्य की गर्दन,
एक का एक करे मद-मर्दन;
हेतु संघर्ष का सभी के सँग,
एक पर एक आश्रित जीवन।

मानवी वृत्ति भी लड़ाई की,
शीश पर शीश की कटाई की;
कुछ अकारण, कुछेक आवश्यक,
कामना कुछ लिये बड़ाई की।

दम्भ, पाखण्ड, द्वेष, कड़ुवाई,
शेष लघु और स्वयं गरुवाई;
विश्व की हर प्रकार की सत्ता—
सूर्य के ताप सी रहे छाई—

धाक की धाक, कुछ मिटाना है,
कुछ नयापन विशिष्ट लाना है;
पूछना क्यों, नितान्त बेअदवी,
विश्व अनजान को जनाना है।

धर्म का नाम इसे देना है,
नीति का काम इसे देना है;
विश्व-रक्षार्थ, विश्व-मर्दन कर—
रुग्ण आराम इसे देना है।

कृष्ण की कार्य-सिद्धि आगे है,
पाण्डवों की समृद्धि आगे है;
एक का शत्रु है धराशायी,
अन्य की शत्रु-वृद्धि आगे है।

कृष्ण को कम न थी परेशानी,
था जरासन्ध कम न सम्मानी;
कृष्ण को बार बार जीते था,
कर दिये था विशेष बेपानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यज्ञ उसके विनाश का साधन,
यज्ञ है शत्रु-नाश का साधन;
यज्ञ की आग, बलि मनुष्यों की,
यज्ञ पाण्डव-विकास का साधन।

जब जरासन्ध ही पराजित था,
विश्व-सिरमौर बीर मर्दित था;
अन्य है कौन, जो उठाये सिर,
यज्ञ बहुलांश से समर्थित था।

जो करद थे अभी नरेश नहीं,
पाण्डवों के लिये अद्वेष नहीं;
शीश उनका अभी झुकाना है,
बैठना है, जहाँ प्रवेश नहीं।

दिग्विजय की महान तैयारी,
सैन्य-बल कम न था चमत्कारी—
चल पड़ीं चार विजय वाहिनियाँ,
खलबली देश देश में भारी।

दुर्ग जीता, 'निशान को जीता,
अनगिनित आन-बान को जीता;
खेत, खलिहान, अन्न, धन स्वाहा,
राज को छोड़ मान को जीता।

पूर्व-पश्चिम-प्रसार को नापा,
धूर दक्षिण अपार को नापा;
उत्तरी छोर पर हिमालय के—
तुङ्ग के आरपार को नापा।

कोकनद को, पुलिन्द को जीता,
दीप शाकल, कुलिन्द को जीता;
चीन को, लूक, दरद, हाटक को—
दार, दरवेश, विन्ध को जीता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



मत्स्य, काशी, मलिन्द को जीता,
लेह, लंका, सुविन्द को जीता;
किम्पुरुष, काम्बोज, मरु, मालव—
उत्स, अनुविन्द, रिन्द को जीता।

वीर थे दन्तवक्र अरु अर्वक,
श्रेष्ठ शिशुपाल, सेन अरु शर्मक;
शूर भगदत्त भी समर्पित थे,
नील, कौशल, कुमार अरु भीष्मक।

सैन्य-प्रस्थान ध्वंसकारी था,
सृष्टि-सौन्दर्य-शान्ति हारी था;
शीत, वर्षा न घाम की चिन्ता,
विश्वविजयी प्रयास भारी था।

वापसी में स्वभाव परिवर्तित,
कोश, यश, मान थे अमित अर्जित;
मार्ग में धान-पान-पशु वितरण—
दीन-विकलाङ्ग में अयाचित था।

वस्त्र-कम्बल अनेक अनदेखे,
रंग चटकार-चोख अनलेखे;
मूँगिया रंग के विछौने थे—
बँट गए, कुछ बचा न ले देके।

काम के थे अनेक पशु पाये,
निर्धनों बीच गये बँटवाये;
गाय, बछिया, अजा, दुधारू पशु—
गाँव के गाँव गये पटवाये।

देश-देशान्त की कला, कौशल,
वस्तु वैशिष्ट्य, प्राणियों के दल;
स्थान्तरित इन्द्रप्रस्थ हो आये,
कीर्ति कुछ और ही हुयी उज्जवल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कोश, भण्डार कसमसाये हैं,
एक से एक रत्न आये हैं;
पद्म, पुखराज, नीलमणि, हीरे,
भेंट में ही अमूल्य पाये हैं।

राज्य को धाक और है भारी,
यज्ञ की अब अचूक तैय्यारी;
सौख्य सम्पत्ति-वृद्धि, सुस्थिर मन,
खेत सम्पन्न, हैं भरी बारी।

पूर्ण सन्तुष्ट प्रजाजन सारे,
याचना हैं न किसी के द्वारे;
राज्य का ध्यान सम सभी पर है,
हैं न उपलब्ध हीन-बेचारे।

सत्य के साम्राज्य का स्थापन,
स्यात् सम्भाव्य धर्म का चिन्तन;
कर सकें धर्मराज कार्यान्वित,
हो सके दूर सृष्टि-अन्धन्तम।

चरम उत्कर्ष, घोर परिवर्तन,
मूल अधिकार युक्त था जन जन;
शुभ्र संकेत सत्य युग का था,
हो रहा था सुकर्म–सम्पादन।

मिट गयी देश से व्यथा-बाधा,
भावभारी, स्वभाव पर सादा;
दस्यु-वञ्चक असत्य से वञ्चित,
सत्य–चिन्तन विचार सबका था।

अब सुअवसर न और आने का,
सत्य की लीक को बनाने का;
शान्ति में साँस ले रहा जन-मन,
अब न कारण विलम्ब लाने का।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



कृष्ण हैं पूज्य, विश्व-सम्मानित,
सृष्टि की ज्ञान-प्रभा से सेवित;
कामना हीन कृष्ण का जीवन,
कृष्ण-अस्तित्व मात्र औरों हित।

कृष्ण ही सत्य को निभायेंगे,
घोरतम-तोम को मिटायेंगे;
कृष्ण ही वह समर्थ प्राणी हैं—
यज्ञ को जो सफल बनायेंगे।

कृष्ण का था समोद आवाहन,
कृष्ण का था अभूत अभिनन्दन;
कृष्ण से ही सुकीर्ति-मुख उज्ज्वल,
कृष्ण-सम्भाव्य यज्ञ-संचालन।

कृष्ण से पाण्डवी-विजय अक्षय,
कृष्ण से धर्मराज दृढ़-निर्भय;
कृष्ण हैं रीढ़ यश, विजय, नय की,
अन्धतम हेतु कृष्ण सूर्योदय।

था उचित मान कृष्ण को अर्पित,
यज्ञ निर्विघ्न हुआ सम्पादित;
तुष्ट थे देश देश के भूपति,
विप्र-ऋषि देश देश के पूजित।

भीष्म का था सुपास बल वर्धक,
व्यास का स्वस्ति-पाठ उत्प्रेरक;
था न प्रकरण कहीं अभावों का,
धान्य-धन का सुयोग था सम्यक्।

अन्न का था अकूत भण्डारन,
तैल, घृत, शर्करा सहस्रों टन;
दूध-दधि की अनेक पुष्करणी,
भोज्य थे भाँति भाँति के व्यंजन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यज्ञ की थी विशेषता भारी,
थी किसी को न कहीं लाचारी;
दीन, दुखिया, दरिद्र, भिखमंगे—
थे शशक-सींग, सब सदाचारी।

वेद का पाठ, शास्त्र मूल्यांकन,
धर्म चर्चा, कहीं कथा-प्रवचन;
पण्डितों के विवाद में रसता,
उपनिषद-तत्व का कहीं मन्थन।

नारियों का सुकण्ठ था गायन,
नट-नटी के कलात्मक नर्तन;
भिन्न देशीय वाद्य-रचनायें,
मन किसी का न था वहाँ उन्मन।

एक से एक व्याकरण-ज्ञाता,
ज्योतिषी, ग्रह-नक्षत्र व्याख्याता;
विश्व-विख्यात जुटीं प्रतिभायें,
प्राच्य साहित्य-शास्त्र निर्माता।

लग गयी थी प्रदर्शनी भारी,
वस्तुयें थीं अमोल, मन हारी;
चूम लें हाथ कलाकारों के,
क्या कहें क्या नहीं चमत्कारी।

कम न रमणीय रहे पशु-शाले,
हाथियाँ श्याम-श्वेत मतवाले;
भिन्न देशीय, भिन्न रंगों के—
अश्व चित्तल, धवल, मटिल, काले।

भीड़ भारी बटोर जादूगर,
उठ रहा है जमीन से ऊपर;
दोपहर को दिखा रहा तारे,
चाँद को खींच रहा पृथ्वी पर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



है मदारी नचा रहा बन्दर,
रूठ बनरी खिसक गयी नइहर;
जानता सास-बहू का झगड़ा,
रीछ चमका रहा हथेली पर।

और भी खेल मनोरंजक हैं,
दृश्य अनगिन उछाह वर्धक हैं;
दृष्टि-अँटकाव के अनेकों थल,
मानसिक भी प्रभाव व्यापक है।

एक मेला विचित्रताओं का,
मेल मोहक विभिन्नताओं का;
रुचि परिष्कृत, सभी सुसंस्कृत हैं,
है न टक्कर कहीं स्वभावों का।

मानवी ज्ञान चरम सीमा पर,
प्रकृति पहिचान चरम सीमा पर;
दैव अनुकूल, कामना पूरित,
यज्ञ-वरदान चरम सीमा पर।

कृष्ण की शक्ति, व्यास की इच्छा,
वंश-गत शौर्य, भीष्म की शिक्षा;
पूर्ण सहयोग भूमि पतियों का,
श्रेयकर थी विधान की दीक्षा।

बान्धवों की अटूट तत्परता,
बन्धु चारों प्रबन्ध के कर्ता;
यज्ञ का था सुखान्त सम्पादन,
थे विदुर अन्धकार–संहर्ता।

सत्य का साम्राज्य घर-बाहर,
एक ही नाम राज्य–जिह्वा पर;
सुप्त होने लगे युधिष्ठिर जी,
जागरित धर्मराज का था स्वर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



युग वही, पर प्रभाव परिवर्तित,
पूर्व युग का स्वभाव अयाचित;
राम के राज्य की व्यवस्था ही—
पाण्डवी-राज में हुयी स्थापित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

## षष्ठम सर्ग

■

# वर्धन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मानव की कामना कभी क्या हो पायी है पूरी,
चाह-पूर्ति में स्यात किसी की घट पायी हो दूरी;
मानव का झूठा-सच्चा प्रयास पर प्रतिपल जारी,
मानव का अचिन्त्य चिन्तन, है मानव की मजबूरी।

चाह-लहर-उत्थान-पतन का कोई उत्प्रेरक है,
भिन्न भिन्न रुचियों की गति का कोई संचालक है;
हित-अनहित का मान लगा, मानव मन वहलाता है,
हित-अनहित के पथ का किन्तु नहीं वह निर्धारक है।

उस अदृश्य महिमा को मेरा शत शत बार नमन है,
हित-अनहित का उसी शक्ति के हाथों में जीवन है;
उस अदृश्य से दृश्य जगत का है अस्तित्व अछूता,
उस अदृश्य की दृश्य शक्ति का ही अर्चन-वन्दन है।

कौरव-पाण्डव एक बीज की ही तो हैं दो दालें,
थे अनेक ही दोनों का कल्याण सोचने वाले;
भीष्म-विदुर, कुन्ती-गांधारी का चिन्तन दोनों हित,
पर उनकी सन्तानों के हैं चिन्तन ढंग निराले।

राजसूय-ऐश्वर्य युधिष्ठिर का दोनों के हित था,
इन्द्रप्रस्थ हस्तिनापुरी के लिए न कम चिन्तित था;
दुर्योधन के मन की पीड़ा, लिये घोर उद्वेलन—
इन्द्रप्रस्थ के ऐश्वर्य से सीधे सम्बन्धित थी।

इतना वैभव ! जितना जग में सुना न देखा भाला,
इतना वैभव ! देख जिसे मन हो जाता मतवाला;
इतना वैभव जिसे भोगने को उपलब्ध धरा पर—
कौन विश्व में है, उसके सम्मुख बतियाने वाला।

सारे भूपति वैसे, जैसे सिंह—स्यार का नाता;
सारी प्रजा विनत, जैसे वे एकमात्र हैं त्राता;
शौर्य-तेज में, तपन, पराक्रम, धन में अन्य न कोई,
इन्द्र, अग्नि, रवि, यम, कुबेर थे जैसे पाँचों भ्राता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



उनके आगे मेरा क्या अस्तित्व रह गया जग में,
ईर्ष्या, द्वेष, जलन की ज्वाला फैल गयी रगरग में;
वैभव से वञ्चित होवें, कुछ ऐसा करे विधाता,
विपत्तियों में अरुझायें वे जीवन के पग पग में।

क्या कुछ ऐसा हो सकता है, ऐसा भी क्या सम्भव ?
दुर्योधन के मन में प्रायः इन भावों का उद्भव;
मिटा डालना इन्हें उचित ही होगा हित साधन में,
साधन सभी श्रेय, जो इनको दिखला सकें पराभव।

मामा शकुनी से अपने मन की बातें बतलायीं,
ईर्ष्या–ताप–भाप की बूँदें बन नैनों में छायीं;
इतना चरमोत्कर्ष पाण्डवों का अब सह्य नहीं है,
ग्लानि गलित मन, नैनों में कालिमा और गहरायी।

मूछें पटकर के जीने में कौन धरा जीवन है,
पर–वैभव हो सह्य, भला वह यौवन क्या यौवन है;
कैसे रहूँ स्वस्थ, मित्रों की देख व्यंग मुसकानें,
ऐसे गर्हित जीवन से श्रेयस्कर वरन मरन है।

मामा ने आश्वस्त किया, नीचे-ऊपर समझाया,
न्याय-धर्म की, लोक-नीति की बातों को बतलाया;
दैव पाण्डवों का हित–चिन्तक, व्यर्थ द्वेष–चर्चा है,
एक एक करके अतीत–कृत कर्मों को दुहराया।

भीम सेन को गंगा में तूने ही डलवाया था,
लाक्षागृह उनके विनाश-हित ही तो बनवाया था;
कहाँ रही वह मूँछ, द्रुपद-बन्धन का जब अवसर था,
क्या यौवन, जो मत्स्य–भेद में असफल हो आया था।

औरों के वैभव पर ईर्ष्या–द्वेष, जलन लाँछित है,
प्रतिस्पर्धा का भाव, चरम उत्कर्ष अगर कांछित है;
विकसित कर व्यक्तित्व, बसो तुम जनजन के मानस में,
लक्ष्मी की कामना, पराक्रम एकमात्र वांछित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



अन्धकार के अभ्यासी को क्या प्रकाश से नाता,
मामा का उपदेश, भला क्यों दुर्योधन को भाता;
हठ पर अड़ा, आप को अब तो कुछ करना ही होगा,
है असह्य सन्ताप और अब मुझसे सहा न जाता।

मामा का सारा दुलार था दुर्योधन को अर्पित,
बचपन से ही वह था उनके कृपा–नीर से सिञ्चित;
त्याग सुहृद-घरबार, उसी की छाया बनकर रहते,
उनका सारा जीवन दुर्योधन के लिये समर्पित।

दुर्योधन की इच्छा को वह नहीं टाल सकते थे,
विषम परिस्थितियों से वह उसको निकाल सकते थे;
अकरणीय भी कार्य उन्हें करने में हिचक न होती,
छल–साँचे में दुरभिसन्धि को वही ढाल सकते थे।

हुयी मन्त्रणा, छल–छद्मों का जाल बुन गया छन में,
भावी की कल्पना सुखद, साकार हो उठी मन में;
जहाँ योजना सफल हुयी, फिर अपना पौ बारह है,
तब तो पाण्डव पनप न पायेंगे फिर इस जीवन में।

महाराज धृतराष्ट्र किस तरह राजी हो पायेंगे,
द्यूत हेतु वे भला युधिष्ठिर को क्या बुलवायेंगे?
जो भी हो, गुरुतम प्रयास इसमें करना ही होगा,
तनिक चूक, सारे मनसूबे स्वप्निल हो जायेंगे।

दुर्योधन का राजा पर अपना प्रभाव था भारी,
उसने अपने कन्धों पर ली इसकी जिम्मेदारी;
पा एकान्त पिता को अपना हित–अनहित समझाया,
जैसे तैसे राजा ने भी उसकी भरी हुँकारी।

भनक लग गयी गान्धारी को, माँ ने मना कराया,
फिर यह विषय विदुर के सम्मुख प्रश्न रूप में आया;
क्या है उचित, कहाँ इसमें लम्बा–चौड़ा चिन्तन है,
किसके घर को सत्यानाशी जूएने न नसाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



अन्धे नृप से सौम्य विदुर का था यह नम्र निवेदन,
है प्रसिद्ध लोकोक्ति—द्यूत में है विनाश का जीवन;
इच्छित कुल-कल्याण, अकल्पित नहीं कल्पना करिये,
श्रेयस्कर यह नहीं कि होवे घर में कलह-विभाजन।

यद्यपि नहीं अलक्षित उनसे अपना हित-अनहित था,
दैव परम दुस्तर, राजा का मन विशेष मोहित था;
कर्तव्याकर्तव्य अतः कर सके न वे निर्धारित,
दुर्योधन की इच्छा का पालन ही इष्ट, उचित था।

आदेशित थे विदुर, पाण्डवों को अब बुलवाना है,
उचित और अनुचित क्या, इसको मुझे न समझाना है;
अगर कलह ही है प्रतिफल, इसको झेला जायेगा,
मीन—मेख की बातों को अब मुझे न बतलाना है।

युद्ध और जूए के आमंत्रण का टाला जाना,
क्षत्रियत्व की मानहानि, है निंद्य पाठ दिखलाना;
एक शौर्य सम्पन्न, पराक्रम-हीन दूसरा होता,
परम्परा है, दोनों को ही होता है अपनाना।

द्यूत जहाँ होता, विवाद का वहाँ स्तम्भ गड़ जाता,
द्यूत जहाँ होता, विपत्ति का सागर ही लहराता;
नैतिकता का गला घोंटने वाली यही क्रिया है,
द्यूत जहाँ होता, अधर्म का डेरा है पड़ जाता।

है अनर्थ की जड़ जूआ, पर राजा का आमंत्रण,
उनकी इच्छा-आज्ञा दोनों का करना है पालन;
दोनों कुल का सर्वनाश इसमें सम्भावित, लक्षित,
किन्तु दैव पर किसका हो सकता है भला नियंत्रण।

नव विधान, नव सम्भारों से परम नव्य स्वागत है,
आज हस्तिनापुर में ऐसा आया अभ्यागत है;
भिक्षुक उसे बनाकर है बन बन उसको भटकाना,
सारा विश्व आज जिसके वैभव के सम्मुख नत है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



सभा-भवन के ठाट, साज-सज्जा हैं बने निराले,
कालीनें, चादरें, गलीचे स्वर्णिम आभा वाले;
चकाचौंध पैदा करने वाला वह स्थान बना है,
कुल-विनाश के लिये जहाँ पासे जायेंगे ढाले।

अपने अपने स्थान डँटे पहिले से राज-जुआरी,
दृश्य-दर्शकों के आसन की पहिले से तैय्यारी,
भीष्म, द्रोण, धृतराष्ट्र, विदुर से गुरुजन गये बुलाये,
और पाण्डवों का इसमें आना अपनी लाचारी।

"महाराज! आदेश आपका मान दास आया है,
श्रद्धा के ही पुष्प आपके चरणों में लाया है;
द्यूत-कार्य है हेय, गुरुजनों से है सुनी कहानी,
विजयी को भी सबने हारा ही हारा पाया है।

फिर से हो विचार इसपर, यह मेरा नम्र निवेदन,
स्तुत्य या कि निन्दित है, प्रार्थित इसका सूक्ष्म विवेचन;
कुफल सदा इसमें लगते हैं, यही विज्ञ कहते हैं,
क्या औचित्य, किया यदि जाता है इसका आयोजन?

सुना, द्यूत की आदत कहलाती है बड़ी छिछोरी,
महापाप माने जाते हैं जूआ-हत्या-चोरी;"
कथन युधिष्ठिर का अकाट्य था, तर्क पूर्ण था, लेकिन—
दुर्योधन था अन्धे राजा की भारी कमजोरी।

कहा उन्होंने—बेटा! यह केवल है खेल-तमाशा,
अगर रोक दें, दुर्योधन को होगी बड़ी निराशा;
कहाँ विनाश-कलह है इसमें, जब दोनों हैं राजी,
जी चाहे जबतक, खेलो, है हाथ तुम्हारे पासा।

बात लोक ली, मामा शकुनी बोले—प्यारे नृपवर!
क्रीड़ा-गृह में क्या विचारना क्या अनुचित श्रेयस्कर;
अनुचित-उचित सोचकर ही तो आप यहाँ आये हैं,
अब विलम्ब क्या, दाँव लगायें, मिला खेल का अवसर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



धर्मराज ने कहा कि राजन् ! जूआ कोरा छल है,
कौन जुआरी, जिसकी इससे कीर्ति हुयी उज्ज्वल है;
कहाँ शौर्य, बल-वीर्य-पराक्रम से इसका क्या नाता,
कितने द्यूत-प्रेमियों को जूए से प्राप्त सुफल है ?

समर-भूमि में शौर्य-प्रदर्शन का ही यशवर्धन है,
द्यूत-क्षेत्र में कपट-चातुरी का ही अभिवन्दन है;
सिद्धहस्त पासे का होना कौन बड़ा गौरव है,
पासे को अनुकूल बना लेने में छल-साधन है।

कपट-धूर्तता की विद्या ने किया किसे सम्मानित,
सत् पुरुषों से कपटी कब हो पाया है अभिवन्दित;
कपट-चाल से अगर जीतने की की है तैय्यारी—
वह अनीति होगी, सुजनों से होगी नहीं प्रशंसित।

पराभूत करने में अनुचित, अनुचित पथ अपनाना,
पराभूत करने को, जूआ लगता एक बहाना;
श्लाघ्य नहीं ऐसी चेष्टा, है श्लाघ्य न यह आमंत्रण,
खोना ही खोना इसमें है, हमें न है कुछ पाना।

जूए में शठता भी होती, यही व्यास का मत है,
समर-भूमि का खेल प्रशंसित और शास्त्र-सम्मत है;
क्षत्रिय को यदि खेल खेलना हो तो ऐसा खेले—
दूर कपट-शठता जिससे, जो सत् पुरुषों का व्रत है।

जिसकी प्राप्ति हेतु हमने नभ-धरा एक कर डाले,
जिसके बल पर पुण्य-कार्य अनगिन हैं होनेवाले;
जिसे देख द्वेषी पुरुषों को लम्बी साँसें आतीं,
उस वैभव को चाह रहे हैं, पासे से हथियालें ?

महाराज ! बस, बस, बस मेरी भी सुनिये दो बातें,
वही कह रहा हूँ, जिसको हैं जानकार बतलाते;
अस्त्र-शस्त्र, पासा दोनों में ही अभ्यास अपेक्षित,
दोनों ही छल-कपट-चातुरी से ही जीते जाते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



समर–भूमि का खेल ! कि जो मानवता को दहला दे,
रक्तपात के बिना यहाँ तो फर्जी बनते प्यादे;
पासा यदि निन्दित है, कैसे युद्ध, प्रशंसित मानें,
पासा स्वयं दैव है, चाहे जिसको विजय दिला दे।

युद्ध-विजय पशुता-निर्दयता की होती है दासी,
द्यूत-क्षेत्र इसका परन्तु है कभी नहीं विश्वासी;
युद्ध-क्षेत्र या द्यूत-क्षेत्र दोनों में विजय उसी की—
अस्त्र-शस्त्र या पासे का जो होता है अभ्यासी।

युद्ध-क्षेत्र यदि कांक्षित है, तो वह भी कभी मिलेगा,
द्यूत-क्षेत्र है यहाँ, यहाँ पासे का खेल चलेगा;
अगर पराजय का भय, नृपवर ! निवृत द्यूत से होंवे,
अगर खेल ही नहीं हुआ तो किसको कौन छलेगा।

महाराज द्वारा आमंत्रित हूँ, उनसे आदेशित,
द्यूत-खेल निन्दित है, यद्यपि मेरा मत है निश्चित;
फिर भी खेल खेलना ही है, भले छला ही जाऊँ,
भावी सदा हुआ करती है, मात्र दैव के आश्रित।

दुर्योधन का दाँव, किन्तु मामा के हाथों पासा,
जिन्हें न कोई द्यूत-कर्म में दे सकता था झाँसा;
करनी थी आपत्ति, किसी ने किन्तु न बात उठायी,
मूर्त हो उठी दुर्योधन की पूर्ण विजय की आशा।

लगे दाँव पर दाँव, बराबर पासा दुर्योधन का,
जीता गया पाण्डवों का धीरे धीरे सब धन था;
बड़े दाँव पर धर्मराज ने राज समूचा रक्खा,
वह भी गया, दैव की लीला, हुआ हिमालय तिनका।

चारों भाई चढ़े दाँव पर, अपनी बारी आयी,
धर्म-तत्व-ज्ञाता की वैभव हीन बुद्धि चकरायी;
अपने को जब हार चुके तो रहा और क्या बाकी,
द्यूतावेश, दाँव अन्तिम, कृष्णा थी गयी लगायी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



दुर्जय पाण्डुवंश पासे के पेटे के बन्धन में,
विजयी धार्तराष्ट्र प्रमुदित पासे के अभिनन्दन में,
अब क्या शेष दाँव पर जिसको कर सकते हैं स्वाहा,
धर्मराज गम्भीर, झुकाये शीश, अर्ध चिन्तन में।

दुर्योधन की हीन वृत्तियाँ अब भी भूखी-प्यासी,
"धर्मराज की स्यात लक्ष्मी रहना चाहे दासी;
अन्तिम दाँव, जीत लें हारा, किन्तु जीत यदि मेरी—
बारह वर्ष के लिए पाँचों बन्धु बनें बनवासी।"

सभा-भवन में अनुचित, अनुचित, अनुचित ध्वनि गुंजारी,
भीष्म-द्रोण थे स्तब्ध और थे विदुर अधिक उद्वेलित;
चेतावनी क्षुब्ध शब्दों में ध्वनित् प्रतिध्वनित गूँजी,
सर्वनाश-बेला क्यों की जा रही आज आमंत्रित ?

भावी प्रबल, युधिष्ठिर का जिसने मस्तिष्क घुमाया,
भावी प्रबल, राम को भी मृग के पीछे दौड़ाया;
गुरुजन मौन, आज भावी ने पता नहीं क्या ठानी,
दुर्योधन प्रस्ताव समर्थित, स्वीकृति-शीश हिलाया।

मामा थे तैय्यार, चल गया एक बार फिर पासा,
हुआ वही जो कुछ होना था, पल्ले घोर निराशा;
सत्य विजित, साम्राज्य कपट-छल छद्मों का विस्तृत था,
एक खेल का अन्त, नाश का अब प्रारम्भ तमाशा।

दुर्योधन उन्मत्त, हर्ष में शकुनि-कर्ण-दुःशासन,
शेष सभी गुरु-लघु दर्शक के डोल रहे थे आसन;
दुर्योधन ने कहा-मन्त्रिवर विदुर! धर्म-ध्वज-धारी!
द्रुपद-सुता का इसी सभा में वांछित करना स्थापन।

पाण्डव के घर की लक्ष्मी अब मेरे घर की दासी,
छोटे-बड़े काम इससे लेंगे अन्तःपुर वासी;
सभी रानियों की सेवा में तो रहना ही होगा,
दूर करेगी मेरे अनुजों की भी कभी उदासी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



उद्वेलित थे विदुर, डपट दुर्योधन को धिक्कारा,
ओ दुर्मुख, दुर्बुद्धि, दुराशय, क्रूर काल का मारा!
ओ मृग छौने! गुफा द्वार पर निर्भय हो मिमियाता,
क्रोधित सिंहों को किस बल पर है तूने ललकारा?

ओ मदान्ध! तेरे सिर पर विषधर फुत्कार रहे हैं,
भिखमंगे तक तेरी करनी को धिक्कार रहे हैं;
मर्म भेदनेवाली बातों का ही तू अभ्यासी,
उन्हें चिढ़ाता, धर्म विवश जो हो लाचार रहे हैं!

द्रुपद सुता तेरे जैसों की दासी! मत मुँह खोलो,
वाण छोड़ने के पहिले अपनी हस्ती को तौलो;
स्वयं युधिष्ठिर विजित, द्रौपदी के कब थे अधिकारी,
धर्म, न्याय, औचित्य परख संतुलित बात ही बोलो।

जान रहा हूँ, निश्चय ही तुमसे विपरीत विधाता,
कड़वा भैषज रोगी को है कभी भी नहीं भाता;
तूँबी डूबे, पत्थर तैरे पानी पर सम्भव है—
तेरे जैसे मूर्खों का उपदेशों से क्या नाता।

स्वयं सिद्ध यह तथ्य कि तू अपने कुल का नाशक है,
भारत की उज्ज्वल विभूतियों का तू विध्वंसक है;
ऋद्धि-सिद्धि, वैभव-विलास भोगेगा श्वान सड़क का?
तम, अधर्म, अन्याय, धूर्तता का तू अधिशासक है।

महाशोक, हैं महाराज भी अन्धन्तम के वासी,
सीमित चिन्तन-परिधि, आत्म-कुल-हित के ही विश्वासी;
तेरे जन्म-काल में ही अपशकुन, अमंगल भारी,
प्रकृति तिलमिला गयी, व्याप्त कण कण में हुयी उदासी।

मैंने समझाया—कुलहित में त्याग एक का हितकर,
जनपद—हित में त्याग गाँव का कहलाता श्रेयस्कर;
जनपद त्याज्य देश के हित में यही नीति-परिभाषा,
जग का त्याग आत्म-परिचय हित बतलाते विद्वद्वर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



महाराज की नेक समझ में मेरी बात न आयी,
पुत्र-प्रेम की ममता आँखों पर परदा बन छायी;
ममता की माया, दैवी-इच्छा, विनाश–आमंत्रण,
क्षुब्ध विदुर ने सभा-भवन से ली अविलम्ब विदाई।

कायर! मेरा खाकर करते हैं पाण्डव-हित-चिन्तन,
स्वयं गये, अन्यथा करा देता इनका निष्कासन;
दुर्योधन ने कहा भृत्य से—द्रुपद-सुता को लाओ,
यह सुनते ही खिसक गये कितने तज करके आसन।

बल पूर्वक द्रौपदी सभा के बीच गयी पहुँचायी,
वृद्ध जनों ने धूमिल आँखें मींचीं और झुकायीं;
पाँचों बन्धु व्यथित, शतशत नश्तर जा रहे चुभोये,
उसे देखते ही दुर्योधन की बाँछें खिल आयीं।

पाञ्चाली! यह तथ्य कि तुझको जूए में पाया है,
और इसी के लिए सभा में तुझको बुलवाया है,
पाँचों बन्धु पतित्व-स्वत्व तुझपर रखने से वञ्चित,
पूछ-जाँच लो, यदि मन में सन्देह उभर आया है।

यदि आश्वस्त, कौरवों की सेवा में हुयी नियोजित,
घर के कामों में है हाथ बँटाना तुझे यथोचित;
प्रातः से सन्ध्या तक सारे कामों को निबटाकर—
किया करोगी यदाकदा मेरी सेवा समयोचित।

क्या सुनती हूँ, सभी मौन हैं, कुछ न समझ मैं पायी,
बूढ़े-बड़े बहुत से बैठे, क्या सब पर बन आयी?
काठमार है गया, प्राणपति क्यों हैं शीश झुकाये?
क्या बकबका रहा यह नर-पशु, बन दानव-परछाईं?

भरतवंश के वीरों की वीरता कहाँ खोयी है?
भरी सभा में धर्म-नीति-प्रतिपालक नृप कोई है?
हैं आचार्य, पितामह भी हैं और यहाँ ताऊ भी,
रुद्धकण्ठ, फिर फफक फफक यह कह कृष्णा रोई है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



असहनीय था, भीमसेन ने गर्दन झटक उठाई,
खड़े हो गए, क्रुद्ध सिंह ने ली टेढ़ी अँगड़ाई;
ऐसा लगा कि दुर्योधन को लपक लील जायेंगे,
उठकर आगे खड़ा हो गया अर्जुन छोटा भाई।

निश्चय ही इस नीच-क्रूर ने किया हमें उद्वेलित,
नहीं द्रौपदी ही, हम पाँचों के पाँचों अपमानित;
गुरुवर और पितामह का है मौन हमें बतलाता,
सहनशीलता, त्याग-तपस्या हममें और अपेक्षित।

क्षुब्ध विदुर के सभा त्याग से अन्धे नृप थे उन्मन,
दुर्योधन की कटुता ने कर दिया तीव्रतर चिन्तन;
द्रुपद-सुता का सभा भवन में आना उद्वेगक था,
काँप उठे सुनते ही हृदय-विदारक करुणा-क्रन्दन।

भीमसेन की उष्णिम साँसें अर्जुन का समझाना,
बोझिल बोझिल सभा-भवन में सन्नाटा छा जाना;
ऐसा लगा कि आसमान जैसे फटने वाला हो,
अन्तश्चेतन ने भावी अनिष्ट-गति को पहचाना।

गुरु-गँभीर हो, द्रुपद-सुता से कहा सान्त्वना स्वर में,
भूल सको तो भूलो बेटी! जाओ अन्तःपुर में;
कौन दास? कैसी दासी? अब पटाक्षेप अभिनय का,
पूजित-सम्भावित तू सदा रहेगी घर-बाहर में।

एक काण्ड की इति, आगे का काण्ड अत्यधिक भारी,
व्याप्त नगर के कण-कण में करुणा, कुण्ठा, लाचारी;
दुर्योधन के दुश्चरित्र की चर्चा है घर-घर में,
और पाण्डवों की कानन में जाने की तैय्यारी।

राज्यसभा में शोभा-वर्धन हित जो कुछ पहिने हैं,
गये उतारे रत्नजटित रेशमी वस्त्र, गहने हैं;
दिग्विजयी सम्राट अभी थे, अभी भिखारी पथ के,
वल्कल, मृग के चर्म पाण्डवों के परिधान बने हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



धौम्यनाम, परिवार-पुरोहित, साथ नहीं छोड़ेंगे,
आजीवन सम्बन्ध निभाने की न बात तोड़ेंगे;
सारा जग मुड़ जाय, किन्तु वे मोड़ नहीं मुँह सकते,
व्रह्म-तेज से वन में बाधाओं का मुँह मोड़ेंगे।

धूमिल वस्त्रों में सिर खोले साथ-साथ पंचाली,
कौरव-कुल के दंश हेतु कृष्णा थी नागिन काली;
नहीं लहर आएगी, ऐसा मर्म सूँघ जाएगी,
कौरव-वृक्ष-विनाश के लिये है विष बुझी भुजाली।

वनवासी के रूप देखकर दुर्योधन मुसकाया,
दुःशासन ने भीमसेन को बारम्बार चिढ़ाया;
शकुनी ने विचित्र मुद्रा में अपना मुँह बिजकाकर—
धर्मराज के सम्मुख पासा चूमा और नचाया।

कहा कर्ण ने—अरी बावरी! इनके सँग क्यों जाती,
भिखमंगों का हाथ पकड़कर जीवन व्यर्थ गँवाती;
ऐसा रूप! निखारा यौवन! वन-पशुओं के आगे!
श्रेयस्कर, दुर्योधन के सँग रह यदि इसे भँजाती।

पाँचों ने चारों को देखा, घूरा, नैन तरेरा,
धर्मराज ने घृणा भाव से फिर अपना मुँह फेरा;
भीमसेन ने कहा क्रोध में—अगर लौट कर आया—
गदाघात से तोड़ूँगा रे नीच! चौगुटा तेरा।

कम न क्रुद्ध अर्जुन, पहिले गाण्डीव धनुष टंकारा,
कहा कर्ण से—सूत पुत्र! ऐसा व्यवहार तुम्हारा!
स्यार सिंहनी को यदि छेड़े फल भी विश्व विदित है,
निश्चय ही तू इसी धनुष से जायेगा संहारा।

सदा शान्त रहने वाले सहदेव बड़े उत्तेजित,
शकुनी से बोले—मामाजी स्यात न मुझसे परिचित;
माद्री की धिक्कार कोख को अगर इसी भांजे ने—
शीश आपका काट समर में लिया न बदला समुचित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



उद्वेलित थे नकुल, चक्षुओं से उठती थी ज्वाला,
धार्तराष्ट्रों ! हँसो, पड़ेगा कभी नकुल से पाला;
एक एक को मसल मसल करके चटनी कर दूँगा,
रहने दूँगा नहीं एक भी कुल में रोने वाला।

शीश हिलाकर बिखरे केशों को झटका, छितराया,
कृष्णा ने साक्षात् कालिका का ही रूप बनाया;
और कहा—उनके शोणित से ही वेणी गूथूँगी—
जिन जिन ने मेरी मर्यादा को धक्का पहुँचाया।

धौम्य पुरोहित का भी था संक्षिप्त वहाँ पर प्रवचन,
दोनों कुल का हित-चिन्तक, मैं ब्राह्मण दीन-अकिंचन,—
बारह वर्ष बाद लौटूँगा, यदि सम्भव हो पाये,
करवा दूँगा हत होने पर आप सभी का तर्पण।

ऐसा कह धृतराष्ट्र पास यह वनवासी दल आया,
सभी पाण्डु-पुत्रों ने सादर उनको शीश झुकाया;
धर्मराज ने कहा कि बन जाने की आज्ञा वांछित,
साधुवाद कह अन्धे नृप ने उनको गले लगाया।

भीष्म पितामह, सोमदत्त वाह्लीक आदि भूपति-गन,
अश्वत्थामा, कृपाचार्य, आचार्य द्रोण से गुरु जन;
सबसे मेरी नम्र याचना, बन जाने की आज्ञा,
दें आशीष, लौट कर पायें इन चरणों के दर्शन।

कितने उच्च विचार, उच्च व्यवहार, उच्च सद्आशय !
ऐसे नीति-शास्त्रियों पर ही निर्धारित सर्वोदय;
सभी मौन, प्रत्येक हृदय ने उनको किन्तु सराहा,
सबकी शुभकामना कि उनका पथ होवे मंगलमय।

विदुर धर्म तत्वज्ञ, पाण्डवों के थे रक्षाकारी,
पाण्डु-पुत्र भी पिता जान उनके प्रति थे आभारी;
कहा विदुर ने—देवी कुन्ती मेरे साथ रहेंगी,
इनकी सेवा में यह दास रहेगा आज्ञाकारी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



हँसते हँसते सब प्रसन्न मन होकर बन को जावो,
धर्म-क्षेत्र में नहीं पराजित, मन चिन्ता मत लावो;
जूए में अधर्म से ही होता सम्भ्रान्त पराजित,
इस अधर्म की हार-जीत से तनिक नहीं पछतावो।

है धर्मज्ञ युधिष्ठिर, होगा यही सत्य-संस्थापक;
और युद्ध में अर्जुन के हैं शौर्य-पराक्रम व्यापक;
समर-भूमि में भीमसेन से वे मारे जायेंगे,—
हो प्रमाद-वश आज कर रहे हैं जो अकवक, वकवक।

नकुल बहुत ही निपुण, संयमी और व्यवस्थाकारी,
पण्डित है सहदेव, साथ ही शत्रु-शक्ति-संहारी;
धौम्य पूज्य हैं, ब्रह्मविदों में इनका ऊँचा आसन,
कौन कहेगा वीर द्रुपद की बेटी को बेचारी।

बेटे! कभी बनोगे पृथ्वी पर तुम अधिरथ-अतिरथ,
अमरलोक तक में होगा तुम सबके यश का स्वागत,
पीछे दल, आगे आगे मंगल, पथ दिखलायेगा,
फिर भी यही कामना, तुम सबका हो मंगलमय पथ।

जीवन भर तो राजनीति की बातें बहुत सिखायी,
अब कानन में लोकनीति पढ़ने की बारी आयी;
राजनीति है सदा स्वार्थ हित, गौण अन्य का हित है,
लोकनीति में निज-पर की होती है नहीं लड़ाई।

कानन-चारी नर, पशु, पक्षी का निश्छल है जीवन,
अपने व्यवहारों से होने देंगे तुम्हें न उन्मन;
वहाँ न टेढ़ी मेढ़ी चालें, छल छद्मों की बातें,
कपट-दुष्टता की बातों से बहुत दूर गिरि-कानन।

वहाँ न ऐसे, जो पहिले तो घर में आग लगावें,
और बाद में घड़ा लिए पानी का दौड़े आवें;
दो जिह्वा वाले विषधर भी मार्ग छोड़ हट जाते,
वहाँ न दो जिह्वा वाले नर घर घर विष फैलावें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मात्र भावना है—सुखदायी होते गाँव-नगर हैं,
कानन में उन्मुक्त प्रकृति आकर्षक, सुन्दरतर हैं;
मुँह पर और, पीठ पीछे कुछ और, नगर की बातें,
एक रूप में कानन की आत्मा भीतर-बाहर है।

सुख अन्तर की बात, नहीं यह होता आयातित है,
प्रासादों के वैभव में भी होते लोग व्यथित हैं;
भस्म लपेटे तपस्वियों से बढ़कर कौन सुखी है,
एक रूप वे ही रहते, जो आत्मा से परिचित हैं।

गिरता हुआ मनुज अपने को आप सम्हाला करता,
अपने को अनुकूल परिस्थितियों में ढाला करता;
विपत्तियों में घिरकर ही मानव मानव बनता है,
जहाँ नहीं है राह, वहाँ है राह निकाला करता।

निश्चय ही अनुकूल बना लोगे गिरि-गह्वर, कानन,
निश्चय, मोड़ोगे विपत्तियों-बाधाओं का आनन;
शौर्य-पराक्रम कानन में भी तेरा परिचय देंगे,
जहाँ रहेगा, कहलायेगा, पंचानन पंचानन।

जाओ, सुखी रहो, बूढ़े चाचा को भूल न जाना,
मेरे जीवन में खोना ही खोना है, क्या पाना;
अगर कभी हिचकी आयी, समझूँगा अभी न भूले,
कैसे भूल सकूँगा, चाहूँ भी यदि तुम्हें भुलाना।

यह कहते ही चाचा की आकृति विचित्र बन आयी,
कण्ठ रुद्ध, चेतना विमूर्छित, बोली भी भर्रायी;
ममता, मोह, त्याग का, जो उपदेश अन्य को देता,
ममता की बूँदें उस त्यागी के नैनों में छायीं।

माता कुन्ती के चरणों से द्रुपद-सुता लिपटायी,
करुणा की सरिता अन्तःपुर में सहसा उफनायी;
कम्पित बाहों में माता की बहू विलखकर रोयी,
इसी रीति से याचित थी कानन-प्रस्थान विदाई।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



मत रोओ, मत रोओ, मेरे अन्तर्मन की रानी
रोना तो मेरे जीवन का खाना-दाना-पानी;
विधवा थी ही, बनी निपूती, माँगे बहू विदायी,
बचपन से अबतक के जीवन की है करुण कहानी।

तू तो भाग्यशालिनी है, पाँचों पतियों की प्यारी,
तू तो उनके प्रेम-नीर से सिंचित सोंधी क्यारी;
रहे अचल अहिवात तुम्हारा यही कामना माँ की,
सदा रहेगी बेटी ! तेरी हरी-भरी फुलवारी।

पत्नी का कर्तव्य तुझे बेटी ! हम क्या बतलायें,
मछली को पानी में रहना भला कौन सिखलाये;
पिता और पति दोनों कुल की एकमात्र तू शोभा,
तुझे आपदा विपदायें कानन में झाँक न पायें।

घर से बाहर सास बहू की करने चली विदाई,
पुत्रों की विचित्र भूषा में उसने झाँकी पायी;
कहाँ राजसी वसन ! कहाँ मृग चर्म ! अरे यह क्या है ?
सम्हल न पायी, गिरी धरा पर, दो क्षण मूर्छा आयी।

उठी और विस्फारित नैनों से फिर उन्हें निहारा,
इसी देखने को जीवित थी ! दैव बड़ा हत्यारा;
वे तो थे ही, माद्री भी कम नहीं पुण्य वाली थी,
चले गये, देखा न डूबता मेरा भाग्य-सितारा।

शीश झुकाये चले जा रहे हैं लज्जा के मारे,
सहे जा रहे सिंह स्यार की तीक्ष्ण व्यंग बौछारें;
आसमान ज्यों का त्यों रुका हुआ है, भूमि अकम्पित,
कहाँ वज्र की विभीषिका है, कहाँ वायु ललकारें ?

दौड़ी, लिपट गयी पुत्रों से, दुलराया, चुमकारा,
माँ के सूखे तन से फूटा, चला दुग्ध-फौव्वारा;
वात्सल्य से लिपट रुदन साकार हुआ कण कण में
बारह वर्ष ! पहाड़ कटेंगे कैसे ! कहाँ सहारा !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तुम तो सदा सदाचारी थे, यह विपत्ति क्यों आयी,
यही धर्म आराधन का फल! यही सत्य-अमराई!
कहाँ गयी वह देव-अर्चना! कहाँ यज्ञ, तप, व्रत-फल!
उल्टा पल्टा यह विधान विधि का मैं समझ न पायी।

यह मेरे अभाग्य का फल जो राहु-केतु बन आया,
विपति-भोग के लिए अभागिन ने तुमको जनमाया;
रह जाती यदि बन में ही, कैसे यह दिन दुख देता,
नगर-वास में कौन महा सुख मैंने अब तक पाया।

चलो, चलूँगी मैं भी, जहाँ रहोगे, वहीं रहूँगी,
कथा-वार्ता जो कुछ सुना-सुनाया उन्हें कहूँगी;
फूल सदृश बेटी कृष्णा जंगल जंगल भटकेगी?
नहीं, नहीं घर में रहकर वियोग-दुख नहीं सहूँगी।

अरे कृष्ण! तू देख, तुम्हारे प्यारे वन को जाते,
विधवा माता की आँखों के तारे वन को जाते;
कहाँ रह गये मेरे भैय्या! मेरी नाव खेवैया!
वृद्धापन के सारे मात्र सहारे बन को जाते।

कृपाचार्य, आचार्य द्रोण की बात न क्या चलती है?
ससुर भीष्म जीवित, क्या उनकी दाल नहीं गलती है?
क्या कुल-रक्षक सभी किये जा चुके राज्य-निर्वासित?
यह कह माता फफक फफक रोती, आँखें मलती हैं।

ओ बेटा सहदेव! तुम्हीं रह जावो, मुझे न छोड़ो,
तुम्हें देखकर मैं जी लूँगी, मुझसे मुँह मत मोड़ो;
जाते हैं ये सत्य-धर्म-पालक चारों तो जायें—
इनसे नाता तोड़ो बेटा! मुझसे नाता जोड़ो।

अरे! नहीं सुनता कोई मेरा, है बाम विधाता,
अरे! नहीं मुझसे तुम लोगों का है कोई नाता?
खा पछाड़ आ पड़ी धरा पर, चकित चेतना सोई,
मूर्छा के अतिरिक्त कौन उसकी पीड़ा सहलाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



थकित स्वयं, पर विथकित भाभी को सविषाद उठाया,
अपने अन्तःपुर में उनको ज्यों त्यों कर पहुँचाया;
अब न शेष कुछ काम विदुर को, हुयीं स्वस्थ कुल भाभी,
सीता-राम-लक्ष्मण का सारा इतिहास सुनाया।

धर्मराज-दल राजमार्ग पर कानन को प्रस्थित है,
सारा नगर शोक में डूबा, चिन्तित और व्यथित है;
घर बाहर, गोपुरी, गवाक्षों तक में व्याप्त उदासी,
शोकोद्गार नगर के कोने कोने से उत्थित है।

देश-कोश में शौर्य-पराक्रम, बल-वैभव की इति है,
अपने हित में राज्य-त्याग ही सर्वोचित सम्मति है;
भीष्म-द्रोण से भी न सुरक्षा संभव प्रजाजनों की,
सभी अनाथ, अरक्षित, पीड़ित-यही नगर की स्थिति है।

कुविचारी राजा दुर्योधन रक्षक हैं दुःशासन,
शकुनि-कर्ण के संकेतों पर संचालित है शासन;
ऐसे ऐसे पुरुषों से कब सम्भव राज्य-व्यवस्था,
अब न देर है, अब डोलेगा अमरों का भी आसन।

धर्मराज हैं जहाँ, वहीं है सत्य-धर्म--अनुशासन,
धर्मराज हैं जहाँ, सुरक्षित वहीं प्रजा का जीवन;
धर्मराज हैं जहाँ, वहीं सुख-वैभव जा सिमटेंगे,
धर्मराज हैं जहाँ, नगर ही वन जायेगा कानन।

आततायियों को क्यों अपना सुख-धन-धान्य लुटायें,
कुविचारी के राज्य क्यों रहें, क्यों सम्मान गँवायें;
चोर, जुआरी, लम्पट, कामी, क्रोधी जिस नगरी में—
शशक-सींग सम्भव, परसम्भव नहीं शान्ति-सुख पायें।

जो अपने मन का राजा, जो राजा स्वयं जुआरी,
हैं सुविचारी वृद्ध उपेक्षित, शासक स्वेच्छाचारी;
जो पूजा के योग्य, देवता भी जिनका गुनगाते—
अपमानित उत्पीड़ित, घोर तिरस्कृत ऐसी नारी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



वहाँ वास करना ही, है विषधर को गले लगाना,
वहाँ वास करना ही; है आपत्ति-विपत्ति बुलाना;
बोझिल वातावरण राज्य का, यहाँ न रह पायेंगे,
चलो, कहीं अन्यत्र लगावें अपना ठौर-ठिकाना।

अगर चाहते, गृह-लक्ष्मी न बनायी जायें दासी,
अगर चाहते, सम्मानित घर-घर में उमा-रमा सी;
त्याग करो अब इसे, श्वान, खर, स्यारों की यह बस्ती,
ऐसे ही उद्‌गार व्यक्त करते थे सब पुरवासी।

यहाँ क्या रहें पानी वाले, यहाँ सभी बेपानी,
धर्मराज हैं जहाँ, वहाँ अन्याय-अनीति अजानी;
चले अनेकों पुरजन पांडव-दल के पीछे पीछे,
एक बार साकार राम-सीता-बन-गमन-कहानी।

दिन बीता, पश्चिमी क्षितिज पर फैल गयी अरुणाई,
पुर के बाहर बैठ सभी ने तन-मन-थकन मिटायी;
धर्मराज ने कहा—पुरजनों ! हूँ कृतज्ञ, आभारी,
जान रहा हूँ आप सभी की पीड़ा की गहरायी।

मेरे प्रति सद्‌भाव आपके, हैं हमको सुखकारी,
यह सम्मान हमारे पथ का सम्बल होगा भारी;
कृपया लौट नगर को जायें, घर परिवार सम्हालें,
हम सबका कानन में जाना, हम सबकी लाचारी।

नहीं चाहते अपनी बोटी कुत्तों से नुचवाना,
जहाँ आप हैं, वहीं हमारा भी है पानी-दाना;
और चाह क्या शेष, चाहते महाराज के सँग में,
दो क्षण के छोटे जीवन को सुख के साथ बिताना।

विज्ञों से है सुना, मूढ़ का साथ विपति उपजाता,
धर्मज्ञों का साथ विपति में भी सम्पति बन जाता;
महाराज हम शरणागत, हम हों न कृपा से वञ्चित,
अब इस नगरी से हम सबका नहीं शेष है नाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



पाना है विद्वेष और खोनी है यहाँ तितिक्षा,
बचे रहें, हममें जो गुण हैं शेष; यही है इच्छा;
दुष्टों के दर्शन-परसन से श्रीमन्! हमें बचायें,
हमें न दुतकारें, स्वीकारें, बस याचित यह भिक्षा।

धन्य; धन्य हम धन्य, कि इतना प्राप्त आपसे आदर,
मेरा भी कुछ नम्र निवेदन भद्रजनों से सादर;
मेरे प्रति करुणा से आर्द्रित, अतः स्नेह इतना है,
भला आपके सद्भावों का कैसे करूँ अनादर।

कृपा, द्रोण आचार्य, पितामह भीष्म हस्तिनापुर में,
पितृ-भाव हम सबका है अपने पितृव्य विदुर में;
जिस कृष्णा के लिये आप इतने आर्द्रित- चिन्तित हैं,
उसका भी मन बसा हुआ है अपने सास-ससुर में।

माँ, चाचा, आचार्य, पितामह व्यथित नहीं कुछ कम हैं,
उनका हमें, हमारा उनको स्वाभाविक ही गम है;
पुर में रहकर आप सान्त्वना उनको दे सकते हैं,
नहीं भावना बल विपत्ति में, वरन् आत्म-संयम है।

दैव प्रबल, उसके सम्मुख पुरुषार्थ-त्याग-तप नत हैं,
यद्यपि पुरजन इस कुकाण्ड से उद्वेलित-आहत हैं;
धर्मराज की इच्छा के पालन में हित उनका ही,
लौट पड़े, प्रारम्भ पाण्डवों-हित सेवा, तप, व्रत हैं।

कौंध गयी विद्युत-धारा, द्वारिका पुरी थी स्तब्धित,
उठी वेदना, टीस, ग्लानि, आक्रोश, अमर्ष असीमित;
कृष्ण खोजते, पता लगाते, पहुँच गये कानन में,
द्रुपद-सुता की दशा देखकर हुए क्षुब्ध, अति विथकित।

नीरवता, फिर मौन भंग, फिर फूट फूट कर रोई,
दीख रही थी करुणा की थाती सम्पूर्ण सँजोई;
सबकी आँखों में आँसू, सबकी बोली भर्राई,
कैसे, क्या कुछ कहा जाय, कुछ समझ न पाये कोई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कृष्ण ! कृष्ण ! कह कृष्णा ने धरती से सिर टकराया,
जिसके चक्कर में वसुधा, वह भी चक्कर में आया;
वह्नि ! शान्त हो, तेरी पीड़ा अब है मेरी पीड़ा,
धीरे धीरे बोलचाल से उसको स्वस्थ कराया।

सिसक सिसक कर, फूट फूट कर व्यथा सनी बानी में
अनुचित उचित विवेचन दुर्लभ दुःख - परेशानी में;
मेरे लिए विश्व सूना, सबने मुझको बिसराया,
नहीं समझती थी मैय्या को हूँगी अनजानी मैं।

ये पति ! जिनके सम्मुख सभा - भवन में थी अपमानित,
प्रस्तर मूर्ति बने बैठे, चेतना हीन, थे मूर्छित;
कहाँ पिता थे, कहाँ बन्धु-बान्धव, हित मित्र हमारे ?
और आप को भी तो थी मैं कभी न अन्य, अपरिचित।

घोर उपेक्षा ! अपमानित थी आतताइयों द्वारा,
क्यों न आपके चक्र-सुदर्शन ने उनको ललकारा ?
कर्ण ! सूत का पुत्र ! नीच ने मेरी हँसी उड़ाई,
अब तक वह जीवित है मेरी गरिमा का हत्यारा।

हैं समर्थ, इसलिये कर रही अपना दुःख निवेदन,
रक्षा की कामना आपसे प्रतिदिन, प्रतिथल, प्रति छन;
अग्नि-कुण्ड का उद्भव-गौरव हुआ अग्नि में स्वाहा,
अवला की लज्जा-गौरव का वांछित है प्रतिपालन।

कथन नहीं, उद्घोष कृष्ण का कृष्णे ! भाविनि ! पावन !
है अक्षुण्ण तुम्हारा गौरव, और न होवो उन्मन;
शकुनि, कर्ण, दुःशासन, दुर्योधन से अत्याचारी-
मरे हुए हैं, निश्चित है रण में इनका उत्थापन।

कृष्णा की सौगन्ध, कृष्ण का प्रण सुन ले कल्यानी !
समर-भूमि में सारा कौरव-कुल होगा बेपानी;
एक एक कर, चुन चुनकर, गिन गिन मारे जायेंगे,
साम्राज्ञी-पद पुनः प्राप्त होगा वीरों की रानी !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



आसमान फटकर धरती पर आ जाये, यह सम्भव,
गंगा के पेटे में विन्ध्य समा जाये, यह सम्भव;
बिखर जायँ पृथ्वी के कण कण, सम्भव हो सकता है,
कृष्ण-कथन झूठा हो जाये, कभी न होगा सम्भव।

धृष्टद्युम्न भी इस अवसर पर आ पहुँचे कानन में,
क्रोध-क्षोभ का भारी भार सम्हाले अपने मन में;
क्षत्रियत्व को दुर्योधन ने जानबूझ ललकारा,
पासे से अब नहीं, अस्त्र से निर्णय होगा रण में।

द्रोण! मौन बैठे थे? उनको भी मारा जायेगा,
भीष्म! पितामह उनके ही हैं, ललकारा जायेगा;
शकुनी, दुःशासन, दुर्योधन से निर्लज्ज जुआरी!
बीनबीन कर इन दुष्टों को संहारा जायेगा।

सम्बन्धी राजाओं का आगमन, मुखर काम्यक बन,
कल की घटना और आज हो गया भूप-सम्मेलन;
रोषपूर्ण उद्‌गार सभी के, सभी पूर्ण उत्तेजित,
थी सजीव कृष्णा की पीड़ा, कृष्ण अत्यधिक उन्मन।

जान पड़ रहा, आज धरा की जिह्वा सूखी सूखी,
जान पड़ रहा, मूक मेदिनी बहुत दिनों की भूखी;
रक्त-मांस का आयोजन कुछ तो करना ही होगा,
पेट न भर पायेंगी थोथी बातें रूखी - रूखी।

कहा कृष्ण ने—दुर्योधन की ही बलि दे दी जाये,
कहा भीम ने—दुःशासन की पहिले भेंट चढ़ायें;
अर्जुन का था कथन-कर्ण ही उचित यज्ञ बलि-पशु है,
बोल उठे सहदेव कि मामा को हम नहीं भुलायें।

धृष्टद्युम्न की राय, अन्य भूपति भी हों आमंत्रित,
अस्त्र-शस्त्र-सेना की वांछित सुदृढ़ व्यवस्था समुचित;
धृष्टकेतु का कथन-अचानक उन पर धावा बोलें,
था कैकय कुमार द्वारा यह मत अत्यधिक समर्थित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



धर्मराज थे मौन, धर्म की गति न कभी उद्वेलित,
परम श्लाघ्य हैं, आप हमारे ही हित में हैं चिन्तित;
बारह वर्षों तक तो करनी होगी मौन प्रतीक्षा,
कैसे भला धर्म को कर सकते हैं आप उपेक्षित ?

बात हार कर बात बदलने की न बात उत्तम है,
वर्तमान में कुछ करने में हम नितान्त अक्षम हैं;
युद्ध-सन्धि की बात नहीं तब तक है हमें चलानी—
कानन-निर्वासन की अवधि-परिधि में जब तक हम हैं।

बन्द हुआ अध्याय क्रोध, सान्त्वना और भाषणका,
उदित चन्द्र-रवि धर्मराज के धर्म-कृष्ण के प्रण का;
द्वेष-कुण्ड में कौरव-कुल जब हो जाएगा स्वाहा—
तभी भरेगा गर्त यज्ञ-कन्या के गहरे व्रण का।

सभी आगतों की धीरे धीरे आरम्भ विदाई,
फूट फूट कर जी भर रोये दोनों, भगिनी-भाई;
धृष्टद्युम्न ने कहा-वहिन ! बदला लेकर छोड़ूँगा,
करवा लूँगा दुष्टों से पाई पाई भरपाई।

अर्जुन-कृष्ण-मंत्रणा को कोई भी जान न पाया,
नर-नारायण की लीला कोई पहिचान न पाया;
भावी के सँग वर्तमान का हो कैसे अभियोजन,
क्या अतीत की सहज देन, कोई अनुमान न पाया।

कानन आने को आतुर थी, धैर्य दिया, समझाया,
अभिमन्यू को नए खिलौने देकर के बहलाया;
अच्छा होगा, मेरे साथ रहेगी, जी बहलेगा,
माता ने भी कुछ ऐसा ही कहने को कहलाया।

अगर बहुत उदास होगी तो आ पहुँचा जाऊँगा,
इसी बहाने मैं भी जब तब मिलने को आऊँगा;
कुछ कुछ बात समझने की चेष्टा करता अभिमन्यू,
अगली बार सुभद्रा के सँग उसको भी लाऊँगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



कृष्ण द्वारिका पुरी और परिजन, पुरजन अपने घर,
धृष्टकेतु कैकय कुमार भी अपने अपने रथ पर;
एकाकी जीवन-यात्रा की नयी नयी तैय्यारी,
पाण्डव-दल चल पड़ा खोजने नूतन कानन-गह्वर।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सप्तम सर्ग

■

# पोषण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यही द्वैत बन, जिसकी महिमा ऋषियों ने है गायी,
यही द्वैत बन, जहाँ प्रकृति-गरिमा की बड़ी बड़ाई;
यही द्वैत बन, पूत बना ऋषि-मुनियों के आश्रम से,
यहीं पाण्डवों ने निर्वासन की थी अवधि वितायी।

इस कानन में सुविख्यात था एक विशाल सरोवर,
दुग्ध सरिस निर्मल जल-पूरित, पावन, परम मनोहर;
कुमुद-कमल से निशि-दिन फूला फूला सा रहता है,
चन्द्र-तरी से हंस विखर कर तैर रहे जल-ऊपर।

निरअग्निक ब्राह्मण कुछ, कुछ ब्राह्मण थे अग्नि-विलासी,
ब्रह्मचारियों, बानप्रस्थियों के सँग निसँग-उदासी;
तप: सिद्ध, तपलीन महात्माओं से वन शोभित था,
रामाश्रयी, विरागी, अनगिन साधु-सन्त-सन्यासी।

पत्र-पुष्प से हरा भरा विस्तृत तमाल का बन था,
गगन चूमता, रस टपकाता, कहीं तालका बन था;
सुण्ड हिलाते, मुण्ड रगड़ते वृक्षों के दोनों में,
मत्त गयन्दों के दल वाला कहीं साल का बन था।

आम, नीम, महुवा, कदम्ब, अर्जुन, कनेर लहराते,
पीपल-बट अपनी महानता ऊपर उठा दिखाते;
बेल, दालचीनी, चन्दन वितरित सुगन्ध करते थे,
वायु-वेग के सम्मुख शीशम अपना शीश झुकाते।

कोई पुष्पित्त ही पुष्पित हैं, किसी किसी में फल हैं,
किसी किसी को अपनी लघुता ही जीवन-सम्बल है;
फल-पुष्पों से हीन पत्र से ही सन्तोष किसी को,
पत्र-हीन कोई, जिनसे सम्बद्ध नहीं हलचल है।

पशु-पक्षी के लिये यहाँ से वढ़कर वास कहाँ है,
शत्रु-मित्र से वचें-मिले, ऐसा सुनिवास कहाँ है;
तरह तरह के पक्षी, उनकी तरह तरह की बोली,
जल-फल-आश्रय का बढ़ करके और सुपास कहाँ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



बैठ सरोवर-तट पर बन मुर्गी डैनें खुजलाती,
चकवा-चकई आर-पार सँग सँग हैं आती जाती;
कौवे काँव काँव करते, तट पर जी खोल नहाते,
सारस की जोड़ी तपसी सा बगुला-ध्यान लगाती।

कौवे-चील्ह नीम की टहनी में हैं नीड़ बनाते,
हरे हरे आमों के पत्तों में तोते छिप जाते;
इमली, बट, पीपल के कोटर, ऊँचे ऊँचे माथा,
गीध, उलूक, श्येन से प्रायः जोड़े रहते नाते।

ये बबूल के पेड़, अवाबीलों के लटके खोंते,
शाही नीड़ बनाने वाले ये पक्षी इकलौते;
काठ काट कर कठ-कठनी कोटर बेजोड़ बनाती,
सबसे अलग कपोतों के रक्षित निवास हैं होते।

घने घने वृक्षों के झुरमुट में मयूर भरमाता,
नहीं देखता कोई, पर मस्ती में नाचे जाता;
पास मोरनी उसकी शोभा-स्फूर्ति देख मोहित है,
ऐसा जान पड़ रहा, छककर आसव है मतवाला।

मैना, हारिल, तीतर बोलें तरह तरह की बोली,
एक साथ हैं उड़े जा रहे, ये कपोत हमजोली;
खोज रही कोयल कौवे का नीड़, वेदना भारी,
आसमान में कौवे से कर रहा भुचंग ठिठोली।

दिन में पता नहीं था, होते शाम पड़ी दिखलायी,
बहरी इसकी बहिन और उल्लू है इसका भाई;
बुरी नजर से पता नहीं क्यों लोग देखते इसको,
चमगादड़ है, कीट-पतंगों पर आफत बन आयी।

शुभलक्षणा नगर-गाँवों के घर घर में आदृत है,
कानन में इसकी विशेषता अपने तक सीमित है;
लोट पोट कर रज-कण में है अपना स्वास्थ्य बनाती,
गौरइया बच्चे को चारा लाने में दोचित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



परदेशी है, किन्तु शरद में यहाँ खिसक आया है,
दर्शनीय है, इसीलिये तो सबके मन भाया है;
बड़ी बड़ी आँखों के सँग कवियों ने इसे बिठाया,
सचमुच ही इस खञ्जन ने सबका मन ललचाया है।

दुनिया में इसका आदर प्रभाव है, बात सही है,
कुञ्ज-महल के रहने वालों में भी प्रमुख यही है;
नीलकण्ठ को लोग दशहरे में खोजा करते हैं,
किन्तु यहाँ कानन में इसकी गिनती कहीं नहीं है।

पीपी करते ही इसका सारा जीवन बीता है,
लोग बताते हैं, यह स्वाती का ही जल पीता है;
सचमुच देखा नहीं किसी ने है इसको जल पीते,
पानी बिना पपीहा क्या जानें, कैसे जीता है।

सबसे अलग थलग रह करके है यह समय बिताता,
कविगण कहते, मात्र चन्द्रमा से है इसका नाता;
कंकर-पत्थर खोजा करता, यह चकोर पंछी है,
पीता है चाँदनी, आग की चिनगारी है खाता।

यहाँ जंगली पशुओं की है अपनी शान निराली,
कितनी आकर्षक काया! कितनी चालें मतवाली!
जिसे देखिये; झाँकी दिखला ओझल हो जाता है,
न्यौछावर इन पर सौ दुनिया आज सभ्यता वाली।

बेमतलव कोई न किसी को पीड़ा पहुँचायेगा,
भूख लगे पर मांसाहारी मारेगा, खायेगा;
यहाँ न सञ्चय की प्रवृत्ति, यह लोभ-मोह से वंचित,
मानव का संसार तुलित क्या इससे हो पायेगा।

छल-छद्मों से दूर, नही है यहाँ चोर बाजारी,
अपमानित नारियाँ नहीं हैं, पलते नहीं जुआरी;
अपनी सभी कमाई खाते, कम है छीना-झपटी,
नहीं जानते क्या कहलाता मेरी और तुम्हारी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



नहीं कपट से कोई करता यहाँ अपहरण श्रम का,
नहीं बिछाने वाला कोई जाल यहाँ पर भ्रम का;
कहीं कूदते, कहीं फाँदते, कहीं किलोलें करते,
कण कण में उल्लास, नाम है यहाँ नहीं मातम का।

नहीं मुखौटा आयातित है, यहाँ न दम घुटता है,
शान्ति खोजने यहाँ न कोई राष्ट्र-संघ जुटता है;
आत्म तुष्ट, सब अपना अपना काम चला लेते हैं,
मूलभूत आवश्यकताओं का न प्रश्न उठता है।

यहाँ मूल्य लगता है केवल शौर्य-पराक्रम का ही,
नहीं बुद्धि का है अजीर्ण, जो बरपा करे तबाही;
यह सिद्धान्त एक क्षण को भी कभी नहीं चल सकता,
जो जितना ही बड़ा धूर्त, सरदार बड़ा उतना ही।

इकबग्गा है, साथ नहीं रखता है शामिल बाजा,
इसके कुल में कभी न जानी जाती दाँजी-दाँजा;
नहीं मन्त्रि-परिषद है, कोई अन्य न राय देहन्दा,
अपने बल पर बना हुआ है यह जंगल का राजा।

यही सिंह है, इसके आगे नहीं अन्य पशु आते,
इसकी गरिमा के आगे सारे पशु हैं झुक जाते;
नहीं किसी को इसने बेमतलब पीड़ा पहुँचायी,
इतने ऊँचे पाये के नर-सिंह कहाँ दिखलाते।

चीते, बाघ, तेंदुए लगते इसके छोटे भाई,
कुत्ते से बलवान भेड़िये की है धाक सवाई;
रीछ फलाहारी है, इसका नहीं किसी से नाता,
चतुर लोमड़ी जोड़े रहती सबसे प्रेम-सगाई।

यह गीदड़ शंकालु, व्यर्थ ही सबसे डरता रहता,
खरहा अपनी निर्बलता को नहीं किसी से कहता;
बन्दर पेड़ों पर ही रहता, शाखा-मृग कहलाता,
घाम-शीत-वर्षा की पीड़ा बेमतलब है सहता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ये मदमत्त गयन्द झुण्ड के झुण्ड उधर हैं जाते,
कदली-वन विहार करते हैं, ऊधम वहाँ मचाते;
रगड़ रगड़, धक्का देकर, वृक्षों को तोड़ा करते,
है दहाड़ता शेर, सटकते, लगते हैं घबराने।

गैंड़ा बड़ा बली होता है, नहीं किसी से डरता,
भैंसा कम है नहीं, बाघ को देख परन्तु सिहरता;
यह शूकर है, दाढ़ों से वृक्षों में चीर लगाता,
घासी मैदानों में बारहसिंघा खूब बिचरता।

यह मृग है, चमचा चलते हैं इसके पीछे पीछे,
सब पर सम अधिकार अनधिकृत, कानन, बाग, बगीचे;
आगे वाली अपने, पीछे की चरते पिछलग्गू,
जगह जगह हैं सुलभ घास के इसको नरम गलीचे;

अश्वपाड़ ऊँची गर्दन से लम्बी लम्बी डाली—
झुका झुका कर पत्तों से कर देता बिल्कुल खाली;
नीलगाय की पुष्ट देह पर चीता घात लगाता,
किन्तु बहुत चौकन्ना होकर है वह चरने आती।

वृक्षों पर चिरचिर करती चढ़ जाती चतुर गिलहरी,
आखिर तो यह कलाकार के खान्दान की ठहरी;
गिरह लगाती, कलाबाजियाँ दिखलाया करती है,
कच्चे फल को काट गिराने में रुचि रखती गहरी।

कितना भारी यह अजगर है, इसको चला न जाता,
वृक्ष कोटरों में, डालों में लिपटा, समय बिताता;
"अजगर को भख राम देवैया" लोग कहा करते हैं,
सम्मोहन करके छोटे पशुओं का भोग लगाता।

कई जीव ऐसे, जो मिट्टी खोद धरा में रहते,
साँप, छछूँदर, चूहे, बिच्छू, गोजर उनको कहते;
कुछ रेंगते पेट के बल, कुछ पैरों से चलते हैं,
शत्रु-जन्य-संताप बिलों में अपनी कभी न सहते।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



तरह तरह के जीवों का यह कानन आश्रय-दाता,
जो आता, इसकी विशालता में है खप ही जाता;
नहीं एक प्राणी, जिसको हो इसने अस्वीकारा,
वञ्चित कृपा-कोर से पाण्डव-दल ही क्यों रह जाता।

इसके कारण और अधिक मर्यादित है यह कानन,
भोगवती का नहीं किसी ने देखा सूखा जीवन;
वेद-पाठियों द्वारा यह सरस्वती पुकारी जाती,
ऋषियों से स्पर्शित; अर्चित, चर्चित यह सरिता पावन।

टेढ़ी मेढ़ी चाल, किन्तु निर्मलतम इसकी काया,
दोनों तट के वृक्ष किए रहते हैं इसको छाया;
स्वेच्छा का श्रमदान, बना ऊबड़ खाबड़ थल समतल,
जगह जगह ऋषियों ने घाटों का निर्माण कराया।

सिंह और मृग दोनों इस सरिता का पानी पीते,
काल और थल भेद, सभी के अपने अलग सुभीते;
एक दूसरे की न यहाँ पर राह काटता कोई,
सह अस्तित्व-न्याय का जीवन सभी यहाँ हैं जीते।

धारा के विपरीत कई लघु मीन चढ़े जाते हैं,
बड़े मीन पीछे से प्रायः उनको दौड़ाते हैं;
बड़ी तीव्रधारा; प्रस्तर के खण्ड लुढ़क टकराते,
लोग बताते, महादेवजी यहीं गढ़े जाते हैं।

साम्यवादियों से है इसका जन्म जन्म का नाता,
पारिश्रमिक सभी को श्रम का यहाँ दिया है जाता;
सम व्यवहार, प्यार सम, सुलभ सभी को इस सरिता से,
जितना जिसे चाहिये, उतना ही जल है वह पाता।

वेद-मंत्र है वेदपाठियों से जो कुछ सुन पाती,
उन्हें नित्य अपने सुकण्ठ से है अटूट दुहराती;
प्रगतिशील है, अपने पथ पर बिना पलट कर देखे—
है अबाधगति से प्रतिपल आगे ही बढ़ती जाती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कानन का अस्तित्व जभी से, यहाँ सृष्टि अन्वेषक,
ब्रह्म–जीव–माया की सत्ता के स्थापक, विश्लेषक;
द्वैत और अद्वैत-वादियों की तार्किक भाषा से—
हटकर कर्म-काण्ड के भी हैं उत्प्रेरक–उपदेशक।

ब्रह्मवादियों की चर्चा में भी है द्वैत सुरक्षित,
सिद्धों के भी व्यवहारों में यहाँ द्वैत है लक्षित;
अभी जीव है जीव, भले ही कभी ब्रह्म हो जाये,
है आवरण, किन्तु जग–संचालन–हित माया वांछित।

द्वैत और अद्वैतवाद का युग युग से झगड़ा है;
सृष्टि–संतुलन लेकिन इससे तनिक नहीं बिगड़ा है;
बाह्य दृष्टि से सभी द्वैत ही द्वैत दिखायी देता,
कुछ ऐसा ही सोच 'द्वैत' कानन का नाम पड़ा है।

अगर ब्रह्म की सत्ता है तो ऋषियों के आश्रम में,
कोलाहल कानन का कल्पित अज्ञ जीव के क्रम में;
आँखें जैसा देख रही हैं, वही नित्य सत्यापित,
भले देखने वाला कहलाये माया के भ्रम में।

बटुक, वेदपाठी, याज्ञिक, सब कर्म-काण्ड में रत हैं,
यत्र तत्र कानन में निर्मित होम–कुण्ड शत शत हैं;
अग्नि–पुजारी अग्नि प्रज्वलित रखते हैं निशि–वासर,
अग्नि–स्पर्श भी नहीं करेंगे, कितनों का यह व्रत है।

यज्ञ ब्रह्म है, यज्ञ देव है, यज्ञ मोक्ष का दाता,
बड़े बड़े अघियों को भी, है यज्ञ स्वर्ग पहुँचाता;
यही यज्ञ की बड़ी सफलता, यज्ञ देवता आकर
अपना यज्ञ–भाग अपने हाथों से है ले जाता।

अगर अमर होना है तो यह यज्ञ अमर कर देगा,
धन है इष्ट स्वर्ण-मुद्रा से घर का घर भर देगा;
अगर विजय की चाह, शत्रु रण में ही नहीं चढ़ेगा,
वीणा-पाणि स्वयं बनकर, यह विद्या का वर देगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



द्रुपद और दशरथ जैसों को पुत्री–पुत्र दिलाया,
नहुष, त्रिशंकु आदि का सीधे स्वर्ग प्रवेश कराया;
चारों ही पुरुषार्थ यज्ञ के ही रहते हैं वश में,
यज्ञ ब्रह्म है, यज्ञ जीव है, यज्ञ स्वयं ही माया।

यज्ञ सिद्ध यदि हुआ, इन्द्र का सिंहासन डोलेगा,
यज्ञ सिद्ध यदि हुआ, अनल मानव बोली बोलेगा;
यज्ञ ध्वंस करने को प्रतिपक्षी सचेष्ट रहते हैं,
यज्ञ विघ्न–बाधाओं के सारे बन्धन खोलेगा।

पैसा जिसके पास, यज्ञ करके सब कुछ पा जाता,
यज्ञ वेद–वेदाङ्गों से सीधे रखता है नाता;
मानव–दानव दोनों ही इससे होते लाभान्वित,
बात बात में अष्ट सिद्धि, नव निधियों का है दाता।

यही यज्ञ ईर्ष्या–संघर्षों का कारण बनता है,
इसी यज्ञ से भावी सत्यानाशी व्रण बनता है;
इसके हाथों नींव महाभारत की सुदृढ़ बनी है,
यह अमर्ष पूरित, पराक्रमी का यह प्रण बनता है।

इसी यज्ञ ने दुर्योधन की चिन्ता को गहराया,
जूआ, पासा, सर्वनाश का इसने स्वांग बनाया;
कौरव-कुल-विनाश का प्रण इससे ही था उत्प्रेरित,
इसी यज्ञ के कारण पाण्डव-दल कानन में आया।

कहीं उपनिषद् की चर्चा है, जिसमें ब्रह्म-निरूपण,
ब्रह्म रूप भासित, समग्र रचना का अणु अणु–कण कण;
कुछ जिज्ञासु ब्रह्म-विद्या के कुछ इसके व्याख्याता,
ब्रह्म-ज्ञान में दोनों के जीवन के गुत्थित क्षण-क्षण।

क्या है ब्रह्म, ब्रह्म से क्या है स्थूल जगत का नाता,
कैसे बिन्दु सिन्धु में मिलकर स्वयं सिन्धु बन जाता;
परमात्मा – जीवात्मा का कैसे विभेद हम जानें,
सूक्ष्म विषय प्रमाण के द्वारा है आचार्य बताता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ब्रह्मात्मैक्य ज्ञानका कैसे हो रहस्य उद्घाटित,
सूक्ष्मदृष्टि में वह रहस्यमय सत्ता कैसे भासित;
आदि–अन्त तक चर्चा में शाश्वतता का अन्वेषण,
सत्य–खोज में वादों का विवाद प्रायः है वांछित।

कहीं शास्त्रकारों की कृतियों की चर्चा का क्रम है,
कपिल, कणादि, जैमिनी की विवेचना अति अनुपम है;
गौतम-व्यास विशेष प्रशंसित, व्यहारिक वेदान्ती,
पातञ्जलि का योग सूत्र सबको प्रिय, है सर्वोत्तम।

षट दर्शन के अलग–अलग आचार्य, अलग कक्षायें,
अपने अपने ऋषियों का ही अध्येता गुन गायें;
योग सूत्र की कक्षा ही सबसे भारी लगती है,
व्यवहारिक ही इसमें हैं प्रयोग जाते बतलाये।

अहंकार से हीन, कामना रहित कर्म उपदेशित,
होकर संग रहित जग में रहना, है कहीं प्रशंसित;
बन्धन का आसक्ति मूल है, है विरक्ति में जीवन,
पद्म पत्र–जल सा रहना ही, है प्रायः निर्देशित।

धर्मराज सा अतिथि, द्वैतबन क्यों न अधिक हर्षित हो,
पुष्पों के पाँवड़े बिछाये, वृक्षों ने पुष्पित हो;
मलयानिल ने किसलय दल के अनगिन चँवर डुलाये,
कुञ्ज राजप्रासाद पूर्व से ही मानो विरचित हों।

स्वाभाविक थे धर्म भीरु सारे आश्रम के वासी,
दया और करुणा की सम्पत्ति के समग्र अधिवासी;
बढ़ी आस्था, स्वयं बना प्रत्येक धर्म का लक्षण,
धर्मराज आगमन, आश्रमी बने आत्म-विश्वासी।

अभी अभी चौकड़ी भरे जाता था, मृग है स्तब्धित,
बड़े बड़े नैनों वाले के नैन हुए विस्फारित;
रहा एकटक देख द्रौपदी को जादू का मारा,
मानव के ऐसे सुनेत्र! है स्यात् इसी से चिन्तित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



मृगी कह रही—चलो, बढ़ो, अब इधर कभी मत आना,
चलो दूसरे छोर, लगावें अपना उधर ठिकाना;
है ईर्ष्यालु, सोचती है—यह प्रस्तर मूर्ति बना क्यों,
हटता नहीं, चाहती है वह ज्यों त्यों उसे हटाना।

भय के मारे बली भीम का अनमन स्वागत करता,
मेरे दल में एक न ऐसा, यह है उसे अखरता;
कितनी है सुडौल काया! कितनी हैं पुष्ट भुजायें!
मानव है या है दिग्गज, गजपति यह सोच हहरता।

कितनी आन बान वाला! गति में कितनी थिरता है!
मुझसे भी निर्भीक, नया यह नर कानन फिरता है;
देख चाल अर्जुन की मृगपति को है अचरज भारी,
मुझसे बढ़कर पराक्रमी! इस चिन्ता में घिरता है।

छिप न सके सहदेव, पण्डितों में वे हुए उजागर,
ऋषि-मुनियों से सम्मानित थे, पाया सबसे आदर;
खोज नकुल को आश्रम-वासिनियाँ थीं पास बिठातीं,
आनन्दित-पुलकित होतीं उनको कुछ खिला-पिलाकर।

ऋषियों के सँग धौम्य हो गये पक्के आश्रमवासी,
सबसे आदृत थे, जितने थे साधु-सन्त-सन्यासी;
ऐसे घुल मिल गये कि चिरपरिचित हों यह जन जन के,
कभी बाहरी जान न पाये, यह हैं नगर-निवासी।

भोगवती के पावन तट पर एक वृक्ष था बट का,
वातावरण शान्त था, किसी तरह का वहाँ न खटका;
तरह तरह की पुष्पित बेलें, लहराती लतिकायें—
मीठी मीठी गन्ध बाँटती, नाम न करुआहट का।

उनके नीचे पाँच गयीं झोपड़ियाँ सुघर बनायी,
जो बन-वासी कलाकार थे, उनसे गयीं सजायीं;
ये उनके आवास, कभी जो प्रासादों के वासी,
लम्बी अवधि एक युग की इनमें ही गयी बितायी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कितने ही वसन्त, बीतीं इनमें कितनी बरसातें,
लू के सहे झकोरे, काटीं कठिन शिशिर की रातें;
झोपड़ियाँ जर्जरित, शिथिल हो उठा द्रौपदी का मन,
स्वाभाविक था; सभी सोचते हैं भविष्य की बातें।

पतियों से था कथन—शुरू बरसात, कुटीरें टूटीं,
प्रकृति प्रकृति की पलट रही, बन की भी छटा अनूठी;
पहिला बादल आसमान से जीवन लेकर आया,
रेंग रहीं कुटिया के बाहर नन्हीं बीर बहूटी।

दिन पर दिन इसका विकास, अब इसकी भरी जवानी,
दृष्टि जहाँ तक जाती, देखा जाता पानी पानी;
कल थी सूखी, दूब एक दिन में इतना हरियाई,
भोगवती है देख रही इन नालों की नादानी।

कड़क कड़क कर बिजली, प्रायः बादल को ललकारे,
सरर सरर कर वायु बादलों को प्रायः सनकारे;
कड़क, चमक, सनकारों से है क्षुब्ध गगन का आँगन,
धरती के सब जीव सुरक्षा के खोजते सहारे।

हुए चार दिन, नहीं अभी तक हुए सूर्य के दर्शन,
अस्त-व्यस्त हो उठा, टपकती झोपड़ियों का जीवन;
सागर का जल खींच, बादलों को जिसने गहराया,
उसी सूर्य को घेर घार ढक किया घनों ने उन्मन।

धरती के चप्पे चप्पे पर हरी घास का चारा;
ग्रीष्म-तप्त दुर्बल पशुओं को भारी हुआ सहारा;
घड़ी दो घड़ी में चरकर वे खूब अघा जाते हैं,
इस कानन में कोई भी पशु रहा न अब बेचारा।

सन्ध्या हुयी, बादलों ने नक्षत्रों को भरमाया,
ग्रहों सहित शशि को भी छेंका, करके आड़ छिपाया;
देखा-समझा नहीं, न आँकी अपनी छोटी हस्ती,
अन्धेरे में सोनकिरवा, तम से लड़ने को आया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



जहाँ हटे बादल, शशि पर मेंडर ने डाला घेरा,
बिखरी थी चाँदनी अभी, दो छन में हुआ अँधेरा;
अभी डूब थी गयी चाँद की नौका घन-सागर में,
बाहर अभी निकल आयी यह, घन को दिया दरेरा।

नीरव रजनी में झींगुर अटूट स्वर में हैं गाते,
सप्तम स्वर में इन्द्र-दास मेंढक, गाते-चिल्लाते;
गा-गा कर घन से जल की याचना किया करते हैं,
जब पानी गिरने लगता है, दोनों चुप हो जाते।

भोगवती की सूखी काया दो दिन में गदरायी,
कल भीतर थी और आज सीमा से बाहर आयी;
उलट रहा है सूँस, कर रहा सूँ-सूँ ऊपर आकर,
छोटी-बड़ी मछलियाँ इसको देख-देख घबरायीं।

नाम कुकुरमुत्ता, परन्तु कोमलता इसका बाना,
मातृ-भूमि की रक्षा के हित इसने छाता ताना;
वर्षा-ऋतु में ही दिखलायी जहाँ तहाँ यह पड़ता,
बड़ा उपेक्षित, घूरा ही है इसका ठौर-ठिकाना।

नहीं अभी तक हरियाये, ये ऊसर-बंजर-रेती,
उपजाऊ भू-खण्डों पर प्रारम्भ हो गयी खेती;
कहीं रोपाई, कहीं बोवाई, कहीं अभी तैय्यारी,
हरी भरी वह भूमि, जहाँ पर खेती हुयी अगैती।

है अच्छा जमाव, अच्छी खेती, यह चर्चा घर घर,
जितनी आवश्यकता, उतनी वर्षा समय समय पर;
सूदखोर जो साहुकार, उनको चिन्ता है भारी,
हो जायेंगे अब किसान उनके चंगुल से बाहर।

बरसाती जल के सेवन से सारे जलचर थलचर;—
निखर गये हैं उनकी काया लगती है सुन्दर तर;
गाँव, गाँव में युवकों के हो गए अखाड़े चालू,
पीत धूल शोभा देती है, पुष्ट देह के ऊपर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बूंदों के आघात विटप सहते हैं शीश झुकाये,
पानी से बचने को बानर होता दाँयें – बायें;
सिहर सिहर उठते नीड़ों में अंडे सेते पंछी—
वायु वेग से हहर हहर उठती हैं जब लतिकायें।

बिजली चमकी, तड़क-तड़क करके जब घन घहराया,
एक बार दिल बड़े बड़े पशुओं का भी थर्राया;
अपनी नृत्य-कला चाहता दिखाना मोरनियों को,
घटा देख खिल उठा मोर, झुरमुट से बाहर आया।

जल प्रवाह से सरिता-तट के सुदृढ़ बाँध भी टूटे,
पत्थर के ढोके आपस में टकरा-टकरा फूटे;
जल-प्रपात ऊपर से दौड़े आते, नीचे गिरते,
पत्थर की खा रहे चोट, पर गाते गीत अनूठे।

साधन-सम्पन्नों को सुखकर, दीनों को दुखदायी,
नर-पशु-पक्षी पंगु, वृष्टि से बाधित हुई कमाई;
जिनकी संचय प्रवृति, सुखी वे ही ऐसे मौसम में,
जिन्हें खोजना प्रतिदिन भोजन, उनपर आफ़त आयी।

टूटी झोपड़ियों से पानी टप टप टप चूता है,
वे भी साधन हीन हो गये, जिनको बल-बूता है;
किकुर-सिकुर कर दिन-रातें कैसे दीनों ने काटीं—
क्या समझे दूसरा, कष्ट जो उनका अनकूता है।

छोप – छाप कर पाण्डव दल ने यह बरसात बितायी,
कभी हुआ था इसका स्वागत, अब समाप्त पहुनाई;
खुले मार्ग अवरुद्ध हो गये थे वर्षा के कारण,
एक बार फिर मौसम ने ली आकर्षक अँगड़ाई।

क्रिया हीन थे सक्रिय हो उठे, औरों का क्या कहना,
मन्द अग्नि अब तीव्र, जलावन का अब नहीं उलहना;
एक वस्त्र वाले मानव भी नहीं दुखी अब उतने,
गीले वस्त्रों के धारण का नहीं कष्ट अब सहना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-



है निरभ्र आकाश, सभी जल-स्रोत धरा पर निर्मल,
थका वायु का वेग, हो गयी है गति उसकी निर्बल;
कमल – कुमुद पुष्पों से ताल – सरोवर ढके ढके से,
स्वाभाविक स्वच्छता प्राप्त है, कहीं न जल में हलचल।

कीट-पतंगों की दुनिया अब देती नहीं दिखायी,
कीचड़–मल की सूर्यातप से पूरी हुई सफाई;
लिपे पुते सब घर, फिर से सज गयीं सभी झोपड़ियाँ,
काम-काज; खेती-बारी में फिर से थिरता आयी।

कितने निर्झर मौन हुए कितनों में आयी थिरता,
अब न कहीं कोई वर्षा की झड़ियों में है घिरता;
पगडण्डियाँ राजपथ से अब तनिक न कम चालू हैं,
अब तो प्राणी जहाँ चाह, स्वच्छन्द घूमता-फिरता।

छोटे गड्ढों का है खाली पेट दिखायी देता,
छोटे तालों में घबराकर रोहू साँसें लेता;
नाले सूखे, नदियाँ अपने पेटे में आ बैठीं,
नाविक चिन्तित थाह देख, अब कहाँ नाव वह खेता।

धूल धूसरित वायु नहीं अब सोधे किरणें आतीं,
मैदानों में सभी प्राणियों को अत्यधिक सतातीं;
किन्तु रात में चाँद उन्हें शीतलता है पहुँचाता,
कुमुदों के समान सबकी है चित्त-वृत्ति हो जाती।

ग्रह, नक्षत्र, तारिकाओं से भरा गगन का आँगन,
आरोपित है शोभन शशि का चलता-फिरता आसन;
वहीं गगन-गंगा, मानव के नेत्र जुड़ाते जिसमें,
ध्रुवतारा भूले भटकों का करता पथ-निर्देशन।

वृक्षों पर आ रहे पुष्प, फूली फूली लतिकाएँ,
शाखा, लिपटा कर, सहेलियों को अब गले लगाएँ;
पुष्पों के रंगों में मिल, ललमुनियाँ चहक रही हैं,
स्वेच्छाचारी भौंरे फूलों पर मँड़राने आये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आतप से संतप्त जीव, अब इधर बढ़े हैं आते,
दो क्षण बैठ विटप-छाया में, पूर्ण स्वस्थ हो जाते;
आश्रम-वासी बटुक पहुँच कर ऐसे निर्जन थल में—
गुरुकुल से आदेशित, अपने पूर्व पाठ दुहराते।

सब पशु-पक्षी खोज रहे हैं अपनी अपनी जोड़ी,
मृग को छोड़, नहीं अब चरने जाती मृगी भगोड़ी;
अंग अंग में स्थूल प्रकृति के अब थिरता लक्षित है,
पिछले पहर रात में सरदी पड़ती थोड़ी थोड़ी।

नयी बुवाई की तैय्यारी, पकी फसल बरसाती,
घर में आया अन्न, कृषक के पास हुयी कुछ थाती;
हैं नवान्न-त्यौहार मनाने के दिन आने वाले,
अब किसान की बेटी मन में फूली नहीं समाती।

अगली खेती पर किसान का ध्यान पूर्ण केन्द्रित है,
व्यापारी का मन्द पड़ा व्यापार पुनः चालित है;
साधु-सन्त-सन्यासी ने चौमासे का थल छोड़ा,
अपने अपने कामों में सब प्राणी संयोजित हैं।

यह वह ऋतु, जिसमें राजा हैं अपनी शक्ति बढ़ाते,
यह वह ऋतु, जब शत्रु-शीश पर पराक्रमी चढ़ जाते;
क्रियावान् सब, हम क्यों निष्क्रिय बने यहाँ बैठे हैं,
शत्रु-नाश-हित क्यों न आप कुछ करते और कराते।

सुनकर कथन द्रौपदी का, कुछ भीम हुए उत्तेजित,
अर्जुन ने गम्भीर साँस ली, नकुल हुए उद्वेलित;
चिन्ताकुल सहदेव हुए, पर मुँह न किसी ने खोला,
धर्मराज दृढ़व्रती, कथन पर तनिक नहीं थे विचलित।

पुनः कहा यों—इतने दिन कानन में रहते बीते,
कौन से यहाँ सुखहैं, किन बातों के यहाँ सुभीते?
दुर्योधन ने कभी हमारी भूले भी सुधि ली है?
लाखगुना उससे बेहतर हैं हिंस्र भेड़िये-चीते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आप सरीखे महापुरुष को भी कटु वचन सुनाया,
छल-छद्मों का जाल बिछाने में न तनिक शरमाया;
मित्रों, बन्धु-बान्धवों के सँग आप लक्ष्मी भोगे,
गलपच जाने को, हम सबको कानन में भिजवाया।

याद है न ! जब आप नगर से निकल रहे थे बाहर,
सारा जन-मानस विक्षुब्ध था; शोकाकुल था घर घर;
वे चारों—दुर्योधन, शकुनी, कर्ण और दुःशासन—
व्यंग बोलते ही जाते, मुसकान लिये अधरों पर।

आप पाट की पट्टी पर सोयें, कितना दुखदायी !
सिंहासन की जगह लिये है, कुश की बुनी चटाई;
बड़े बड़े राजाओं से, जो सदा घिरा रहता था,
उन्हें अलभ्य, अगम कानन में सेवक, बारी-नाई।

कहाँ रेशमी वस्त्र ! कहाँ चन्दन, सुगन्ध चर्चित तन !
धूल-धूसरित वस्त्र देख मेरा मन होता उन्मन;
बल्कल, पशु की खाल ! नग्न ताण्डव है नंगेपन का,
कैसे जिया जाय, क्या जीने योग्य नहीं यह जीवन ?

कभी स्वर्ण की थाली में याचक भी पाता भोजन,
बड़े बड़े भोजों का घर में होता था आयोजन;
आज हमें बनबेर, जंगली कन्द खोजने पड़ते,
कदली और कदम के पत्ते मात्र हमारे बासन।

बड़े बड़े भूपतियों ने है जिसका लोहा माना,
जिसपर क्रोधित, उसका जग में कहीं न ठौर-ठिकाना;
पुरुष-सिंह वह भीम धरा पर भूखे ही सो जायें,
उनके लिये बना दुर्लभ दो पाव अन्न का दाना !

लक्ष्य-भेद में एक साथ थी सबने मुँह की खायी,
बड़े बड़े वीरों की प्रतिभा, जिसको देख लजायी;
वही वीर अर्जुन, जंगल में लकड़ी तोड़ रहे हैं,
इस हीनावस्था में कैसे जाये अवधि बितायी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



क्षीण नकुल, सहदेव लग रहे, जैसे तपी-उदासी,
इनकी दशा देखकर व्याकुल हो जाते वन-वासी;
इन लोगों पर क्या न तनिक भी दया आपको आती?
शत्रु-रक्त की कब होगी क्रोधाग्नि आपकी प्यासी?

मैं भी राजा की बेटी हूँ, राजाओं की रानी,
शीत-घाम कब झेला, कब देखा बरसाती पानी;
मेरी ऐसी दशा! पिघलता नहीं हृदय! पत्थर है?
चौका-बासन काम! कभी जो पहिले थी पटरानी?

ऐसा लगता, कहीं क्रोध का नाम नहीं इस तन में,
मूक वेदना सहन करेंगे, ठान लिया है मन में;
इस नश्वर शरीर को फिर क्यों रखना कष्ट उठाकर,
अब वसन्त का आना क्या सम्भव है इस जीवन में?

क्रोध रहित क्षत्रिय हो, ऐसा कभी नहीं है सम्भव,
पीड़ित हो न समय पर क्रोधित, है यह कथ्य असम्भव;
क्षत्रियत्व-विपरीत, आपका क्रोध रहित है होना,
भाग्यवान क्षत्रिय भी, इससे पाता विषय पराभव।

जहाँ क्रोध का अवसर, वहाँ क्रोध को लाना होगा,
जहाँ क्षमा की बात, वहाँ से क्रोध हटाना होगा;
क्षमा-क्रोध के अवसर से नर अगर कहीं चूकेगा,
जन-गन-मन के तिरस्कार को गले लगाना होगा।

धर्मराज ने कहा-प्रिये! अब और न हो उद्वेलित,
हीन वृत्तियों से जो कोई होता है संचालित:—
श्लाघ्य नहीं माना जाता, उसकी निन्दा सब करते,
पग पग पर इस जग में होता, वह नर क्षीण-अनादृत।

क्रोध, वृत्ति है हीन, मनुष्यों को यह मारा करता,
पशुता और पराभव को, यह सदा दुलारा करता;
उन्नति-अवनति, दोनों का ही मूल क्रोध होता है,
क्रोध, वेग से निर्बलता को सदा उभारा करता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



एकमात्र क्रोध ही कहा जाता है लोक-विनाशक,
निर्बल लोगों पर होता इसका प्रभाव है व्यापक;
वेद-शास्त्र, ऋषि-मुनि-ज्ञानी सबका यह मत है ज्ञानिनि !
सुख-समृद्धि, बल, वीर्य शान्ति का क्रोध सतत उच्छेदक।

क्रोधी कायर होता है, भयभीत सभी से रहता,
कायर तो अबध्य की भी भय से है हत्या करता;
इतना ही क्या, स्वयं आत्म हत्या भी कर लेता है,
सभी हीन कर्मों को करने में, वह नहीं सिहरता।

पथ में ठोकर लगने पर कंकड़-पत्थर से लड़ता,
माता, पिता, गुरु जनों से, वे मतलव कभी झगड़ता;
इतना बुद्धि-हीन हो जाता बात बात में क्रोधी—
अपने घर में आग लगाता, ऐसी होती जड़ता।

इसीलिये सत्पुरुषों ने है सदा क्रोध को जीता,
क्रोध भयानक विष, इसको तो शंकर ही है पीता;
क्रोधी कैसे शत्रु-जयी हो सकता, निरा असम्भव;
क्रोध स्यार है, भ्रमवश लोग समझते इसको चीता।

एक तेज-बल पर रिपुका है शीश झुकाया जाता,
क्रोध हीन होने पर, मानव तेज-शक्ति है पाता;
शौर्य, शील, दक्षता, क्षिप्रता तेज शक्ति-उन्नायक,
क्रोध तेज की क्षमता को क्रोधी से दूर हटाता।

क्षमा, तेज को तीव्र बनाती, मानवता विकसाती,
क्षमा, शान्ति की धात्री बन जगको है सुखी बनाती;
जिसके पास क्षमा, वह सबसे ऊँचा माना जाता,
बलवानों की एक मात्र है क्षमा सँजोयी थाती।

क्षमा वेद है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा धर्म-आत्मा है,
क्षमा शौच, तप, सत्य, दान है, व्यापक ब्रह्म क्षमा है;
पल की क्षमा युगों के सत्कर्मों से ऊँची होती,
मानव का यह धन है, इसकी बहुत बड़ी महिमा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



प्रिये ! क्रोध आतप है, इसमें सभी झुलस जाते हैं,
क्षमा घनी छाया है, जिसमें तापित सुख पाते हैं;
झंझावात भयानक है, यह क्रोध जिधर से जाता
सबको पीड़ित करता है, सब इससे घबराते हैं।

गर्मी की यह दोपहरी, पशु-पक्षी, प्राणी सारे,
क्षमा नीर के प्राप्ति हेतु फिरते हैं मारे मारे;
यह इतना प्रचण्ड, बेसुध सा सबको है कर देता,
निवल-सबल, धनपति-निर्धन सब बने हुए बेचारे।

यह समुद्र का ज्वार, बहा ले जाता जिसको पाता,
है उन्मत्त, विज्ञ कहते हैं–यह विध्वंस-विधाता;
यह तूफान, प्रशान्त सिन्धु को कर देता उद्वेलित,
बड़े बड़े जलयानों को यह है झकझोर डुबाता।

यह उफनाती नदी तोड़कर बाँध बहा करती है,
आस पास के घर-झोपड़ियों को यह ले मरती है;
कितनों को उत्पीड़ित करती, बेघर-बार बनाती,
क्षमा पीड़ितों के घावों को, मरहम बन भरती है।

क्रोध घोर सूखा, चर जाता खेतों की हरियाली,
बड़े बड़े वृक्षों की भी, नंगी कर देता डाली;
क्षमा-वारिधर, कृपा बारि जब बरसाने लगता है–
धीरे धीरे वृक्षों में आने लगती है लाली।

क्रोध विनाशक, क्षमा पालिका, है सिद्धान्त पुराना,
सद्गुण क्षमा, क्रोध से केवल मल-विकार है पाना;
हम-तुम, सारे जग के हित में, क्षमा ग्राह्य-श्रेयस्कर,
इससे सब कुछ मिलता, पड़ता कुछ भी नहीं गँवाना।

ईश्वर का वरदान क्षमा है, क्रोध शाप ईश्वर का,
औषधि क्षमा, क्रोध होता है राजरोग हर नर का;
क्षमा रक्षिका बन करके घर घर की रक्षा करती,
क्रोध लुटेरा, लूटा करता सुख वैभव घर-घर का।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



महाराज ! माना मैंने है क्षमा बड़ी उपकारिणि,
महाराज ! माना मैंने, है क्षमा विश्व उद्धारिणि;
महाराज ! मैं क्षमा-दयाकी निन्दा कभी न करती,
हो सकती है क्षमा, युद्ध, संघर्ष, विभेद निवारिणि ।

क्षमा-दया से किसने खोयी सत्ता वापिस पायी ?
क्षमा-दयाने किस किसको घर बैठे विजय दिलायी ?
दैव और स्त्रष्टा को मेरा शत-शत बार नमन है,
जिससे प्रेरित महाराज की बुद्धि गयी भरमायी ।

सदाधर्म-हित रहा आपका राज, न इसमें शंका ।
सदा धर्म-हित किये आपने काज, न इसमें शंका;
इसी धर्म के पालन में हम भटक रहे कानन में,
इसी धर्म के पालन में बेताज, न इसमें शंका ।

सुना; धर्म ने पालक को संकट से सदा निकाला,
सुना, धर्म ने पालक को गिरने से सदा सम्भाला;
सुना, धर्म रक्षक बन पालक के सँग-सँग रहता है,
महाराज की शुद्ध बुद्धि में क्यों उसने भ्रम डाला ?

कैसी बुद्धि ! आपको जिसने जूए पर बैठाया,
कैसा धर्म ! खेलने को जूआ जिसने बहकाया;
कैसा धर्म ! नहीं जो हित-अनहित था समझा पाया,
कैसा धर्म ! बन्धुओं के सँग मुझको दाँव चढ़ाया ।

घर पर भी तो सदा शान्ति की वात किया करते थे,
'शान्ति-शान्ति' का घर भर को उपदेश दिया करते थे:
पूजा-पाठ, योग-जप सारे, सदा शान्ति के हित में,
इसी शान्ति के हित में व्रत-संकल्प लिया करते थे ?

जहाँ चोर, तस्कर, अपराधी शरण खोजने आते,
जहाँ राज्य-आरक्षी भी आने में हैं भय खाते;
जिसमें हत्या के अपराधी होते हैं निर्वासित—
उस कानन में महा-शान्ति से हैं हम समय विताते ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


पल भर को भी, यहाँ धर्म का पल्ला कभी न छोड़ा,
पल-भर को भी, वहाँ धर्म से नाता कभी न तोड़ा;
यहाँ-वहाँ, सब जगह धर्म के रहे आप अनुयायी,
किन्तु आपके लिये धर्म ने क्या सम्पति-सुख जोड़ा ?

यह सब देख, यही लगता है, भावी परम प्रबल है,
कठपुतली नाचती, सूत ही मात्र नृत्य-सम्बल है;
सभी दैव आधीन, नहीं स्वाधीन एक भी प्राणी,
कहना व्यर्थ-क्षमा, शम, दम का भी होता कुछ बल है।

ईश्वर अपनी इच्छा से करता सबका संचालन,
करता है संहार किसी का और किसी का पालन;
नहीं धर्म या पाप-पुण्य के पचड़े में वह पड़ता,
इच्छा जिसको राज दे दिया, इच्छा जिसको कानन।

माता-पिता नहीं वह, रक्खे ध्यान बराबर सबका,
न्यायी होता अगर, हमारा हाल देखता अबका—
महाराज ! साम्राज्य भोगते आप बन्धुओं के सँग,
निर्वासित कर दिया गया होता दुर्योधन कबका।

सच तो यह विश्वास डिग रहा अब मेरा ईश्वर में,
कानन में हों आप, और दुर्योधन रहे नगर में !
धर्म-कर्म की बात सोच कर मानव मन बहलाता,
धर्म सान्त्वना रूप, रहा करता निर्बल के स्वर में।

क्रोध-क्षमा का महाराज ने किया थकाऊ वर्णन,
हुआ न मेरा समाधान, यद्यपि उत्तमतम प्रवचन;
दया-धर्म का अब तक उल्टा ही प्रभाव लक्षित है,
सत्य कहूँ तो हुआ और मेरा पीड़ित मन उन्मन।

सच है जिस पराक्रमी की बाहों में अतुलित बल है,
क्षमा-दया के चक्कर में, जो हुआ नहीं पागल है;
शत्रु-शीश पर जो अपना ध्वज कर सकता आरोपित,
ऋद्धि-सिद्धि चेरी हैं उसकी, लक्ष्मी अगल बगल है।


RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



शौर्य दैव है, और पराक्रम ही जिसका ईश्वर है,
दैव और ईश्वर को मुट्ठी में करता, वह नर है;
शौर्य-पराक्रम में बाधक जो धर्म, धर्म वह क्यों कर!
क्षत्रिय-धर्म शौर्य, बल-विक्रम पर रहता निर्भर है।

चारों बन्धु पराक्रम, बल विक्रम में हैं लासानी,
शत्रु-शक्ति को बात-बात में कर देंगे बेपानी;
दें आशीष, शत्रु के सिर पर झपट-झपट चढ़ जायें,
देने में आदेश और हो अधिक न आना-कानी।

भले आपका नहीं, हमारा क्रोध पूर्ण जाग्रत है,
पाँचों में प्रतिशोध-बोध से कोई नहीं विरत है;
रण-चण्डी को शत्रु-शीश मैं भी अर्पित कर सकती,
किन्तु आपकी सहमति इसमें वांछित शत प्रतिशत है।

जो कुछ तुमने कहा प्रिये! सब आकर्षक, मनहर है,
उसे ध्यान से सुनना ही है, ऐसा ही अवसर है;
दुख में मानव, ऊँच-नीच प्रायः बे अवसर कहता,
किन्तु भावना समझी जाती बहुत न श्रेयस्कर है।

आस्थावादी भी डिगने लगते हैं बड़ी विपति में,
वह चट्टान कहा जाता, जो अचल रहे आपति में;
नास्तिकता को प्रायः आपति आमंत्रित करती है,
नहीं ज्ञान रहता विभेद का, सत में और असतमें,

ईश्वर की सत्ता नकारना मानिनि? बहुत सरल है,
कुछ शब्दों का त्याग-पकड़ ही तो इसमें केवल है;
ईश्वर के प्रति दुख में प्रायः खीझ हुआ करती है,
ईश्वर में विश्वास कभी दुखियों का बनता बल है।

रही धर्म की बात, लाभ के लिये न धारण करता,
जन्मजात है संस्कार, बस इसके कारण करता;
धर्म-लाभ में नहीं किन्हीं सम्बन्धों का अनुबन्धन,
इसके द्वारा मन की चिन्ता किया निवारण करता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कर्मों के फल की इच्छा से दूर-दूर ही रहता,
यों स्वभावतः फल मिलते हैं, विज्ञ यही है कहता;
करना ही कर्तव्य, मानकर कर्म किया करता हूँ,
नहीं भावनाओं की कोरी लहरों पर मैं बहता।

कानन में आना भी अपने कर्मों का ही फल है,
कैसे मानें प्रिये; दैव ही होता बड़ा प्रबल है;
बीती बातों को लेकर है लीक न पीटी जाती,
कर्तव्यों का निर्धारण-धारण मानव का बल है।

धर्म नहीं ऐसा, नोया-दूहा, जब जी में आया,
धर्म नहीं ऐसा, जिसके बल पर कुछ लाभ उठाया;
धर्म नाम पर स्वार्थ-सिद्धि, करता मानव को लांछित,
ऐसा जो सोचता, धर्म का तत्व न उसने पाया।

प्रबल भावनावेश, उसी में कितने ही हैं वहते,
कितने हैं, हैं आजीवन शंकालु बने ही रहते;
ईश्वर और धर्म के प्रति यदि है मन में अस्थिरता,
यही देखना होता है, हैं महापुरुष क्या कहते।

अपनी वुद्धि प्रमाण मानना नहीं कभी श्रेयस्कर,
देहजनित सुख की चिन्ता करती मानव को लघुतर;
सुख-दुख, मानव के मानस-विकार हैं माने जाते,
दृश्य जगत की सत्ता का व्यामोह, विषय ज्ञानेतर।

धर्म अगर निष्फल होता, जग अन्धकार में होता,
धर्म अगर निष्फल होता, सब कुछ विकार में होता;
किंकर्तव्य विमूढ़ जगत यह, लुंज पुंज हो जाता,
चर्चा का यह विषय भी न प्रेयसी ! विचार में होता।

है यह तथ्य, धर्म निश्चय ही श्रेय और फल दाता,
और अधर्मी भी अपने कुकृत्य का है फल पाता;
हो सकता विलम्ब फल में, इसमें न व्यग्रता वांछित,
मौन प्रतीक्षा और कर्मरत, ज्ञानी बतलाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ईश्वर न्यायी है, कर्मों का फल भी है मिलता ही,
कर्मों से उत्थान-पतन, खुसहाली और तबाही;
प्रिये ! धर्म-ईश्वर से होना विमुख, नहीं श्रेयस्कर,
एक मात्र विश्वास-योग्य है ईश्वर की सत्ता ही।

मानव के मन की स्थिति में भी परिवर्तन होता है,
व्याधा भी औरों की पीड़ा में उन्मन होता है;
कभी क्रूरता कभी दया मानव-मन की परिभाषा,
राक्षस और देवता, दोनों ही यह मन होता है।

थोड़ी अवधि और बाकी है, शायद इसके बीते—
दुर्योधन की हीन वृत्तियों को सात्विकता जीते;
बिना किये संघर्ष, हमारा राज्य हमें यदि वापिस,
क्यों आमंत्रित किये जायँ विग्रह, संघर्ष, फजीते।

सम्भव है वापिस करने में उसकी आनाकानी,
समझी जायेगी इसमें यद्यपि उसकी नादानी;
अवसर के अनुरूप क्रिया का होता है सम्पादन,
तब तो प्रिये ! चढ़ाना ही होगा लोहे पर पानी।

धैर्य-धर्म दोनों की आपत्ति-काल परीक्षा होती,
बना नहीं भोजन, तब तक है मौन प्रतीक्षा होती;
अवसर अभी नहीं आया है, ऐसा दृढ़ मत मेरा,
देख लब्धता सामग्री की कामिनि ! इच्छा होती।

महाराज ने मेरे मन में किया धर्म का स्थापन,
ईश्वर के प्रति नहीं रहूँगी कभी जन्मभर उन्मन;
शिरोधार्य दोनों की सत्ता, किन्तु हमारी सत्ता—
प्राप्त नहीं होने की है, बस इसीलिये उद्वेलन।

निश्चय ही मानव के मन में होता है परिवर्तन,
व्याधा के बच्चे पर आती आपत्ति, होता उन्मन;
औरों के बच्चों का है वह गला काटता रहता,
अपने हित देवता, और के हित राक्षस उसका मन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


मेरा मन दुश्चिन्ताओं का भूले दास न होता,
मानस में अशान्ति का क्षणभर को भी वास न होता;
भावी के प्रति थोड़ा भी आश्वस्त अगर हो पाती—
वर्तमान का जीवन इतना कभी निराश न होता।

कभी हृदय परिवर्तन होगा, मन का कोरा भ्रम है,
राज्य मिलेगा वापिस, इस विचार में कितना दम है;
दुर्योधन की हीन मनोवृति ऊँची हो जाएगी,
ऊँची है कल्पना, असलियत तो बिल्कुल ही कम है।

किसने सत्ता पाकर अपने मन से सत्ता छोड़ी ?
कितनों ने अपने मन से सत्ता की ममता तोड़ी ?
सत्ता कभी लोकमत की परवाह नहीं करती है,
नहीं लोकमत की मर्यादा राज-पुरुष ने जोड़ी।

ओछे जन उन्मत्त हुआ करते सत्ता के पाये,
बातों से, आसन से वे जा सकते नहीं डिगाये;
सत्ता में लिपटे रहते हैं, सत्ता को लिपटाते,
सत्ता तभी छोड़ते हैं, जब जाते हैं धकियाये।

सत्ता से जो च्युत होता है, शेष अगर है जीवन,
सत्ता के हित बना रहेगा पागल, उन्मन-उन्मन;
नहीं पुनः जब तक सत्ता है प्राप्त उसे हो जाती—
नहीं चैन से वह बैठेगा, नगर रहे या कानन।

जब तक खे सकता है, अपनी नैय्या को खेवेगा,
कहाँ राज्य की बात, एक पग भूमि नहीं वह देगा;
नहीं आज, तो कल, परसों या शेष अवधि के बीते—
मेरा दृढ़ विश्वास, कभी लोहा लेना ही होगा।

जितना ही विलम्ब, उतना ही उसके लिये सुअवसर,
अपनी पकड़ राज्य पर करता जायेगा वह दृढ़तर;
सैन्य-शक्ति के साथ, उत्तरोत्तर बल-वृद्धि करेगा,
उसे जीतना दिन प्रतिदिन होता जायेगा दुस्तर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



इसीलिये मेरा विचार है, अब न देर का कारण,
चीरा देना ही आवश्यक, फैल रहा विष का व्रण;
महाराज दें ध्यान, हमारा है यह नम्र निवेदन—
भाग रहा है समय, काम में ले लेना है क्षण-क्षण।

बाँध धैर्य का टूट रहा, कितनी अब और प्रतीक्षा ?
कैसे जियें घिनौना जीवन, कबतक माँगें भिक्षा ?
विषधर की फुत्कार सुनी, निकली न अभी कानों से,
महाराज ! अब अवधि बिताने की न दीजिये दीक्षा।

जबतक शत्रु-शीश धड़ पर है, मुझको चैन नहीं है,
अन्यायी जबतक श्रीधर है, मुझको चैन नहीं है;
मेरा जबतक मुझे न मिलता, कहाँ शान्ति जीवन में,
जबतक कानन बीच मान्यवर, मुझको चैन नहीं है।

धर्मराज फिर चाह रहे थे उत्तर में कुछ कहना,
कृष्णा के आक्षेपों में आवेष्टित, मूक उलहना;
किन्तु बीच में क्षुब्ध भीम का था प्रारम्भ निवेदन,
सुनना था कर्तव्य, हुआ अभीष्ट केवल चुप रहना।

उचित और धर्मानुकूल पथ का ले सुदृढ़ सहारा—
राज्य-प्राप्ति-हित महाराज ! अब तो अभियान हमारा—
होना है प्रारम्भ, अन्यथा धर्म-अर्थ से वंचित,
कबतक फिरा करेंगे जंगल-जंगल मारा-मारा।

राज्य हमारा नहीं धर्म या वल से उसने पाया,
जूए से-छल से दुर्योधन ने इसको अपनाया;
जैसे स्यार सिंह का भोजन चुरा लिया करता है,
वैसे ही उस कुटिल-कुकर्मी ने धन-राज्य चुराया।

धन ही होता धर्म, आज हम उससे खाली खाली,
जाना नहीं गयी कब, कब आयी होली-दीवाली;
जिसे इन्द्र भी लड़कर हमसे प्राप्त न कर सकता था—
वही राजलक्ष्मी छलियों ने पासे पर अपना ली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राज्य हमारा रहा किसी लूले लँगड़े की थाती,
नहीं एक जिह्वा विरोध में हिली शत्रु-संघाती !
कहें कहाँ तक, अग्नि-सुता अपमानित की जाती थी—
टुकुर टुकुर ताकते रहे हम, लिये वज्र की छाती।

बहुत बड़े धर्मज्ञ आप हैं, विश्वविदित यह कथनी,
आँच न आये मर्यादा पर, निन्द्य न कर दें करनी—
इसीलिये तो बकरी बन बैठे हम चारों भाई,
कैसे करें आज हम बीती बातों की उद्धरनी।

अस्वीकारा कभी न हमने, माना सदा नियंत्रण,
भंग किया हमने न एक क्षण को श्रीमन् ! अनुशासन;
यदि कुछ ऐसा कभी किया होता अवसर बे अवसर—
मृग बनकर हम नहीं बिचरते आते कानन-कानन।

कहाँ गया पुरुषार्थ हमारा, कहाँ बाहु में बल है,
काट रहे ज्यों त्यों दिन, हमसे बढ़कर कौन निबल है;
कौन करेगा ऐसे धिक् जीवन का श्रीमन् स्वागत,
कृष्णा ने ठीक ही कहा है, भावी परम प्रबल है।

अपनी लक्ष्मी का, जिससे उद्धार नहीं हो पाता,
वही शत्रुओं द्वारा निर्बल–कायर समझा जाता;
लक्ष्मी जाये–रहे, तनिक इसकी न हमें चिन्ता है,
चिन्ता, शत्रु हमारे बल–विक्रम की हँसी उड़ाता।

श्रीमन् ! अपने बल-विक्रम का हमें भरोसा भारी,
हमें नहीं करनी है, रण में नयी नयी तैय्यारी;
झपट-झपट कर ले लेंगे हम अपना खोया वैभव,
कैसे मिले आपकी स्वीकृति, इतनी ही लाचारी।

क्षमा-दया की सीख सुहाती नहीं, अधिक दुखदायी,
शेष अवधि कानन में जायेगी अब नहीं बितायी;
सह सकते समाप्त हो जाना लड़कर रण में, लेकिन—
सह्य नहीं है, शत्रु हमारे बल की करे हँसाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हो सकता है नहीं, करें हम घर घर भीख मँगाई,
हो सकता है नहीं, करें वनियापन, खेत जुताई;
तीर, गदा, तलवार चलाना, बचपन से ही सीखा,
शौर्य, पराक्रम, बल ही तो क्षत्रिय की मूल कमाई।

यहाँ बैठकर क्या करते हैं, कोरा समय बिताते,
काट रहे अपना अलभ्य यह जीवन सोते-खाते;
सर्वमान्य श्रीमान्! बतायें, यह भी कोई यौवन!
नित्य इसे खोते ही जाते, कौन प्रेरणा पाते?

सत्यव्रती के अनुज, कभी बकवास नहीं करते हैं,
हम करतब करने वाले हैं, घास नहीं करते हैं;
एक एक हम हैं समर्थ रिपु से बदला लेने में,
आप हमारे बल का कुछ विश्वास नहीं करते हैं।

युग बीते, विप्रों को हम सन्तुष्ट नहीं कर पाये,
एक जून भी भिखमंगों को हमने नहीं जिमाये;
हैं ठण्डे हो गए यज्ञ के कुण्ड, अभी हम जीवित.
महाराज! है नम्र निवेदन, अब न विलंब लगायें।

उठिये, रथ में बैठ करें प्रस्थान हस्तिनापुर को,
भय की बात नहीं श्रीमन्! दृढ़ करिये अपने उर को;
धृष्टद्युम्न, अर्जुन, केशव हैं जहाँ विजय निश्चित है,
कानन में अब नहीं खोजना दो मुट्ठी चाउर को।

धर्मराज की लम्बी साँसें और अधिक गहराईं,
सारी स्मृति अतीत की उनके मानस-पट पर छाईं;
मेरे ही कारण पत्नी-भाई दुख झेल रहे हैं,
स्वाभाविक है, क्षुब्ध अगर होते हैं छोटे भाई।

कृष्णा की, व्यग्रता भीम की, मुझसे मूल्यांकित है,
और रोष भी नहीं कहा जा सकता है, अनुचित है;
वर्तमान का एकमात्र मैं ही उत्तरदायी हूँ,
अन्य किसी का नहीं योग, दायित्व कहीं किञ्चित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



लेंगे राज्य जीत दुर्योधन का, जूआ स्वीकारा,
कभी हार भी हो सकती है, इसको नहीं विचारा;
भाग्य-योगिनी दोनों दायें, बना भाग्यशाली था,
कभी नहीं सोचा था, डूबेगा भी भाग्य-सितारा।

मेरी भी नीयत खराब थी, उनकी मुझसे बढ़कर,
दुर्योधन था दाँव लगाता, शकुनी था पासे पर;
था मायावी, धूर्त पहाड़ी जादू-टोना सीखे,
नहीं बुद्धि-प्रतिभा मेरी चल पायी उसके ऊपर।

जब जब फेंका पासा, उसका दाँव बराबर आया,
अन-धन, राज-कोश, बारी बारी से सभी गँवाया;
जैसे जैसे हार, बढ़ा आक्रोश उसी सीमा तक,
भूला ज्ञान, अन्त में मैंने सबको दाँव चढ़ाया।

अन्तिम छल, कानन की दुर्योधन ने बात चलायी,
संज्ञा-शून्य हो चला था, ऐसी जड़ता थी छायी;
सभा-मध्य, सबके सम्मुख, उसकी भी भरी हुँकारी,
और उसी के कारण तो भारी विपत्ति यह आयी।

मैं तो मूढ़ बना ही था, तुमने भी तनिक न टोका,
मेरे बन्धु! हाथ को मेरे पकड़ क्यों नहीं रोका?
वहाँ अगर दिखलायी होती अब जैसी मुस्तैदी,
बात बिगड़ती नहीं, नहीं मैं खाये होता धोका।

बात हारकर बात बदलना, सोचो, कहाँ उचित है,
छोटे-बड़े सभी में, यह समझा जाता अनुचित है;
अवधि बीतने पर ही सब कुछ सम्भव हो सकता है,
इने गिने दिन शेष, कौन ब्रह्मा का दिन अंकित है।

रही युद्ध की बात, नहीं उसकी भी चिन्ता कम है,
कैसे, क्या होगा, भविष्य का चिन्तन भी न सुगम है;
बात पराक्रम की करने से युद्ध न जीते जाते,
उन्हें पराजित करें, नहीं इसमें भी हम सक्षम हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



भीष्म, द्रोण, आचार्य कृपा से हम सबका नाता है,
किन्तु उसी का गाता है, मानव जिसका खाता है;
हुआ युद्ध अनिवार्य, साथ वे दुर्योधन का देंगे,
कैसे विजय हमारी होगी, समझ नहीं आता है।

है दुर्जेय कर्ण, उसको कैसे जीता जायेगा,
कौन वीर उसके बाणों के सम्मुख टिक पायेगा;
उसके पास अभेद्य कवच है, अक्षय उसका तरकस,
स्वयं इन्द्र भी अगर भिड़े, अपने मुहँ की खायेगा।

राजसूय के अवसर पर अगणित नरेश सम्मानी,
हुए हमारी सेना के सम्मुख थे पानी-पानी;
उन्हें प्राप्त होगा बदला लेने का स्वर्ण-सुअवसर,
कर देंगे, अब वे सब मिलकर, हम सबको वेपानी।

दुर्योधन के पास राज्य है, अक्षय कोश हमारा,
सेना को सम्हालने का है उसके पास सहारा;
बड़े बड़े सेनापतियों को कर सकता सम्मानित,
इस कानन में हम लोगों के पास, कौन सा चारा।

चर्चा अभी अधूरी ही थी, ऋषिवर व्यास पधारे,
सब प्रसन्न हो उठे देख यह, आये पूज्य हमारे;
खोयी सम्पति प्राप्त हो गयी, ऐसा सबने माना,
सुधि भूली चालू चर्चा की, कष्ट मिट गये सारे।

कानन के सुख-दुख की, चर्चा दुर्योधन की आयी,
भूतकाल की कुछ भूलें भी इंगित गयीं करायी;
भावी में क्या क्या करना है, इस पर भी थीं बातें,
कैसे, क्या सम्भव होगा, यदि करनी पड़े लड़ाई।

अन्तिम कथन-युधिष्ठिर प्रियवर ! मत चिन्ता अपनाना,
शान्त द्रौपदी-भीम ! स्वस्थ तुम भी राजन ! हो जाना;
एक साथ रहने पर तर्क-वितर्क चला करते हैं,
रीझ-खीझ-मनुहार प्रेम-पोषक हैं, मत घबराना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कितने दिन रह गए अवधि के, इने गिने, सीमित हैं,
अब्र विवाद का समय कहाँ, अब तैयारी वांछित है;
समय पारखी कृष्ण, चाहिए उनको भी अब आना,
ज्ञात हुआ है, अब दुर्योधन भी रहता चिन्तित है।

बेटी कृष्णा ! आँसू धन है, व्यर्थ न इसे बहाना,
भैय्या भीम ! बड़े भैय्या को, मत कटु वचन सुनाना;
धनु-विद्या का और अधिक अभ्यास अपेक्षित अर्जुन !
सदुपदेश देकर राजन ! सबका उत्साह बढ़ाना।

तुम धर्मज्ञ, धर्म का तुमने है सम्मान बढ़ाया,
बली भीम ! तुमने पर्वत उखाड़ने का बल पाया;
नहीं बचेगा, अर्जुन ! तेरे बाण सूँघ दें जिसको,
अरि दल का सहदेव-नकुल कर देंगे शीघ्र सफाया।

तुम निश्चिन्त रहो, चिन्ता है दुर्योधन को करनी,
राम नाम जप करो, हाथ में लेकर सभी सुमरिनी;
तुम्हें विजय, उसको अपने कर्मों का कटु फल पाना,
दुख है, पार न कर पायेगा, मूढ़ समर-बैतरनी।

दे आशीष गए ऋषिवर, सबका प्रसन्न था आनन,
मन की हरियाली के सँग, हरियाया फिर से कानन;
भावी की कल्पना, स्फूर्ति सबके रग रग में दौड़ी,
सदुपदेश ऋषि सूर्य, कमल सा खिला पाण्डवों का मन।

■

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अष्टम सर्ग

■

# संघर्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसा कुछ हम देख रहे, यदि वैसा ही रह जाता,
परिवर्तन-प्रयास की चर्चा तो फिर कौन चलाता;
उस अदृश्य की सत्ता की बातें फिर क्यों कर होतीं,
विधि-विधान, यदि कोई है, तो वह कैसे चल पाता।

कठपुतली एक ही नाच, यदि प्रतिदिन नाचा करती,
निश्चय ही दर्शक की आँखें, थकतीं और सिहरतीं;
और नचाने वाले का भी जी उगताने लगता,
रुचि, वैचित्र्य और परिवर्तन पर ही आश्रित रहतीं।

नहीं सदा कोई सम्पति में, विपति न होती स्थायी,
सम्पति प्राप्ति, विपति छुटकारा की है हाथा-पायीं;
सारी सृष्टि इसी पर कर्मठता लेकर है चलती,
इसके लिये गले मिलते हैं, लड़ते भाई भाई।

जिसने यह प्रक्रिया बनायी, उसको शत शत वन्दन,
नहीं विश्व-गति रुकने देता, है उसका अभिनन्दन;
अखिल सृष्टि के उस स्रष्टा ने सौम्य सर्जना क्रम में,
कवि का कोमल हृदय बनाया और भरा था स्पन्दन।

कितनों की दुर्दशा रोज ही, कितनों का दृढ़ बन्धन,
इने गिने ही भाग्यवान, जिनके हित चोवा-चन्दन;
कितने नर, पशु, पंछी रहते हैं रोते-चिल्लाते,
किसने सुना विजन कानन में करुण क्रौंच का क्रन्दन ?

उस महान सत्ता को मेरा बारम्बार नमन है,
उस महान कवि को भी, जिससे कविता का जीवन है;
एक न होता, नहीं विश्व की झाँकी देखी जाती,
और दूसरे से लक्षित नैनों का गीलापन है।

यह क्या ? चेहरा उतरा उतरा, आँखें भी भर आयीं,
कहा कृष्ण ने—बहिन सुभद्रे ! यह कैसी कदराई;
जिसका पति अर्जुन हो, जिसका लोहा जग ने माना—
वीर-प्रसूते ! उसके मानस पर क्यों चिन्ता छायी ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अब कितने दिन रहे अवधि के, अब तो स्वर्ण-सवेरा,
होने ही वाला है, हटता जाता रैन-अँधेरा;
तू सौभाग्य शालिनी, कैसी पस्ती और उदासी !
कोई ऐसी बात नहीं, क्यों ऐसा आनन तेरा ?

अभिमन्यू ने तो कुछ उल्टी-सीधी नहीं सुनायी ?
हरदम छोपे छाये ही तुझको रहती है माई;
और कौन है घर में तुझसे बात लड़ाने वाला,
ऐसे तो हैं नहीं, कहें कुछ तुझसे बड़के भाई।

क्या कारण है ? बहिन ! अचानक हुयी अभी तुम उन्मन,
इन्द्रप्रस्थ से न्यूनाधिक उपलब्ध यहाँ भी साधन;
कोई ऐसी बात मुझे तो समझ नहीं आती है,
क्या अभाव मेरे घर में, जिससे तेरा चिन्तित मन ?

समझा, याद आ गयी तुझको बेटे की तरुणाई,
कई एक राजाओं की अब तक चिट्ठी है आयी;
अबकी बार पूछ लूँगा, अर्जुन की क्या इच्छा है,
निश्चय ही कर डालूँगा पक्की, इस बार सगाई।

भाई के घर से बढ़कर सुख-सुविधा सुलभ न भाई !
हाथों हाथ लिये रहती हैं, यहाँ सभी भौजाई;
माँ तो बेटों से बढ़कर बेटी को माना करती,
नहीं इस तरह की कोई भी चिन्ता मन में आयी।

बेटे के विवाह की चिन्ता होनी है स्वाभाविक,
बहू-प्राप्ति-हित मातायें चिन्तित रहतीं न्यूनाधिक;
किन्तु व्यवस्था तो पुरुषों को ही करनी होती है,
इसके लिये औरतों का करना अनुचित है झिकझिक।

भैय्या ! जैसा कहा आपने, अवधि पास है आयी,
यही सोच कर मेरी चिन्ता आज अधिक गहरायी;
दुर्योधन ने अगर राज्य को वापिस नहीं दिया, तो—
अन्धकार ही अन्धकार, सम्भव है नहीं लड़ाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बड़े जेठ हैं साधु, उन्हें जैसा घर वैसा कानन,
छोटे जेठ पराक्रम-बल में हैं यद्यपि पंचानन—
बड़े जेठ की इच्छा को रखते हैं सर आँखों पर;
लगता, जंगल में ही कटने वाला सारा जीवन।

उनकी नाव भँवर में, भैय्या! कोई नहीं खेवैया,
एक आप ही हो सकते हैं, उनके पार लगैया;
दुर्योधन है बड़ा भयानक विषधर, ऐसा लगता—
एक मात्र चरितार्थ आप से ही है नाग - नथैया।

भइया! जाकर उनकी उलझी गुत्थी को सुलझा दें,
मझधारे से लें उबार, अब उनको पार लगा दें;
बहुत बड़ी चिन्ता, रजनी का अन्त नहीं लगता है,
यही कामना, उनके जीवन में प्रकाश फिर ला दें।

इतना आग्रह! क्या कुछ उनके लिए उठा रक्खूँगा?
है कर्तव्य ज्ञान, उससे मैं कभी नहीं विचलूँगा;
तुझे न हो चिन्ता, जब तक जीवित यह तेरा भाई,
कैसे नहीं राज्य मिलता है, मैं इसको देखूँगा।

× × ×

गंगातट पर यह स्वर्गाश्रम, सिद्धों की तप शाला,
मनः शान्ति, सच्चिदानन्द का बोध कराने वाला;
पर्वतीय भूखण्ड सभी का मन आकर्षित करता,
यह आधार, यहीं से बनती जाती पर्वत-माला।

सँकरे में है मार्ग बनाती, भागी-दौड़ी आती,
हहर हहर हहरा कर, है अपना अस्तित्व जताती;
यहीं भगीरथ ने इसकी धारा नीचे को मोड़ी,
भागीरथी इसी कारण इस जगह पुकारी जाती।

इतना शीतल जल, छूते ही स्पन्दन है हो जाता,
इतना श्वेत, दुग्ध सागर के सार सदृश दिखलाता;
इतना स्वच्छ, पारदर्शी, पेटे में बैठा पत्थर—
दर्पण की निर्मलता में अपनी छाया झलकाता।

१४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तट पर पूँछ हिलाती मछली, छवि बिखराती रहती,
यहाँ साधु-सन्तों की बस्ती, यह बतलाती रहती;
ठेकेदार स्वास्थ-रक्षा के यहाँ न देखे जाते,
नगरों से टोलियाँ दृश्य-दर्शन को आती रहतीं।

इसे देवसरि-ब्रह्मद्रवी कहते हैं, इतना आदर,
नमन और वन्दन कर, करते जल-स्पर्श हैं सादर;
संस्कृति और सभ्यता के उद्भव की गाथा गाती,
है गति शील, धन्य हो जाते इसका आँचल पाकर।

अपने तो आयी ही, सँग में स्वर्ग उतारे आयी,
पहिले सगर सुतों की मिट्टी इसने पार लगायी;
फिर इसके ही द्वारा अनगिन भव पापों-तापों की—
सड़ी गली लाशें गंगा सागर में गयीं डुबाई।

जब तक इसका अमर गान है, अमर हमारी संस्कृति,
नहीं मान्यता हेतु हमें हैं अन्य प्रमाण अपेक्षित;
नास्तिक की भी इच्छा, इसमें अन्त समय मिल जायें,
इसके जल की प्राप्ति, हमारी मोक्ष-प्राप्ति की स्वीकृति।

आश्रम से ही बदरी धाम, पहाड़ी-पथ है जाता,
पर्वत की विशालता में व्यापक है सृष्टि—विधाता;
इसी मार्ग से एक शिखर पर पहुँच विजय-कामार्थी—
अर्जुन घोर तपस्या में, है अपना समय बिताता।

आश्रम के ही एक पार्श्व में पाण्डव-दल भी स्थित है,
सभी शान्त, तप के अभ्यासी, सब आनन्दित चित हैं;
अवधि पास है, कृष्ण आदि भी सब आते ही होंगे,
अर्जुन की वापसी हेतु भी सभी प्रतीक्षा-रत हैं।

धृष्टद्युम्न—आगमन हुआ सबको भारी सुखदायी,
पहिले से सूचना न कोई भैय्या ने भेजवायी;
तुमने तो आश्चर्य चकित हम सबको है कर डाला,
घण्टों भाई ने भगिनी को घर की बात बतायी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कुछ ही दिन की धृष्टद्युम्न की रही अभी पहुनाई,
हर्षोद्रेक समेट कृष्ण की सुखद सवारी आयी;
मुखरित हुआ शान्त आश्रम, उसका कण कण जाग्रत था,
एक मात्र अर्जुन की बाकी है रह गयी अवायी।

कहाँ ! किधर ! किस ओर ! चाहिये उनका पता लगाना,
ठीक ठीक मालूम नहीं कुछ उनका ठौर-ठिकाना;
चलो साथ में कोई, उनको ढूँढ़ निकाला जाये,
ऐसा कह कर कृष्ण हुए पर्वत की ओर रवाना।

कितनी है विशालता इसकी, सागर में लक्षित है,
कितनी है विशालता, मरु की छाती पर अंकित है;
प्रकृति नटी की विविध रूपता का अभाव दोनों में,
एक रूपता दोनों की विशालता में भासित है।

गौरव-गरिमा यदि विशालता की कुछ भी है होती,
जिसे देख प्रतिभा भी अपनी तीव्र तर्कना खोती;
हिमगिरि की विशालता में ही उसका प्रबल प्रदर्शन,
रवि-किरणें जिसके माथे पर स्वर्णिम मुकुट सँजोतीं।

श्वेत शिखर सन्ध्या के श्वेत घनों से सुन्दरतर हैं,
नील गगन का सारा भार सम्हाले अपने सर हैं;
नभ गंगा की एक लीक दोनों ध्रुव के छोरों को—
एक सूत्र में बाँध रही, बन्धन विशेष दृढ़तर है।

ऊँचे ऊँचे वृक्ष, झाड़ियाँ घनी, पुष्प के उपवन,
पशु, नर, पक्षी के समूह से भरे भरे से आँगन;
विविध रूपता कहाँ प्रकृति ने की अन्यत्र प्रदर्शित,
इसके पाँवों पर स्पन्दित है विविध रूप में जीवन।

साधु, सन्त, संन्यासी, ऋषि-मुनियों के पावन आश्रम,
पर्वतीय ये पुष्प, दे रहे नन्दन उपवन का भ्रम;
महादेव, धनपति कुबेर की पौराणिक गाथायें—
जगह जगह इसमें गुम्फित हैं, उनसे यह सर्वोत्तम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



लम्बें-चौड़े ताल विहंगों के आश्रय दाता हैं,
आकर यहीं चिपक जाता, जो नीचे से आता है;
यदि असंख्य आँखें होतीं तो हो सकता कुछ सम्भव,
सीमित से असीम छबि का मूल्यांकन हो पाता है ?

इसके अंचल में होता शुभ कर्मों का प्रतिपादन,
पुण्यात्मा इसके द्वारा करते हैं स्वर्गारोहण;
ऋषि-मुनि कहते–जिसे देवता बनने की अभिलाषा—
इसी हिमालय का वांछित है करना उसको सेवन।

सभी नाथ ही नाथ, सभी की महिमा बड़ी समुज्ज्वल,
अमर कहीं, केदार कहीं, बदरी विशाल का यह थल;
मान सरोवर इसमें ही, कैलाश अंग इसका ही,
तीर्थों और देवताओं से भरा पुरा है अञ्चल।

विविध अञ्चलों में इसके फैले हैं विस्तृत कानन,
कदली बन को कानन वासी कहते हैं कुञ्जरबन;
साल, चीड़ हैं देवदार के वृक्ष छरहरे–बाँके,
सुख पूर्वक इनमें विहार करते हैं मृग-पंचानन।

तरह तरह के फल, बोझिल हो झुकी झुकी यह डाली,
तरह तरह के विहँगों को आमंत्रित करने वाली;
कीर्तिमती है बनी, किसी दानी की कीर्ति समेटे,
बना प्रकृति का विकसित यौवन, इनसे शोभाशाली।

ये बर्फीली चट्टानें, इनमें भी स्पन्दित्त जीवन,
अद्रिराज का दर्शनीय है, इनमें शाश्वत यौवन;
हिम-मानव के साथ, यती की खोज अभी है जारी,
शिला-खण्ड पर जगह जगह रीछों के लिये सुखासन।

ऊँचे ऊँचे शिखर, पहुँचने को सब हैं ललचाते,
आत्माहुति देकर ही शायद वहाँ पहुँच हैं पाते;
दुनिया के वे सारे पर्वत, जिनकी कुछ गिनती है,
इसकी उन्नतता-विशालता के सम्मुख झुक जाते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



लगी शक्ति लक्ष्मण को, रामायण की एक कथा है,
कहा राम ने हनुमत से—लक्ष्मण की बड़ी व्यथा है;
धौला पर्वत पर जाकर संजीवन बूटी लाओ,
अब भी इस गाथा के गाने की उस ओर प्रथा है।

उसी ओर पर्वत उपत्यका में धनवन्तरि रहते,
वैद्यराज मुर्दों को जिन्दा करते थे, सब कहते;
इस पर्वत से ही उपलब्ध उन्हें सारी औषधियाँ,
जड़ी-बूटियों से स्पर्शित कितने सरिता-नद बहते।

इन सरिता-नद की भी अपनी अपनी अलग कहानी,
अमृत-तुल्य इनका जीवन, सामान्य न इनका पानी;
मैदानों में अन-धन के वितरण का यश इनको है,
नहीं किसी से कुछ लेते, ये हैं अहेतुकी दानी।

ऐसे निर्झर, विथकित हुयी न जिनकी कभी जवानी,
रजत कणों की उठीं फुहारें, उफना उफना पानी;
हहर हहर हुंकारें भरता, पता नहीं क्या कहता,
उबल रहा, ऐसा लगता, कुछ करने की है ठानी।

बड़ी ख्याति पर्वत-माला की, यह स्वदेश का प्रहरी,
प्रकृति जन्य दुर्जेय दुर्ग की ये प्राचीरें ठहरीं;
संस्कृति, अर्थ, समाज, राज की नीति, धर्म-पोषण में—
आदिकाल से अद्यावधि पर्वत रखता रुचि गहरी।

क्या होता भारत का, यदि नगराज नहीं यह होता,
सारा मानचित्र इसका, सागर में खाता गोता;
अथवा इसकी हरियाली टिड्डियाँ साफ कर जातीं,
मरुथल की विशालता में यह पाया जाता, सोता।

पर्वत की महिमा विचारते आगे बढ़ते जाते,
ऊबड़-खाबड़ को सुधार, नव पथ थे गढ़ते जाते;
पर्वत के रहने वालों को भी दुरूह जो पथ थे—
उन पर भी उत्साह-जन्य बल से थे चढ़ते जाते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



था श्रम साध्य, परन्तु कृष्ण से कुछ भी नहीं असम्भव,
विज्ञ बताते, कृष्ण सृष्टि के उद्भव और पराभव;
अर्जुन-कृष्ण मिलन था, जैसे जीव-ब्रह्म-सम्मेलन,
प्रमुदित, उत्फुल्लित, आह्लादित दोनों पी प्रेमासव।

× × ×

आश्रम में बैठी विचार-गोष्ठी, भावी का चिन्तन,
तर्क-वितर्क, विचारों का खण्डन-मण्डन-प्रतिपादन;
निश्चय हुआ, द्विसूत्री कार्य-क्रम अपनाया जाये,
रण की तैय्यारी के सँग सँग चालू सन्धि-निवेदन।

कृष्ण हस्तिनापुर को जायें, सबकी थाह लगायें,
जितने सम्बन्धित, उन सबसे यथा योग्य बतियाये;
राज्य अगर वापिस मिल जाता, स्वागतव्य ही होगा,
अगर-मगर पर, तैय्यारी कर, धावा बोला जाये।

धृष्टद्युम्न के साथ, सभी पाञ्चाल देश को जायें,
अभिमन्यू का सबसे पहिले शुभ विवाह रचवायें;
इसी बहाने, सभी हितैषी राजा हों आमंत्रित,
सबसे ले सहयोग-मंत्रणा दृढ़ रण-नीति बनायें।

पटाक्षेप, दूसरे अंक की थी समाप्ति कानन में,
बीती अवधि, हुए पाण्डव अवतरित नये जीवन में;
कृष्ण चले हस्तिनापुरी, पांचाल चला पूरा दल,
घटना-चक्र कालगति के सँग परिवर्तित छन छन में।

× × ×

बीती अवधि, पाण्डुनन्दन अब आते होंगे बन से,
उत्तर से संतुष्टि उन्हें, जो उद्वेलित जीवन से ?
अन्धकार से अन्धकार और भी घना होता है,
नहीं कालिमा जा सकती है, दुर्योधन के मन से।

राज्य नहीं वापिस करने का, फिर इसका अन्तिम फल ?
अस्त्रों-शस्त्रों के पलड़े तौलेंगे उभय बलाबल;
निश्चय ही संहार ! अन्त शान्तनु की सन्तानों का,
कहाँ चलेगा इसमें जूआ, पासा और कपट-छल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राजसूय का अन्त, द्यूत का प्रतिफल में अभियंत्रण,
आग्नेयी–अपमान, पाण्डवों का अमर्ष पूरित प्रण;
कानन की यंत्रणा, प्रबल प्रतिशोध-अग्नि को आहुति,
होता सम्भव नहीं, किये होता यदि तनिक नियंत्रण।

लक्ष्मी का इतना भारी उत्कर्ष, अहम् का त्राता,
और अहम् की तुष्टि-कामना, है विनाश की माता;
दोनों ही हैं असन्तुष्ट, रखने–लेने का अन्तर,
जागरूक कर्मों के फल, जागे दुर्दैव-विधाता।

बाह्य चक्षु से अन्धकार है, पर अन्तर्मन ज्योतित,
क्या भविष्य की देन, आज है राजा को परिलक्षित;
मन उन्मन हो उठा, हुयी सारे शरीर में सिहरन,
कहा—मंत्रिवर सञ्जय की है अभी उपस्थिति वांछित।

सञ्जय ! अन्तर्दृष्टि सुलभ, तुम हो पण्डित विज्ञानी,
तुमसे है भविष्य की भी गति-विधि न कभी अनजानी;
राज्य युधिष्ठिर को न करेगा वापिस, उसका दृढ़ मत,
घोर अहम् से उत्पीड़ित है दुर्योधन अभिमानी।

अब तक का इसका जीवन आमोद-भोग में बीता,
इतना अन धन-राज, किन्तु मानस है अब भी रीता;
कहाँ युधिष्ठिर सत-पथ-गामी, कहाँ असत का सेवी,
भैय्या ! कहो, सत्य क्या तम से है जा सकता जीता ?

कुछ दिन पूर्व हितैषी मेरे, पूज्य व्यास आये थे,
कानन से पाँचों का वे सन्देश मुझे लाये थे;
स्वाभाविक है, पाँचों हैं अत्यधिक खिन्न, उत्तेजित,
अलग अलग पाँचों की बातें मुझ तक पहुँचाये थे।

लगता है अनिवार्य युद्ध है, बेटा बड़ा प्रमादी,
कुछ सुनता ही नहीं किसी की, है उन्मत्त, विवादी;
क्या कुछ इसमें हो सकता है ? भैय्या ! तुम्हीं बताओ,
साफ दीखती है मुझको दोनों कुल की बर्बादी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अगर युद्ध हो, वह जीतेगा, कभी नहीं है सम्भव,
समर-भूमि में निश्चय ही पायेगा घोर पराभव;
उसके जैसे उसके भाई, साथी भी उन्मादी,
सबके सब चेतना शून्य हैं पीकर के भोगासव।

उधर युधिष्ठिर पहिले से ही रहा सत्य अन्वेषक,
प्रजा वर्ग अद्यावधि उसके सम्मुख है नत मस्तक;
सभी चाहते हैं उसके शासन में सुख से जीना,
पोषक रहा प्रजा का, जन जन उसका रहा प्रशंसक।

है न याद ! बन गमन समय, था भीम हो उठा पागल;
कहाँ चलेगा उसके सम्मुख दुर्योधन का छल-बल;
सुना बहुत कुछ है, अर्जुन की उपलब्धियाँ अनूठी,
शान्त महासागर में पैदा कर सकता है हलचल।

क्या यह सत्यानाशी युद्ध नहीं टाला जा सकता ?
कैसे मेरा बेटा समझेगा अपनी दुर्बलता ?
द्रुपद-सुता का पाण्डव क्या अपमान भूल सकते हैं ?
समझ रहे हो भैय्या ! मेरे मन की व्यथा-विकलता ?

हतभागी दुर्योधन, अन्धा हूँ, अन्धा है कहता,
अविवेकी कह कह कर मुझको सदा कोसता रहता;
अकर्मण्य हूँ, मेरे ही कारण अब है वह कर्मठ,
तरह तरह के व्यंग-बाण उसके मैं हरदम सहता।

सच है, मैं अन्धा हूँ, फिर भी देता मुझे दिखायी,
नेत्र युक्त वह है, समाप्त पर आँखों की बीनाई;
मँड़रा रहा काल उसके सिर, कैसे उसे बचाऊँ ?
पुत्र-प्रेम है प्रबल, इसी से चिन्तित मेरे भाई !

कर्ण बना है मंत्री, उसको उकसाता रहता है,
दुश्चक्रों की प्रबल प्रेरणा ही पाता रहता है;
मेरा साला शकुनि सदा विध्वंस सोचता रहता,
अग्नि कलह, विध्वंस, द्वेष की सुलगाता रहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



लम्बी साँस खींच राजा ने कहा—करो कुछ भाई !
करो असम्भव को सम्भव, तुममें विशेष चतुराई;
दुर्योधन की बुद्धि फेरने का उपाय कुछ सोचो,
सर्वनाश की, जैसे भी सम्भव हो, रुके लड़ाई।

सञ्जय कथन कि जब जब भी विनाश-बेला है आती,
बड़े ज्ञानियों की भी दृढ़, थिर, विमल बुद्धि चकराती;
दुर्योधन तो प्रकृति जन्य है मूढ़, नहीं है सम्भव,
रोगी को कड़वी औषधि है कभी भी नहीं भाती।

रही पाण्डवों की बातें, वे पीड़ित, अपमानित हैं,
कानन के विपत्तिमय जीवन से भी उद्वेलित हैं;
अगर राज्य भी उनको वापिस नहीं दिया जाता है,
उनके लिए युद्ध से निर्णय लेना स्वाभाविक है।

अगर युद्ध है, महाराज का बिल्कुल सत्य कथन है,
क्रूर काल के हाथों अपने पुत्रों का जीवन है;
भीष्म, कर्ण, गुरु द्रोण और भी बड़े बड़े वीरों का—
अर्जुन के बाणों से बचना सचमुच बड़ा कठिन है।

पाँचों के पाँचों अब विषधर, महा असम्भव बचना,
कौरव–कुल के भाग्य लिखा है रोना और विलखना;
महाराज ने ही तो था जूए पर उन्हें बुलाया,
क्या चिन्ता करने से होगा, है विचित्र विधि-रचना।

जूए ने सीमा से आगे बढ़कर आग लगायी,
उनकी पत्नी सभा–भवन में बरबस गयी बुलायी;
क्या उद्देश्य सिद्ध ? अबला पर व्यंग-बाण, बौछारें !
कौन लाभ था, उन पतितों ने खोटी-खरी सुनायी ?

बाण-विद्ध प्राणी, सम्भव है क्षमाभाव अपनायें,
अपकारी के दुष्कर्मों को सम्भव भले भुलायें;
वाक्-बाण से पीड़ित की केवल प्रतिशोध चिकित्सा,
व्यंग-बाण की टीस भूलती कभी नहीं भुलवाये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



महाराज ! अनिवार्य युद्ध है, इसे प्राप्त है आश्रय,
भय सामने खड़ी जब होती, मानव होता निर्भय;
अतः आप चिन्ता विमुक्त हो भावी लीला देखें,
असत अन्ततः हारेगा ही, निश्चय ही सत की जय।

× × ×

युद्ध-सन्धि ! दोनों में होगा कौन आज श्रेयस्कर ?
सुनने में तो सन्धि सभी को लगती बड़ी सुरुचिकर;
किससे सन्धि ? कभी सम्भव है तम-प्रकाश समझौता ?
सत से सन्धि असत की ? पायेगी समाज में आदर ?

युद्ध क्रूर-कर्कश, कहते हैं लोग इसे संहारक,
क्रूर और कर्कश क्या कहलायेगा शल्य-चिकित्सक ?
अन्तर भी पवित्र, बाहर भी स्वच्छ, श्लाघ्य है होता,
दुश्चारित्र्य, कुवृत्ति-नाश का भी क्या कोई निन्दक ?

युद्ध अगर समाज के हित में, स्वागतव्य जनजन से,
युद्ध अगर सन्मार्ग-प्रदर्शक, स्वागतव्य कण कण से;
करके तम का नाश, युद्ध यदि दिव्य-ज्योति दिखलाता,
लाता दैवी राज्य विश्व में, स्वागतव्य जीवन से।

नहीं युद्ध उद्देश्य—एक की जगह दूसरा लाना,
नहीं युद्ध उद्देश्य—शासकों की गोटी बैठाना;
वह क्या युद्ध, नहीं जिसमें समाज का हित सर्वोपरि,
शुद्ध युद्ध उद्देश्य—प्रजा का जीवन सुखी बनाना।

सन्धि कराती निहित हितों के बीच स्वार्थ-समझौता,
सन्धि लोक-हित-कर्तन को बन जाती तीक्ष्ण सरौता;
सन्धि सबल का निबलों के ऊपर वर्चस्व जताती,
सन्धि दिया करती जनता की विपत्तियों को न्यौता।

मेरा भी प्रस्ताव सन्धि का कुछ ऐसा ही लगता,
निहित स्वार्थ का अनल प्रकारान्तर में यहाँ सुलगता;
अबर जबर से करे निवेदन—भैय्या कुछ तो दे दो,
हीन वृत्ति, पर एक बहाना, रण के लिये सजगता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सन्धि कराने आया हूँ, तो चरचा करनी ही है,
किन्तु सन्धि में जनता का हित, बिल्कुल निहित नहीं है;
युद्ध आज अनिवार्य, सन्धि भूमिका मात्र है उसकी,
जो कुछ सोच रहा उसका ही कार्यान्वयन सही है।

कितना अनाचार है—पुत्र पिता को मूर्ख बनाये,
कितना अनाचार ! बेटा अपनी माँ को लतियाये;
कितना अनाचार ! पत्नी के सम्मुख वेश्या-पूजन,
कितना अनाचार ! घर घर में जूआ खेला जाये।

पनप रहे जर्जर समाज में लम्पट, चोर, जुआरी,
पूरा शासक वर्ग दिखायी देता भ्रष्टाचारी;
निर्धन की झोपड़ी सिसकती, चूल्हे नहीं सुलगते,
कोठी पर कोठी बनवाते जमाखोर व्यापारी।

गुरुकुल बन्द, पाठशाला में लगे हुए हैं ताले,
मरते हैं बेमौत लोग, हैं औषधियों के लाले;
कोई पथ है नहीं सुरक्षित, सब डाकू, बटमारे,
शिव के मन्दिर में चलते हैं अब आसव के प्याले।

पैसा हो तो न्याय खरीदो, बेच रहे न्यायालय,
पशु-बध की यदि इच्छा है, हैं खुले सभी देवालय;
धर्म नाम देकर, अधर्म की करते सभी कमाई,
राजा की कुमंत्रणाओं के लिये बने मंत्रालय।

ईश्वर का अब नाम आश्रमों में ही पाया जाता,
महिलाओं का मान रास्तों पर लुटवाया जाता;
कोई भी अब काम नहीं अपनी सीमा के भीतर,
अब चरित्र, है दुश्चरित्रता से बहकाया जाता।

किससे सन्धि और किसकी ? फिर वही पूर्व प्रश्नोत्तर,
वैमनस्य-विग्रह समाज में आज व्याप्त है घर घर;
वैमनस्य-सहयोग और विग्रह-संग्रह समझौता ?
हो सकता है मानव, दानव का कैसे रूपान्तर ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नहीं एक ही देश, विश्व की ऊटपटाँग व्यवस्था,
छोटे बड़े सभी राष्ट्रों में व्यापक हीनावस्था;
अहम् भाव में है प्राय: प्रत्येक राष्ट्र लासानी,
सह अस्तित्व—शान्तिमय जीवन की है स्वप्नावस्था।

अपरिहार्य है युद्ध, बनेगा यही सृष्टि-संचालक,
यही आस्था का संस्थापक, भ्रष्टाचार-विनाशक;
नैतिकता पनपाकर, तोड़ेगा कुरीति का बन्धन,
राम-राज्य की परिभाषा को यही करेगा सार्थक।

यही स्वचिन्तन, रहा कृष्ण के लम्बे पथ का सम्बल,
करना क्या था, दुर्योधन से बतियाना था केवल;
निर्णय तो हो चुका, लौट कर कार्यान्वित करना था,
रहा नहीं उनके मानस में कहीं, कभी भी हलचल।

मिले विदुर से, ज्ञात हो गया, नीयत साफ नहीं है,
मिले भीष्म से, ज्ञात हुआ प्राबल्य स्वार्थ का ही है;
मिले द्रोण से, एक मात्र था मौन उन्हें श्रेयस्कर,
अन्धे नृप ने कहा कि दुर्योधन जो कहे सही है।

दुर्योधन था उदासीन, स्वागत भी था बेमन का,
बलि-पशु को कब ज्ञान, अन्त आया उसके जीवन का;
कुशल-क्षेम से तो कानन में रहते पाँचों भाई?
अब भी क्या व्यामोह पूर्ववत् ही है सिंहासन का?

राजन! अवधि समाप्त हो गयी, त्याग दिया अब कानन,
हैं पांचाल देश में पाँचो, किन्तु व्यथित है जीवन;
उन्हें राज्य वापिस मिल जाये, इन्द्रप्रस्थ आ जायें,
सम्बन्धी के यहाँ बहुत दिन रहना निन्द्य-अशोभना।

कुशल-क्षेम की बात! कष्टकर होता कानन-जीवन,
इसीलिये तो किया गया उनका कानन-निर्वासन;
फिर भी सब हैं स्वस्थ, भूत के लिये नहीं पछतावा,
हाँ, भविष्य के जीवन का अब दें राजन् आश्वासन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राज्य—वापसी का सवाल, कैसे, किसके मन आया ?
धर्मराज ने भी क्या इसका कभी प्रसंग चलाया ?
राज्य-कोश दोनों ही जूए में वे हार चुके हैं,
शर्त कहाँ वापिस करने की थी, जब दाँव लगाया ?

राज्य वापसी की न अवधि थी, फिर यह चर्चा कैसी ?
इसकी है उत्पत्ति लग रही, थूक चाटने जैसी;
कहा युधिष्ठिर ने कि राज्य उनको वापिस करना है ?
या कि आप अपने से आये बन, हित-मित्र-हितैषी ?

है कोई रहस्य अनुभव में जो न आप के आये ?
नीति-शास्त्र के विशेषज्ञ ! क्या इस पर बात चलायें;
मुझसे क्या पूछना, आप ही समझ-बूझ कर देखें,
राज्य प्रसाद नहीं होता, जो सबको बाँटा जाये।

जरा सोचिये, राजाओं में आप किसी से कम हैं,
सच तो है, अनेक भूपतियों से भारी-भरकम हैं;
किसको किसको राज्य आपने जीवन में बाँटा है ?
मुझसे राज्य माँगने का कैसा भोंड़ा उपक्रम है।

नहीं गैर हैं, बड़े समीपी, सगे फुफेरे भाई,
अनबन का भी प्रश्न नहीं, आपस में प्रेम-सगाई;
सह-अनुभूति सदा स्वाभाविक, फिर मुझसे क्यों संस्तुति,
अपने में से ही कुछ देकर करते आँसू-पुँछाई।

बहुत भली ससुराल हुआ करती, बहुतों का मत है,
पिता-ससुर दोनों की सम्पति अपनी ही सम्पति है;
बड़े मजे में सबके सब कर लेंगे जीवन-यापन,
वहीं बसायें अपनी नगरी, यही नेक सम्मति है।

जूए से जो राज्य गया, वापिस की दो विधियाँ हैं,
फिर से जूआ को आ जायें, अगर युधिष्ठिर चाहें,
रही दूसरी विधि, वह शौर्य-पराक्रम पर आश्रित है,
समर-भूमि की मर्यादा को चाहें जहाँ, निबाहें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दाँव लगाने को क्या रक्खा, जुआ क्या खेलेंगे,
समर-भूमि का कष्ट, कहाँ से बेचारे झेलेंगे;
कानन की आपत-विपत्ति से पाँचों टूट चुके हैं,
निराधार, किसके बल पर वे मुझसे लोहा लेंगे।

था अतीत उज्ज्वल, हम दोनों का बल रहा समन्वित,
इसीलिये भारत के भूपों को था किया पराजित;
राजसूय का श्रेय मुझे भी, मात्र नहीं उनको ही,
अब तो अपने बल पर करना होगा रण संचालित।

क्या करतब रण में सम्भव है, जो हैं धर्माचारी,
नहीं कपट, छल, छद्म जानते, यह उनकी लाचारी;
इस प्रयास में भी पायेंगे फिर कोरी असफलता,
विधवापन नाहक काटेगी द्रुपद-सुता बेचारी।

बड़ा भीम का उन्हें भरोसा, जब से देश-निकाला,
शान्त न कर पाया बेचारा प्रबल पेट की ज्वाला;
बनबेरों के खाने वाले से पूजेगी आशा ?
जरासन्ध है नहीं, पड़ेगा दुर्योधन से पाला।

अर्जुन को है धनुष-बाण की विद्या का बल भारी,
अच्छा है लड़ने वाला, पर उसकी भी लाचारी;
आप सरीखे परामर्श-दाता भ्रम में डालेंगे,
भरा करेगा सदा आपकी झूठी-सही हँकारी।

लोग बताते, पत्नी के दुख से अमर्ष-संयुत है,
है अमर्ष, तो निश्चय ही वह शौर्य-शक्ति से च्युत है;
मेरे अधिरथियों में किसका, क्या बिगाड़ वह लेगा,
वीर कर्ण का एक वाण ही उसके लिए बहुत है।

और नकुल-सहदेव ! थके-माँदे, जीवन से हारे,
हैं अनाथ, जैसे तैसे दिन काट रहे बेचारे;
अच्छा है, उनकी चरचा ही नहीं चलायी जाये,
समर-भूमि में कहाँ डँटेंगे, वे विपत्ति के मारे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अभी आप आये हैं मुझको फुसलाने-समझाने,
कभी बाद में फिर आयेंगे लड़ने और लड़ाने;
जरासंध की हुँकारों से जो भागा फिरता था,
कहाँ रहेंगे, उससे यदि हम लोग लगें भय खाने।

अतः जाइये, कहिये, अब वे वहीं कहीं बस जायें,
क्या उत्पात करेंगे, सुखमय जीवन कहीं बितायें;
अगर पंख ही हों निकले, है बात दूसरी तब तो,
जब भी जी में आये, अपनी ताकत को अजमायें।

"यही समय की माँग, आपकी वाणी से पारित है,
दण्डपाणि द्वारा, यह पहिले से ही निर्धारित है;
मानव—मुण्डाधिक्य, स्वयं मानव-विनाश का कारण,
मानव में ही मानव का हित-अनहित-स्वार्थ निहित है।

अन्तिम नमन हस्तिनापुर की वर्तमान काया को,
शत-शत नमन सृष्टि की संचालिका महामाया को;
नहीं कभी अब इस स्वरूप के हो पायेंगे दर्शन,
बचे खुचे ही, स्पर्श कर सकेंगे तेरी छाया को।"

× × ×

ठीक समय पर कृष्ण पहुँच पाञ्चाल नगर में आये,
छाया था उत्साह, हाट-घर-द्वार गये सजवाये;
अभिमन्यू के शुभ विवाह की धूमधाम तैय्यारी,
जन जन में नव स्फूर्ति, उमंगों में सब छके-छकाये।

नाम और गुण एकरूप सर्वत्र न पाये जाते,
पर विराटपुर की विराटता भारी, लोग बताते;
नाँव-गाँव वाले राजा की आयुष्मती सुकन्या—
नाम उत्तरा, थी सुलक्षणा, पुरवाले गुन गाते।

अभिमन्यू से था विवाह सम्पन्न, सभी थे हर्षित,
यह सम्बन्ध सभी से चर्चित, सबसे परम प्रशंसित;
वर्तमान के अन्धकार का है सम्भाव्य तिरोहण,
इससे ही प्रकाश की किरणें होने को आकर्षित।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अन्तिम अंक खेल का केवल शेष, बड़ी तैय्यारी,
दोनो नगरों में सेनाओं का जमाव है भारी;
अपने अपने पक्षों के भूपाल सभी आमंत्रित,
रण में करने की सहायता सबने है स्वीकारी।

लाखों लाख सैनिकों का है कुरुक्षेत्र में जमघट,
सबके मन में एक लालसा—करें प्रदर्शित जीवट;
रण–गंगा को पार करेंगे, है उत्साह सभी में,
अस्त्र-शस्त्र हैं नाव, पराक्रम ही है उनका केवट।

एक एक से बढ़कर बल-विक्रम वाले भूपति हैं,
स्वयं वीरता भी जिनके विक्रम के सम्मुख नत्त हैं;
धन, वैभव, सम्मान, कोश के साथ राज्य भी त्यागा,
रण में वरण मरण अब उनकी एकमात्र सम्पति है।

भारत का बल-शौर्य सिमट कर कुरुक्षेत्र में आया,
सबका अब तक होने को ही है, सम्पूर्ण सफाया;
अहंकार की तुष्टि, भावना अन्तिम सबके मन में,
है सबके सिर पर मँडराती क्रूर काल की छाया।

अब न सोचता भी है कोई, समर बचाया जाये,
केवल यह है प्रश्न कि पहिले लोहा कौन लगाये;
सत का था आक्रमण असत पर, अन्धकार पीना था,
अब सीधा संघर्ष अपेक्षित, अब क्यों समय गँवायें।

जितनी होगी देर, शत्रु–बल बढ़ता ही जायेगा,
अपने को दृढ़तर करने का अवसर ही पायेगा;
अन्धकार को और अधिक अब सुलभ न हो गहरायी,
यह अन्यथा ज्योति की किरणों को ही गहरायेगा।

प्रथम बाण अर्जुन का, रण में था प्रणाम गुरुजन को,
मिला निमंत्रण भूत, प्रेत, डाकिनी, भैरवी-गन को;
सनन-सनन-सन चले तीर, चल पड़ीं तीक्ष्ण तलवारें,
भिड़े एक से एक, तिलाञ्जलि दे अपने जीवन को।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अट्ठारह दिन महा समर के बजते रहे नगारे,
भीष्म, द्रोणगुरु, कर्ण सरीखे वीर गये सब मारे;
लाशों के अम्बार लग गये, मिटी प्यास धरती की,
यत्र-तत्र-सर्वत्र रक्त के बहने लगे पनारे।

कहाँ रहीं दुर्योधन, दुःशासन, शकुनी ललकारें!
एक एक को खोज खोजकर पाण्डुसुतों ने मारे;
वही बचे, जो खेत छोड़कर भाग जा छिपे घर में,
या वे रहे सुरक्षित, जो पहिले से रहे किनारे।

बचा न कोई बीर, बन्द हो गयीं समर-हुंकारें,
रनिवासों में करुणा जागी, उठीं चीख, चित्कारें;
हुआ सभी कुछ जो पहिले से रहा कृष्ण-निर्देशित,
अब आगे के कार्य-क्रमों के करने थे निवटारे।

दुर्योधन के कुल में कोई बचा न नाम लेवैया,
गर्भों में ही पड़े कहीं होंगे परिवार चलैया,
पाँचों पाण्डव बचे, किन्तु सन्तानें बचीं न कोई,
रहा नहीं इनके कुल का भी कोई नाव खेवैया।

टूट गया है देश, नहीं है कोई सुदृढ़ व्यवस्था,
बचे खुचे जर्जर समाज की चिन्ताजनक अवस्था;
फिर से है निर्माण अपेक्षित, नयी नींव देनी है,
एकमात्र अब रही पाण्डवों को भविष्य की चिन्ता।

नहीं प्रखरता रवि-किरणों की, रजनी है पूनम की,
क्लान्त शान्त हों, यही कामना, मिटे थकन जनजन की;
स्वप्न रहित निद्रा सुखदायी, तन्द्रा फिर जब टूटे,
हिले दक्षिणी वायु, मिले झाँकी रवि-प्रथम-किरन की।

अन्धकार हट गया, भार अब हलकाया धरती का,
अब प्रकाश के आँगन में जलने को दीपक घी का;
हाहाकार नगर-गाँवों के अब हो गए तिरोहित,
अब न रहा अवरुद्ध, मार्ग अब चालू हुआ सभी का।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



टूटे राज्यों को बल देकर पुनर्गठित करना है,
रण के हरियाये घावों को भी ज्यों त्यों भरना है;
एक सूत्र में हो आबद्ध, देश का कोना कोना,
बिखरों को बटोरना है, सहेज करके धरना है।

रण की विभीषिका ने भारी सत्यानाश किया है,
अच्छाई के साथ बुराई को भी जन्म दिया है;
पुनर्वास, नव निर्माणों की नहीं समस्या छोटी,
लाखों लाख कुटुम्बों की बैठा डाली बधिया है।

पहिले तो हस्तिनापुरी को ही सम्हालना होगा,
पीड़ित परिवारों की पीड़ा को निकालना होगा;
विधवाओं के आँसू अब तक तनिक नहीं पुँछ पाये,
जितना सम्भव, उनके मन का मैल हटाना होगा।

है अभाव खाद्यान्नों का, भण्डार पड़े हैं खाली,
नहीं रह गयी है नन्हें-मुन्नों के मुँह पर लाली;
वातावरण विमूर्छित, चारो ओर मुर्दनी छायी,
सूख गयी सम्पूर्ण नगर की आकर्षक हरियाली।

पश्चिम से दुर्गन्धि लिए गन्धवह नगर में आता,
मुर्दों की सड़ान्ध गलियों में अब भी बिखरा जाता;
महामारियों ने घर घर में जाल बिछा रक्खा है,
कैसे इनसे लड़े, चिकित्सक-दल न समझ पाता है।

उजड़ गया है नगर, पड़ेगा फिर से इसे बसाना,
हैं विस्थापित, उनको देना होगा ठौर-ठिकाना;
नहीं एक दो, खड़ी समस्यायें हैं भीड़ लगाये,
नहीं सरल होगा इन सबका यथा समय निबटाना।

रौंद गयीं खेती, किसान को भी उपलब्ध न दाना,
औरों के घर अब अनाज का होगा कहाँ ठिकाना;
उद्योगों पर भी प्रभाव इसका कम पड़ा नहीं है,
फिर से सारी अर्थ—व्यवस्था को अब है पनपाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राजसूय के समय कोश था अक्षय बना हमारा,
दुर्योधन ने कर डाला है उसका वारा न्यारा;
बड़ा लगेगा समय पूर्व की स्थिति को पलटाने में,
उलट-पलट कर डाला है इसने विधान ही सारा।

एक बार फिर राजसूय सा यज्ञ रचाना होगा,
एक बार फिर उसी तरह से कोश जुटाना होगा;
अपनी पूर्व व्यवस्थाओं का नाम भी न अब बाकी,
जितना भी श्रम लगे, उन्हें अब पुनः चलाना होगा।

भाव सुरक्षा का लोगों में जब तक लौट न आता,
जब तक भोजन हर प्राणी को सुलभ नहीं हो जाता;
हर शरीर के छिपने को छप्पर तो है मिलना ही,
अपनी लाज छिपाने को जबतक न वस्त्र नर पाता—

अन्धकार के दूर के लिये जबतक सुलभ न शिक्षा,
जबतक प्राप्त नहीं जनजन को स्वच्छ न्याय की भिक्षा;
जबतक नहीं चिकित्सक हर रोगी को है मिल जाता,
शासन-तंत्र व्यर्थ, अब हमको देनी अग्नि-परीक्षा।

हाट और बाजारों में भी बड़ी मुर्दनी छायी,
इक्के दुक्के ही क्रेता अब देते हैं दिखलायी;
धनाभाव से क्रय-बल का है ह्रास, घोर चिन्ता है,
लुञ्ज पुञ्ज इससे भी अर्थ-व्यवस्था, मन्दी आयी।

उत्पादन-क्षेत्रों से हैं सामान नहीं आ पाते,
जो अभाव के क्षेत्र, न जानें कितना कष्ट उठाते;
जगह जगह हैं सेतु ध्वस्त, पथ कटे पिटे कितने हीं,
वाहन भी चालू हालत में पाये कहीं न जाते।

निश्चय ही हमसे समाज को बड़ी बड़ी आशायें,
युग से झेल रहा है यह विपदाओं पर विपदायें;
यदि हम इसको कुछ भी सुख पहुँचाने में अक्षम हैं,
बेशर्मी से क्या हम इसको अपना मुँह दिखलायें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



किनसे लें हम परामर्श, हम क्या योजना बनाएँ,
किनके बल पर बनी योजनाओं में तेजी लाएँ;
कहाँ हमारे पास रहा जनबल, जिस पर आश्रित हों,
जन की आकांक्षा को कैसे मूर्तरूप दे पायें।

जितनी युवक-शक्ति कामिल थी, रण ने किया सफाया,
जितने योग्य प्रशासक, रण ने उन्हें स्वर्ग पहुँचाया;
सभी अनुभवी अभियन्ताओं का अभाव अधिकाधिक,
अनुपलब्ध सामान, कहाँ से जाएगा उपजाया।

चिन्तन ! चिन्तन ! चिन्तन से क्या लाभ, उठो करना है,
अन-धन से स्वराष्ट्र की खाली झोली को भरना है;
आपत-काल दृढ़व्रती मानव है सक्षम हो जाता,
कुछ करने के लिए आज से हम सबको मरना है।

चाचा से था परामर्श, कैसे हो स्वच्छ प्रशासन,
प्रजा वर्ग में कैसे लाया जा सकता अनुशासन;
सुख-समृद्धि का पुनः अवतरण कैसे होगा सम्भव,
कैसे गौरव-गरिमा वाला रह सकता सिंहासन।

बेटे ! तुमने देखे कितने वैभव और पराभव,
शासन-संचालन का भी पहिले से ही है अनुभव;
बहुत कह चुका हूँ तुम लोगों से बचपन से अब तक,
नये सिरे से नव-निर्माणों का होना है उद्भव।

कृष्ण तुम्हारे हित चिन्तक ही नहीं, मार्ग निर्देशक,
शासन-संचालन का अनुभव भी उनका है व्यापक;
उनसे ले प्रेरणा काम करना तुम सबको वांछित,
एकमात्र हैं कृष्ण तुम्हारी सत्ता के संस्थापक।

विज्ञ बताते, मैंने भी कुछ है ऐसा ही पाया,
मायापति हैं कृष्ण, कृष्ण की उपजायी यह माया;
जूआ, कानन-गमन, उन्हीं की इच्छा से कार्यान्वित,
युद्ध और विध्वंस उन्हीं के द्वारा गया रचाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नैतिकता का ह्रास, धर्म की भारी छीछा लेदर,
अनाचार की छाया में मोहित सारे नारी—नर;
एकमात्र उद्देश्य कृष्ण का है असत्य-उत्थापन,
राज्य सत्य का संस्थापित करना है इस भूतल पर।

जैसे कहें कृष्ण, वैसे ही चलना है श्रेयस्कर,
उनकी आज्ञाओं का पालन करना है जीवन भर;
बिगड़ा था संतुलन सृष्टि का, उसे संतुलित करने—
मानवता के लिए कृष्ण आये हैं मानव बनकर।

अपनी उनसे कहो, गुनो लेकिन उनके मन वाली
कथनी-करनी दोनों ही हैं उनकी जीवन वाली;
अनुप्राणित हो धर्म धरा पर, यही कृष्ण की कथनी,
करनी द्वारा ध्वस्त किए, जितने थे कुटिल-कुचाली।

सत्य सन्ध, नरदेव कृष्ण को मेरा शत शत वन्दन,
सर्वभाव से करो कृष्ण का तुम सब भी अभिवादन;
जहाँ कृष्ण थे, वहीं विजय थी, यह तुमने देखा ही,
जहाँ कृष्ण हैं, वहीं धर्म है, कृष्ण-धर्म अभिनन्दन।

× × ×

जो थे प्रश्न विदुर से, वे ही प्रश्न गये दुहराये,
राजसूय के भी विचार उन लोगों ने बतलाये;
कहा कृष्ण ने साधुवाद दे—प्रश्न सामयिक, रुचिकर,
काम वही करने हैं अब तक जिन्हें नहीं कर पाये।

पहिले तो था राजयज्ञ, अब प्रजायज्ञ करवाना,
पहिले राजा मुख्य, प्रजा को है अब मुख्य बनाना;
देश देश के राजाओं का आमंत्रण आवश्यक,
राज-कोश का पहिले से बढ़कर आकार बढ़ाना।

नहीं किसी भी राजा से अब की रण लेना होगा,
छोटे छोटे राज्यों को संरक्षण देना होगा;
महायुद्ध में जो विपक्ष में थे, विगठित बेचारे,
और पक्ष वालों का अब अभिनन्दन करना होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राज कोश का नाम बदल कर प्रजा कोश है रखना,
राजा इससे खर्च चला सकता है केवल अपना;
नहीं राज-परिवार के लिए इसमें से व्यय होगा,
इससे होगा बन्द प्रजा का शोषण और बिलखना।

राजा को ही नहीं, प्रजा को भी समर्थ है होना,
प्रजा निबल है तो राजा रह जाता मात्र खिलौना;
निर्धन नहीं राज्य में कोई प्राणी रहने पाये,
भिक्षाटन का अन्त किया जाये, यह बड़ा घिनौना।

धरा, गगन, जल, अग्नि, पवन उपलब्ध प्राकृतिक साधन,
अनुचित है विद्वेष पूर्ण इनपर स्वामित्व निबन्धन;
इनका हो उपभोग मात्र पूरे समाज के हित में,
इनके द्वारा विकसित करना है समाज का जीवन।

धरती पर स्वामित्व नहीं होना चाहिए किसी का,
है ईश्वर प्रदत्त, हो इस पर सम अधिकार सभी का;
जिसके पास अधिक है, आवश्यकता भर ही रक्खे,
क्रय-विक्रय है निन्दनीय मानव का जल-पृथ्वी का।

जिनका जो उत्पादन करता, वे उनकी जागीरें,
शोषण की प्रवृत्ति करती धूमिल मानव तसवीरें;
खेतिहर को अनाज के दाने ही हैं सच्चे मोती,
कारीगर को बटन सीपियों के हैं सच्चे हीरे।

बिना भूमि के कोई खेतिहर कहीं नहीं रह जाये,
उसपर हो स्वामित्व उसी का, जो जिसको उपजाये;
करे और मालिक हो कोई, है यह हीन व्यवस्था,
खेत उसी का, जो खुद खेती करे, नहीं करवाये।

सबसे श्रेष्ठ, महत्वपूर्ण है होता कार्य कृषक का,
किन्तु वही सबसे निर्बल है, सबसे पाता झटका;
अनावृष्टि-अतिवृष्टि, बराबर हैं उत्पीड़ित करतीं,
सूखा, ओला, शीत-ताप का उसे बराबर खटका।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



उसे राज्य-कर का भुगताना भी होता है दूभर,
धनाभाव का कष्ट बराबर, ऋण भी उसके सिर पर;
अतः कृषक की भूमि राज्य-कर से विमुक्त करनी है,
अन्य करों का भी न भार हो खेतिहर के कन्धों पर।

अन्न प्राण है, इससे प्राणी जाते पाले-पोसे,
इसका उत्पादन न छोड़ना होगा भाग्य-भरोसे;
कृषि-सम्भार सुलभ हों, हो दायित्व राज्य पर इसका,
जितने हैं खेती के साधन, हों सब मुक्त करों से।

कूओं का निर्माण कराना, नहरों का खुदवाना,
कृषि के लिये राज्य को चहिये जल उपलब्ध कराना,
जहाँ जहाँ आवश्यक, बनें राज-पथ, पुल हों निर्मित,
सुगम रहे विक्रय केन्द्रों तक अन्नों का पहुँचाना।

कोई हाथ राज्य भर में बेकार न पाया जाये,
पानी बिना एक भी बोया खेत नहीं रह पाये;
उत्पादन को जहाँ व्यवस्था निर्दोषी, निर्बाधित—
वही समुन्नत राष्ट्र कहाता, विज्ञों ने बतलाये।

मानव मानव में अन्तर, है निन्द्य भाव कहलाता,
कोई हो हुजूर, कोई मजूर, यह कैसा नाता;
जाति भेद, है अपने अपने कर्मों पर ही आधृत,
कर्मों को क्यों श्रेष्ठ-हीन, लघु-गुरु है माना जाता?

जो पूँजीपति, सत्ताधारी, हैं हुजूर कहलाते,
जो निर्धन, निःसत्व, वही मजूर हैं माने जाते;
ऐसी स्थिति में सम्पति का अधिकार न रहे किसी को,
सम्पति से केवल समाज के ही हों सीधे नाते।

ऐसी अगर व्यवस्था, तो पूरा समाज लाभान्वित,
हीन भावना रहित राष्ट्र होगा, होगा सबका हित;
'सबको काम और सबको आराम' मंत्र जन जन का,
काम और आराम तत्वतः हों सबको परिभाषित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दूषित परम्परा है, करता एक चार हैं खाते,
निन्दनीय है, सबल निबल की रोटी चट कर जाते;
पहिला तो समाज की पूंजी को धक्का पहुँचाता—
और दूसरे से लाखों उत्साह-हीनता पाते।

प्रजा-कोश का है सुनियोजित ही उपयोग अपेक्षित,
हो सम्यक् विकास जन जन का, पुष्ट राज्य-हित समुचित;
जो समाज-हित अत्यावश्यक हों, वरीयता उनकी,
सुविचारित प्रयोजनायें हों सर्व प्रथम सम्पादित।

राजमार्ग पर सेतु बनें, फलदार विटप लगवायें,
कोस कोस पर कूप पेयजल के निर्माण करायें;
यत्र तत्र सुविधानुसार औषधियाँ सर्व सुलभ हों,
पथिकों के विश्राम हेतु हों जगह जगह शालायें।

कोई भी समाज में रहने पाये नहीं निरक्षर,
गाँव गाँव में हों विद्यालय, कथा-वार्ता घर घर;
हों पुस्तक उपलब्ध सभी को और पठन-सामग्री,
गुरुकुल से निकले स्नातक, हों कहीं न भार धरा पर।

प्रजावर्ग मानसिक रूप से स्वस्थ रहे, इसके हित,
आयोजन आमोद-प्रमोदों का भी करना वांछित;
मानस के सँग हृदय-पक्ष भी सबल रहे जन जन का—
लानी होगी रुचि समाज में न्यूनाधिक साहित्यिक।

जागरूकता के अभाव में होता निबल प्रशासन,
उच्छृङ्खल समाज होता है और भंग अनुशासन;
जो निश्चय है, दृढ़ता पूर्वक किया जाय कार्यान्वित,
इससे जन-मानस स्थिर होता और सुरक्षित जीवन।

तुला तुलित हो न्याय, क्षिप्रता और सुलभता वांछित,
न्याय हो रहा है जनता समझे, यह भी आकांक्षित;
आरक्षी हों सजग, कहीं अपराध न होने पायें,
अपराधी प्रवृत्ति ही हो जन-मानस से उन्मीलित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



वही विधि विहित सम्पति है, जो अपने श्रम से अर्जित,
जूआ, भ्रष्टाचार, याचना हों समाज में वर्जित;
मद्यपान, महिलाओं का अपमान, अनृत संभाषण—
संविधान में दण्डनीय अपराध रहें ये घोषित।

ऊँचे हों विचार, पर जीवन सादा, यही अपेक्षित,
राज पुरुष, शासक का जीवन होवे राष्ट्र समर्पित;
छोटे सदा बड़ों का ही अनुकरण किया करते हैं,
नैतिकता के पथ पर राज पुरुष के हों पद चिन्हित।

स्वतंत्रता तो सुरुचि पूर्ण, मानव का गुण स्वाभाविक,
स्वच्छन्दता परन्तु निन्द्य ही होती है न्यूनाधिक;
पुरुषों-महिलाओं का गुण कहलाता इसका वर्जन,
अनुशासन मानव-जीवन की है शिक्षा प्रारम्भिक।

अन्तिम कथन, किन्तु इसका महत्व सर्वोपरि मानें,
मानव की समाज-रचना का दृढ़तर बन्धन जानें;
रोटी-मक्खन का महत्व तो अपनी जगह सही है,
ईश्वर की सत्ता को मानें, प्राणी को पहिचानें।

× × ×

कुन्ती का आग्रह, भगिनी का भाव, अधिक बिरमाये,
प्रेमाबद्ध कृष्ण ने लगभग आधे वर्ष बिताये;
बड़ी व्यग्रता, बड़ी प्रतीक्षा, बड़े स्नेह से पालित—
पुत्र-रत्न था प्राप्त उत्तरा को, पुर बजे वधाये।

रहा महीनों इसका उत्सव, जब काफी दिन बीते,
आया ग्रीष्म, जलाशय कुछ तो क्षीण हुए, कुछ रीते;
कहा कृष्ण ने—इस अंचल में बड़ी कष्टकर गर्मी,
आज्ञा हो, द्वारिका प्राप्त इसके प्राकृतिक सुभीते।

शोकाकुल परिवार, आज मुहँ से न निकलती बातें,
अन्यमनस्क सभी दिखलाते, चिन्तित समय बिताते;
नहीं कल्पना थी, विछोह होने की आयी, बेला,
चले कृष्ण द्वारिका पुरी को आज तोड़ सब नाते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सारा जीवन कानन में ही पड़ता हमें बिताना,
की अहेतुकी कृपा आपने, हमको दिया ठिकाना;
जो कुछ हैं हम आज, आपकी कृपा-दृष्टि का फल है,
नहीं अन्य से सम्भव था बेड़े का पार लगाना।

यह कह धर्मराज ने उनको अपने हृदय लगाया,
रोती बहिन द्रौपदी को सान्त्वना दिया, समझाया;
कुलका दीप उत्तरा-सुत चरणों में हुआ समर्पित,
कुन्ती ने आशीष दिया, माथा सूँघा, सहलाया।

यात्रा में जो कुछ आवश्यक था, सब गया जुटाया,
अर्जुन ने उनका रथ अपने हाथों सुघर सजाया;
आँखें थीं उत्साहहीन, बोझिल बोझिल थी छाती,
हुयी विदाई अन्तिम, सबने रथ में हाथ लगाया।

× × ×

नाम करण का संस्कार, ज्योतिषी गये बुलवाये,
जन्म-पत्र को देख उन्होंने शिशु के गुण-गण गाये;
ईश्वरीय सत्ता इस शिशु से होगी सदा परीक्षित,
अतः परीक्षित नाम पुरोहित ने गुन गिन बतलाये।

पाण्डव-कुल का यही वंशधर, समुचित इसको शिक्षा—
दी जानी है, एक मात्र यह धर्मराज की इच्छा,
सर्व श्रेष्ठ शिक्षाविद् सादर किये गये आमंत्रित,
धर्म-अर्थ सँग राजनीति की उसे दी गयी दीक्षा।

तीस वर्ष के हृष्ट-पुष्ट आकर्षक युवक परीक्षित,
विविध विधाओं में विद्या की पूर्णरूप से शिक्षित;
अस्त्र-शस्त्र की वीरोचित विद्या गुरुओं से सीखी,
पूर्ण, पूर्ण हैं, हैं विशेषतः राजनीति में दीक्षित।

राज काज को है सम्हालने की अब इनमें क्षमता,
दूर करेंगे, यदि समाज में है कुछ शेष विषमता;
रहा जहाँ तक सम्भव, हमने किया प्रजा का पालन,
श्रेयस्कर है, हमें त्यागनी अब सत्ता की ममता।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कई मास बीते, अर्जुन अबतक न लौट कर आये,
कुशल जानने हेतु कृष्ण का वे थे गए पठाये;
गयी रात मैंने देखे हैं अनगिन स्वप्न भयंकर,
धर्मराज चिन्ताकुल हो सोचने लगे घबराये।

कई दिनों तक रहा अनिच्छित चिन्तन का क्रम जारी,
राज द्वार पर अर्जुन की सहसा आ गयी सवारी;
धूमिल नेत्र, कपोल आर्द्र, आनन उतरा, कम्पित स्वर,
अंग अंग से परिलक्षित थी मायूसी-लाचारी।

नहीं रहे अब कृष्ण, धरा की है गोदी अब सूनी,
किसका अब अवलम्ब, करेंगे क्या छाती अब दूनी;
नश्वर तन को प्रासादों के भोगों में क्या रखना,
चलो चलें फिर कानन में, फिर कहीं लगावें धूनी।

था अभिषेक परीक्षित का, सब कुछ था उन्हें समर्पित,
पितामहों के प्रेम-सुधा से नव शासक था सिञ्चित;
परदादी कुन्ती की अन्तिम अभिलाषा थी पूरी,
किये सभी ने अपने इच्छित कर्मों को सम्पादित।

लिया वस्त्र काषाय, हुये अब धर्मराज संन्यासी,
चित्त वृत्ति उनकी न रही, अब भव भोगों की प्यासी;
वाणी को मन में, मन को प्राणों में किया समाहित,
जागरूक चेतन, अभ्यन्तर दैवी ज्योति प्रकाशी।

चारों भाई का था कौन प्रयोजन अब धरती पर,
क्यों दिन काटें बैठ नगर में पर का आश्रित होकर;
ब्रह्म मिलन है लक्ष्य जीव का अन्तिम, ज्ञानी कहते,
चले युधिष्ठिर के पद-चिन्हों पर ही चारों सत्वर।

कृष्ण कृष्ण रटते कुन्ती ने त्याग दिया नश्वर तन,
बहिन सुभद्रा ने भैय्या की स्मृति में काटा जीवन;
रक्षक ही जब नहीं रहे, क्या जीने में रक्खा है,
आत्म तत्व को मिला ब्रह्म में, हुयी द्रौपदी निःस्वन।

•

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नवम सर्ग

■

# संतुलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन्दीगृह में था जन्म और ग्वाले के घर लालन-पालन,
योजना कंस की संचालित, कैसे सम्भव हो उत्थापन;
बचपन से ही बाधाओं से मुड़भेड़ रही, था दमन-शमन,
व्याख्या अन्यत्र कहाँ सम्भव, संघर्ष पूर्ण सारा जीवन।

पूतना पिशाचिन का इनसे था पड़ा सौर-गृह में पाला,
शिशुपन में भारी छकड़े को पैरों से उलट पलट डाला;
कुछ बड़े हुए, गोपों के सँग गोचारन में संलग्न हुये,
बाँसुरी बजाने में अभिरुचि, कहलाते थे वंशी वाला।

था नाम कृष्ण असली, लेकिन गोपाल पुकारे जाते थे,
वंशी वाले, मुरली वाले, गोपी - ग्वाले गुहराते थे;
वसुदेव - देवकी से जन्मे, था वासुदेव भी एक नाम,
कार्यानुकूल नटवर, मनहर, माखन के चोर कहाते थे।

वे जब किशोर, बात ही बात असुरों का कर डाला मर्दन,
अघ के ले लिये प्राण पल में, बक की मरोड़ डाली गर्दन;
धेनुक को था अभिमान बहुत, अपने जंगल का राजा था,
उसको मारा, राक्षस विहीन निर्द्वन्द्व हो गया गोचारन।

पहिले थे जहाँ इन्द्र पूजित, करवाया गोवर्धन - पूजन,
व्रज की रक्षा में थे सतर्क, कर डाला गोवर्धन - धारन;
करने को व्रज का उच्छेदन थे इन्द्र कुपित, था जल-प्लावन,
गोवर्धन ने रक्षा कर ली, हो गया इन्द्र का मद मर्दन।

कालिया भयंकर विषधर था, विषमय उसका सारा जीवन,
कालिय-ह्रद में था सुखासीन, उसका भी किया मान-मर्दन;
दह में कूदे, निःसत्व किया, उसके नथुनों को नथ डाला,
फिर विषधर के फन के ऊपर था हुआ कृष्ण नट का नर्तन।

अब थे वयस्क, मथुरा जाकर मुष्टिक से पट्ठे को मारा,
फिर क्रूर कंस को बीच सभा में जाकर पकड़ा, ललकारा;
सारी हेंकड़ी भुला डाली करके उसके सँग मल्ल युद्ध,
अत्याचारी के लिये प्राण, बन्दी - सम्बन्धी उद्धारा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नाना थे उग्रसेन, उनको मथुरा का राज समर्पित था,
सागर तट पर द्वारकापुरी अपने निवास-हित निर्मित था;
जितने यदुवंशी क्षत्रिय थे, उनकी समवेत शक्ति लेकर—
सुगठित, विकसित साम्राज्य एक कुल के हित में संस्थापित था।

मानित-पूजित थे औरों से, व्यक्तित्व रहा उनका विशाल,
मित्रों की संख्या थी अथोर, था नहीं शत्रु का भी अकाल;
था युग की ज्वाला जरासंध, इनसे हरदम जलता रहता,
शिशुपाल अकारण बना शत्रु, परिलक्षित थी उसकी कुचाल।

दोनों थे प्रबल शक्तिशाली, दोनों समाज के शत्रु प्रबल,
सारे भूपति उनसे नत थे, उनसे न झुके ये ही केवल;
भीम से कराके द्वन्द-युद्ध था जरासन्ध को मरवाया,
शिशुपाल स्वयं उनसे था हत, रोकी समाज की यों हलचल।

पाण्डव थे बूआ के बेटे, स्वाभाविक था उनसे लगाव,
बस इसी लिये दुर्योधन भी रखता था इनसे बैर - भाव;
दुर्योधन के संगी - साथी थे महापतित, दुर्योधन भी—
था स्वयं अनैतिक, महाभ्रष्ट, था मूर्तिमान धोका-छलाव।

धर्मज्ञ युधिष्ठिर थे महान्, उन पर न कभी विश्वास किया,
लाक्षागृह में पाँचो का ही हो अन्त, महान प्रयास किया;
जब जब मौका पाया, उनके ही सर्वनाश की तैय्यारी,
आखिर सबके सब छले गए, जाकर कानन में वास किया।

राजा यदि रहा सचेष्ट नहीं, जनता को महाकष्ट होता,
पद दलित प्रजा तो होती ही, शासक भी स्वयं नष्ट होता;
अत्याचारी, अन्यायी तो भोगता कर्म - फल, स्वाभाविक,
जो है सत-पथ का अन्वेषी, वह भी है नष्ट-भ्रष्ट होता।

ऐसा ही शासक दुर्योधन, उसका विनाश करवाना था,
था दूषित पर्यावरण राज्य का, उसको स्वच्छ बनाना था;
कैसा समाज, कैसा शासन, जिसमें प्रकाश धूमिल रहता,
स्वर्णिम विहान उनको अभीष्ट, रजनी का दोष मिटाना था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



था महायुद्ध का आयोजन, पृथ्वी का भार किया हल्का,
कुंठा न रही, संत्रास मिटा, संचार हुआ नव जीवन का;
विश्वास राज्य के प्रति लौटा, आश्वस्त हुआ जन जन का मन;
था सजग आज, प्रारम्भ हुआ निर्माण नये वांछित कल का।

यादव कुल अपना ही कुल था, उसके बल से अभीष्ट साधन,
बल का विकार भी होता है, होता है उच्छृङ्खल जीवन;
उन्माद यादवों में व्यापक, पीड़ित समाज उनके हाथों,
बातों बातों में था सम्भव, पूरे कुल का ही उच्छेदन।

काँटे से काँटा निकाल कर, दोनों काँटे फेंके जाते,
यदुकुल से कुछ ऐसे ही थे सम्पादित नटवर के नाते;
जब थी अभीष्ट की पूर्ति मूर्त, क्या धरा धरा पर रहने में,
हैं कृष्ण, नहीं है नश्वर तत्त, अब भी हम उनके गुन गाते।

हैं नहीं कृष्ण, पर उनकी स्मृति है सजग आज भी जन जन में,
उद्धरण आज भी है उनका सम्बल जीवन का, जन जन में;
जब तक धरती पर है प्राणी, प्राणी में जब तक है चेतन—
मरने को नहीं कृष्ण तब तक, जब तक जीवित है मानव-मन।

× × ×

यह वही नगर प्राचीन, जहाँ सिमटीं जग की निधियाँ सारी,
यह वही हस्तिनानगर, जहाँ अब नहीं किसी को लाचारी;
यह वही नगर, जिसमें अब हैं अपराध नहीं खोजे मिलते,
यह नगर, पनपते नहीं जहाँ लम्पट, तस्कर, भ्रष्टाचारी।

हैं यहाँ परोक्षित सूत्रधार, शासन की सुदृढ़ अवस्था है,
कोई न किसी का शोषक है, सर्वत्र न्याय भी सस्ता है;
दारिद्रय-दुःख का नाम नहीं, हर हाथ काम में लगा हुआ,
आराम सभी को यथा समय, घर घर की सुघर व्यवस्था है।

जो धर्मराज का निर्देशन, उससे भी सुन्दरतर पद्धति—
अपनायी गयी राज्य भर में, प्रत्येक दिशा में बढ़ी प्रगति;
है धर्म राज्य, है सत्य राज्य, है अर्थ राज्य की श्लाघ्य नीति,
घर घर में पाण्डव जीवित हैं, जन जन में जाग्रत है सद्मति।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राजा की बड़ी प्रशंसा है, सत-व्रती राम सा कहलाता,
इक्ष्वाकु सदृश जनता-पालक, शिवि के समान आश्रय दाता;
दुष्यन्त-पुत्र सा यशशाली, अपने कुल का यश विस्तारक,
है सूर्य सदृश यह प्रभावान, जग में प्रकाश है फैलाता।

दुस्तर है महा उदधि जैसा, है अचल अचल के ही समान,
है पराक्रमी पंचानन सा, अर्जुन सा रखता आनबान
है यह तितिक्षु पृथ्वी जैसा, माता सा है यह सहनशील,
समता की क्षमता स्रष्टा सी, साक्षात् कृष्ण सा है महान।

श्रद्धा में है प्रहलाद भक्त, दृढ़ता में ध्रुव से नहीं हीन,
बलि के समान ही महाधीर, सनकादि सदृश है चिर नवीन;
लक्ष्मीपति सा जन प्रतिपालक, न्यायी जैसे हो धर्मराज,
करने में दण्ड - व्यवस्था के है दण्डपाणि सा ही प्रवीण।

राजा है कृष्ण-भक्त, उनके पद-चिह्नों पर चलने वाला,
बाधायें हों अनेक, लेकिन व्रत से न कभी टलने वाला;
निःस्वार्थ, विज्ञ, अनुभव विशिष्ट प्रतिभाओं से सुगठित परिषद,
उसमें न एक भी है मंत्री अपना ही हित करने वाला।

शास्त्रों की चर्चा जन जन में, हैं सभी शास्त्र आदृत-पूजित,
पातञ्जलि का है योग सूत्र सम्भ्रान्त जनों में बहु चर्चित;
छोटे छोटे गाँवों तक में प्रचलित ऐसी शालायें हैं—
योगासन सिखलाये जाते, धारणा - ध्यान भी हैं नियमित।

छोटे छोटे जीवों तक को पीड़ा पहुँचाना है वर्जित,
औरों के प्रति वाणी से भी कटुता फैलाना है वर्जित;
सब की प्रवृत्ति जन कल्याणी, सब के हित की सब को चिन्ता,
अपकारी के प्रति भी कुभाव मन में भी लाना है वर्जित।

सब को असत्य से घोर घृणा, हैं सभी सत्य के अन्वेषक,
सब में है अभिधा का प्रयोग, हैं शब्द काव्य में ही व्यंजक;
विश्वस्त सभी की वाणी है, विश्वस्त कार्य-पद्धति सब की,
सब का जीवन है खुला पत्र, भावों के यहाँ न विश्लेषक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



काम से न कम है मजदूरी, मजदूरी से कम है न काम,
कर्तव्य पूर्ति के पूर्व कभी जानता न कोई क्या विराम;
है संविधान में ही चोरी, अध्ययनशील जब तब पाते,
धन-धान्य पूर्ण पूरा स्वदेश, आराम लोग कहते हराम।

हैं पुरुष पिता - भाई सारे, महिलायें हैं भगिनी - माता,
वैवाहिक बन्धन में बँध कर पति-पत्नी का चलता नाता;
पूरे वयस्क के पूर्व सदा वर्जित विवाह का संस्कार,
अध्ययन शील हैं नर - नारी, है ब्रह्मचर्य पाला जाता।

जितनी जिसकी आवश्यकता उससे न अधिक कोई लेता,
कोई अभाव में पले नहीं, शासन है कम न ध्यान देता,
हैं माँग-पूर्ति संतुलित सदा, उत्पादन में होता न ह्रास,
शासन भी रहता है सचेष्ट, नागरिक सभी अन्तश्चेता।

है जहाँ स्वच्छता निर्विकार, ईश्वर का वहाँ वास होता,
होते हैं रोग मुक्त प्राणी. लक्ष्मी का भी निवास होता,
है नहीं कहावत मात्र, यहाँ सब हैं निरोग, चिन्ता-विमुक्त,
विपदा से कभी किसी को भी करना न पड़ा है समझौता।

शुचिता का है भारी महत्व, सबके ऊँचे हैं संस्कार,
काया तो स्वस्थ-स्वच्छ है ही, मन भी सबका है निर्विकार;
आचरण सभी के ऐसे हैं, जिनसे पवित्रता परिलक्षित,
आजन्म सभी को हैं सुप्राप्य सादा जीवन, ऊँचे विचार।

रखता न किसी के वैभव पर कोई भी प्राणी है कुदृष्टि,
जनमन में दुष्प्रवित्तियों की स्वाभाविक ही होती न सृष्टि,
हैं लोभ-मोह दोनों भाई, दोनों समाज के प्रबल शत्रु,
दूषण से हो रक्षित समाज, वर्जित है दोनों की प्रविष्टि।

है अहम् मनुज में राजरोग, यह संघर्षों का है सर्जक,
यह साम्राज्यों का विध्वंसक, यह मानवता का संहारक;
दुर्योधन जरासन्ध जैसे कितने ही थे इसके शिकार,
इसको न फटकने देना है, यह है विचार घर घर व्यापक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यदि नहीं नियंत्रण अपने पर मानवता होती है दूषित,
इन्द्रिय-निग्रह का भाव अतः पूरे समाज में है आदृत;
पशु-पक्षी तक निर्भय रहते, मानव स्वाभाविक दयावान,
दाता को हैं उपलब्ध नहीं, आदाता एक न मन वांछित।

दैवी आपदा कदाचित ही, आपत-विपत्ति का नाम नहीं,
आयी विपत्ति जब तक न टले, क्षण भर को भी आराम नहीं;
विपदा से लड़ने में समग्र हैं एक रूप, हैं महावीर,
है धैर्य परीक्षित मित्र, राज्य में उतावली के काम नहीं।

जाने अनजाने भूल चूक सबसे होती, है स्वाभाविक,
कुछ साधारण, कुछ सह्य, किन्तु होतीं असह्य कुछ अत्याधिक;
कोई न ध्यान उन पर देता इतने ऊँचे विचार सबके,
सब हैं उदार, सब क्षमाशील, सबकी रुचि परिमार्जित, सात्विक।

विद्वान सभी पूजे जाते, सबका होता समुचित आदर,
वृद्धों को सभी नमन करते, गुणियों की भी सेवा सादर;
सम्मान सभी का यथा योग्य, धर्मों-वर्णों का है न भेद,
स्वागत में अतिथि-आगतों के सबके हैं कोमल, मीठे स्वर।

प्रेमाम्बुधि लेता है हिलोर, अपनत्व सभी के प्रति महान,
सब हैं सबके हित पूर्ण चन्द्र, सबके हित में सब प्राणवान;
आत्मानुभूति सबमें सम है, जानता नहीं कोई विभेद,
घर घर में गीता की वाणी, जन जन में गीता का वखान।

गीता कहती—सन्देह नहीं, निश्चय ही होता मन चञ्चल,
इससे नित रहिये सावधान, छोड़िये नहीं इसको अविकल;
यद्यपि दुःसाध्य कहा जाता, बश में करना है महा कठिन,
वैराग्य महौषधि है इसकी, अभ्यास दूसरा पथ केवल।

सब वीतराग, रखते न द्वेष, हैं आत्म-नियंत्रण-अभ्यासी,
वैराग्य भाव सब पनपाते, मन वशीकरण के अभिलाषी;
कर्तव्य हीनता कभी नहीं, फल में परन्तु अभिरुचि न नेक,
जग से सबका लगाव दृढ़तर, पर वेदान्ती भाषा-भाषी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ऐसी आदर्श व्यस्था है, कल्पना भी न कर सकी स्पर्श,
वृत्तियाँ सहज भी थीं विलुप्त, थे नहीं मोह, माया, अमर्ष;
भूले दुर्योधन-पाण्डव भी, धूमिल धूमिल सा था अतीत,
हो गयी विषमता भी समता, समता में उत्कर्षापकर्ष।

सतयुग संघर्षों का युग था, अवतारवाद का रहा जनक,
सबका प्रयास, हों अजर-अमर, जगविजयी की थी चढ़ी सनक;
देवासुर थे संग्राम कई, अस्तित्व-बोध का संघर्षण,
सारी पृथ्वी जब तक अशान्त, क्या राज्य-व्यवस्था हो तब तक।

त्रेता में थे श्रीराम हुए, उनके शासन का बड़ा नाम,
सुनते हैं उनके शासन में जनता करती निष्काम काम;
यदि वह आदर्श रहा सचमुच, सचमुच वह था उल्लेखनीय,
संकोच युक्त हम कह सकते—होगा कुछ ऐसा ही ललाम।

× × ×

जन-मानस सहसा हुआ क्षुब्ध, जन जन में कैसा आडोलन,
है वातावरण विकार युक्त, कैसा आकस्मिक परिवर्तन;
राजा को यह सूचना मिली, कलियुग अवतरित धरातल पर,
किस तरह नियंत्रित इसे करें, चल पड़ा एक नूतन चिन्तन।

भूतल पर क्या इसका प्रभाव, करना है इसका विश्लेषण,
कलियुग का किस थल पर निवास, करना है इसका अन्वेषण;
था परामर्श परिषद से, पर पा सका न राजा समाधान,
दुश्चिन्ता का था समावेश, उद्वेग-वृद्धि का क्रम क्षण क्षण।

था अन्धन्तम में टटोलना, थी लक्ष्य प्राप्ति साधन विहीन,
कुछ ही क्षण पूर्ण स्वस्थ, सकुशल, अब क्यों इतना व्याकुल-मलीन!
जिसके अदम्य साहस-बल ने भावी की कभी न की चिन्ता,
उस परक्रमी में क्यों सिहरन, क्यों दीन-क्षीण, उत्साह हीन?

खोजूंगा, कहीं मिलेगा ही, अब तो प्रयास है करना ही,
इस पृथ्वी पर अब सुख-निवास मेरा होगा या उसका ही;
अपनी अमूल्य साँसें देकर जिसको मैंने पाला-पोसा—
होगा असह्य, मेरे रहते होवे विध्वस्त व्यवस्था ही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कलियुग का वास कहाँ, सैना चल पड़ी खोजने को अधीर,
लेकिन कलियुग का मूर्तरूप पा सका न कोई शूरवीर;
गिरि-गुहा, सघन कानन, ह्रद-नद, नापा स्वराष्ट्र का ओर छोर,
आदेशित हो सारी सेना, शिविरस्थ हुयी विथकित शरीर।

राजा की आँखों के नीचे, इतना अनर्थ, इतनी अनीति,
यह सच है या कि स्वप्न, इसकी हो सकी न कुछ क्षण तक प्रतीति;
यह नीच महा दुष्कर्मी है, क्यों बैल-गाय को पीट रहा,
रुक जा! क्या तुझे परीक्षित की मन में थोड़ी भी नहीं भीति?

श्वेताभ! शम्भु के वरद वलद! कृपया बतलायें कौन आप,
घायल, रोमांचित, स्वेद सना सारा शरीर हीं रहा काँप;
यह नर पशु कौन? प्रताड़ित है कर रहा आपको हो निर्मम,
किसलिये कर रहा यह कुकृत्य? किसके वल पर कर रहा पाप?

हे राज्य-पाल! हे धर्मपाल! मैं राज्य नागरिक, धर्मनाम,
पूरे समाज में आदृत हूँ, हर घर है मेरा सुखद धाम;
यह कलियुग है, मुझ से कहता—"भागो, छोड़ो अपना निवास—
इस धरती पर मुझको रहना, तेरा अब इस पर नहीं काम।"

यह गाय नहीं, पृथ्वी सदेह, था मिला कृष्ण का इसे प्यार;
अब तक तो यह थी भारहीन, भोगा है जीवन निर्विकार
चिन्तित है, नैन अश्रु पूरित, सारे शरीर में है सिहरन,
कैसे पापों-सन्तापों का यह सह पायेगी भीम भार।

चिन्ता न कीजिये धर्म देव! मत हो चिन्तित पृथ्वी माता!
होवें दोनों भय से विमुक्त, मैं क्षत्रिय हूँ, आश्रय-दाता;
मैं रहा सदा प्रिय दोनों का, दोनों का हित मेरा अभीष्ट,
मेरे कुल से दोनों का हीं है रहा युग युगों से नाता।

मैं उस दधीचि का अनुयायी, परमार्थ मिटा दी थी काया,
शिवि की स्मृति है, कपोत के हित अपने अंगों को कटवाया;
बिक गए डोम के घर, जिसकी घर घर गाथा गायी जाती,
उस हरिश्चन्द्र का पथगामी, जो नहीं विपत से घबराया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



संकट झेले, परन्तु सबकी मेरे पुरखों ने रक्षा की,
जो कहा—किया उसको पूरा, देकर के बात नहीं 'ना' की;
हे धर्मदेव ! उनकी सन्तति आश्वस्त कर रही दोनों को,
पालूँगा सदा आपको मैं, होगी रक्षा गो माता की।

इतना कह खड्ग हस्त भूपति कलियुग की गर्दन पर झपटा,
रे नीच ! कहाँ अब बचने का, यह कह उसको डाँटा-डपटा;
भय से थर थर काँपता हुआ, भूलुंठित मल का अमर कोश,
"शरणागत मैं भी महाराज !" राजा के चरणों में लिपटा।

राजा का नीचे हाथ, कहा—रे पापी ! रे कल्मष—अधर्म !
पीड़ित करने का पृथ्वी को तुझसे सम्भावित नीच कर्म;
जो है मेरे सिर-आँखों पर, उस धर्मदेव को धमकाया,
तुम तो अधर्म का, लेकिन मैं जानता धर्म का पूर्ण मर्म।

यह धर्म कि जो धर्माचारी, वह राजा से रक्षित होगा,
यह धर्म कि जो अन्यायी है, वह राजा से दण्डित होगा;
आपात काल ही ऐसा है, हो सकता है धर्मोल्लंघन,
अन्यथा धर्म हर थल, हर क्षण में राजा से आदृत होगा।

रे नीच ! तुम्हारा वध धरती पर होगा सुजनों को सम्बल,
फिर से न पनपने पायेंगे अन्यायी, अत्याचारी, खल;
स्वच्छन्द अगर छोड़ा जाये, जन जन में कर लेगा प्रवेश,
अक्षय साम्राज्य बना लेगा, तुझसे फिर होगा कौन प्रबल।

जन जन जीवन के हित में है मुझसे तेरा वध ही अभीष्ट,
जीते जी देख नहीं सकता सारे समाज का मैं अनिष्ट;
यदि मृत्यु पूर्व कुछ कहना है, कह लो इसकी अनुमति देता,
निश्चय समझो, स्वराष्ट्र में मैं होने दूँगा न तुझे प्रविष्ट।

रक्षा होवे शरण्य श्रीमन् ! मैं भी अभ्यागत, शरणागत,
शरणागत के आश्रय दाता ! मैं भी सादर करता स्वागत;
पृथ्वी को मिली शरण वांछित, शरणागत धर्मदेव रक्षित,
मैं भी शरणागत, हूँ अवध्य, मुझको ही होना है निर्गत ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



धर्माधिराज ! क्या धर्म, आप से ही हो सकता व्याख्यायित,
क्या है अधर्म, इसको भी तो श्रीमान करेंगे परिभाषित;
पृथ्वी पर क्या सुख-दुख होते, इनसे भी मैं परिचय विहीन,
मैं कैसे हूँ दुख का स्रष्टा ? कैसे मुझसे यह आयातित ?

है सुना, धरा पर दुःख पाता मानव अपने कर्मानुसार,
मानव को मिली बुद्धि-सुविधा, जिससे करता वह कारबार;
मानव की क्रिया और धी में मेरा है हस्तक्षेप कहाँ,
मैं कैसे विकृत बना दूँगा, मानव यदि रहता निर्विकार।

सतयुग में भी बतलाते हैं, प्रायः होती थी गो-गुहार,
त्रेता में कहाँ बताता है इतिहास, कम रहा अनाचार;
द्वापर की राम कहानी भी है नहीं आप से अनजानी,
फिर मेरा ही वध करने का धर्मावतार का क्यों विचार ?

तूने मेरी दुर्बलता की पीड़ित रग यथा समय पकड़ी,
मैं बहक गया, उस बहकन की मर्यादा ही अब गले पड़ी;
तुझ शरणागत को भी मैंने तेरे जीवन का दिया दान,
मेरी सीमा में मत रहना, देता हूँ चेतावनी कड़ी।

आज्ञा है शिरोधार्य, लेकिन मैं कहाँ रहूँ यह बतलायें,
आश्रय-दाता भी तो श्रीमन् ! श्रीमन् को छोड़ कहाँ जायें;
आदेशित जहाँ, वहीं अपना कर लूँगा ज्यों त्यों मैं निवास,
मैं चाहूँगा जीवन दाता ! कुछ तो सुप्राप्य हों सुविधायें।

हैं जहाँ धर्म के कर्म, वहाँ वर्जित होगा तेरा निवास,
जिसमें अधर्म ही पालित है, उस थल में देता तुझे वास;
सम्भव है इससे रुक जाये मर्यादा का सीमोल्लंघन,
धर्म भी नहीं बाधित होगा, तुझको भी होगा सुख-सुपास।

जूआ होता है जहाँ, वहाँ पर तू डाले अपना डेरा,
यह है अधर्म, सत्यानाशी, अच्छा होगा साथी तेरा,
यह झूठ और छल-छद्मों का है महाजाल लेकर बैठा,
इसमें न धर्म का है प्रवेश, इतना इसका दृढ़तम घेरा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दूसरा स्थान मधुशाला है, यह शराबियों का पूजा-घर,
टाँगें फैला कर के सोवो, आराम करो इसमें जी भर;
ऊँची ऊँची, लम्बी-चौड़ी बातें सुनने को पावोगे,
ढलते सिक्के बुराइयों के, होगा तुझको रुचिकर-हितकर।

इसको वेश्यालय कहते हैं, तीसरा स्थान तुझको देता,
हैं लक्ष्मी पुत्र यहाँ आते, आते समाज के भी नेता;
आसक्ति, मोह, माया, ममता कर्तव्य-हीनता पावोगे,
इनमें तुम घुल मिल जावोगे, ये नहीं धर्म के अध्येता।

यह हिंसा है, अनजाने भी सब को पीड़ित करती रहती,
मन, वचन, कर्म में भी प्रवेश, इसमें है व्यापकता महती;
इसके सँग में तुम लग जावो, होगा यह चौथा स्थान सुखद,
यह है निर्दयता की धात्री, यह नहीं धर्म चरचा सहती।

यह गुणग्राही भी और अवगुणों का भी जनक कहा जाता,
यह है समाज का आकर्षण, यह तो सुवर्ण है कहलाता;
इसका तुमको दे दिया साथ, इससे बढ़ कर कुछ देय नहीं,
यह राजा के भी सिर चढ़ता, तस्कर से भी रखता नाता।

हैं धन्य, धन्य हे महाराज ! शरणागत के आश्रय-दाता !
दे दिया सभी कुछ तो मुझको, इससे बढ़कर मैं क्या पाता;
हैं सभी स्वर्ण के अभिलाषी, सबका सुपास है मुझे सुलभ,
अब तो राजन से भी मेरा चोली-दामन का है नाता।

इतना कह कर उत्फुल्लित हो कलियुग तो अन्तर्धान हुआ,
जब मुकुट उतारा राजा ने तब इस रहस्य का ज्ञान हुआ;
कलियुग मेरे घर-आँगन में, मेरे सिर पर इसका आसन,
नवयुग अब सबको स्वागतव्य, द्वापर का अब अवसान हुआ।

राजा उदार मानस चेता, था भ्रमर सार-संग्रह-कर्ता,
था गुणग्राही, अवगुण त्यागी, था शंकाओं का संहरता;
कलि के गुण-दोषों से परिचित, उसके प्रति तनिक न द्वेष भाव,
कलि की विष्टिता का प्रायः औरों के सम्मुख दम भरता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



संकल्पित है यदि पुण्य कार्य, संकल्प मात्र ही देता फल,
सुविचारों की महानता है, कुविचार सदा जाते निष्फल;
सुविचार क्रियान्वित होने की रखता भी नहीं अपेक्षा है,
जब सम्पादित हो जाते हैं, कुविचारों के फल तब केवल।

कलि को बन्दर घुड़की का बल, बच्चों को डरवाया करता,
जो है कायर, जो अकर्मण्य, खीसें है दिखलाया करता,
जो इन्द्रिय लोलुप, उन्मादी, उन पर इसका भारी प्रभाव,
जो शूर-वीर, कर्तव्यशील, उनसे है कतराया करता।

अब तक राजा पर कलियुग का कोई न चिह्न था परिलक्षित,
ऐसा लगता था, कलियुग ही राजा से रहता है शंकित;
पूर्ववत् सभी उसके विचार, पूर्ववत् कार्य के सम्पादन,
उससे अधर्म था परिभाषित, उससे था धर्म सदा रक्षित।

× × ×

आखेट में न रुचि रखता था, कैसा विचित्र यह आयोजन,
राजा ससैन्य है निकल पड़ा, उद्विग्न हो उठा है कानन;
वह इधर गया, वह उधर गया, उसको मारा, उसका पीछा,
कुछ है विचित्र सा कोलाहल, है क्षुब्ध आज कानन-जीवन।

सर पर आकर हो गया खड़ा तपती दोपहरी का सूरज,
आगे बढ़ना या रुकना है, राजा के कुछ आयी न समझ;
आँखों से धीरे धीरे मृग ओझल ही है होता जाता,
ऐसा लगता, इसका पाना रह गया न मेरे लिये सहज।

बीहड़ कानन, बीहड़ आतप, राजा को बीहड़ भूख-प्यास,
मृगया भी हाथ नहीं आया, बीहड़ चिन्तित, बीहड़ उदास;
रुक गया वृक्ष की छाया में, घोड़े को सहला थपकाया,
है चिह्न जलाशय का न कहीं, राजा मन में बीहड़ निराश।

हो दिशा शून्य, हो बेचारा राजा भटकता चला जाता,
मिलता न मार्ग उस भूपति को, जो स्वयं मार्ग का निर्माता;
छाती जलती, जल रहा कण्ठ, लटपटा रही सूखी जिह्वा,
कामना, कहीं से भी उसको चुल्लू भर भी जल मिल पाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यह तो संयोग मात्र ही था, दिखलायी पड़ा एक आश्रम,
व्याकुल राजा हो उठा स्तब्ध, कैसी विडम्बना, कैसा भ्रम;
बैठा आसन पर एक वृद्ध, निश्चय ही है कोई ब्राह्मण,
देखा मुझको, कर नेत्र बन्द बन गया अभी भारी भरकम।

है कहाँ अर्घ, कैसा स्वागत, पूछता बैठने की न बात,
कोरा पाखण्डी लगता है, काला मन भी, केवल न गात;
कर नेत्र बन्द मुनि होने का मुझसे यह स्वांग रचाता है,
कुछ ऐसा ही लगता मुझको, कोई है दम्भी जन्मजात।

'मैं साधु-सन्त, इस राजा से मेरा अँटका है कौन काम',
यह सोच स्यात् है उदासीन, स्वीकार नहीं मेरा प्रणाम;
जो भी हो जल जीवन मेरा, इससे याजना अपेक्षित है,
राजा की सूखी वाणी से उच्चारित शब्द था राम राम।

अब भी आँखें है किए बन्द, अब भी जतलाता ध्यान-लीन,
पहिले तृषाग्नि से व्याकुल था, अब क्रोधानल के था अधीन;
दोनों ज्वालाओं ने मिलकर राजा को बना दिया अन्धा,
उसके अन्तर-बाहर दोनों थे क्षीण, अत्यधिक थे मलीन।

आश्रम से होकर ज्ञान शून्य बाहर निकला, देखा भाला,
देखा झाड़ी में गति विहीन था मरा पड़ा विषधर काला;
अपने कमान की नोक लगा राजा ने उसको उठा लिया,
आश्रम में लाकर मरा साँप मुनिवर की गर्दन में डाला।

मुनिवर को कहाँ पता, किसने उनके सँग क्या व्यवहार किया,
किसने आश्रम में आकर, है यम-आमंत्रण स्वीकार किया;
राजा को भी क्या पता कि वे हैं परमपूज्य ऋषिवर शमीक—
जिनके ऊपर क्रोधाभिभूत हो उसने अत्याचार किया।

मुनिवर शमीक अपने युग के थे ब्रह्म तत्व-ज्ञाता योगी,
आत्मार्थ विश्व के परित्यागी, परमार्थ विश्व को उपयोगी;
इन्द्रिय-मन पर अधिकार पूर्ण, जीवन है उनका स्थिर-अकाम,
निष्क्रिय हो गयी बुद्धि उनकी, थे प्राण बुद्धि के सहयोगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ऊपर उठ गए विश्व से थे, यद्यपि इससे पूरे परिचित,
थे उदासीन से, क्या सोचें क्या है अधर्म क्या धर्मोचित;
साधन तप में जीवन के क्षण उनके प्रायः बीता करते,
जाग्रत, सुषुप्त थे स्वप्न रहित, वे थे तुरीय में रहते स्थित।

तप से काली पड़ गयी देह, था जटा जूट बिखरा तन पर,
धारण वे वस्त्र नहीं करते, मृगचर्म मात्र उनका चीवर,
अन्तर्मुख जहाँ चेतना है, है कहाँ वहाँ तन की चिन्ता,
नश्वर शरीर बस धरती पर, आत्मा विचरण करती ऊपर।

एक ही पुत्र शृङ्गी नामक, बाल्यावस्था भोला-भाला,
था प्राप्त तेज, तप-बल विशेष, तप कर था बना अग्नि-ज्वाला;
आश्रम से थोड़ी दूर कहीं, ऋषि-सन्तानों में रहा व्यस्त,
सूचना मिली, सोचने लगा, किसने कुकृत्य यह कर डाला।

अन्तर्मन से हो गया ज्ञात, यह तो करनी है राजा की,
उसने की अवहेलना बड़ी तपसी के तप की महिमा की;
वह मूढ़ दण्ड अधिकारी है, कर्मों का फल भोगते सभी,
तप-बल का होगा तभी ज्ञान, पायेगा जब आकी बाकी।

राजा तो वह कहलाता है, जो जन जन का करता पालन,
राजा तो वह कहलाता है, सबके हित में जिसका जीवन;
हम कानन में रहने वाले, हम से उसका क्या सरोकार,
हम तपस्वियों पर भी क्या वह चाहता चलाना है शासन?

तप-बल से क्या होता सम्भव, इसका है उसको ज्ञान नहीं,
कैसे तपसी इस भूतल पर, इसकी उसको पहिचान नहीं;
सबको बस यही समझता है, सब भिखमंगे साधू-फक्कड़,
उसके मन में तपसी के प्रति तृणवत् भी है सम्मान नहीं।

यह है असह्य, उसको अपनी करनी का फल है मिलना ही,
देखूँगा, अब इस धरती पर कैसे करता है मनचाही;
वह भूपति है, मिथ्याभिमान इसका न उसे होने दूँगा,
भूतल पर अब उसका न काम, है पटाक्षेप जीवन का ही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यह कहते ही वह ऋषिकुमार हो उठा अत्यधिक उत्तेजित,
कर नेत्र बन्द कुछ पढ़े मन्त्र आहूत शक्ति तप की सञ्चित;
कौशिकी नदी का पावन जल आचमन, हस्त का प्रक्षालन,
ऊँचे स्वर में था अभिभाषित, उच्चरित शब्द भी उद्वेलित।

ध्यानावस्थित तपसी के सँग जो की करनी, जाती न सहीं,
इस पृथ्वी पर उस राजा को अब रहने का अधिकार नहीं;
मैं शाप परीक्षित को देता आधार तपोबल का लेकर,
सातवें दिवस तक्षक आकर इसको डँस ले, बस इतना ही।

टूटी समाधि जब मुनिवर की, इस दुर्घटना का हुआ ज्ञान,
शृङ्गी से होकर क्षुब्ध कहा—तपसी तो होता है अमान;
जो वीतराग कैसा अमर्ष, क्रोधी को कब आत्मानुभूति ?
तामस मिश्रित तप कर तूने है सृजन किया नूतन विधान।

राजा न कभी था अपराधी, राजा न शाप का अधिकारी
उसको देकर चूणान्त दण्ड, तूने है किया पाप भारी;
इतनी साधारण सी गलती, इतना भीषण इसका प्रतिफल !
पृथ्वी से वह उठ जायेगा, होगी अनाथ वसुधा सारी।

भीषण गर्मी, सन्तप्त वायु, प्राणी-समाज बेसुध सारा,
सूखे सारे झरने-सोते, सूखीं सारी नदियाँ-नारा;
जल था अप्राप्य, अत्यधिक व्यथित, भटका बेपथ, हो दिशाशून्य,
आश्रम मे पीड़ित आया था, भूखा-प्यासा था बेचारा।

वह भूपति था, था अर्घ्य और आसन का सम्यक् अधिकारी,
जिससे पालित हम साधु-सन्त, जिससे पालित वसुधा सारी—
उसको न मिले चुल्लू भर जल ! उपलब्ध न मुट्ठी भर दाना !
ऊपर से उसको मृत्यु-दण्ड ! समझी न तनिक भी लाचारी ?

तू अभी निरा बालक ठहरा, इतना भी तुझको नहीं ज्ञान—
यदि रहा नहीं त्यागी राजा, सारी वसुधा होगी मसान;
राजा के बल पर ही जनता यापन करती सुखमय जीवन,
जनता की सुख-सुविधा का है तपसी बालक को कहाँ ध्यान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पृथ्वी से यदि राजा सशक्त उठ गया, जानते क्या होगा ?
शासन की सुघर व्यवस्था ही मिट गयी, जानते क्या होगा ?
होगा अशान्त जन का जीवन उच्छृङ्खल, बिखरेगा समाज,
जो दबे हुए हैं अपराधी, जब सक्रिय, जानते क्या होगा ?

जो प्रजा सुरक्षित, है निर्भय; कल वही अरक्षित, भयाक्रान्त;
अत्याचारों का समावेश, हरजन विक्षुब्ध, हर मन अशान्त;
जन जन का होगा उत्पीड़न, बाधित होंगे सब धर्म कार्य,
होगा अनाथ मानव-समाज, पीड़ित होगी वसुधा नितान्त।

पृथ्वी पर होगा आधिपत्य वटमारों, चोर-लुटेरों का,
सुख-सम्पति तो जाएगी ही, जायेगा मान घनेरों का;
हम साधु-सन्त भी नहीं अछूते रहने को दुष्कर्मी से,
धर्मी को रजनी, दिन होगा माया-ममता के चेरों का।

सद्धर्म नहीं चल पायेगा, होगा मानवता का विनाश,
मातायें कम, रमणियाँ अधिक, मानव भोगों का क्रीतदास,
लम्बी-चौड़ी मख शालायें जी भर ठंढी साँसें लेंगी,
देवालय के पट सदा बन्द, देवों में होगा अविश्वास।

केवल इतिहासों के पन्ने आश्रम की कथा सुनायेंगे,
जीवन के चारों आश्रम भी उद्धरण मात्र रह जायेंगे;
'सुनते हैं कभी ब्रह्मचारी धरती पर घूमा करते थे'
व्यंगात्मक बोली में बालक इसकी भी हँसी उड़ायेंगे।

कैसे हैं वेद, शास्त्र कैसे, क्या होती पौराणिक गाथा ?
थे कौन उपनिषद निर्माता, जिनका पगलाया था माथा ?
ऐसे भोंड़े, ऐसे भद्दे जब प्रश्न उठाये जायेंगे—
तब बात समझ में आएगी, कितना महत्त्व राजा का था।

पाणिनि भुलवाये जायेंगे, हाँ जानेंगे सब लिंग-भेद,
शास्त्रज्ञ वही, वतलायेगा जो कोक-शास्त्र का अनुच्छेद;
धर्मज्ञ वही, जो तर्कों से ईश्वर की सत्ता झुठलाये,
वेदज्ञ वही, जो पुंसकत्व की औषधि का करता विभेद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सहयोग-भाव होगा विलुप्त, कुत्ता-बिल्ली होगा मानव,
संयमी नहीं कामी होंगे, होगा नर भी बानर अभिनव;
कुछ अर्थदास, कुछ चर्मदास, तब कहाँ राम या कृष्णदास !
शुद्धता रक्त की अनुपलब्ध, प्रायः संकर होंगे उद्भव ।

जितने शासन के अधिकारी, रक्षक स्वराष्ट्र के हैं जितने,
जो आज राज्य-हित-चिन्तक हैं, सबके शुभेच्छु जो आज बने;
होंगे सब भ्रष्टाचार लिप्त, सारे रक्षक होंगे भक्षक,
जब नहीं परीक्षित होगा तो सारे लम्बे होंगे ठिगने ।

हे राम ! परीक्षित आश्रम में आया था जल-जीवन पाने,
वह चला गया जीवन विहीन, बालक से शापित अनजाने;
इस महापाप का महाभार क्या बालक के वश का होगा,
ईश्वर तेरी लीला अपार अज्ञानी शिशु क्या पहचाने ।

अपने बेटे की करनी का मुनिवर को पश्चाताप बड़ा,
राजा ने जो कुछ किया, उसे मुनिवर ने कभी नहीं पकड़ा,
उसको महात्मा कहते हैं जो औरों के हित में चिन्तित,
उसने कब अपनी चिन्ता की, क्या बना और क्या क्या बिगड़ा ।

× × ×

राजा घर पहुँचा, स्वर्ण मुकुट उसके सिर से जब उतर गया,
मिट गयी भूख, मिट गयी प्यास, पैदा था मन में ज्ञान नया;
वह तो मुनिवर थे महातपी, कैसा उनके सँग अनाचार !
वह निन्दनीय करनी कैसे मुझ हतप्रभने सम्पन्न किया ?

वह निरपराध ब्राह्मण अपना तप-तेज छिपाये बैठा था,
वह ब्रह्मतत्व ज्ञानी ब्राह्मण, प्रभु ध्यान लगाये बैठा था;
मैं हतभागी कलि का मारा पहिचान न पाया मुनिवर को,
अपने मन-अहंकार को वह, निर्द्वन्द्व सुलाये बैठा था ।

कितना प्रशान्त ! सागर सा था, क्रोधाग्नि अगर उसकी क्षण भर-
उठती, क्या बच पाता कोई एक भी प्राण इस पृथ्वी पर ?
यदि ऐसा कहीं हुआ होता, मेरा प्रायश्चित हो जाता,
कलुषित जीवन का भोग निन्द्य, चाहता त्याग दूँ तन सत्वर ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सूचना मिली—ब्राह्मण-कुमार शृंगी ने उसको दिया शाप,
कितना अच्छा, जल जायेगा मेरा सम्पादित महा पाप;
सातवें दिवस तक्षक आकर सारे प्रपंच को पी लेगा,
सुन्दरतम दण्ड-व्यवस्था यह, मिट गये सभी मानसिक ताप।

राजा के चिन्तन का प्रवाह गतिशील, दैव को अभिवन्दन,
आसक्ति पूर्ण यह जीवन था, माया का था दृढ़तर बन्धन;
जीवन के दिन अब इने गिने, अब तो विरक्ति है स्वाभाविक,
राजा का मन उल्लास पूर्ण, यद्यपि घर-पुर में था क्रन्दन।

गंगा का पावन पुलिन स्थान रमणीक, शिविर का आयोजन,
होने को है आरम्भ यहीं आमरण प्रजापति का अनशन;
भूतल के ऋषि-महर्षियों का मेला लग गया, हुआ जमघट,
राजा ने सबको दिया वास, उससे सबका था अभिनन्दन।

मैं धन्य, धन्य यह गंगा तट, जिसको ऋषियों की कृपा सुलभ,
उन चरणों की रज मुझे प्राप्त, जो है तीर्थों को भी दुर्लभ;
मुझसे इस नश्वर जीवन में हो गया एक भीषण कुकृत्य,
अपमानित किया महा मुनि को, ऐसा उस समय हुआ हतप्रभ।

ब्राह्मण कुमार ने दिया शाप, हो गया वही वरदान मुझे,
मैं ऋषि-मुनियों का कृपा-पात्र, हो रहा आज अभिमान मुझे;
मेरे सुकर्म तो कुछ हैं ही, अन्यथा कहाँ दर्शन होते,
यह शाप अगर सच कहिये तो बन गया कृष्ण भगवान मुझे।

अब तनिक नहीं चिन्ता मुझको, तक्षक या स्वयं काल आये,
इस नश्वर तन का क्या करना, इस क्षण जाये उस क्षण जाये;
मैं सबके चरणों में नत हूँ, सबसे करबद्ध विनय मेरी,
उस परम ब्रह्म परमेश्वर की कुछ कथा कहें, कुछ गुन गायें।

दूसरी प्रार्थना ब्रह्मविदो! कर्मानुसार हो जहाँ जनम,
ईश्वर के प्रति मुझको न कहीं तर्कना पड़े, हो तनिक न भ्रम;
जो हों भगवत प्रेमी उन पर श्रद्धालु निरन्तर मन मेरा,
पृथ्वी के सभी प्राणियों में मैत्री का भाव न होवे कम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ऋषियों के कृपा पात्र थे ही, उनसे सुप्राप्य था साधुवाद,
राजर्षि शिरोमणि ! निश्चय ही ब्रह्मज्ञ आप हैं निर्विवाद,
उस परम ब्रह्म की सन्निधि हित, है त्याज्य आप से सिंहासन,
जन्म ही नहीं सम्भव, यदि हो, सम्भव कब हो सकता प्रमाद !

आत्मानुभूति से तुष्ट, श्रेष्ठ शुकदेव-आगमन था हितकर,
राजा के हित में सबने ही माना इसको अति श्रेयस्कर;
सबका मत, सबसे परामर्श, ऋषियों का था अन्तिम निर्णय,
व्यासासन पर हों सुखासीन, शुकदेव व्यास से भी बढ़कर।

भागवत पुराणों में महान, भगवान व्यास की कीर्ति अमर,
हिन्दू अब भी स्वमुक्ति के हित इसको सुनते, चर्चा घर घर;
श्री कृष्ण चन्द्र की लीला का इसमें है हुआ विशद वर्णन,
उस मधुर कथा का सातों दिन था हुआ पाठ सुखकर-मनहर।

अन्तिम दिन निर्धारित बेला, तक्षक आया, हो गया काम,
मण्डल में हर मुँह बोल उठा—श्रीकृष्ण-कृष्ण श्रीराम-राम;
उद्घोषित था ऋषि-मुनियों से द्वापर बीता कलियुग आया,
नाटक का अन्तिम पटाक्षेप, पूरा मंचन अब है तमाम।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

## दशम सर्ग

■

# पुनरावृत्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब नहीं कृष्ण, अब नहीं परीक्षित राजा,
बीते युग की स्मृति ! मार्ग दिखाने आ जा;
कैसे तम से प्रकाश का जी बहलेगा,
अब उलझ गयी गुत्थी, आकर सुलझा जा।

अब देख रहा मेरा धूमिल मुख दर्पण,
मैंने भी अब अपने को किया समर्पण;
थी धर्मराज की देखी राज्य-व्यवस्था,
कर दिया परीक्षित को था सब कुछ अर्पण।

वे कहाँ रहे दिन और कहाँ वे रातें,
देखे कितने वसन्त, कितनी बरसातें;
हंसों को मैंने मोती कभी चुगाये,
अब गिद्ध, बाज, चमगादड़ हैं मँड़राते।

जिन हाथों से था घी का दिया जलाया,
मिट्टी का तेल न उनसे जाये लाया;
वे हाथ शूकरों को कैसे थपकायें—
जिन हाथों ने था हाथी कभी चराया।

वीरों की मैंने कही अनेक कहानी,
थी सुनी-सुनायी कभी विदुर की बानी;
अब कौन बीर, जिसकी कवि गाथा गाये,
क्या की जाये अब लिखने की नादानी।

अब वही बीर, जो निबलों को धमकाये,
नीतिज्ञ वही, जो सबको धता बताये;
है वही धर्म, जो रोटी-मक्खन दे दे,
कर्तव्य वही, जो अपने मन को भाये।

अब नहीं कृष्ण, अब नहीं प्रकाश-सहारे,
अन्धन्तम पथ को अब चपला चुमकारे;
पद-चिह्न सत्य के किस प्रकाश में खोजूँ,
अब अन्धकार में हैं विलुप्त पथ सारे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



आये गौतम, दुख-दर्द जीव का जाना,
हो गए बुद्ध, मानवता को पहिचाना;
दी सीख अहिंसा की घर घर को जाकर,
जिसने समझा, उनकी बातों को माना।

है सत्य किसी को कभी नहीं छल सकता,
युग युग असत्य का राज नहीं चल सकता;
कब धोखा-धड़ी, छलावा हुआ प्रशंसित,
ऋजुता में हैं विश्वास नहीं टल सकता।

मानव मानव से क्यों विद्वेष बढ़ाये,
क्यों एक, दूसरे के न काम में आये;
मैत्री का भाव पुष्ट जन मन को करता,
अब सहन शीलता को पनपाया जाये।

वह महाबली, औरों का मान बचाता,
वह शत्रु हीन, जो निर्भय देखा जाता;
शत्रुता पाशविक वृत्ति, कहा गौतम ने,
पशुता से मानवता का कैसा नाता।

जग में प्रकाश कुछ दिन उनका भी फैला,
थोड़े दिन में ही हुआ मनुज मन मैला;
किसने पाया निर्वाण, कौन बतलाये,
मानव बनकर रह गया चाम का थैला।

नामी अशोक थे बड़े अहिंसा वादी,
भारत में लाटें जगह-जगह गड़वा दी;
उपदेश बुद्ध के अंकित उनके ऊपर,
शासन ने पशु-वध-बन्दी भी करवा दी।

हैं लाट पड़े अब भी धरती के ऊपर,
पशुओं के जीवन पर है रोज सनीचर;
पत्थर की छाती पर सच बोलो अंकित,
है असत पल रहा मानव के अभ्यन्तर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



गौतम के अब भी हैं अनेक अनुयायी,
छिपकली और गिरगिट पर हाथा-पायीं;
कर दिया त्रिपिटकों में गौतम को बन्दी,
हरते धन-धरती औरों की बरियायी।

क्या महावीर ने कुछ कम काम किया है ?
किससे कम इस भूतल पर नाम किया है ?
उनके जीवन में बनी असीम अहिंसा,
जो अशिव शक्ति, उसको अभिराम किया है।

उनके शिष्यों की संख्या अब भी भारी,
अब कहाँ साधना की उनकी तैय्यारी;
मुनियों में है अब उनका धर्म समाहित,
सूर्यास्त पूर्व भोजन उनकी लाचारी।

क्या प्राणी को वे कम पीड़ा पहुँचाते ?
क्या नहीं तस्करों से रखते वे नाते ?
क्या काम-क्रोध की सीमा से बाहर हैं ?
क्या जमाखोर उनमें कम पाये जाते ?

की चन्द्रगुप्त ने राज्य व्यवस्था उत्तम,
कर दिया बन्द सारे अपराधों का क्रम;
ताला क्या कहलाता, न किसी ने जाना,
थे सभी कमाते, सम्मानित सबसे श्रम।

सब कुछ था, लेकिन उसके ही जीवन भर,
फिर वही कलियुगी राज प्रजा के ऊपर;
संघर्षों की दुनिया फिर से हरियायी,
हो गयी शान्ति मानव-जीवन को दूभर।

ईसा ने हिंसा को जी भर ललकारा,
सत-पथ को झाड़ा, पोंछा और सँवारा;
ईश्वर तो नहीं, बना ईश्वर का बेटा,
अपनी करनी से हुआ सभी को प्यारा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



उस महापुरुष ने करुणा को लहराया,
था हर मानव में दयाभाव पनपाया;
सौजन्य बन गया था मानव का साथी,
मैत्री को सबने अपना हाथ बढ़ाया।

आजन्म अहिंसा का था बड़ा पुजारी,
थी सबके प्रति मन में उदारता भारी;
वह था न किसी का शत्रु, शत्रु उसके भी,
यह एक मात्र है कलियुग की बलिहारी।

उसके शिष्यों से भरा विश्व का कोना,
वे भी अब करते प्राय: काम घिनौना;
लड़ते रहते हैं, नाम धर्म का लेकर,
जो है महान कर डाला उसको बौना।

पीते शराब, घर घर में करते चोरी,
ताकत वालों की चलती सीना. जोरी;
समलिंगी से सम्बन्ध पुरुष रखते थे,
औरतें तबीयत की थीं बड़ी छिछोरी।

थे जगह जगह ऐसे बाजार लगाते,
नारी-नर बेचे और खरीदे जाते;
जर-जन-जमीन के लिये झगड़ते रहते,
औरों की सुलझी गुत्थी भी उलझाते।

इन्सान खाहिशों का गुलाम था भारी,
हर सूद खोर कहलाता था व्यापारी;
थी लूट पाट, खूँरेजी, कतल, तबाही,
रास्ते बन्द, थी जगह जगह बटमारी।

एक ही पुरुष दर्जनों औरतें रखता,
खाकर अफीम था सदा पिनकता रहता;
औरों के श्रम पर रहता था वह निर्भर,
वह हराम खोरी से था नहीं झिझकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हर घण्टे नया विवाह, तलाक जबानी,
कामी मुताह करते. विवाह बेमानी;
पशु भी ऐसा व्यवहार नहीं करते हैं,
इन्सान हरकतें करता था शैतानी।

यदि नहीं मुहम्मद जन्म धरा पर लेते,
इन मुर्दों को यदि नहीं अमृत रस देते;
रेगिस्तानी ढूहों में सब पच जाते,
इन्सान नहीं रहता, रह जाती रेतें।

बद थे जितने उन सबको नेक बनाया,
संयम की भी महिमा उनको समझाया;
हो गयीं बन्द चोरी, शराब खोरी भी,
मानव का पद गुलाम ने भी था पाया।

रह गये अरब में कहीं न लुच्चे पाजी,
परहेजगार, सब होने लगे नमाजी;
लग गये काम में, लगे कमाने-खाने,
हो गयी बन्द मैखाने की लफ्फाजी।

अब नहीं रही बच्ची की जान मरायी,
महिलाओं ने समाज में इज्जत पायी;
पुरुषों की शादी पर पाबन्दी लागू,
खुशहाली फिर घर घर में पड़ी दिखाई।

अब शशक सींग हो गए सभी बटमारे,
ताला विहीन थीं दूकानें–बाजारें;
हर काम और आराम समय से होते,
वांछित न अन्य के थे अवलम्ब-सहारे।

पहिले औरों को खिला बाद में खाता,
रखता पड़ोस से था सुख-दुख का नाता;
आपस में अच्छा मेल जोल का क्रम था,
था नहीं सबल से निबल सताया जाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



इन्साफ तौल करके करता था काजी,
मानव में मानवता आ पुनः विराजी;
हो गए नेक, बदकारी सबको भूली,
हो गयी कृष्ण-ईसा की स्मृति फिर ताजी।

थोड़े दिन तक ही ऐसा कुछ चल पाया,
फिर खुदगरजी का दौर पुराना आया;
मानवता की समाधि का लम्बा-चौड़ा—
मकबरा, करबला में था गया बनाया।

पृथ्वी के चप्पे चप्पे पर अनुयायी,
आज भी मुहम्मद के पड़ते दिखलायी;
घर घर में आज मुहम्मद तो जीवित हैं,
उनके सिद्धान्तों की है मात्र दुहाई।

बहुतेरे सत्ता के हैं भूखे-प्यासे,
प्रतिदिन देखे जाते हैं नए तमाशे;
औरों से मेल-मुहब्बत बनी कहानी,
भाई की गर्दन पर तलवार-गँड़ासे।

होती मानवता की अब गला घुँटायी,
अब तो हराम की है प्रारम्भ कमायी;
अब कहाँ धर्म की ऊँची ऊँची बातें,
पशु-वध में बेचारी रहतीं सिमटायी।

नानक आये थे स्नेह प्रदीप जलाने,
आये मानवता को जीवन दे जाने;
उनका प्रकाश भी उनके जीवन तक ही,
उनके चेले भी चला रहे पैमाने।

अपने युग के वे रहे सन्त बहुचर्चित,
लाखों मानव अब भी हैं उन्हें समर्पित;
उनके शब्दों की अब केवल पूजा है,
वे कहाँ हो रहे जीवन में कार्यान्वित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अध्यात्म जगत के अनगिन जगमग तारे,
तम में पथिकों को देते सदा सहारे;
है धर्म-रात तो पूर्ण चन्द्र ही लाता,
पर सारे ग्रह-नक्षत्र धरा को प्यारे।

सबका अपना अपना प्रभाव धरती पर,
मानव-भविष्य इनकी गति-विधि पर निर्भर;
इनके द्वारा शिव ही होता है स्थापित,
चाहता अगर होता शिव नर अपना कर।

ऋषि दयानन्द, श्रीरामकृष्ण क्या कम थे?
अरविन्द, विवेकानन्द न कम भरकम थे;
हैं रामतीर्थ, ऋषि रमण विचारोत्प्रेरक,
पृथ्वी पर कितने साधु-सन्त अनुपम थे।

मानव मन के संवेग न हुए नियंत्रित,
इनमें भी अशिव तत्व सर्वाधिक उत्थित;
ऋषि-मुनियों के ऊँचे विचार बहुचर्चित,
मानव-मन के तम को कर सके न विचलित।

गांधी का नाम समूचे जग में छाया,
भारत में जन जन की जिह्वा पर आया;
सर्वोदय का था दिया देश को नारा,
वह शुद्ध गृही था, महात्मा कहलाया।

इस असत काल में बना सत्य अन्वेषक,
था राम-राज्य का एक मात्र उपदेशक;
जिस युग में हिंसा का है ताण्डव नर्तन,
उस युग में हुआ अहिंसा का विश्लेषक।

उसके शिष्यों की भी परम्परा भारी,
सब सीधे सादे, त्यागी खद्दरधारी;
आदर्श रूप वे सब माने जाते थे,
पूरे भारत ने उनकी भरी हुँकारी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दे दिया राज, फिर उनको भी मद छाया,
हो गये अर्थ के दास, ध्येय विसराया;
हो गयी कल्पना राम-राज्य की धूमिल,
शोषण-उत्पीड़न किसने, कहाँ मिटाया ?

चेहरे पर बाँधा सबने बड़ा मुखौटा,
कथनी असीम, कर्तव्य बहुत ही छोटा;
थे चले बाँधने विश्व, स्वयं प्रतिबन्धित,
बाँटने लगे जन जन में परमिट-कोटा।

गांधी के सिद्धान्तों की चरचा करते,
कथनी में केवल उनके हित में मरते;
चौकी की बात नहीं चौके में लाते,
हैं मात्र बात में निबलों का दम भरते।

है बात अभी कल की, जब गांधी आया,
है नहीं चितास्थल भी उसका ठंढाया;
पी डाली उसकी अर्जित सभी कमाई,
दो दिन भी तो गम उसका नहीं मनाया।

गांधी की बातें अब न कहीं चल पातीं,
उनके चेलों को और नहीं अब भातीं;
अपने हित में जब तब है नामोच्चारण,
प्रायः समाधि पर ही दुहरायी जातीं।

शासन की भी भारी दुश्चिन्त्य व्यवस्था,
पानी है महँगा और खून है सस्ता;
पूरा समाज ही लगता ठग-बटमारा,
कुछ ऐसी है समाज की हीनावस्था।

है धनोपार्जन ध्येय, अनगिनित साधन,
निष्काम नहीं ईश्वर का भी आराधन;
अब भ्रष्ट हो गया शिष्ट, शिष्ट बेचारा,
आचार और ईमान भ्रष्ट अनुशासन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



नैतिकता तो है मूर्खों की परिभाषा,
कूएँ के पास सदा जायेगा प्यासा;
जैसे सम्भव, औरों का धन हथियावो,
फुसला-बहला कर या देकर के झाँसा।

इसका प्रतिफल चोरी, डाका, हत्यायें,
तस्करी-जमाखोरी की नित्य क्रियायें;
औषधियों तक में है बेहिचक मिलावट,
क्या जाने क्या होता, किसको बतलायें ?

पीकर के भारी गम भुलवाया जाता,
जूए से क्लब का मेम्बर जी बहलाता;
विस्तृत समाज में नर-नारी का जोड़ा,
किन किन से, कैसा कैसा रखता नाता।

है जहाँ अर्थ, अपराधी नहीं निरर्थक,
आरक्षी भी बनता अपराध समर्थक;
जब पैसा ही है ध्येय, करो मनमानी,
लेना खरीद, रक्षक हो चाहे भक्षक।

अपराधी भी हैं यहाँ खरीदे जाते,
पैसे वाले उनसे अपराध कराते;
कानूनी पंजे का न उन्हें भय होता,
दृढ़तर हैं साक्षी-अपराधी के नाते।

अब नहीं शिष्ट का, है अशिष्ट का आदर,
उसके कृत्यों पर सभी डालते चादर,
हैं बड़े बड़े भी उसको भैय्या कहते,
छोटों का तो वह पैदाइशी बिरादर।

इसके पीछे है छिपी वोट की माया,
है लोकतंत्र में यह कुभाव घुस आया;
यह सर्वमान्य है तंत्र, प्रशंसित सबसे,
इसने परन्तु अपराधों को पनपाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



करता है यद्यपि छानबीन न्यायालय,
निबलों को अब भी सुलभ न इसका आश्रय;
पैसे वाला है यहाँ भी न पिछलग्गू,
चाहिये यहाँ सत्योदय, किन्तु धनोदय।

पैसे के बल है सही गलत हो जाता,
पैसे के बल है गलत सही कहलाता;
यह अर्थवाद सब में प्रभावशाली है,
परमार्थ-स्वार्थ सबसे है इसका नाता।

इससे अशान्ति-प्रतिहिंसा हरियाती है,
सुख-शान्ति-तोष की खेती चर जाती है;
निर्धन का तो चिन्तित रहना स्वाभाविक,
धनपति को भी सुख-नींद नहीं आती है।

खाद्यान्नों को भी है यह विकृत बनाता,
अब कहाँ शुद्ध सामान कहीं मिल पाता;
है जमाखोर भी घात लगाये रहते,
यह बड़े किसानों का भी जी ललचाता।

अब श्वेत क्रान्ति की बात रोज है होती,
रोगी के पय में भी चल रही कटौती;
कितने बच्चे, जिनको है दूध मुअस्सर?
पय पर पानी का है अधिकार बपौती।

भारत है निर्धन देश, चाह डालर की,
भेजो बाहर सब सामग्री घर भर की;
क्या दूध, दही, मेवे, फल शक्कर होंगे,
बाहर की अधिक, नहीं चिन्ता भीतर की।

यह लोकतंत्र, सब हैं इसका गुन गाते,
इसकी सराहना में हैं नहीं अघाते;
पर असन्तोष इसने इतना उपजाया,
सब हैं अभाव में ही अपने को पाते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हैं अनुपलब्ध सामान सभी आवश्यक,
हैं भारतीय ढक पाते अभी न तन तक;
अब भी प्रयोग में है चीथड़े गँठीले,
है लाज छिपाने का प्रयास ही भरसक।

छत खुला गगन ही है कितने सिर ऊपर,
नगरों में हैं फुटपाथ अनेकों के घर;
झोपड़ी-झुग्गियों में दिन काट रहे हैं,
पशुओं का जीवन भी कितनों को दूभर।

थे . चारो वेद कभी जिनकी जिह्वा पर,
वे एक मात्र रहते पुस्तक पर निर्भर;
ऐसा लगता, स्मृति शक्ति नहीं आवश्यक,
अब यन्त्र बन रहा है मानव से बेहतर।

शिक्षा वह, जिसमें हो शिव की व्यापकता,
पूरित जिससे समाज की आवश्यकता;
उन्नयन राष्ट्र का कहाँ सेक्स शिक्षा में,
कुछ ऐसी हो, पनपे कुछ तो नैतिकता।

शिक्षा का मूलाधार राष्ट्र का बालक,
क्या नहीं जानता इसे राष्ट्र-संचालक ?
कितने शिशु-बालक आज राष्ट्र से पालित ?
कितने इस भावी निधि के हैं उत्प्रेरक ?

आहार संतुलित इन्हें नहीं मिल पाता,
फल, दही, दूध इनको है कौन जुटाता;
नंगे, चीथड़े लपेटे घूम रहे हैं,
अपराधी इनको है हथियार बनाता।

ये भिखमंगों की टोली में मिलते हैं,
नकली साधू की झोली में मिलते हैं,
गलियों के कुत्तों से भी अधिक उपेक्षित,
ये फूल तोड़ लेने को ही खिलते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



शिशु-बालक का यदि रहा उपेक्षित जीवन,
कैसे समाज में होगा शिव परिवर्तन ?
है रामराज्य की अगर कल्पना मन में,
नैतिक शिक्षा का वांछित है आयोजन।

हैं घूम रहे बबुआजी बाल बढ़ाये,
है कौन कि जो इनको समझाने जाये;
वरदान या कि अभिशाप राष्ट्र जीवन के,
ये हैं समाज की रीढ़ कौन बतलाये।

इनसे समाज को बड़ी बड़ी आशायें,
ये गीत सिनेमा के गलियों में गायें;
पीड़ित समाज को इनसे रक्षा वांछित,
ये काट रहे हैं दिन शतरंज बिछाये।

क्या राष्ट्र नायकों को न पता है इसका ?
रखना युवकों से अधिक ध्यान है किसका ?
यदि रही मात्र रोटी–पानी की शिक्षा,
चलता ही रहता रोटी–पानी सब का।

शिक्षा की प्रचलित है त्रासदी व्यवस्था,
अपराधों की टकसाल कि शिक्षण-संस्था !
अपनी संस्कृति का नहीं जहाँ है सिञ्चन,
मांगलीकरण जीवनका, हीनावस्था।

परिवारों की टूटन, होगी श्रेयस्कर ?
भावना स्वार्थ की उभर आ गयी ऊपर;
कुछ इनी गिनी साँसें तो सुख से लेते,
वृद्धों का जीवन हुआ जा रहा दूभर।

है कहाँ मूल्य श्रमिकों के उत्पादन का ?
क्या आदर होता है श्रम के जीवन का ?
रुपया रुपये से द्विगुणित, त्रिगुणित है,
श्रम की पूजा ! श्रम मात्र श्रमिक के मन का।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यह भूमि कभी कहलाती वीर-प्रसूती,
देखी हमने भी इसकी शक्ति अकूती;
अब कहाँ भीम-अर्जुन की हैं हुंकारें,
अब कहाँ गयी बीते दिन की मजबूती ?

है अन्धकार मन का चेहरे पर छाया,
पिचके गालों पर जटा जूट लहराया;
ये नौनिहाल, हैं नौजवान भारत के,
इनके ही बल पर ऋण हकीम ने पाया।

अब कहाँ रहे पातञ्जलि, उनका संयम,
है प्रश्न कि कैसे हो जीवन का नियमन;
है नसबन्दी इनके कुचाल की संगिनि,
करता निरोध इनकी गति का संचालन।

साधना लीन बीता है सारा जीवन,
अनगिन ग्रंथों का किया इन्होंने प्रणयन;
ये सरस्वती के वरद पुत्र, क्या समझे !
अब काट रहे हैं ज्यों त्यों जीवन के क्षण।

जीवन बीता धूर्तता, लवारेपन में,
कोई कुकृत्य है बचा नहीं जीवन में,
ये लोकतन्त्र के वरद पुत्र, क्या समझे !
ये हैं प्रधान जी, पूजित हैं जन जन में।

यह भारत है, यह प्रदर्शनी अनुपम है,
सब कुछ है, यहाँ कमी का केवल भ्रम है;
जो कुछ अभाव है, केवल है इतना ही—
नैतिकता ही इसमें सर्वाधिक कम है।

मानव का मानव से विचित्र सा नाता,
है कहीं जाति, तो कहीं रंग रँग लाता;
बोली-बानी में, वर्ग-धर्म में सिमटा—
बँट कर मानव है मात्र व्यक्ति दिखलाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



पहिले थी केवल एक, कहाँ दुवराती,
अब तो नहरों पर नहर निकाली जाती;
कैसे क्षीणता रुके इसकी, सब चिन्तित,
सन्तोष यही, अब भी गंगा कहलाती।

माला की सारी मनियाँ बिखर गयी हैं,
स्वाभाविक ही है, चिन्ता नहीं नयी है;
है सुदृढ़ सूत्र की खोज, अगर मिल जाये—
तम के ऊपर प्रकाश तब तो विजयी है।

है राष्ट्रवाद ने कम गत नहीं बनायी,
मानव की यह सिमटन विशेष दुखदायी;
पहिले भी संघर्षों का रहा विधाता,
अब भी इसका है केवल उत्तरदायी।

यह नहीं कल्पनामात्र, कभी व्यवहारित,
भारत में पहिले कभी हुआ था पारित;
"है वसुधा ही कुटुम्ब" अब भी उद्धृत है,
होना इसको चाहिये अधिक सुविचारित।

जो संघर्षों की धुरी, मिटा दी जाये,
मानव मानवता को अब तो पनपाये;
वैज्ञानिक दुनिया आज बहुत ही छोटी,
इसके विनाश-हित क्यों ब्रह्मास्त्र बनायें।

मानव मानव है एक, उठे फिर नारा,
फिर तो मानवता को उपलब्ध किनारा;
ओ चन्द्र-शुक्र की गतिविधि के अन्वेषक !
मानव को अब छोड़ना नहीं बेचारा।

संहारक अस्त्रों का विनाश आवश्यक,
'आश्वस्त निबल हों' बने तत्व निर्देशक;
सबलों को इसकी पहल स्वयं करनी है
है निबल चाहता ही ऐसा कुछ भरसक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon:

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



है कठिन नहीं, चल सकती एक व्यवस्था,
पनपानी होगी इसके लिए अहिंसा;
जो मनोवेग शिव नहीं, नियंत्रण उन पर,
शिव संवेगों की मेटें हीनावस्था।

उपलब्ध विश्व को अब सारी सुविधायें,
क्यों नहीं लाभ हम इसका आज उठायें;
करते सहायता बन कर नेक पड़ोसी,
क्यों नहीं एक घर के प्रत्येक कहायें।

यह लोकतन्त्र जग को वरदान मिला है,
यह विश्व वृन्त पर शतदल कमल खिला है;
अपनी करनी से इसको मत मुरझा दें,
यह मानवता का सबसे सुदृढ़ किला है।

यह रंग भेद को पल में खा सकता है,
यह वर्ण, वर्ण का वर्ग मिटा सकता है;
यह जाति-धर्म-अवरोध नहीं मानेगा,
यह दुनिया का गतिरोध हटा सकता है।

वादों में नहीं किसी को है उलझाना,
है नहीं किसी का बीड़ा मुझे उठाना;
संतुष्टि और थिरता किससे जन-मन में,
चाहता स्वयं मन की गुत्थी सुलझाना।

यह है प्रशान्त सागर, थिरता बस ऊपर,
वड़वानल प्रतिपल उबल रहा अभ्यन्तर;
यह शान्ति क्रान्ति की छाती पर बैठी है,
यह मरघट वाली शान्ति कहाँ श्रेयस्कर ?

कलकल, छल छल, उवाल, भारी कोलाहल,
है पवन-पीठ पर उछल रहा निर्झर-जल;
लेकिन समतल पर गति में पूरी स्थिरता,
नीचे का जल तो पूर्ण शान्त, है निर्मल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



यह प्रजा राज्य, यह है स्वराज्य जन जन का,
यह नहीं बवण्डर, लक्षण उद्‌बोधन का;
ऊपर ही झंझावात, चेतना स्थिर है,
है कहीं इसी में निहित लक्ष्य जीवन का।

होवे प्रयास, जीने के योग्य बनायें,
पीड़ित जीवन की पीड़ा को सहलायें;
हम स्वयं प्रशासक, स्वयं प्रशासित-दोनों,
हम ठीक ठीक दोनों के कार्य निभायें।

हम सबके हित में है गुरुत्व आकर्षण,
नभचारी का भी तो है यही निकेतन;
यह धरा स्वर्ग है, है अपने हाथों में,
इसको कर दें अपना अपनत्व समर्पण।

अब हर प्राणी को राम-कृष्ण बनना है,
अब सबको ईसा का अभिनय करना है;
अब नहीं मुहम्मद आने को धरती पर,
उनके स्वर में अब हमको स्वर भरना है।

मानव अब सब कुछ कर सकता है सम्भव,
चाहिये नहीं अब अवतारों का उद्‌भव;
अवतार ब्रह्म का ही होता है जन जन,
कैसी सिहरन, है कैसा हीन पराभव!

है चन्द्र-पीठ पर अंकित चरण तुम्हारा,
पर्वत पर, सागर में संचरण तुम्हारा;
फिर अन्धकार में क्यों कर जीवन बीते,
मानव हो, साहस का ले उठो सहारा।

मानव हो, पहिले बोलो मानव की जय,
मानव हो, पहिले दो प्रकाश को आश्रय;
युग युग से मानव-पूर्वज सत्यान्वेषी,
दो 'सत्यमेव जयते' का जग को परिचय।

■

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.